परिचयः

निरूपमा पेरलेकर सिन्हा का जन्म 7 मार्च 1953 को मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में हुआ। उन्होने एम.ए.मनोविज्ञान एवं बी.एड. करने के उपरांत 70 के दशक में कुछ ही समय राज्य के शासकीय माध्यमिक विद्यालय में बतौर अध्यापिका कार्य किया। विवाहोपरांत वे पूर्णकालिक गृहिणी बनी रहीं किन्तु अवकाश के समय लेखन कार्य करती रहीं। उनकी प्रमुख रचनाएं ”हलाहल“ एवं ”वजूद“ हैं।

विद्यार्थियों से....

प्रिय विद्यार्थियों,

जब मै छात्रावस्था में थी तो मैने अनुभव किया कि निबंध की कोई अच्छी पुस्तक बाजार में उपलब्ध नही है आज भी स्थिति वैसी ही है जबकि कक्षा 10 एवं 12 में बोर्ड के प्रश्न पत्रों में निबंध काफी अंकों का प्रश्न होता है। अतः मैने आपके लिये यह पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में लगभग सभी अनुमानित निबंध संकलित हैं। आशा करती हूँ यह आपको अवश्य अच्छी लगेगी एवं परीक्षा में अच्छे अंक पाने में सहायक सिद्ध होगी।

निरूपमा पेरलेकर सिन्हा

कृपया अपनी प्रतिक्रिया अवश्य अभिव्यक्त करें.....

nirupamasinha17@ rediffmail.com

All rights reserved.No part of this publication may be reproduced,stored in a retrieval system,or transmitted in any form or by any mechanical,photocopying or otherwise without the prior permission of the publisher.Any breach will entail legal action and prosecution without further notice.

श्री गणेशाय नमः

निरूपमा पेरलेकर सिन्हा_10 - 12 निबंध संग्रह

isbn number 81 903256 1 2

Copyright number 7044ε2008.co/L

1 विद्यार्थि जीवन

काक चेष्टा बको ध्यानं श्वान निद्रा तथैवच
अल्पहारी ग्रहत्यागी विद्यार्थिनः पंच लक्षणम्

उपरोक्त श्लोक जिस काल मे रचा गया वह प्राचीन काल था।शश्लोक के अनुसार कौए की तरह चेष्टा अर्थात प्रयास बगुले की तरह ध्यान एकाग्रता कुत्ते की तरह चौकन्नी निद्रा अल्प भोजन एवं गृह से दूर रहने वाला ये पॉच लक्षणों वाले जातक को विद्यार्थि कहा जाता है।आज के युग में भी से सभी गुण विद्यार्थियों के लिये अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक हैं, चिरंतन सत्य हैं। ये गुण आज के प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा के युग में अत्यंत आवश्यक हैं।

विषय वस्तुः माता को बालक की प्रथम पाठशाला माना गया है। क्यों कि बालक के प्रथम रूदन एवं हास्य का प्रथमतः शब्दों मे परिवर्तित करने का श्रेय माता को ही जाता है। माता की उंगली पकड कर कदम कदम बढाता बालक गोद से निकल कर पाठशाला पहुंचता है और यहीं उसका सही विद्यार्थि जीवन आरंभ होता है।

आज का विद्यार्थि जीवन प्राचीन काल की तुलना मे कठोर भी माना जा सकता है और सरल भी। यह विरोधाभास इसलिये कि प्राचीन समय में जहां छः सात वर्ष की आयु तक उसे खेलने कूदने की छूट थी वहीं आज के माता पिता ढाई वर्ष की आयु में ही प्ले स्कूल

मे भर्ती करा देते हैं इस प्रकार आज का विधार्थि जीवन कठोर रूप मे आरंभ हो जाता है।प्राचीन काल में अत्यंत बाल्यकाल में ही उसे घर से दूर परिवार से दूर गुरूकुल में जाकर रहना होता था। जहां वह कठोर अनुशासन मे रह कर न केवल विधार्जन करता था बल्कि अन्य प्रकार की शिक्षा भी ग्रहण करता था जैसे धर्नुविंधा,घुडसवारी वेद पुराणों का अध्ययन भिक्षाटन पाककला इत्यादि में निपुण होकर ही घर वापस लौटता था,जबकि आज बालक तब बारहवीं कक्षा तक उसे सुख सुविधाओं से परिपूर्ण जीवन मिलता है और किसी कष्ट या समस्या का ज्ञान नही होता तथा बारहवीं के बाद किसी व्यावसायिक महाविधालय का छात्र बनने पर कई समस्याएं विकराल रूप से उसके सामने आ खडी होतीं है जिनमें रेगिंग प्रमुख है इसे विधार्थि जीवन का काला अध्याय मानना चाहिये क्यों कि कई अध्ययनशशील छात्रों को यह काल का ग्रास बना चुका है।

विधार्जन का मुख्य उधेश्य सभ्य शिक्षित एवं संस्कारवान बनना है किन्तु आज इसका मुख्य उधेश्य धनार्जन ही है। शिक्षा एक साधन है जो व्यक्ति को समाज में श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर एवं आर्थिक रूप से द्रढतर मकाम पर पहुंचाता है।

गुरूर ब्रम्हा गुरूर विष्णु,गुरूर देवो महेश्वरा

गुरूर साक्षात परब्रम्हः तस्मै श्री गुरूवैनमः

गुरू का यह महीमा मंडन प्राचीन युग की बात है।जिसमें उसे ब्रम्हा विष्णु महेश तथा परम ब्रम्ह के

समकक्ष माना गया था आज के परिवर्तित विधार्थि जीवन मे वह

फ्रेन्ड फिलॉसॉफर और गाईड है अर्थात वह एक मित्र के रूप में विधार्थि को जीवन दर्शन का परिचय कराता है और सही दिशा की ओर निर्देशित करता है। वह प्रत्येक विधार्थि की बुद्धि कार्य क्षमता लगन और ग्राहय शक्ति के अनुकूल उसका मार्गदर्शन करता है।

उपसंहारः

वे भाग्यवान हैं जिन्हे विधार्थि जीवन प्राप्त हुआ है,विधार्जन का सौभाग्य मिला है। आज भी हमारे देश के कई प्रदेशों के कई क्षेत्रों में अज्ञान का अंधकार फैला है ज्ञान का प्रकाश उन तक नही पहुंच पाया है जिन्हे ज्ञानार्जन का सौभाग्य मिला है उन्हे उसका भरपूर फायदा उठाना चाहिये विधार्जन की जो आयु है वही आयु भटकाव की भी है । समाज में चारों ओर विकास की चकाचौंध है ढेरों टी वी चॅनल्स एवं विभिन्न प्रकार के मोबाईल्स मॉल संस्कृति और मल्टीप्लेक्स के आकर्षण ,इंटरनेट के खुले और वर्जित साईट्स फ्रेन्डशिप और वेशभूषा का खुलापन इन सभी के बीच कठोर सत्य की तरह विधार्जन भी है एक सच्चे विधार्थि को इन सभी चीजों को गौण मान कर आरंभ में लिखे श्लोक की भांति कौए की तरह बारबार प्रयास करने होंगे जब तक लक्ष्य प्राप्ति न हो, बगुले की तरह ध्यान मग्न होकर ज्ञान रूपी मछली को प्राप्त करना होगा निद्रा से गहरी मैत्री उसके लिये हानिकारक है तथा इसके लिये अल्प भोजन ही अनुकूल है । किसी भी प्रकार की उच्च

शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये उसे गृह त्याग तो करना ही होगा । यदि वह अपने ज्ञान चक्षुओं को सदैव खुला रखे तथा सदैव अच्छा या बुरा हानिकारक या लाभदायक इसप्रकार के तराजुओं में दैनिक घटनाओं को तौलता रहे तो उसे सफलता प्राप्त करने से कोई नही रोक सकता इसप्रकार वह ज्ञानार्जन के साथसाथ एक सफल भविष्य की नींव रख सकेगा जिस पर उसके सफल भविष्य की विशाल अट्टालिका अर्थात बहुमंजिला इमारत खडी हो सकेगी।

स्वामी विवेकानन्द के कहे ये शब्द कितने सार्थक हैं

Arise awake and stop not till the goal is achieved

अर्थात उठो जागो तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो

सुखार्थि वा त्यजेत विधा,विधार्थि वा त्यजेत सुखम्

सुखार्थिनः कुतो विधा,विधार्थिनः कुतो सुखम्।

जो सुख से रहता है वह विधार्थि नही होता,जो विधार्थि होता है उसे सभी सुखों का त्याग करना पडता है सुखी व्यक्ति के पास विधा नही होती और विधार्थि के पास कभी सुख नही होता।

2 अनुशासन

प्रस्तावनाः मनुष्य जब एक नियम तोडता है तो दूसरे अपने आप टूट जाते हैं।

महात्मा गांधी

उपरोक्त कथन में अनुशासन का संपूर्ण अर्क समाया हुआ है किसी भी प्रकार के किसी भी क्षेत्र के बने हुए नियमों का पालन अनुशासन कहलाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है जो आपसे श्रेष्ठ आपके जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिये आप पर कुछ कठोर नियम लागू कर रहा है आपको उसका अनुकरण करना है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ही नही बल्कि समस्त ब्रम्हांड भी एक कठोर अनुशासन के अनुकूल ही चलता है । दिन के बाद रात का आना ग्रीष्म के बाद वर्षा और वर्षा के बाद शरद ऋतु का आना भी एक कठोर अनुशासित चक्र के अनुसार ही होता है प्रकृति ने अपने प्रत्येक क्षेत्र को अनुशासन पूर्ण निश्चित नियमों का पालन करते हुए सींचा । वनो ने जल संचय एवं समस्त जीवधारियों का स्वभावानुकूल जीवन यापन भी इस अनुशासन का एक हिस्सा है किन्तु मानव की अनुशासन हीनता के परिणाम स्वरूप वनों का कटाव हुआ जीवधारियों का शिकार हुआ ऊष्णता में वृद्धि द्रष्टिगोचर होने लगी कहीं बाढ कहीं सूखा कभी भूकंप और कभी सुनामी भी मानव की अनुशासन हीनता का दुष्परिणाम है जिसका परिणाम भी अंततः उसे ही भुगतना पड रहा है

विषयवस्तुः

अनुशासन की पहली सीढी स्व अनुशासन है मानव ही वह प्राणी है जिसे बुद्धि मन एवं भावनाओं का उपहार ईश्वर की ओर से मिला है पाषाण युगीन मानव से

लेकर सदियों से चली आ रही विकास की प्रकि्रया में मानव ने निश्चित रूप से स्वअनुशासित रही होगा तभी समाज तथा उसकी प्रथाएं रीति रिवाज परंपराओं का निर्माण कर सका होगा।

जो अपने ऊपर शासन नही करेगा वह सदा दूसरों का गुलाम रहेगा।

गेटे

उपरोक्त कथन सार्थकता के साथ यही बात कहता है कि अनुशासन की पहली सीढी स्वअनुशासन है।

बुद्धिमान मानव ने जीवन को व्यवस्थित रूप देने के लिये ही आश्रम व्यवस्था का निर्माण किया था,जिसमें पच्चीस वर्ष की आयु तक ब्रम्हचर्य पच्चीस से पचास तक ग्रहस्थाश्रम पचास से पचहत्तर तक वानप्रस्थाश्रम जिसमें घर कृषि अथवा व्यापार की सारी जिम्मेदारी पुत्रों एवं पुत्रवधुओं को सौंप कर वृद्ध दम्पति वन में कुटिया बनाकर जीवन यापन करते थे,पचहत्तर से मृत्युपर्यंत पति पत्नि एक दूसरे का मोह त्याग कर सन्यास धारण कर प्रभु भक्ति मे लीन हो जाते थे।

इसी कम में मानव ने कार्यक्षमता के अनुरूप विभाजित कर वर्ण व्यवस्था का निर्माण भी किया तकि समाज में सभी कार्य नियमित रूप से अनुशासित रूप से हो सकें किन्तु आज यही वर्ण व्यवस्था विद्रूप बनकर सम्प्रदायवाद बन कर हमारे सामने आ खडी हुई है क्यों कि छोटे छोटे स्वार्थों ने महान उद्‌येशों को हमेशा नकार दिया है।

किसी भी संस्था समुदाय अथवा संपूर्ण विश्व को भी व्यवस्थित रूप से चलाने के लिये अनुशासन एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है यदि विश्वविद्यालय में कुलपति विद्यालय में प्राचार्य शिक्षिकाओं एवं शिक्षकों का कठोर अनुशासन न हो तो एक पिरियड में ही घोर अव्यवस्था द्रष्टिगोचर होने लगेगी। सामाजिक नियम ऐच्छिक अवश्य होते हैं किन्तु प्रत्येक व्यक्ति गंभीरता से उनका पालन करता है। जिनमे वृद्ध माता पिता की देख भाल करना युवा होने पर विवाह करना निश्चित समय पर निश्चित त्योहार मनाना मरणोपरांत श्राद्ध संस्कार तक जीवन के सभी संस्कारों का पालन करना जो इन्हे नही मानता या अवहेलना करता है वह समाज में उपहास या उपेक्षा का पात्र बन जाता है।

देश में भी अनुशासन लागू करने के लिये जनता को जहां कुछ मौलिक अधिकार दिये गए हैं वहीं दूसरों द्वारा उनके हनन पर कठोर कानून व्यवस्था भी है कानून वे नियम है जो कठोरता से लागू कराए जाते हैं इनमें दण्ड का भी प्रावधान है इनके न होने पर सम्पूर्ण देश मे अराजकता फैल सकती है।

इसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व भी कुछ नियमों एवं कानूनों के अनुकूल चलने को बाध्य है

संयुक्त राष्ट्र संघ में बने ये नियम पालन करने के लिये प्रत्येक राष्ट्र बाध्य है वह कभी किसी राष्ट्र पर युद्ध नही थोप सकता परमाणु परीक्षण इत्यादि भी नियम के अनुकूल चलकर ही किये जा सकते हैं।इस प्रकार राष्ट्रों

के प्रतिनिधि ही राष्ट्रो पर निगरानी रखने का कार्य करते हैं।

उपसंहारः

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्

उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम।

अर्थात यह मेरा है यह तेरा है संकुचित मस्तिष्क वालों का जीवन है किन्तु जो उदार चरित्र वाले महान व्यक्ति हैं उनके लिये यह संपूर्ण संसार ही एक कुटुंब है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में कुटुंब में कभी गंदगी नही फैलाता उसे साफ सुथरा और करीने से सजा कर रखना पसंद करता है वह घर के बडों की आज्ञा का पालन करता है उनकी देखभाल करता है आदर देता है घर के सभी नियमों का पालन करता है यदि वह अपनी पाठशाला अपनी गली या मोहल्ला अपना शहर देश और विश्व सभी को अपने परिवार की तरह समझे उसमें बने नियमों का पालन करे स्वयं भी अनुशासन से रहे दूसरों को भी अनुशासित रहने की प्रेरणा दे तो यह संपूर्ण विश्व मानव की एक अनूठी ताकत बन जाए।

3 प्रदूषण

प्रस्तावना : वह दिन धन्य तथा याद रखने योग्य है जिस दिन एक आदमी यह अनुभव करता है कि वह स्वयं ही अपना रक्षक एवं भक्षक है । स्वयं उसमे ही उसके दुःखों तथा ज्ञान के अभाव के कारण मौजूद हैं

और स्वयं उसके अपने भीतर ही शांति तथा प्रकाश के स्त्रोत विद्यमान है।

लिलि एलन

प्रदूषण शब्द स्वयं अपने आप में एक विशाल अर्थ समेटे हुए है । किसी भी वस्तु विचार अथवा संस्कार का दूषित होना उसमें दोषों का समाहित होना ही प्रदूषण का शाब्दिक एवं व्यवहारिक अर्थ है । आज के जीवन मे हमारे लिये यह एक जाना माना पहचाना शब्द है। शायद हम सभी टी वी पर समाचारों के बाद मौसम का हाल और मौसम के हाल के बाद महानगरों का प्रदूषण स्तर देखते हैं जिनमें विभिन्न महानगरों एवं नगरों के प्रदूषण के स्तर में विभिन्न प्रकार के हानिकारक केमिकल्स की मात्रा बताई जाती है । यह शब्द भी विकास की ही देन है।

विषय वस्तुः पृथ्वी के अविर्भाव एवं जीवधारियों की उस पर उत्पत्ति एक भौगोलिक परिवर्तन था पृथ्वी की सतहों पर पर्याप्त मात्रा में हरियाली जल पहाड और समुद्र के साथ जीवधारियों के अनुकूल वायुमंडल का होना मानव की प्रगति और विकास की प्रेरणा बना।मानव सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ है क्यों कि उसमे विलक्षण बुद्धि है ,प्रगति के लिये कठोर परिश्रम करने की क्षमता है। जब वह पाषाण युग में था तब भी पत्थरों को नुकीला बना कर अस्त्रों का रूप दिया दुधारू पशुओं का पालन कर भूमि पर कृषि करके उस भूमि पर अपने अधिकार की घोषणा करने अपने लिये समाज और नियम बनाने से

लेकर आज तक के विकास की उसकी यात्रा निसंदेह सराहनीय है।

मानव की इस विकास यात्रा मे उसने कई खोजें की ,चमत्कार किये उसने समस्त मानव प्रजाति को कई अनुपम उपहार दिये जिनमे बस ट्रेन प्लेन से लेकर अंतरिक्ष यान तक सम्मिलित हैं।उसने दूसरे ग्रहों तक की उडान भरी चंद्रयात्रा जिसका पहला कदम था। आज भी वह दूसरे ग्रहों में जीवन तलाश रहा है अथवा जीवन के अनुकूल वायुमंडल जल तलाश रहा है ताकि वहां जाकर बस सके एक नई दुनिया बसा सके।

विकसित और विकसित होने की धुन में वह इतना खो गया कि उसका ध्यान इस ओर गया ही नही कि अपनी आरामदेह जिंदगीके स्तर को बढाते जाने के लिये उसने जितने उपकरणों का निर्माण किया है वे कितना वायुप्रदूषण उत्पन्न कर रहे हैं ,बढती हुई जनसंख्या की वृद्धि के निवास बनाने के लिये जितना वनों का कटाव किया है वे ही धरती के प्रतिदिन बढते तापमान ,बाढ,एवं भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के जन्मदाता बन गए हैं ये प्रदूषण निम्न प्रकार के हैं।

वायु प्रदूषणः बडी बडी फेक्ट्रियों का धुंआ उगलती चिमनियां कारो और अन्य वाहनो से निकलते खतरनाक कार्बन मोनोक्साईड नाम के जहर ने रेफ्रिजरेटर तथा एयर कंडीशनर से निकलने वाली गैस ने न सिर्फ त्वचा केंसर तथा दमा एवं अन्य कई बीमारियों को जन्म दिया है बल्कि पृथ्वी के सुरक्षा कवच ओजोन परत में एक छेद कर दिया है जो दिन प्रतिदिन बढता

जा रहा है। वैज्ञानिक चिंतित हो कर उसे बंद करने के उपाय हेतु दिन रात रिसर्च कर रहे हैं क्यों कि इसके न रहने पर सूर्य से निकलने वाली अल्टा वायलेट किरणें सीधे पृथ्वी पर आएंगी एवं त्वचा केंसर के मरीजों की तादाद बढती जाएगी शायद और कोई भयानक परिणाम भी हो जो अभी तक कल्पनातीत है।

जल प्रदूषणः प्रकृति ने स्वच्छ एवं निर्मल जल मानव को दिया था चाहे वह नदियों का हो या किसी कुंए का ,किन्तु मानव ने कचरा फेंक फेंक कर गंगा यमुना जैसी नदियों को झीलों जलाशयों को प्रदूषित कर दिया । फेक्ट्रियों से निकलने वाले जहरीले पदार्थों के इस जल में मिल जाने से कई बार हजारों की संख्या मे मछलियां मर गईं वे पानी की सतह पर मरी हुई पाई गई। सीवर के पानी के भी इस पानी में मिल जाने से इस पानी द्वारा सींची गई जमीन से जहरीली फल सब्जियां उत्पन्न हो रहीं हैं। वनों के बेहिसाब कटाव के बाद वहां सीमेंट के जंगल उग आए हैं । नदियों के तट भी बंधे नही रहे हैं और बाढ का कारण बन रहे हैं।

प्रतिवर्ष बिहार में आने वाली भयानक बाढ से वहां की प्रगति स्वप्न बन कर रह गई है। अविकसित क्षेत्रों मे प्रदूषित जल पीने से कई प्रकार की बीमारियां हो रहीं हैं तथा गरीब लोग ही इसका शिकार हो रहे हैं। इस प्रकार के विकास के दुष्परिणाम का शिकार भी मानव ही हो रहा है।

ध्वनि प्रदूषणः यह विज्ञान द्वारा सिद्ध सत्य है कि कुछ निश्चित डेसीबल से अधिक ध्वनि मानव को बहरा बना

देती है किन्तु हमारे चारों ओर शोर ओ गुल से भरी दुनिया है । वाहनो के हॉर्न और उसमे बजते तीव्र कर्णकटु संगीत लाउड स्पीकर पर बजते भद्दे गीत ,धर्म के नाम पर प्रत्येक धर्मस्थल पर विषेश रूप से धार्मिक उत्सव पर पूरी पूरी रात बजने वाले लाऊड स्पीकर की ध्वनि ने जीवन को कष्टकर बना दिया है। युवा वर्ग के कानों में हर वक्त बजते मोबाईल अथवा आईपॉड म्युजिक का कितना दुष्परिणाम उनके श्रवणतंत्र पर हो रहा है इसकी वे कल्पना भी नही कर पा रहे हैं।

विचार एवं संस्कार प्रदूषणः टीवी पर दिखलाए जाने वाले अश्लील द्रश्य नृत्य इंटरनेट की अश्लील वर्जित साइट्स देख कर युवा वर्गमें भटकाव हो रहा है। हमारे परंपरागत संस्कार खोने लगे हैं । विचारों में उथलापन आ गया है धार्मिक उत्सवों में भी अश्लील नृत्य किए जा रहे हैं। रात भर जाग कर किये जाने वाले इन नृत्यों में युवा वर्ग ने संस्कार सीमाओं के तटबंध तोड दिये हैं। इसके दुष्परिणामों के समाचार हम अक्सर ही टीवी पर देखते सुनते हैं।

अन्य प्रदूषणः प्रगति और विकास के इस दौर में हम अपने इर्द गिर्द कचरा फेंकते हैं। इनमें सबसे बुरी वस्तु है पॉलीथीन जो प्रत्येक रूप में हानिकारक है यदि यह मुख्य सीवर लाईन में जाम हो जाए तो वर्षा में मुंबई की तरह पूरे शहर को जलमग्न कर कई लोगों को लील जाती है । जलाने पर वायु से ऑक्सीजन खींच लेती है। एक प्रयोग में मुंबई में इसे जमीन मे दबा कर उस पर वृक्षारोपण किया गया तो पौधों का आकार नही बढ पाया।

उपसंहारः धरती हमारी माता है हम यहीं जन्म लेते हैं और मर कर इसी मिट्टी में मिल जाते हैं। यह पूरे जीवन हमारा पालन पोषण करती है । इसने हमें सांस लेने के लिये हवा पीने के लिये पानी खाने के लिये अन्न दिया सभी ऋतुओं का आनंद दिया परन्तु हमने इसे क्या दिया क्या हमने कभी इस मां की सुरक्षा की ओर ध्यान दिया हम इस पर जुल्म ढाते रहे यह सहती रही । अब एसा प्रतीत हो रहा है कि इसकी सहनशक्ति समाप्त हो चली है धरती का बढता हुआ तापमान ,आए दिन आने वाले भूकंप सुनामी प्रत्येक वर्शा ऋतु में कहीं न कहीं आने वाली भयानक बाढ का प्रकोप प्राकृतिक असंतुलन का ही परिणाम है। पहले पशुओं की संख्या मानव से दुगनी हुआ करती थी अब आधी से भी कम रह गई है ।

मानव का दानव होना उसकी हार है महामानव होना चमत्कार है किन्तु मानव होना उसकी जीत है।

डॉ राधाकृष्णन

यदि हम मात्र मानव बनकर अपनी धरती को प्रदूषण से मुक्त करा पाएं तो यही हमारी जीत है।

4 इंटरनेट का प्रभाव

Our deeds are sometimes better than our thoughts

P.G.BAILEY

इंटरनेट का आविष्कार मानव की प्रगति का ऐंसा ही ठोस दस्तावेज है जिसने वसूधैव कुटंबकम की काल्पनिक उक्ति को साकार कर दिखाया है। सुदूर शब्द ही अब

कल्पना सा लगने लगा है । सात समंदर पार या दूर देश परदेस अब ये सभी शब्द चंद क्षणों की दूरी बन गये हैं। यह एक चिरंतन सत्य है कि आवश्यकता आवीष्कार की जननी है आखेट युग से आज तक के विकास में मानव के कियाशील मस्तिष्क ने सम्पूर्ण समाज को कई चमत्कारिक उपहार दिये हैं। आरंभ में वह पत्थर के नुकीले हथियारों से आखेट किया करता था और पशुओं का कच्चा मांस खाकर कंदराओं मे रहता था फिर उसने आग का आवीष्कार किया दुधारू पशुओं को पाला

जमीन पर कृषि कार्य से स्वयं का पालन पोषण किया अपना अधिपत्य स्थापित किया एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल्दि पहुंचने की प्रक्रिया में उसने पहिये का निर्माण किया जो बैलगाडी से बुलेट ट्रेन तक कारगर रूप से परिलक्षित होता है उसने पानी के जहाज बनाए और हवाई जहाज भी उसने चांद और दूसरे ग्रहों तक अपनी पहुंच दर्ज की और आज भी अंतरिक्ष के भेद पाने में लगा हुआ है।

विषय वस्तुः प्रकृति ने मानव को सभी जीवधारियों में सर्वश्रेष्ठ बनाया है उसे बुद्धि दी है । उसमे हमेशा से ही कुछ नया करने की अदम्य लालसा कुलबुलाती रही है और वह लगन से कार्य करता रहा ।उसके विस्मय कारी आवीष्कारों ने मानव के कल्याण के नए आयाम स्थापित किए।

जब मानव समाज विकसित हुआ तो उसे एक स्थान से दूसरे स्थान अपने प्रियजन तक अपना संदेश पहुंचाना

एक विकट प्रश्न लगा।उसने कबूतरों को प्रशिक्षित किया और संदेशों का आवागमन होने लगा। सामर्थ्यवान लोग घोडों पर अपने हरकारे दौडाया करते थे किन्तु ये सुदूर प्रदेशों मे भी हरकारे ही संदेश लेकर जाया करते थे किन्तु ये सभी उपाय संतोषजनक नही थे । अंग्रजों ने जो अपेक्षाकृत अधिक विकसित थे सुद्रढ डाक तार व्यवस्था का आरंभ किया जो आज भी मौजूद है किन्तु प्रगतिशील मानव यहीं नही रुका । कम्प्यूटर के आवीष्कार एवं बहुआयामी उपयोग ने उसे एक नई संचार व्यवस्था के आवीष्कार की प्रेरणा दी एवं उसने इंटरनेट जैसे चमत्कार को जन्म दे दिया।

क्या है इंटरनेट ? मॉनीटर यानी स्क्रीन ,यूपीएस यानी पावर सप्लाय कम्प्यूटर,की बोर्ड जिस पर टाइपराईटर की तरह टाईप किया जा सके ,पी.सी .यू .यानी पर्सनल कम्प्यूटर एवं माउस एक छोटा सा हथेली से दबा कर प्रयोग किया जाने वाला उपकरण , दो स्पीकर्स एक छोटा सा वेब केमेरा छोटी सी पेन ड्राईव कुछ सी.डी डी. वी.डी इत्यादि बस ये ही चीजें कम्प्यूटर के पूर्ण प्रयोग के लिये आवश्यक हैं। इंटरनेट इन सभी प्रयोगों में से एक है।

कुछ समय पूर्व हम अशिक्षित व्यक्ति का अंगूठा छाप कह कर परिहास करते थे आज के कम्प्यूटर युग मे कम्प्यूटर जीवन का एक आवश्यक हिस्सा है और जो इसका जानकार नही है वह स्वयं को अशिक्षित सा महसूस करता है इसे कम्प्यूटर इलिट्रसी कहा जाता है। कम्प्यूटर हमारे जीवन में एक कांतिकारी परिवर्तन लाया है। जहां पहले सभी सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों

में रजिस्टर में हस्तलिखित जानकारियां दर्ज होतीं थीं।उन रजिस्टर्स का स्थान आज कम्प्युटर ने ले लिया है आरंभ में लोग बेरोजगारी न हो जाए यह सोच कर भयभीत हुए थे लेकिन एसा नही हुआ उन्ही कर्मचारियों ने कम्प्यूटर का प्रशिक्षण लिया और अब प्रसन्नता पूर्वक की.बोर्ड पर उंगलियां चलातें हैं । अब रेल्वे रिजर्वेशन कराना हो अथवा फिल्म के टिकिट की एडवांस बुकिंग करानी हो अथवा बिजली या टेलिफोन का बिल जमा कराना हो या बेंक अकाउंट चेक करना हो या कोई और सामान खरीदना हो सब कुछ आप कम्प्यूटर पर इंटरनेट के द्वारा घर बैठ कर कर सकते हैं।

इंटरनेट पर विभिन्न प्रकार के साईट्स होते हैं आप उनकी जानकारी ले सकते हैं गूगल नामक साईट् पर आप प्रत्येक वस्तु स्थान पुस्तक प्रसिद्ध व्यक्ति की सम्पूर्ण जानकारी पा सकते हैं।आज का कोई भी समाचार पढ सकते हैं।किसी भी कोर्स की कोई भी पुस्तक खरीदना अब आवश्यक नही रह गया है। इंटरनेट ने सम्पूर्ण विश्व को एक जाल सा बिछा कर ग्लोबल विलेज बना दिया है।

आप अपने प्रियजन तक एक क्षण में अपना पत्र ई मेल के माध्यम से पहुंचा सकते हैं उसके साथ चॅटिंग कर सकते हैं वेब केमेरा के द्वारा उसे उसके घर को तथा उसे चाय पीते सेंडविच खाते देख सकते हैं तथा वह आपको देख सकता है। स्पीकर्स के द्वारा आप उसकी आवाज भी सुन सकते हैं। इसके लिये प्रत्येक व्यक्ति जो इंटरनेट पर एक दूसरे से संबंध स्थापित करना

चाहता है उसकी आई डी का इंटरनेट मे दर्ज होना आवश्यक है।

पेन ड्राइव एक छोटा सा उपकरण है जिसमे फ्लॉपी या सी.डी. की तरह ढेर सारा डाटा कॉपी किया जा सकता है।डिजिटल केमेरे से या मोबाईल से खींचे गए फोटो एक दूसरे को मीलों दूर तक भेजे जा सकते हैं। इंटरनेट ने दुनिया का रूप ही बदल कर रख दिया है।

कम्प्यूटर मानव का मानव को एक अमूल्य उपहार है और हमे गर्व है कि सबसे तीव्र गति से चलने वाला सूपर कम्प्यूटर भारतीय वैज्ञानिकों का ही आवीष्कार है।विकसित देशों में इस क्षेत्र में काम करने वालों में सर्वाधिक संख्या भारतीयों की ही है।

कोई भी आवीष्कार पूर्णतः त्रुटिहीन नही होता है। इंटरनेट में भी कई त्रुटियाँ हैं और इसके उपकरण कम्प्यूटर मे भी। आप बेंक मे पासबुक अप टु डेट कराने जाते हैं पता चलता है कि हेंग हो गया है आप ई मेल करने बैठे हैं और हेंग होने के कारण कर नही पाए। धूर्त लोगों ने इसी माध्यम से सुनहरे ऑफर्स देकर लाखों की ठगी कर डाली है और आतंकवादियों ने अपनी बातें एक दूसरे तक पहुंचाने के लिये ई मेल को आसान माध्यम माना है और तो और भूतपूर्व महामहीम राष्ट्रपति जी को भी धमकी दे डाली। कुछ लोगों ने संचार माध्यमो के कार्यालयों में फलां जगह बॉम्ब ब्लास्ट होगा जैसी धमकियां तक दे डालीं। इसके अलावा अनजाने में छुप कर वेब केमेरा अथवा मोबाईल से कई लडकियों की अश्लील तस्वीरें खींच कर ईंटरनेट

पर डाल दीं।कई बडी कंपनियों के राज हॅक कर लिये गए।नवीनतम प्रचलन में ब्लॉग लेखन से कई बडे स्टार्स में शीत युद्ध आरंभ हो गया है। नकली नोटों का कारोबार भी इसी कम्प्यूटर के कारण गति पकडता जा रहा है।ऐसे अपराधियों को पकडना भी पुलिस और कानून के लिये एक दुरूह कार्य है।कानून में इसकी एक विशेष धारा आरंभ की गई है,पुलिस ने एक विशिष्ठ सेल बना लिया है।

उपसंहारः गुणों और अवगुणों की तुलना करे तो गुणों का पलडा भारी है। आधुनिक युग मे इसके बिना जीवन दुष्कर है इसलिये भले ही इसे परिष्कृत करें इसके अभाव में जीना असंभव है।

हववक इमजजमत इमेज

never you may rest

till your good becomes better

and better becomes best

इस प्रकार प्रत्येक आवीष्कार को अच्छे से और अच्छा तथा अंत में सबसे अच्छा बनाने की ओर मानव लगा रहता है और निश्चित तौर पर वह सभी कमियों को दूर कर समस्याओं का निराकरण कर लेगा तथा मानव का यह चमत्कार मानव के लिये सिर्फ सदुपयोग बन जाएगा।

5 पुस्तकालय

प्रस्तावनाः

विद्या ददाति विनयं विनयात् द्याति पात्रताम्

पात्रत्वाधन माप्नोति धनात्धर्मः ततः सुखम्

अर्थात विद्या से विनय की विनय से नम्रता की प्राप्ति होती है विनय से ही व्यक्ति किसी पात्रता का अधिकारी होता है सम्मान पाता है पात्रता से धन प्राप्त होता है अर्थात कोई पद पाकर धन अर्जित करता है जब उसे धन प्राप्त होता है तो वह धर्म कर्म भी करता है और धर्म कर्म करने से सुख की प्राप्ति होती है।

विद्या जो पुस्तकों में समाहित है मनुस्मृति से वेद पुराण स्मृतियां गीता रामायण हिन्दू धर्म की कुरान शरीफ मुसलमानों की गुरुग्रंथ साहिब सिख्खों की और बाईबल ईसाइयों की अमूल्य धरोहर मानी जाने वाली पुस्तकें हैं।वे ज्ञान का भंडार हैं।

ज्ञान धन से बडा है धन हम रखते हैं पर ज्ञान हमारी रखवाली करता है।

याज्ञवल्क

इस प्रकार पुस्तकालय एक प्रकार से ज्ञान का आलय है। आलय अर्थात घर पुस्तकालय यानी पुस्तकों का घर ।प्रत्येक पुस्तक ज्ञान प्रदान करती है। विश्व के महान साहित्य कारों ने विभिन्न विषयों पर पुस्तकों का सृजन किया ।शशेक्सपीयर,चार्ल्स डिकंस ,वर्डस्वर्थ,क्या भुलाए जा सकते हैं। रविन्द्रनाथ टैगोर जिन्हे गीतांजली पर नोबल पुरस्कार से सम्मनित किया गया था एक अमर कृति है। जयशंकर प्रसाद भारतेंदू हरिश्चंद्र महादेवी वर्मा ,मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान हिन्दी साहित्य

के कभी न बुझने वाले दीपक हैं। यह सूचि इतनी लंबी है कि गिनाई भी नही जा सकती है।इन सभी ने सच्चे हृदय से साहित्य की सेवा की इनकी पुस्तकें हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर तो हैं हीं वे साहित्य के मजबूत स्तंभ हैं।आज भी नवोदित साहित्यकार हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे हैं।

विषयवस्तुः

पुस्तकालय का प्रचलन अत्यंत प्राचीन काल से रहा है किन्तु नालन्दा और तक्षशिला जैसे शिक्षण संस्थानों के पुस्तकालय और वेधशालाएं आततायियों के आतंक का शिकार बन गईं। नालंदा एक विकसित शिक्षा संस्थान था जहां विश्व के विभिन्न देनाों से भी विद्यार्थि विद्याध्ययन के लिये आते थे।कहा जाता है कि मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने इनका विध्वंस किया और छः महीनों तक उसकी सेना पुस्तकालय की पुस्तकें जला जला कर अपना भोजन पकाती रही । हम और आप क्या कल्पना कर सकते हैं कि छः माह तक पूरी सेना का भोजन पकाये जाने के लिये जलाई जाने वाली पुस्तकों की संख्या क्या होगी और वे कितने बडे ज्ञान का भंडार होंगी। आततायियों की सोच होती है कि किसी भी देश का साहित्य नष्ट कर दो देश अपने आप नष्ट हो जाएगा।

किन्तु देश कभी मरता नही। कवि लेखक साहित्यकार जन्म लेते रहते हैं। अनूठी रचनाएं लिखते रहते हैं,ज्ञानदान करते रहते हैं,पुस्तकों के भंडार भरते रहते हैं।

सारा संसार ज्ञान की एक पुस्तक है,जिसमें वे लोग जो घर से बाहर नही निकलते केवल एक पृष्ठ ही पढ पातें हैं।

संत ऑगस्टाईन

पुस्तकालय पुस्तकों के रहने या उनके रखने की जगह है।आजकल लाइब्रेरी साइंस भी एक विषय की तरह पढाया जाता है जिसमें डिग्री एवं डिप्लोमा कोर्सेज होते हैं।इसमे विषय के अनुसार, सन् के कमानुसार अंग्रेजी अथवा हिन्दी के व्यंजनो के अनुसार पुस्तकों का रख रखाव किया जाता है।पुस्तकों के स्टॉक का एक व्यवस्थित रजिस्टर होता है। जिसमें प्रत्येक पुस्तक को एक नंबर देकर दर्जकिया जाता है। उसी नंबर की उस पुस्तक पर भी स्टांपिंग की जाती है। उस पुस्तक के कवर पेज के आंतरिक भाग में एक पेपर पॉकेट बनाई जाती है तथा उसमें एक कार्ड रखा जाता है। पुस्तक इशू कराने वाले व्यक्ति का नाम पुस्तक का नंबर इशू करने की तारीख तथा वापस कब करेगा पूछ कर वापसी की तारीखदर्ज की जाती है। इशू रजिस्टर एक अलग रजिस्टर होता है इसमें भी पुस्तक का नाम नंबर तथा पुस्तक लेने वाले का नाम वापसी की तारीख के साथ पुस्तक लेने वाले के हस्ताक्षर भी लिये जाते हैं पुस्तक की वापसी पर इसमे लाईब्रेरियन स्वयं के हस्ताक्षर भी करता है। देरी से पुस्तक लौटाने पर प्रतिदिन के हिसाब से तय शुदा जुर्माना लिया जाता है जो पुस्तकालय फंड मे जमा होता है तथा रखरखाव एवं नई पुस्तकें खरीदने पर खर्च किया जाता है।

भारत में सबसे बडा पुस्तकालय आंध्र प्रदेश में स्थित है तथा व्यवस्थित रूप से संचालित हो रहा है। पुस्ताकालय में पुस्तकों का रखरखाव एक अत्यंत कठिन एवं दुरूह कार्य है। इनकी झाडपोंछ की जाती रहती है। चूहों और दीमकों से इस अमूल्य धरोहर को बचाकर रखना वास्तव में एक दुष्कर कार्य है।सर्वाधिक कठिन कार्य महान पुस्तकों की हस्तलिखित लेखकों द्वारा स्वयं लिखि गई पांडुलिपियों का सुरक्षित रखा जाना है।वे कागज जो सदियों पुराने हैं स्वयं ही जीर्ण शीर्ण होने लगते हैं। हाल ही में कई सारी पांडुलिपियों पर सुरक्षा के उपाय हेतु एक विशेष प्रकार का पारदर्शी लेप लगाया गया है जिससे उन्हे नवजीवन मिला है।

एक ओर रखरखाव के लिये इतने उपाय किए जा रहे हैं दूसरी ओर कुछ दुष्ट छात्र अथवा लोग लाईब्रेरी की पुस्तकें घर लाकर बुरी तरह इस्तेमाल करते हैं। कई उसके पन्ने फाड लेते हैं कोई उसे लौटाते ही नही। यह बडे शर्म की बात है कि जो पुस्तकालय बिना पैसे लिये आपको इतनी अच्छी अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराता है आप उसे ही नष्ट करने का कार्य कर रहे हैं। जब हम से कोई पुस्तक जमीन पर गिर जाती है हम उसे उठाकर सर माथे से लगाते है क्यों कि पुस्तक ही विद्या है ।

और विद्या सरस्वती है ,माँ शारदा है यदि हम उसे फाडेंगे नष्ट करेंगे तो क्या वह कभी हम पर कृपा करेंगी।

उपसंहारः

जितना हम ज्ञान प्राप्त करते हैं,उतना ही हमको अज्ञान का आभास होता है।

शैली

हम भाग्यवान हैं कि हमें ईश्वर ने मनुष्य योनी में जन्म दिया है। हमें बुद्धि प्रदान की है भावनाएं दी है कार्यक्षमता दी है। बुद्धिमान या मंद बुद्धि होना जन्मजात कम और प्रयास पर अधिक टिका है जिस प्रकार लोहे को बंद कर के रख देने अथवा प्रयोग न करने से उसमे जंग लग जाता है तथा निरंतर प्रयोग से वह चमक कर आभा प्रदान करता है उसी प्रकार बुद्धि का निरंतर प्रयोग उसे तीक्ष्ण और प्रखर बना देता है।विद्यार्थि हो अथवा कोई सामान्य व्यक्ति स्त्री हो या पुरूष गांव हो या शहर एक पुस्तकालय उसे आसानी से उपलव्ध होता है।बजाय अन्य निरर्थक आकर्षणों के यदि वह अच्छी पुस्तकें पढने में अपना खाली समय व्यय करे तो उसके ज्ञानार्जन की थाह न होगी और वह अपने मानव जीवन को सार्थक कर पाएगा।उसकी बुद्धिमत्ता में वृद्धि होगी धीरेधीरे वह न सिर्फ अपने क्षेत्र मे अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करेगा वरन अन्य क्षेत्रों का ज्ञान अर्जित कर वहां भी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर पाएगा। पुस्तकों को मनुष्य का सच्चामित्र माना जाता है ये सिर्फ देतीं हैं,हमसे कुछ मांगतीं नही ये हमें मां सरस्वती का वरदान हैं

6. राष्ट्रीय एकता

प्रस्तावनाः

प्रेरणा शहीदों से हम अगर नही लेंगे

आजादी ढलती हुई सांझ हो जाएगी

यदि वीरों की पूजा हम नही करेंगे

ये सच मानो वीरता बांझ हो जाएगी।

शहीदों से वीरता और प्रेरणा का तात्पर्य यह नही है कि हमें तलवार लेकर कहीं युद्ध करने निकल पडना है इस पद का तात्पर्य यह है कि जिन शहीदों ने आत्मोत्सर्ग करके हमें यह अमूल्य आजादी दी है हमें उसकी रक्षा करनी है उसे बनाए रखना है।

राष्ट्र किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम नही है, किसी सीमाओं में बंधे मात्र खेत खलिहानों का नाम भी नही है, किसी मात्र सीमाओं में बंधे जमीन के हिस्से ,उसके पहाड नदियाँ ,झरनों का नाम भी नही है। राष्ट्र इन सभी से मिल कर बना है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य इसकी सुरक्षा करना इसके उत्थान के प्रयास करना परस्पर स्नेह और सौहार्द को बनाए रखना है।

विषय वस्तुः विश्व में अलग अलग स्थानो पर विभिन्न सभ्यताओं का जन्म और विकास हुआ। उसी अनुरूप ही वहां धर्म ,सम्प्रदाय विकसित हुए।भारत में प्रथम आगमन आर्यों का हुआ एसा इतिहास कारों का मत है परन्तु भारत आरंभ से ही आतताईयों का शिकार बनता रहा।कभी तैमूरलंग कभी चंगेजखान के रक्तपात कभी मोहम्मद गौरी और गजनी की लूटपाट,कभी सल्तनत काल का राज कभी मुगलो की हुकूमत।इनमें मुगलकाल की वंशावली मे अकबर महान जैसे शासक भी हुए जिन्होने हिन्दू राजपूत कन्या से विवाह कर हमारी संस्कृति में घुल मिल जाने का प्रयास किया। अकबर

महान ने सभी धर्मों की अच्छी बातों को सम्मिलित करके इस सम्मिश्रण से दीन ए इलाही नामक धर्म की स्थापना की थी किन्तु यह धर्म सफल नही हो सका था।

अंग्रेजों के भारत आने से पूर्व भारत कई छोटी बडी रियासतों में बंटा हुआ था,जिनके राजा महाराजा नाच रंग और ऐयाशियों में मग्न रहते थे।अधिकांश राजाओं ने कभी जनता की समस्यांओं पर अपने राज्य की सीमाओं की रक्षा पर ध्यान न दिया।इसीका फायदा अंग्रेजों ने उठाया। चूंकि वे आपस में भी लडते रहते थे अंग्रेजों ने उनकी सुरक्षा के बदले में लगान का अधिकार प्राप्त किया उन्हे आपस में और लडवाया और दो बिल्लियों और बंदर वाली कहानी की तरह धीरे धीरे सारा भारत हडप लिया। अब रानी विक्टोरिया का एक छत्र राज्य भारत में स्थापित हो गया।सारे उच्च पदों पर अंग्रेज थे और भारतीयों के लिये जो शिक्षा प्रणाली लागू की गई वह सिर्फ बाबू और क्लर्क ही बना सकती थी।

अंग्रेजों ने भारत मे दो सौ वर्षों तक राज्य किया इस लंबे काल में उन्होने हमेशा भारतीयों पर अत्याचार किए जिसका विरोध धीरे धीरे भारतीयों के मन मे सुलगता रहा । यह विद्रोह बन कर 1857 में एक असफल विद्रोह के रूप मे उभरा जिसका आरंभ मंगल पाण्डे ने किया था।इस विद्रोह में झांसी की रानी ,तात्या टोपे ,नाना फडनवीस तथा कई अन्य राजाओं ने सकीय रूप से भाग लिया ।कई बेनाम शहीदों की शहादत हुई और इस विद्रोह को निर्दयतापूर्वक दबा दिया गया। इसके

बाद के सौ वर्षों तक ज्यों ज्यों अत्याचार बढे,विद्रोह की चिंगारियां और तेजी से सुलगती रहीं फिर महात्मा गांधी सच्चे मार्गदर्शक के रूप में उभरे और अहिंसा के मार्ग पर चल कर सत्याग्रह को अपना हथियार बनाया।उन्होने अंग्रेजों की मजबूत नीव को इसी हथियार से हिलाकर रख दिया और वे भारत छोडने पर मजबूर हो गए।

जाते जाते वे भारत पाकीस्तान का विषैला बीज बो कर भारत को दो टुकडों में बांट दिया।14 अगस्त 1947 को पाकीस्तान का और 15 अगस्त 1947 को भारत का स्वतंत्रता दिवस मनाया गया जो बंटवारे से पहले हुए रक्त रंजित दंगों की नींव पर खडा था।जिन्होने परस्पर मिलकर अंग्रेजों को खदेडा था वे परस्पर शत्रु बनकर एक दूसरे को काट रहे थे।

इसप्रकार भारत एक विभिन्न जातियों धर्मों संप्रदायों का एक गुलदस्ता है ।प्रति दस मील पर पानी और सौ मील पर भाषा परिवर्तित हो जाती है। सभी जातियों धर्मों संप्रदायों के लोग अपने धर्मों का संप्रदायों का पालन करते हुए दूसरे के धर्मों का सहिष्णुता पूर्वक आदर करते हुए मिलजुल कर रहें एसा संविधान में प्रावधान रखा गया।कोई किसी के धर्म का अतिक्रमण अनादर ना करे यह भी कहा गया किन्तु एसा न हो सका ।सत्ता लोलुप नेताओं ने इस जाति संप्रदायों के विभाजन की लकीर को और गहरा कर दिया। मात्र वोट पाने के लिये उन्होने विभिन्न जातियों के बीच की खाई को और बढा दिया। आज भी जब तब जहां तहां

होने वाले दंगे इस बात के प्रतीक हैं।इससे आतंकवाद उभरा कभी सिख्ख आतंकवाद कभी कोई और ।

भीड भरे बाजारों में ट्रेनो मे होने वाले बॉम्ब ब्लास्ट कई कई निर्दोषों को लील जाते हैं उनके पीछे उनके परिवार वाले रोते कलपते कैसा जीवन जी पाते हैं इसकी तो शायद कोई कल्पना भी नही कर सकता।

यही जमीन यही आसमां था पहले

मगर ये फासला कब दरमियान था पहले।

मोहम्मद आजम

जब देश के अग्रणी हमारे रहनुमा हमारे नेता ही एकता बनाए रखने का कोई गंभीर प्रयास नही करते तो सच्चे देश से प्रेम करने वाले नागरिकों का निराश होना स्वाभाविक है। अब सारी आशाएं नवोदित युवावर्ग पर टिकी हैं। क्या वे इस उद्येश्य के लिये कुछ कर पाएंगे

राष्ट्रीय एकता कोई चिडिया नही है जिसे पकड कर पिंजरे में बंद कर लें और दाना चुगाते रहें तो वो बनी रहेगी। यह एक अभियान है जिसे एक व्यक्ति भी आरंभ कर सकता है,आखिर महात्मा गांधी भी तो अकेले ही चले थे लोग उनसे जुडते गए और अंग्रेंजों के गहराई से जमे पायों को उन्होने हिला दिया ,देश को आजादी दिला दी।यह अभियान एक जागरण की तरह विचार से विचार धारा की तरह द्रष्टि से द्रष्टिकोण की तरह गांवों से शहरों और एक से अनेक में फैला देना होगा कि हमसब एक हैं हम एक राष्ट्र के निवासी हैं हमारे सुख दुख सांझे हैं। राष्ट्र की सुरक्षा हमारा ध्येय है राष्ट्र की

संपत्ति को हम नष्ट नही करेंगे हर भ्रष्टाचारी को दंड देने का कठिनतम् प्रयास करेंगे।हम किसी के बहकावे में आकर आपस मे मनमुटाव उत्पन्न नही होने देंगे,यदि हम ऐसा कर पाए तो कोई शक्ति हमारी राष्ट्रीय एकता को भंग नही कर पाएगी।

उपसंहारः

एकता ही शक्ति है यह सर्वविदित है कि लकडियों का पटापट तोडा जा सकता है परन्तु उसके गठ्ठर को नही। कभी यह न सोचें की मै क्या कर सकता हूं। हमेशा ये सोचें कि मैं क्या नही कर सकता हूं तो बडे से बडे लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है । सर्व प्रथम हमें अपने मन से सभी धर्मो संप्रदायों को आदर और सम्मान देना होगा तभी हम भाईचारे और सौहार्द को दीपक के रूप में प्रत्येक हृदय में प्रज्वलित कर सकेंगे।

डल बवनदजतल पे जीम ूवतसक ंदक उल तमसपहपवद पे जव कव हववक

जीवउें च्पदम

कितने सार्थक हैं ये शब्द!!

7 जनसंख्या वृद्धि

मानव मस्तिष्क ठीक एक पॅराशूट की तरह है वह जब तक खुला रहता है तभी तक काम करता है।

लॉर्ड डेवन

प्रस्तावनाः

क्या हमारे देश के अधिकांश लोगों के मस्तिष्क उपरोक्त कथन के पॅराशूट की तरह बंद हैं। यदि नही तो मिलियन हॉरर को पार करती भारत की जनसंख्या का क्या कारण है।पहले चीन जनसंख्या वृद्धि में सबसे ऊपर था परन्तु उस देश के कठोर कानून ने उस पर काफी हद तक रोक लगा दी है।जब चीन ने अपनी जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाई उस देश की प्रगति की गति ने इतनी तेजी पकडी कि पूरे विश्व मे मेड इन चायना के सामानो की धूम मच गई। खिलौने हों तो मेड इन चायना ,दीपावली की लडियां हों ,लक्ष्मी गणेश की मूर्तियां हों पर्स मोबाईल सभी कुछ मेड इन चायना मार्केट में दिखाई देने लगा।

विषय वस्तुः

यह सत्य है कि भारत का अतीत कठिन कठोर कठिनाईयों से भरा रहा,कई सौ वर्षो तक यह गुलामी की जंजीरों से जकडा रहा किन्तु देश को आजाद हो कर भी 62वर्ष हो चुके हैं।क्या जनसंख्या की गति को रोकने के लिये गंभीरता पूर्वक प्रयास नही किये जाने थे।कठोर नियम लागू नही किये जाने थे।

1970 से 1980 के दशकों में कुछ प्रयास अवश्य किये गए थे। लोगों को प्रोत्साहित भी किया गया था।किन्तु विभागीय अधिकारियों ने इसे ठीक तरह से लागू नही किया था,इसका दुष्प्रचार किया गया और यह एक असफल अभियान बन कर रह गया।

विवाह प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है संतानोत्पत्ति भी किन्तु क्या स्वयं के बारे में संतान के

और देश के बारे में सोचना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य नही है? यदि वह गरीब व्यक्ति है तो चार बच्चों का पालन अत्यंत कठिनाई से कर पाएगा,उन्हे कभी अच्छी शिक्षा अच्छा भविष्य तो क्या अच्छा पोषक आहार भी नही दे पाएगा।यदि मध्यम वर्गीय है तब भी स्थितियां वैसी ही हैं।हां उच्च वर्गीय व्यक्ति अवश्य ही चार बच्चों का पालन पोषण अच्छी तरह से कर सकता है किन्तु वह अपने पीछे जायदाद के लिये लडती भिडती चार संताने ही छोड कर जाएगा।

गरीब व्यक्ति अशिक्षित है अज्ञानी है,उसे परिवार नियोजन के सटीक उदाहरण दिये जाने चाहिये।उसे प्रोत्साहन स्वरूप कुछ धनराशि दी जानी चाहिये ताकि वह परिवार नियोजन को सहर्ष अपना ले। हमारे देश में प्रत्येक स्वास्थ केन्द्र में इसका एक विभाग है लेकिन वह विभाग क्या करता है ? क्या कभी उसने वे आंकडे प्रस्तुत किये हैं जिनसे यह पता चले कि उसने कितने परिवार नियोजित किये हैं? कितने पुरूषों की नसबंदी की है? कितनी स्त्रियों के संतान न होने देने के लिये ऑपरेशन किये हैं?यदि प्रत्येक प्रांत के प्रत्येक बडे शहर में यह विभाग है और वह सकीय रूप से कार्यरत है तो जनसंख्या की गति की तीव्रता कम होती क्यों नही दिखती?

मध्यम वर्गीय व्यक्ति अपेक्षाकृत समझदार होता है। उसे बंधी बधाई तनख्वाह मे गुजारा करना होता है।जब वह विवाह करता है तभी उसके सामने भविष्य की योजनाएं होतीं हैं।वह आरंभ से ही परिवार को नियोजित रखने की कोशिश करता है।उसे पता है कि संतान कि शिक्षा

पर और उसके स्वावलंबी होने तक उसे एक बडी धन राशि खर्चा करनी होगी वह सदैव उच्च वर्ग की ओर देखता है,उसकी तरह बनना चाहता है,अपने बच्चों को भी वह पब्लिक स्कूलों में ही पढाना चाहता है अतः वह अपने सभी अनावश्यक स्वप्नों मे कटौती करता है नियोजित परिवार मे नियोजित जीवन जीता है।

उच्च वर्ग धनपतियों का वर्ग है। यह समझदार वर्ग है।यह स्वयमेव अपनी समझ से अपने परिवार को नियोजित रखता है। इस वर्ग के बच्चे अच्छी शिक्षा पा सकते हैं वे उच्च शिक्षा के लिये विदेश भी जा सकते हैं,क्यों कि पैसा उनके लिये समस्या नही है।

इन सभी में देश कोई विषय नही होता है क्यों कि गरीब वर्ग देश क्या है समझता ही नही मध्यम वर्ग अपनी ही समस्यांओं से सारी उम्र जूझता रहता है। उच्च वर्ग के पास धन कमाने की इतनी व्यस्तता होती है कि उसे देश के बारे में सोचने की फुर्सत ही नही होती

जनसंख्या के आधिक्य से हानियां....

सर्व प्रथम तो हम बच्चों को पोषक आहार नही दे पाते। यदि चार बच्चे हैं तो एक कीलो दूध के चार हिस्से हो जाते हैं। एक बच्चे को जहां एक कीलो दूध और आठ जोडा कपडे जहां एक बच्चे के लिये काफी होते अच्छी शिक्षा भी उपलब्ध हो पाती वे सभी सुविधाएं चार हिस्सों में बंटेंगीं। सरकार जितनी जनसंख्या के लिये निवास बस ट्रेन इत्यादि का इंतजाम करने का सोचती है वह इंतजाम पूरा होते होते जनसंख्या और बढ जाती है

खाद्य पदार्थों के अलावा सभी वस्तुओ का महंगाई का ग्राफ बढता ही जाता है।जीवन कष्टों से परिपूर्ण होता है शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढती जाती है। नौकरियां कम पडने लगतीं हैं।बेरोजगारी ही अपराधों को जन्म देती है। भ्रष्टाचार को बढाती है। देश का विकास नही हो पाता है विकास की गति सिर्फ महानगरों और बडे शहरों तक ही दिखाई पडती है। गांवों में बिजली पानी की सप्लाई अत्यंत कम और अव्यवस्थित तरीके से होती है। अशिक्षा का अंधकार और अज्ञान का दुर्भाग्य छाया रहता है।

जीवन यात्रा के पथ को आलोकित करने के लिये सबसे बडा दीपक अंर्तविवेक है जो कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने प्रकाश से हमारा मार्ग दर्शन करता है।

प्रो. हरिमोहन झा

उपसंहारः

उपरोक्त कथन में कितना बडा सत्य छुपा है जनसंख्या वृद्धि देश की नही प्रत्येक व्यक्ति की समस्या है क्यों कि इसका अपरोक्ष प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पडता है । देश व्यक्तियों से बनता है और यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने अंर्तविवेक को जाग्रत करे समझदारी से काम ले स्वयं अपने परिवार को नियोजित रखे तो जनसंख्या वृद्धि अपने आप ही रुक जाएगी । देश के विकास की गति भी तीव्र हो जाएगी तो विकास का प्रकाश देश के हर कोने में पहुंचेगा ।प्रत्येक व्यक्ति के पास अच्छी आमदनी होगी सुख और आराम के साधन होंगे उसके

बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलेगी ,अच्छी नौकरी मिलेगी और जीवन आराम देह होगा ।

पाठशाला में पहले पाठ पढाए जाते हैं बाद में हमारी परीक्षा होती है किन्तु व्यवहारिक जगत में पहले हमारी परीक्षा होती है बाद में हम पाठ लेते हैं।

देर से सही हम आज भी यदि पाठ लेलें तो इस समस्या का निदान करने में देर नही लगेगी यह जागरूकता हर व्यक्ति को दिखानी होगी। स्वयं सुधरें ,देश अपने आप ही विकसित हो जाएगा।

८ बेरोजगारी

मनपसंद काम मिलना परिस्थिति या भाग्य के हाथ में है परन्तु हर काम को मनपसंद बना लेना अपने हाथों में है।

विधानचंद्र राय

हमारे देश की प्रत्येक समस्या एक दूसरे से जुडी हुई है। एक विभिन्न जातियों धर्मो संप्रदायों का अत्याधिक जनसंख्या वाला देश जिसके अग्रगण्य नेता समस्याएं सुलझाने मे कम और अपनी कुर्सी की जोड तोड मे अधिक व्यस्त रहते हैं। उनके लिये जनता सिर्फवोट है।वे काम चलाऊ काम करते हैं उसका प्रचार प्रसार ज्यादा करते हैं,उनके लिये कुर्सी एक दुधारू गाय है वे चुने जाने पर स्वयं को पांच वर्ष तक देश का राजा समझते हैं। वे चुनावों से पहले ढेरों वादे करते हैं और चुनाव जीतने के बाद कभी जनता को मुंह भी नही दिखाते हैं

ऐसी स्थिति मे जनसंख्या के साथ बेरोजगारी भी सुरसा के मुंह की तरह बढती चली जा रही है।

विषय वस्तुः

भारत एक कृषि प्रधान देश था आज भी है किन्तु उद्योगों का भी आजादी के बाद विकास हुआ है। भारतीय कृषक पूर्णतः वर्षा पर निर्भर करते हैं।उनमे अधिकांश को सिंचाई के लिये जल उपलब्ध नही है। सरकार उनकी उपज के जो मूल्य तय करती है और खरीदती है वे बेहद कम होते हैं उन्हे बेंकों से कर्ज अवश्य दिलवाए जाते हैं लेकिन बेंकों के तैनात किए गुंडे पिस्तौलें लेकर उन्हे कर्ज वापसी के लिये धमकाने आते हैं। महाराष्ट्र मे सैकडों किसानो की आत्महत्या इन सभी बातों का भयावह और दर्दनाक दुष्परिणाम है। ऐसी स्थिति मे कृषक का बेटा कृषक नही बनना चाहता। वह पढता है डिग्री पाता है और बेरोजगारों की लंबी कतार मे आ खडा होता है। जब सरकार चुन कर आती है तो कहती है 100 दिनो में बेरोजगारी समाप्त कर देंगे वह समाप्त नही होती बल्कि कुछ और बेरोजगार आकर कतार में खडे हो जाते हैं।

अंग्रेजों ने लॉर्ड मेकॉले ने जिस शिक्षा पद्धति का बीज भारत में बोया उसने मात्र क्लर्की और बाबूगिरी करने वालों की संख्या बढाई और लगभग पचास वर्षो तक मुख्य रूप से और अब कुछ कम प्रतिशत के रूप में यही छाई हुई है। थोडे बहुत देशवासियों के सौभाग्य से

और विकास की गति में अन्य देशों के साथ पिछड जाने के डर से सरकारी तंत्र ने विदेशी कंपनियों को भारत आने का आमंत्रण दिया और तब से बडे शहरों में स्थिति में कुछ सुधार हुआ । जनता की नई पौध ने इस समस्या को गंभीरता से समझा और बजाय परंपरागत शिक्षा प्रणाली को अपनाने के , विशेष कोर्स विशेष प्रशिक्षणों वाली व्यवसायिक शिक्षा का हाथ थामा। पिछले दस वर्षों में आई टी.क्षेत्र में कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर हार्डवेयर क्षेत्र और मेनेजमेंट के अलावा कॉल सेंटर्स की नौकरियों ने नई पीढी को आकर्षित किया। भारतवासी कठोर परिश्रम करना जानते हैं,विदेशी कंपनियों ने उनकी मेहनत को खरीदा,उस रकम से जो उनके देश मे काम करने वालों के लिये काफी कम और भारतीय लोगों के लिये काफी अधिक थी। भारतीयों की बुद्धिमत्ता का सारे विश्व ने लोहा माना है,इसलिये प्रत्येक विकसित देश में भी आई.टी क्षेत्र में कम्प्यूटर के क्षेत्र में कई वर्षों से अधिकांश भारतीय काफी अच्छे पदों पर काफी अधिक तनख्वाह पाते हुए जमे हुए हैं।

इस प्रकार मल्टी नेशनल कंपनीज के आने से बेरोजगारी का बोझ कुछ कम हुआ लेकिन इसका श्रेय किसी भी तौर पर सरकार को नही दिया जा सकता। आजादी के 62 वर्ष हो चुके हैं, कोई ऐसी समस्या नही है जिसके निराकरण का श्रेय सरकार को दिया जा सके।कई पिछडे देश विकास की सीढियाँ चढ कर पूर्ण विकसित श्रेणी में जा खडे हुए हैं। किन्तु भारत मे जो चमक दमक दिखाई देती है वह महानगरों और बडे शहरों मे है लेकिन भारत गांवों का देश है और विकास

की एक नन्ही सी किरण भी वहां तक नही पहुंच पाई है। वहां भूख है गरीबी है अशिक्षा है अज्ञान है और इसके परिणाम स्वरूप बढती हुई बेरोजगारी और बढते हुए अपराध हैं।

गांवों में रोजगार न होने से भारी संख्या में वहां के लोग शहर की ओर पलायन करते हैं। शहरों में गंदी झुग्गी बस्तियाँ बढतीं हैं,पानी बिजली नाकाफी होता है और शहरों की समस्यांओं में बढोत्री होती है। उनमे से कई तो रिक्शा चलाते हैं,कई फेक्ट्रियों में काम करते हैं लेकिन पिछले वर्शों में घरेलू नौकरों के रूप में काम करते हुए इन लोगों द्वारा किए गए हत्याकांडों लूट इत्यादि से शहरों में भी अपराधों का ग्राफ बढता जा रहा है।

देश में इतना भ्रष्टाचार है कि सरकारी नौकरी की बात तो दरकिनार प्लेटफॉर्म पर कुलीगिरी करने के लिये बिल्ला भी लाखों रूपयों में बिकता है।हर आम व्यक्ति के पास देने के लिये न तो तगडी घूस होती है न ही उसके पास कोई तगडी सिफारिश होती है ऐसे में सरकारी नौकरी पा लेना अब एक स्वप्न बन कर रह गया है,जो लोग घूस देकर पा लेते हैं वे कभी काम करते नजर नही आते वे इस पद को उम्र भर की आराम कुर्सी समझ कर पद पर बैठते हैं। प्रत्येक काम की घूस मांगते हैं चपरासी से लेकर उंचें से उंचे पद पर बैठे लोग भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और दीमक की तरह चाट चाट कर देश को खोखला करते जा रहे हैं।किसी भी पद या पदों के लिये नगाडा पीट कर अखबारों में इश्तहार छपते हैं, परीक्षाएं होतीं हैं, इंटरव्यू होते

हैं,प्रतियोगियों के हजारों रूपये खर्च होते हैं लेकिन पद किसे मिलेंगे यह तो पहले से ही तय हो चुका होता है।

उपसंहारः

विदेशों में प्रत्येक बेरोजगार को बेरोजगारी भत्ता मिलता है जो उसके जीवन यापन के लिये काफी होता है। सरकार उसे स्वयं नौकरी उपलब्ध कराने का प्रयास करती है हमारे देश में सरकार हमारे लिये कुछ नही करती है। जो कुछ बिजली पानी बस ट्रेन इत्यादि करती है उसका पर्याप्त मूल्य वसूल करती है भारी भरकम टेक्स के रूप में । हमारे देश में जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य अपनी समस्याओं से जूझता रहता है। सच्चे लोग अपना पेट काट कर अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करते हैं और फिर उसके बेरोजगारी के दर्द को बांटते हैं। जो छोटे मोटे कुटीर उद्योग थे वे मृतप्राय हो चुके हैं। देश की फेक्ट्रियां मीलें कई तो बंद हो चुकीं हैं जो बडे बडे उद्योगपतियों की चल रहीं हैं वे अपनी शर्तों पर रोजगार उपलब्ध करातीं हैं। ऐसे मे मल्टीनेशनल्स का आना सूखे में पानी की फुहार जैसा है जिसे नई पीढी ने लपक कर ले लिया है। वहां कठिन परिश्रम है किन्तु अच्छा पैसा है कोई अन्याय नही है। क्या ऐसी स्थिति में नई पीढी देश के नेताओं के प्रति अच्छे विचार रख पाएगी? या वह देश के प्रति उदासीन दिखने लगी है।

9 युद्ध और शांति

Peace is better than war because in peace Sons bury their fathers but in war fathers bury their sons.

F.Beacon

उपरोक्त कथन दर्शाता है कि युद्ध कितना दुर्भाग्य पूर्ण होता है। संपूर्ण विश्व ने दो विश्व युद्ध 1914 और 1939 में झेले और कमोबेश प्रत्येक देश की प्रगति पर इसका दुष्प्रभाव पडा । नागासाकी और हीरोशिमा नामक जापान के दो बडे शहरों पर जो एटम बॉम्ब गिराए गए थे उसकी रेडियो धर्मिता का ऐसा प्रभाव वहां के लोगों पर पडा कि आज तक भी उनकी वंशावली में लोग अपंगता का शिकार होकर जन्म ले रहे हैं।यह उदाहरण ही युद्ध की भयावहता को सिद्ध करने के लिये काफी है।

मनुष्य मे अपना अधिपत्य अपना अधिकार और प्रभुत्व स्थापित करने की प्रवृत्ति आरंभ से रही है। मेरी जमीन मेरा घर मेरा प्लॉट मेरा फ्लेट मेरी संपत्ति मेरी कार आजीवन वह इसे जुटाने और बढाने मे लगा रहता है

प्राचीन काल में प्रत्येक देश मे राजाओं ने अपनी सीमाओं को बढाने के लिये दूसरे देशों पर आक्रमण किए उनपर अपना अधिपत्य स्थापित किया और यह विश्व भर मे होता रहा । रोमन साम्रज्य की क्रूरता, सिकंदर महान की विजय यात्रा भारत को गुलाम बनाने वाले और शासन करने वाले सल्तनत कालीन और मुगल कालीन शहंशाह और सबसे बढ कर छोटे से इंग्लेंड का विश्व भर में उपनिवेशवाद ,फ्रेंच और डच साम्राज्य पुर्तगालियों का अधिपत्य कोई भी देश इस

मोह का संवरण न कर सका। जो शक्तिशाली था उसने कमजोर को हडप लिया।

चक्रवर्ती सम्राट बनने की ललक में प्राचीन काल में राजा महाराजा अश्वमेध यज्ञ किया करते थे।जिसमें एक अश्व छोडा जाता था जो राजा उसे रोकने की हिम्मत करता उसे युद्ध करना होता था यदि वह पराजित हो जाता तो उसे अपने राज्य सहित समर्पण करना होता था विजयी होने पर ही वह स्वाधीन रह पाता था। प्रभु राम ने भी अश्वमेध यज्ञ किया था उनके अश्व को लव कुश ने रोका था।

शांति युद्ध का एकदम विपरीत शब्द है, यह एक सकारात्मक ाब्द है। शांति में ही प्रगति एवं कियाशीलता संभव है । इतिहास इस बात का गवाह है कि शांतिप्रिय राजाओं के काल में प्रजा सुखी रही क्यों कि जो धन समय और शक्ति युद्ध में लगते थे,वे सभी बच गए थे। सम्राट अशोक भी पहले युद्धप्रिय थे किन्तु कलिंग युद्ध में हुए रक्तपात ने उनके मन को झकझोर दिया और वे बौद्ध धर्म की शरण मे गए,शशांति का प्रचार प्रसार करने लगे उन्होने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को धर्म के प्रचार के लिये जावा सुमात्रा और सीलोन भेजा।

विषय वस्तुः

जिस प्रकार अग्नि अग्नि को शांत नही कर सकती उसी प्रकार पाप से पाप का शमन नही किया जा सकता।

टॉलस्टॉय

युद्ध मे दोनो ओर का धन नष्ट होता है,समय नष्ट होता है ,दोनो ओर के सैनिक मारे जाते हैं उनके परिवार अनाथ हो जाते हैं।वे न जाने कितने कष्ट पाते हुए जीवन व्यतीत करते हैं। हो सकता है एक पक्ष का दूसरे पक्ष पर किंचित अधिपत्य स्थापित हो जाता हो ,एक पक्ष को दूसरे पक्ष पर थोडी बहुत सत्ता भी प्राप्त हो जाती हो लेकिन बलात् प्राप्त की हुई सत्ता कभी भी जनता को अपने प्रति वफादार नही बना सकती,उसमे जब तब विद्रोह के स्वर उठते रहेंगे ,शशायद वह पुनः युद्ध कर स्वतंत्रता भी पा लें। अंग्रेजों को भी भारी विरोध और विद्रोह का सामना करना पडा। और अंततः भारत छोड कर जाना पडा।

युद्ध के दूरगामी परिणाम बहुत कष्टकारी होते हैं जो अंततः सैनिकों के परिवारों को भुगतने पडते हैं।कई अपाहिज होकर जीवन भर बेरोजगारी के दर्द को मात्र चंद रूपयों की माहवारी रकम लेकर भुगतते रहते हैं।सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोग देश को युद्ध की विभिषिका में झोंक देते हैं। आज के समय में लंबी दूरी की मारक क्षमता वाले मिसाईल बस्तियों की बस्तियां शहरों के शहर तबाह कर देते हैं इस तरह देश की निर्दोष जनता भी युद्ध मे झुलस जाती है।

पूर्णतः विकसित शहर, उसकी यातायात व्यवस्था संचार व्यवस्था पूरी कार्य प्रणाली ध्वस्त होकर खंडहर में तब्दील हो जाती है उसे फिर से खडे होने मे न जाने कितना समय धन और मानवीय श्रम लगता है।

शांति प्रगति के लिये प्रेरणास्पद स्थिति है ।

संसार मे अच्छा युद्ध और बुरी शांति कभी नही हुई।

फ्रेंकलीन

शांति मे प्रगति की गति तीव्र होती है तेजी से उन्नत होता हुआ देश विकास की ओर दौडना शुरू कर देता है।

शिक्षाः शांतिकाल मे देश के अग्रणी पूरे देश के कोने कोने में शिक्षा का प्रकाश फैलाने का कार्य कर सकते हैं। शिक्षा ही वह अस्त्र है जो मानव का सर्वांगीण विकास करता है तथा प्रत्येक व्यक्ति का विकास ही राष्ट्र का विकास है।

सुविधाएंः जो पैसा युद्ध मे व्यर्थ ही व्यय हो रहा है वह जनता को बिजली पानी सडक बस रेल हवाई यातायात में खर्च किया जा सकता है। इन सभी क्षेत्रों का विकास ही विकसित राष्ट्र की पहली पहचान है।

व्यापारः एक विकास शील अथवा विकसित देश दूसरे देशों के साथ स्वस्थ आयात निर्यात प्रणाली से अपनी अर्थ व्यवस्था द्रढ एवं मजबूत बना सकता है।

कृषिः यदि देश कृषि प्रधान है तो नई नई तकनीक एवं वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोगों से ,प्रयोग शाला में अनुसंधान करके उन्नत प्रकार के बीजों से उन्नत फसलें उगा सकता है।

रोजगारः उद्योगों का विकास करके अपने शिक्षित नागरिकों को उनकी शिक्षा एवं कार्य क्षमता के अनुकूल अच्छे से अच्छा रोजगार दे सकता है।

स्वास्थ्यः जब सुस्वस्थ नागरिक देश की प्रगति के भागीदार होंगे और अस्वस्थता की स्थिति मे भी उन्हे बेहतर स्वास्थ सेवाएं प्राप्त होंगी तो देश की प्रगति को कोई नही रोक सकता।

<u>उपसंहारः</u>

पंडित जवाहर लाल नेहरु ने पंचशील का निर्माण किया था। हम आज भी उसी पर कायम हैं। हमने आज तक पहल कर के किसी देश पर आक्रमण नही किया किन्तु यदि हम पर युद्ध थोप दिया जाए तो हम बहादुरी से उसका सामना करते हैं जो हमने 1962, 1965 और कारगिल युद्ध मे दिखा दिया और इसीलिये हम भी अन्य देशों की भांति परमाणु परीक्षण करते हैं,अपनी जल थल एवं नभ सेनाओं को सदैव युद्ध के लिये तैयार रखते हैं यह हमारे देश की सुरक्षा के लिये आवश्यक है हम अहिंसक अवश्य हैं किन्तु कायर नही यह सारा विश्व जान चुका है।

10 महात्मा गांधी और उनके प्रयोग

जो भीतर से स्वच्छ हो वह बाहर से अस्वच्छ हो ही नही सकता।

महात्मा गांधी

महात्मा अर्थात महान आत्मा एवं राष्ट्रपिता जैसे संबोधनो से संबोधित किए जाने वाले बापू एक अद्‌भुत चरित्र के स्वामी थे। उन्होने अपने व्यक्तित्व चरित्र एवं अस्तित्व से न सिर्फ देशवासियों का नेतृत्व किया बल्कि

अंग्रेजों के हृदयों मे भी अपने प्रति एक अनोखा सम्मान उत्पन्न कर दिया। आज वे संपूर्ण विश्व में जाने जाने वाले एक सम्माननीय नेता हैं।

महात्मा गांधी जन्म से महात्मा नही थे। वे एक गुजराती परिवार के सामान्य से बालक थे। प्रत्येक बालक की तरह उनमे भी नटखट पन था और बाल्यकाल में उन्होने भी कई शरारतें कीं, किन्तु उन्होने अपनी भूलों पर गहन पश्चाताप किया

उसका प्रायश्चित भी किया। वे प्रत्येक बात पर गंभीरता पूर्वक चिंतन करते थे मंथन करते थे तथा सही निष्कर्ष निकालते थे।

विषय वस्तुः

सत्य अहिंसाः महात्मा गांधी एक एसे व्यक्ति थे जन्होने कई मूल्यों की स्थापना की जो धर्मों पर आधारित थे।जब वे अत्यंत छोटे बालक थे, पाठशाला जाते थे, तब उन्होने एक बार अपने मित्र के घर जाकर मांस खा लिया।वे गुजरात के शुद्ध शाकाहारी परिवार में जन्मे थे अतः वे अपराध बोध से ग्रसित हो गए।

रात्री को उन्हे एसा लगा कि उनके पेट से बकरे की आवाज आ रही है। उन्होने अपने अपराध को स्वीकार करने में क्षण मात्र की भी देर न लगाई और उसी समय माता के समक्ष जाकर फूटफूट कर रोते हुए अपने अपराध को स्वीकार कर लिया।

उन्होने कहा सत्य एक विशाल वृक्ष है उसकी सेवा करने से उसमें पुष्प लगते हैं।

सत्य के शोध के कारण जितने कठिन दिखाई पडते हैं उतने ही सरल हैं। सत्य के शोधक को एक रजकण से भी नीचे रहना पडता है। सारी दुनिया रजकणों को पैरों तले रौंदती है। सत्य के पुजारी को इसीप्रकार जब तक पैरों तले रौंदा नही जाता कुचला नही जाता उसके लिये सत्य की झलक तक पाना दुर्लभ है। उनका कहना था कि सत्य के पुजारी को मौन का अवलंबन करना उचित है,यदि वह कम बोलेगा तो पहले तौलेगा फिर बोलेगा।

जब वे कुछ युवा हुए तो उन्होने अपनी माता की सोने की चूडियाँ चुरा लीं और उसके अंदर से सोना खुरचवा कर सुनार को बेच दिया, चूडियां वापस लाकर रख दीं। लेकिन कुछ ही देर बाद वे गहरी आत्मग्लानी से भर गए और उन्होने माता के समक्ष जाकर अपने अपराध को स्वीकार कर लिया।

उन्होने कहा निर्मल अंतःकरण से जिस समय जो प्रतीत होता है उसपर द्रढ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है।

जब वे अफ्रीका गए तो एक दिन प्रथम श्रेणी का टिकिट पास मे होने के बावजूद प्लेटफॉर्म पर धकेल दिये गए तो उन्हे रंगभेद नीति का गहरा अनुभव हुआ उन्होने उसे समाप्त करने के लिये वहां सक्रीय रूप से कार्य किया। आज भी उन्हे वहां के लोग अत्याधिक सम्मान पूर्वक याद करते हैं।

उन्होने कहा सच्चा प्रेम समुद्र की तरह निस्सीम होता है और ह्रदय के भीतर ज्वार की तरह उठ कर सीमा पार करते हुए दुनिया के छोरों तक पहुंच जाता है।

जब वे भारत लौटे तो देश गुलामी की जंजीरों से जकडा हुआ था। भयानक गरीबी तो थी ही साथ ही अंग्रेजों के अत्याचार भी थे। भगतसिंह आजाद राजगुरु इत्यादि गरम दल के सदस्य थे वे हिंसा और बॉम्ब ब्लास्ट करके आजादी हांसिल करना चाहते थे परन्तु गांधी जी ने कहा हम विरोधी को केवल प्रेम से अपना सकते हैं न कि घृणा से ,घृणा तो हिंसा का ही सूक्ष्म रूप है।

इसका यह अर्थ नही है कि उन्होने किसी प्रकार का अंग्रेजो का विरोध नही किया। उन्होने अहिंसा को अपना अस्त्र बनाया आंदोलन किए सत्याग्रह किये और वे ही अंततः अंग्रेजों को झुकाने मे सफल हुए भारत को स्वतंत्र कराने में सफल रहे। उन्होने कहा जो कठिनाईयां आतीं हैं उनके सामने झुकने मे नही उन्हे दूर करने मे ही स्वराज्य समाया है।

जब वे अफ्रीका से लौटे तो कस्तूरबा गांधी को वहाँ के लोगों ने ढेरों सोने और हीरों के आभूषण दिए । लौट कर महात्मा गांधी ने वे जेवरात बा से मांगे पर उन्होने इन्कार कर दिया यह कहकर कि मुझे बेटों की शादियाँ करनी है मै ये जेवर अपनी बहुओं को दूंगी।महात्मा गांधी रात भर सो नही सके कमरे में इधर से उधर उधर से इधर घूमते रहे ।प्रातः काल उन्होने कस्तूरबा से कहा कि ये जेवर तुम्हे नही, महात्मा गांधी की पत्नि को दिये गए थे इनपर तुम्हारा या मेरा नही देश का हक है। कस्तूरबा गांधी ने वे जेवर गांधी जी को दे दिये।

जमनादास बजाज ने वर्धा में गांधी जी को कई एकड जमीन दी। जहां उन्होने एक छोटा सा अस्पताल बनाया,जहां बिना डॉक्टर के ही अंग्रेंजों के अत्याचारों से घायल रोगियों का उपचार किया जाता था। आज यह एक विशाल मेडीकल कॉलेज है जो सेवाग्राम मे स्थित है। उस विशाल जमीन को सेवाग्राम नाम भी बापू ने ही दिया था।कॉलेज का नाम महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज है लोग इसे M.G.I.M.S.के संक्षिप्त नाम से जानते हैं।

उन्होने कहा यदि मानव मे नैतिकता का प्रदीप जल रहा है ,दूसरे के दुख को देख कर उसके मन में दर्द की अनुभूति होती है तो वह देव है किन्तु सत्ता और स्वार्थ की भूख मे जिसने मानवता की हत्या की उसे पशु कह कर मै पशु का अपमान नही करना चाहता।

उनके मन में दीन दुखियों के प्रति गहन संवेदना थी,उनके द्वारा रचित गीत वैष्णव जन तो तैने कहिये जे पीर पराई जाने रे यही दर्शाता है।

उन्होने स्वावलंबन पर सदैव जोर दिया वे चरखे पर सूत कातते थे और अपने ही बनाए खादी के वस्त्र पहनते थे। उन्होने दूसरों को भी प्रोत्साहित किया। वे कुटीर उद्योगों के हिमायती थे।

उपसंहारः

महात्मा गांधी के जीवन पर जितना भी लिखा जाए कम है। आज भी उनके द्वारा स्थापित सत्य अहिंसा स्वावलंबन जैसे मूल्यों की उनके काल से भी अधिक

आवश्यकता है क्यों कि स्वार्थ के नीचे ये सभी कहीं दब गए हैं।

गांधी जी ने कहा आस्था विश्वास और श्रद्धा से रहित मनुष्य सागर से बाहर फेंकी गई बूंद के समान है जिस प्रकार कोई भव्य या सुंदर महल उसके निवासियों द्वारा छोड कर चले जाने से वीरान खंडहर सा दिखाई पडता है उसी प्रकार चरित्र के अभाव मे व्यक्ति भी टूटे फूटे खंडहर सा प्रतीत होता है भले ही उसके पास भौतिक सम्पत्ति की मात्रा कितनी भी अधिक क्यों न हो

11 राष्ट्रभक्ति

प्रस्तावनाः

सफल उन्ही का जीवन है जो निज कर्तव्य निभाते हैं

ऐसे तो पशु सम जीकर के लाखों नर मर जाते हैं।

कहा जाता है मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और यह सत्य भी है वह अकेला अलग थलग नही रह सकता है।जब मानव का अविर्भाव हुआ तब वह पशु सम ही था।क्यों कि वह कंदराओं में रहता था। पत्थरों के नुकीले अस्त्र बना कर पशुओं का शिकार करता था और उनका मांस खाता था। उनकी खाल से शरीर को ढक लेता था इसीलिये उस युग को पाषाण युग कहते हैं।

अन्य पशुओं मे और उसमे फर्क यह था कि उसे ईश्वर ने अधिक परिष्कृत मस्तिष्क के साथ उत्पन्न किया और बुद्धि दी थी। एक बार जब ज्वालामुखी की निकली आग ने उसके शिकार को भुन दिया तो उसे वह मांस स्वादिष्ट लगा और उसने पत्थरों को रगड कर आग

उत्पन्न की आग का आवीष्कार किया। प्रकृति में स्वतः उत्पन्न कुछ अनाज के दाने उसे स्वादिष्ट लगे तो उसने कुछ दानों को वापस जमीन में दबा दिया और अनाज की बालियां प्रस्फुटित हो गईं। इस प्रकार कृषि का आरंभ हुआ। उसने पशुओं के बछडों को दूध पीते देखा और स्वयं दूध पीया जो उसे बहुत स्वादिष्ट लगा और उसने पशुपालन आरंभ किया। उसने जमीन पर अपना अधिकार घोषित किया।

आरंभ में उसका जो समुदाय था वही उसका समाज था और वही उसका राष्ट्र। उसने गल्तियों और अपराधों की क्षमा या स्वीकृति के लिये देवी देवताओं को माना

उनकी पूजा की,आज मनुष्य विकास की जिन उंचाईयों पर है वह एक लंबी विकास यात्रा का परिणाम है।जिस प्रकार व्यक्ति अपने घर से उसमे रखे सामानो से प्रेम करता है,उसकी सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखता है,घर में ही उसे संपूर्ण शांति और चैन मिलता है वही बात राष्ट्र पर भी लागू होती है।फर्क यही है कि राष्ट्र सभी नागरिकों का है सबको राष्ट्र ने कुछ अधिकार प्रदान किये हैं कई सारी सुविधाएं प्रदान कीं हैं किन्तु प्रत्येक नागरिक का भी कर्तव्य है कि वह राष्ट्र की सुरक्षा और विकास मे भागीदारी करे। अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम रखे भक्ति रखे।

विषय वस्तुः

As drops add up to make the ocean,We all can be friendly& become an ocean of friendliness.The world would be

transformed if everyone in the world live in a sprit mutual AMITY.

उपरोक्त कथन में संपूर्ण संसार को छोटी छोटी बूंदों से बन एकीकृत समुद्र के रूप में रहने की प्रेरणा दी है तो देश को तो एक शक्ति बन कर रहना ही चाहिये।

राष्ट्रभक्ति का तात्पर्य यह नही की हमें धूप दीप और अगरबत्ती जला कर कोई पूजा करनी है, अपितु हमे अपने देश के प्रति संपूर्ण निष्ठा रखनी है।जिस प्रकार मनुष्य अपने घर के किसी सामान की चोरी नही करता है उसी प्रकार हमें राष्ट्र की सम्पत्ति की चोरी नही करनी चाहिये किन्तु ऐसा नही है ट्रेन का कंपार्टमेंट हो तो लोग उसके पंखे आईने उतार कर घर ले जाते हैं।बसों की सीटों से स्पंज उखाड लेते हैं,उनमें ब्लेड से खुरच कर अश्लील और गंदे जुमले लिख देते हैं। पुलिस के मालगोदाम में तो बरामद किया सारा सामान धीरे धीरे गायब कर दिया जाता है।

या घटिया सामान से बदल दिया जाता है,करोडों रूपयों की अफीम हेरोईन सोने के बिस्किट आदि की बरामदगी तो नगाडा पीट कर टी.वी. पर दिखलाई जाती है बाद मे उसका क्या होता है यह फॉलो अप में कभी भी नही दिखाया जाता। कस्टम विभाग भी कई तरह की धरपकड और बरामदगियाँ करता है और हजम कर जाता है। रेल्वे के मालगोदाम से तो लोगों का कितना सारा सामान गायब हो जाता है इतने धक्के खाने और इतनी घूस देने के बाद उन्हे बहुत कम मात्रा में ही अपना सामान प्राप्त हो पाता है।देश ऐसा हो गया है

कि जिसके हाथ जो लगता है वही हजम कर लेता है।ऑफिस से स्टेशनरी गायब हो जाती है लाईब्रेरी से किताबें गायब हो जातीं हैं या पन्ने फाड लिये जाते हैं। इन्हे तो आज की तारीख में बडी चोरी नही कहा जा सकता है। बडी चोरी वह होती है जिसमें करोडों रूपयों का ठेका ले कर जिसमे सिमेंट कम से कम और रेत ज्यादा से ज्यादा मिला कर बडे से बडे कंस्ट्र्क्शन कराए जाते हैं जो बनने के कुछ दिनो बाद ही टूट जाते हैं इसी प्रकार हजारों घोटाले और हजारों करोड के कमीशन के राज जब खुलते हैं तो बडे बडे नेताओं के उनमे लिप्त होने की बात भी सामने आती है बरसों जांच समिति और जांच कमीशन बैठाए जाते हैं किन्तु उन्हे सजा पाते कभी किसी ने नही देखा क्यों कि जिन्हे जांच करने का अधिकार दिया गया है वे भी चोर हैं।

बापू ने कहा था हमसब चोर हैं यदि तात्कालिक आवश्यकता न होने पर हम किसी वस्तु को अपने पास रखते हैं इसे हम उस व्यक्ति से चुराते हैं जिसे उसकी आवश्यकता है।

आज की स्थिति में 30 प्रतिशत लोगों के पास इतना धन हैकि उनकी कई पुश्तों को काम करने की आवश्यकता ही नही है और 70 प्रतिशत लोग गरीब हैं गांवों में बसने वाले हैं झुग्गी झोंपडी में रहने वाले हैं जिनके लिये आज कमाना आज ही खाना ही जीवन है।क्या ऐसा नही लगता कि धनसम्पन्न लागों को गरीबों का जीवन स्तर उठाने के लिये उन्हे शिक्षित करने के लिये गंभीर प्रयास करने चाहिये?

कोई ऐसा क्षेत्र कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई नही पडता जो चोर न हो।कोई टेक्स की चोरी कर रहा है कोई घूस देकर गलत काम करवा रहा है कोई दफ्तर का माल गायब कर रहा है कोई बेंक मे गबन कर रहा है। क्रिकेट में मॅच फिक्सिंग के रहस्योत्घाटन ने सभी को चौंकाया था और गहरा सदमा भी दिया था लेकिन नतीजा क्या हुआ वही ढाक के तीन पात।फिल्म स्टार्स की गेंगस्टर्स से मिली भगत नेताओं का बाहुबली गेंगस्टर्स को संरक्षण,कहां है राष्ट्रभक्ति?

उपसंहारः

अब तो नैतिक शिक्षा की पुस्तक भी अनुपयोगी हो गई है क्यों कि उसमे दर्शाए गए मूल्यों का पालन कोई नही करता । पहले न्याय प्रकृिया मे लोगों का भरोसा था क्यों कि वही एकमात्र आशा की किरण थी किन्तु यह प्रकृिया इतनी लंबी और धीमी है कि फैसला आते आते कई गवाह कभी स्वयं अपराधी या मुकदमा करने वाला ही मर चुका होता है।

जब बालक पाठशाला मे जाता है तो वंदेमातरम या जन गण मन गाते हुए पूर्ण श्रद्धा से मस्तक नत करता है ज्यों ज्यों वह बडा होता है उसके सामने सारे कडवे सच आ जाते हैं जिनमे राष्ट्र की रखवाली करने वाली सेना का भ्रष्टाचार भी होता है वह किस प्रकार राष्ट्रभक्त बना रह सकता है।

<u>12 टी.वी.का समाज पर प्रभाव</u>

प्रस्तावनाः

Culture is to know the best that has been said and thought in the world

Methew Arnold

अविर्भाव से आज तक प्रगतिशील मानव के विचारों और क्रियाओं से ही देश की सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण हुआ। हर अगली पीढी ने पिछली पीढियों के इतिहास और संस्कृति सभ्यता और विचार जीवन शैली और निषिद्ध बातें सफलताएं और प्रेरणाएं धर्म और पूजा को जिन माध्यमो से जाना उनमे ताम्रपत्र भोजपत्र पुस्तकें इत्यादि थे।विज्ञान का आगमन अचानक नही हुआ था। बल्कि विकास हुआ था। आवश्यकता आवीष्कार की जननी है यह बात शत प्रतिशत सत्य है। मानव मस्तिष्क अत्यंत उर्वर है उसमे जैसे ही प्रश्न चिन्ह रूपी बीज पडता है वह बुद्धि ज्ञान और विचारों की खाद और पानी डाल कर उसका उत्तर उत्पन्न ही कर लेता है।

पहले मनुष्य पद यात्रा करता था कई कई दिनो में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचता था।जैसे ही उसने wheel का आवीष्कार किया उसकी गति बैलगाडी और घोडागाडी से बुलेट ट्रेन तक जा पहुंची।

मनोरंजन भी जीवन का एक आवश्यक अंग है। नीरस एवं कठोर परिश्रम भरे दिन के बाद अथवा सप्ताह में एक दिन मनोरंजन उसके जीवन में सरसता घोल देता है नवीनता ले आता है। राजा महाराजाओं के दरबार की नृत्य कला संगीत सभी कुछ ज्ञातव्य है।प्रजा जो गरीब थी तीतर बटेर मुर्गों मेंढों की लडाई देख कर

आनंदित होती थी।उसके बाद थियेटर प्रचलन मे आया जहां अच्छे निष्णात अर्थात योग्य नाटककारों ने नाटकों का मंचन करवाया,यह कला आज भी जीवित है।संगीत कला में शास्त्रीय गायन और नृत्यकलामे भारतनाट्यम कत्थक कुचीपुडी ओडिसी इत्यादि अपने अपने प्रांतों की विशिष्ठताओं को दर्शाते हुए आज भी दर्शक श्रोता थियेटरों मे देख सुन पाते हैं किन्तु उसके दर्शकों श्रोताओं की संख्या अत्यंत कम हो गई है। इसका कारण रेडियो ट्रांजिस्टर टेप रिकॉर्डर से आई पॉड ,और टी.वी. तक है जो अपने अत्याधुनिक परिष्कृत वैज्ञानिक रूप मे हमारे सामने है।

विषय वस्तुः

सादगी प्रकृति का प्रथम पग है और कला का अंतिम।

बेली

आरंभ मे जो कल्पनातीत था वह कल्पना बना और जो कल्पना बना था वही सत्य सिद्ध हुआ ।एरोप्लेन इंटरनेट और टी.वी. ऐसे ही आवीष्कार हैं।जो अद्‌भुत है और जिन्होने हमे अचंभित कर दिया।यह कोई सोच भी सकता था कि क्रिकेट मॅच ऑस्ट्रेलिया मे हो रहा है या फुटबॉल मॅच किसी और देश मे और हम उन्हे टी.वी. पर देख रहे हैं,अपने ड्रॉईंगरूम मे बैठ कर देख रहे हैं।लेकिन मनुष्य के उर्वर मस्तिष्क ने यह कर दिखाया ।

टी.वी. आज की तारीख मे घर का एक अनिवार्य सदस्य बन गया है इसके बिना जीवन सूना सा महसूस होता है।यदि किसी कारण से टी.वी. ना चले तो घर के सभी

सदस्य खालीपन महसूस करते हैं। घर की महिलाएं धारावाहिकों से बंधी रहतीं हैं। जब रामायण धारावाहिक आरंभ हुआ था,लोग धारावाहिक के समय पर किसी के घर जाना पसंद नही करते थे यहां तक कि विवाह आदि के मुहुर्त भी इस समय के अलावा ढूंढे जाते थे।जब कौन बनेगा करोडपति आरंभ हुआ तो उस समय विशेष में सडकें सूनी दिखाई पडतीं थीं माना कर्फ्यू लग गया हो।

टी.वी. पर शिक्षा संबंधी विषयों के पाठ कृषि संबंधी जानकारी एवं वैज्ञानिक प्रयोग शाला में जांची परखी गई उन्नत नस्लों के बारे में दिखाया व सिखाया जाता है। डॉक्टरी संबंधी प्रारंभिक ज्ञान ,ब्यूटी पार्लर संबंधी समस्त व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है।विभिन्न प्रकार के विभिन्न प्रांतों के एवं विभिन्न देशों के व्यंजनों को सामग्री सूचि व मात्रा के साथ प्रयोगिक रूप में बना कर दिखाया जाता है।इसके अलावा ज्ञानवर्धन संबंधी कई प्रतियोगिताएं नृत्य गायन संबंधी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं जातीं हैं जिससे देश के कोने कोने मे छुपी विभिन्न प्रतिभाओं को अपनी अभिव्यक्ति के लिये सही मंच मिल जाता है और सारा देश उन्हे जानने पहचानने लगता है। उन्हे स्वयं को आत्म निर्भर बनाने का लक्ष्य भी मिलता है। समाज को कई नए और अच्छे कलाकार मिल जाते हैं।

आज डिश टी.वी.बिग टी.वी. स्काई टी.वी.जैसे माध्यम भी विभिन्न चॅनल्स दिखाने के लिये टी.वी. से जुड गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपनी पसंद के

चॅनल्स ऑन कर के देख सकता है। अपना मनोरंजन कर सकता है।

टी.वी. का सबसे लाभप्रद प्रभाव यह है कि इसमें ढेरों न्यूज चॅनल्स हैं।हमे पल पल की खबरों का ज्ञान मिल जाता है। ट्रेन दुर्घटना हो अथवा ट्रेन लेट हो बॉम्ब ब्लास्ट हुआ हो डकैती हुई हो एक्सीडेंट इत्यादि के समाचार मिनिटों मे हम तक पहुंच जाते हैं।देश मे हुए भ्रष्टाचार अथवा हत्याकांड की जांच संबंधी प्रक्रिया की पल पल की प्रगति हम जान सकते हैं।जनमत बनाने का यह एक सशक्त माध्यम हैं।

हानियाँः कोई भी वस्तु पूर्णतः निष्कलंक अथवा निर्दोष नही होती उसके दूसरे पहलू दोष अथवा हानियाँ भी होतीं हैं।टी.वी. भी दोशों से अछूता नही है।विकसित देशों ने इसे इडियट बॉक्स करार दिया है तो हमारे देश मे भी कुछ लोग इसे बुद्धू बक्सा कहने लगे हैं।इसका सबसे बडा दोष यह है कि इसने बालकों की कियाशशीलता नष्ट कर दी है।जो बच्चे कल तक मैदान मे खेलते दौडते भागते अथवा कॉमिक या कोई और पुस्तक पढते दिखते थे वे इसके सामने जमे रहते हैं। उनकी कल्पनाशशीलता और कियाशीलता समाप्त हो गई है। टी.वी. ने उसके समय को हथिया लिया है।टी.वी. जो परोसता है वही हम देखते हैं।अत्यंत अव्यवहारिक और षडयंत्र रचते घर परिवार के धारावाहिक जिसे महिलाएं रूचिपूर्वक देखतीं हैं वे उनका विचार प्रदूषण करते हैं। विडियो अलबम्स जिन्हे देख कर युवा वर्ग का मस्तिष्क प्रदूषित होता है तथा काल्पनिक कार्टून्स जिसे देख कर बच्चे कोई शिक्षा ग्रहण नही करते।

उपसंहारः

यदि हम समझदारी से टी.वी. का सदुपयोग करें सीमित समय ही इसपर खर्च करें चुने हुए शिक्षाप्रद कार्यक्रम ही देखें एवं सच्चाई बताने वाले न्यूज चॅनल्स ही देखें ता टी.वी. से अच्छा कोई मित्र नही । यह मनुष्य को अकेलापन महसूस नही करने देता यह अकेलेपन मे उसका सच्चा मित्र है। पालतू पशुओं से संबंधित जानकारी भी पशुपालकों के लिये सदुपयोगी होती है। समय सबसे बडा धन है इसे कहाँ कितना खर्च करना चाहिये यह शिक्षा हमे आरंभ से ही पानी चाहिये । संसार में कई आकर्षक वस्तुएं हैं उनमे गुण भी है और दोष भी हमें उनके गुणों को आत्मसात् करना चाहिये प्रेरक बातों से प्रेरणा लेनी चाहिये और दोषों को नकार देना चाहिये।

13 समाजिक जीवन मे परिवर्तन

प्रस्तावनाः

अपने पूर्वजों के खोदे हुए कुंए का खारा पानी पीकर दूसरे के शुद्ध और मीठे जल का त्याग करने वाले बहुत से मूर्ख इस संसार में घूमते फिरते हैं।

स्वामी विवेकानन्द

उपरोक्त कथन की सत्यता हमें प्रेरित करती है कि हम लकीर के फकीर न बने रहें। संसार में जो अच्छा है जो उपयोगी है जो आत्मसात करने योग्य है और अनुकरणीय है उसका अनुकरण करें।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है यह एक चिरंतन सत्य है। संसार को मोह माया को त्याग देने वाले साधु संतों की भी टोलियाँ होतीं हैं। उनका भी समाज होता है नियम होते हैं। हिमालय की कंदराओं में जाकर तपस्या करने वाले ऋषि मुनियों का इतिहास भी सर्वज्ञ है किन्तु परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रकि्या है जिसका प्रभाव सभी पर पडता है और कोई भी उससे अप्रभावित नही रह पाता है।

अविर्भाव से आज तक मानव के समाज में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए हैं।कंदराओं में रहने वाला ,पेडों की छाल या पशुओं की खाल लपेटने वाला पत्थरों के औजारों से पशुओं का शिकार करने वाला उनका कच्चा मांस खाने वाला मानव और आज का विकसित मानव इतनी लंबी यात्रा ,और इतनी उन्नति इन सभी का श्रेय स्वयं मानव को है।

विषय वस्तुः

सभी प्राणीयों में मानव सर्वश्रेष्ठ है क्यों कि उसे ईश्वर ने बुद्धि और कार्यक्षमता दी है। पाषाण युग का मानव पशु सम था। पत्थरों के नुकीले औजार बनाकर पशुओं का शिकार करना उनका कच्चा मांस खाना और कंदराओं में रहना। वह स्थायी रूप

से कहीं नही ठहरता था।जब ज्वालामुखी के गर्म लावे में अनजाने ही उसका मांस भुन गया तो उसे स्वादिष्ट लगा और उसने पत्थर से पत्थर रगड कर आग उत्पन्न की । जब उसने जमीन पर प्राकृतिक रूप से उगे अनाज के कुछ दाने खाए तो वे उसे स्वादिष्ट लगे और

बचे हुए दानो को उसने जमीन में दबा दिया। वहाँ फिर से कोंपलें फूटीं और नई अनाज की बालियां उसे दिखीं । अब उसने उसे भूमि पर कृषि कार्य शुरु किया । उसने पशुओं के बच्चों को उनका दूध पीते देखा और वह दुधारु पशुओं को पालने लगा। अब वह अपनी भूमि अपने पशुओं पर अधिकार जमाने लगा । आस पास के सभी मानवों ने समुदाय बनाया समाज बनाया विवाह नामक संस्था बनाई कुछ नियम बनाए वह ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने लगा और धर्म उसके जीवन में आया।

परिवर्तनः

मनुष्य का उर्वर मस्तिष्क निरंतर कुछ करत रहने का आदी रहा है और वह अपनी सुविधाएं और आराम बढाने के लिये नित नए आवीष्कार करता रहा है।पिछले कुछ वर्षा में सामाजिक परिवर्तनों की गति में तीव्रता आई है।

पहले पुरुष घर के बाह कार्य करता था एवं स्त्री घर सम्हालने का कार्य करती थी।स्त्री के लिये शिक्षा भी वर्जित थी।पति के मरने के बाद उसके शव के साथ जल कर वह सती हो जाया करती थी। विधवा स्त्री का विवाह वर्जित था। अंग्रेजों के शासन काल में विलियम बेंटिंक ने ये सारी कुप्रथाएं मिटाई। राजा राम मोहन

राय और महर्षि दयानंद सरस्वती ने भी इस क्षेत्र में सहयोग किया।आज स्त्री पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिला कर चल रही है।चाहे वह इंजन चालक हो विमान चालक हो या अंतरिक्ष में पहुंचने वाली अनिता विलियम्स हो या अंटार्कटिका तक अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाली हो अथवा किसी राष्ट्राध्यक्ष आज वह कोई भी दुरूह कार्य करने में सक्षम है।

वेष विन्यासः

भोजन ,जीवन शैली आराम और ऐश्वर्य के साधन सभी कुछ परिवर्तित समाज मे नवीनतम् और आधुनिकतम् रूप में दिखाई देता है।

आदर्शों और मूल्यों में परिवर्तनः

आरंभ मे अंर्तजातीय विवाह अत्याधिक आलोचना का शिकार होते थे आज सरकार भी उन्हे प्रोत्साहन देती है। विशव के अधिकांश राष्ट्र लोक तांत्रिक हैं इसीलिये जनता पर पुराने समय की तरह राजा द्वारा किये जाने वाले अत्याचार नही रहे।जनता स्वयं अपने प्रतिनिधि चुनती है जो सरकार में रह कर जनता की समस्याओं का निराकरण करती है।

लोकतंत्र का मूल रूप अत्यंत सुंदर है किन्तु धीरे धीरे सरकार के अंदर और सरकार के बाहर सरकारी कार्यालयों में बढता भ्रष्टाचार भी जनता के ऊपर अत्याचार है जो इस सामाजिक परिवर्तन की देन है।

पहले महात्मा गांधी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे अग्रणी नेता हमारे पथ

प्रदर्शक थे जिनके लिये देश सर्वस्व था स्वतंत्रता आंदोलन सर्वस्व था जनता की भलाई सर्वस्व थी किन्तु आज ऐसा कोई नही दिखता।

मूल्यों का भी काफी हद तक अवमूल्यन हुआ है।पहले हमने सीखा झूठ बोलना पाप है,चोरी करना पाप है।आज तो सत्य बडी मुश्किल से लोगों की जुबान से निकल पाता है । और चोरी के प्रकार बदल गए हैं,कोई घूस लेता है कोई सरकार को टेक्स नही देता कोई मिलावटी सामान बेचता है। अधिक से अधिक धनवान और जल्दि से जल्दि धनवान बनने की होड में इंसान ने सभी पुराने मूल्यों को दफना दिया है।

भारत एक ऐसा देश है जिसमें विभिन्न संस्कृतियाँ घुल मिल कर एकाकार हो गई हैं क्यों कि द्रविड भी यहाँ रहे आर्य भी यहाँ रहे गुप्त मौर्य हर्षवर्धन के अलावा कई राजाओं ने राज्य किया । आतताईयों के आक्रमणों को भी भारत ने झेला सल्तनत काल मुगल काल के बाद अंग्रेजों ने दो सौ वर्षों तक राज्य किया स्वाभाविक रूप से सभी की कुछ अच्छाईयाँ कुछ बुराईयाँ हमारे अंदर सम्मिलित हो गईं । प्रत्येक काल में कुछ पुराने रीति रिवाज परिष्कृत हुए और उनका रूप बदला समय और परिस्थिति के हिसाब से उनका नवीनीकरण हुआ।

उपसंहारः

भारत एक विशाल देश है जहाँ विभिन्न धर्मों संप्रदायों जातियों के लोग रहते हैं कहा जाता है हर सौ मील पर भाषा बदल जाता है और हर दस मील पर पानी बदल जाता है ।रीति रिवाज परंपराएं विवाह के तरीके सभी

अलग अलग हैं किन्तु पिछले दस पंद्रह वर्षों में होने वाली विकास की तीव्रतम गति का प्रकाश काफी हद तक शहरों से निकल कर गाँवों तक पहुंच गया है।टी. वी. एक सशक्त माध्यम है जो विकास के प्रकाश को गाँव गाँव तक पहुंचाने में सफल हुआ ।पाश्चात्य देशों में विकास का आरंभ पहले हुआ ,वे सभ्य पहले हुए और विकसित राष्ट्र भी पहले बने। भारत एक विकास शील राष्ट्र है आज भी उसे पुर्ण विकसित होने में काफी देरी और काफी दूरी है।देश का आर्थिक विकास आँकडों में दिखता है, विश्व के अमीरों में भारतीयों के नाम भी दर्ज हुए और काफी उँची जगह पर हुए अतः उच्च वर्ग के जीवन स्तर जीवन शैली और पाश्चात्यीकरण की नकल करते मध्यम और निम्न वर्ग के सामाजिक परिवर्तन भी द्रष्टिगोचर होने लगे हैं।

14 भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति

प्रस्तावनाः

अतीत उजला था वर्तमान रुपहला और भविष्य सुनहरा,
विनम्रता मत छोडो और ठठाकर जियो।

बालकवि बैरागी

विश्व के विभिन्न कोनो मे विभिन्न सभ्यताएं जनमी विकसित हुईं। ऐतिहासिक तत्थ्य के रूप में मिश्र की सभ्यता को सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है।

भारत में सर्वप्रथम द्रविड आए या आर्य यह एक विवाद का विषय है । इतिहास कारों में इस विषय पर मतैक्य नही है किन्तु आरंभ में भारत के ही एक भाग और

आज के पाकीस्तान के एक हिस्से में मादन जोदडों और हडप्पा की खुदाई के दौरान जो पूर्ण विकसित नगर ,नगर में दोष रहित जल निकास ,नहाने के लिये बनाए सरोवर और विकसित घाट कुछ आभूषण बर्तन अनाज के जले हुए दाने नृत्य करती हुई नर्तकी की मूर्ति सिद्ध करती है कि भारतीय सभ्यता भी काफी पुरानी है। हाल ही का रामसेतु अभियान और श्री अशोक कुमार कैंथ के द्वारा श्रीलंका सरकार की मदद से ढूंढ निकाली जाने वाली अशोक वाटिका तथा अन्य स्थान भी यह दर्शाते हैं कि रामायण एक काल्पनिक कथा पर आधारित ग्रंथ नही है उसका अस्तित्व था। समुद्र के अंदर से डूब चुकी द्वारका के भग्नावशेश भी हमारी सभ्यता के अस्तित्व के ठोस दस्तावेज हैं।

विषय वस्तुः

आरंभ से ही भारत एक धनाढ्य देश रहा । ऋतुओं के हिसाब से यहाँ कमशः हर ऋतु का आना जाना ,खनीजों और गरम मसालों की ऊपज में अग्रणी रहा और यही कारण विदेशियों के आकर्षण का कारण बना। मोहम्मद गौरी ने कई आकमण किए और लूट लूट कर धन ले जाता रहा ,चंगेज खान और तैमूर लंग की लूटपाट और रक्तपात सर्वविदित है,हूणों के आकमण ,शशुंग वंश फिर सल्तनत काल और बाद में तैमूर और चंगेज खान के वंशज बाबर जिसने अपनी सेना को दिये प्रथम भाषण में कहा था इस आकमण में सारी ताकत झोंक दो क्यों कि यदि जीवित रहे तो स्वर्ग जैसे इस देश में रहोगे और यदि मरोगे तब भी स्वर्ग में जाओगे। यह भाषण सिद्ध करता है भारत को जो सोने

की चिडिया कहा जाना गलत नही है। अंग्रेजों को भी भारत का यह आकर्षण ही खींच लाया। उन्होने छोटी छोटी रियासतों में बंटे भारत को फूट डाल कर और भी तोड दिया,राजा महाराजाओं के आलस्य और राजरंग का फायदा उठा कर धीरेधीरे एक छत्र राज्य स्थापित कर लिया। 200 वर्षों तक उन्होने हमपर राज्य किया अत्याचार किए हमे ऊपर उठने का अवसर नही दिया, देश को लूट लूट कर ले जाते रहे। अंततः कई अज्ञात और ज्ञात शहीदों के प्राणोत्सर्ग और महात्मा गांधी सहित कई बडे नेताओं के आंदोलनों और अन्य प्रयासों के बाद दो टुकडों में बँट कर भारत आजाद हुआ।

सहज मिले सो दूध सम
मांगा मिले सो पानी
कह कबीर वह रक्त सम
जामे खींचातानी

कबीरदास जी का यह दोहा कितना सार्थक है कई कई शहीदों ने स्वतंत्रता के इस आंदोलन को अपने रक्त से सींचा तब कहीं जाकर हमे स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

यह स्वाभाविक ही था कि एक अत्यंत विशाल देश में ,इतने लंबे इतिहास में कई आक्रमणकारी आए कई यहीं बसे उन्होने यहीं की कन्याओं से विवाह किए,वे अपने साथ कोई अलग संस्कृति लेकर आए और यहीं की संस्कृति में घुलमिल गए तो पूरे देश में इस प्रकार के मिश्रण से मिश्रित संस्कृति का उद्भव और विकास हुआ । भारत की विशालता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक के रेल मे सफर में लगभग पाँच दिनो का समय लग जाता

है।आजादी के बाद कई राज्यों में इस देश को बाँट दिया गया जो सही प्रशासन के लिये आवश्यक था। यह बँटवारा मुख्य रूप से भाषा के आधार पर किया गया था।

बंगाल में बंगाली ,महाराष्ट्र में मराठी ,गुजरात में गुजराती तथा इसी प्रकार अन्य भी यही सही तो था किन्तु कई बार मेरा राज्य की भावना मेरा राष्ट्र से ऊपर हो जाती है जो देश की अखंडता के लिये हानिकारक है।

संस्कृतिः

कश्मीर एक स्वतंत्र राज्य था जो अपनी सुरक्षा के लिये स्वयं ही भारत में आ मिला और इसका अभिन्न अंग बना। वहाँ मुख्य रूप से कश्मीरी गुर्जर एवं मुस्लिम लोगों का निवास है ।अत्याधिक ठंडे हिमालय से घिरे सुंदर झीलों और बागानों वाले इस प्रदेश की भाषा ,वेश विन्यास ,जीवन शैली एकदम अलग है क्यों कि भोगौलिक स्थिति का रहन सहन और खानपान पर प्रभाव पडना स्वाभाविक है।पंजाब मुख्य रूप से सिख्खों का प्रदेश है गुरू गोविंद सिंह और अन्य सिख्ख गुरूओं ने इस धर्म के आदर्शों के अनुरूप संस्कृति को आगे बढाया यह उपजाऊ प्रदेश है भारत भर में सबसे ज्यादा अनाज पंजाब प्रदेश से ही भेजा जाता है।सिख्ख लोग हँसमुख और मस्तमौला प्रवृति के हैं।

उत्तर प्रदेशः

मुख्यतः हिन्दी भाषी प्रदेश है कई नदियों के होने के कारण उपजाऊ समतल यहाँ भी है और कृषि के क्षेत्र में

यह भी अग्रणी प्रदेशो मे सम्मिलित है कत्थक यहाँ का परंपरागत नृत्य रहा है । विश्व के आँठवे आशचर्य के रूप में ताज महल का सम्मिलित होना गर्व की बात है।

गुजरात और महाराष्ट्र :

ये दोनो प्रांत समुद्र के किनारे बसे प्रदेश हैं और अपनी अपनी संस्कृतियों जिसमें गरबा नृत्य गणेशोत्सव लावणी नृत्य इत्यादि के लिये जाना जाता है । यह प्रांत इनकी सुरक्षा एवं विकास हेतु प्रयत्न शील है।मध्य प्रदेश मालव प्रदेश के रूप में जाना जाता था देश के मध्य में होने के कारण सभी जातियों धर्मों के लोग यहाँ बसे मुख्य रूप से काली उपजाऊ मिट्टी होती है ।

बंगाल : बंगाल भी समुद्र तट पर स्थित है ,उसके पडौसी उडीसा बिहार तथा आसाम भाषा रहन सहन एवं खान पान में एक दूसरे से अलग नही हैं। बंगाल की दुर्गा पूजा से सभी अवगत हैं दक्षिण के सभी प्रदेश भी एक दूसरे से मिलती जुलती संस्कृति का विकास करते रहे। समुद्र तट पर बसे सभी प्रदेशों का मुख्य भोजन चावल और मछली रहा है ।

उपसंहारः

भारत इतना विशाल देश है कि यदि इसका विस्तार से वर्णन किा जाए तो “हरि अनंत हरि कथा अनंता” की तरह लिखते ही जा सकते हैं। आज हम जिस विकासशील भारत के नागरिक हैं उसमें जीवन शैली वेश विन्यास भोजन आवास सभी कुछ पाश्चात्य प्रभाव में रंगा नजर आता है। अब सभी युवक युवतियाँ जींन्स

शर्ट या टॉप पहने डाईनिंग टेबल पर बैठ कर बर्गर पिज्जा खांए और अंग्रेजी में बातें करे तो कोई नही कह सकता कि उनमें से कौन मराठी है कौन बंगाली है या कोई और । एक तरह से यह नई संस्कृति अच्छी है क्यों कि यह प्रदेशवादिता मिटा देती है किन्तु क्या यह राष्ट्रभक्ति जगा पाती है ?अन्यथा आने वाली पीढियाँ अपनी मूल भाषाएं परंपराएं रिवाज तो समाप्त कर चुकी होंगी और इस नवीनता से एकता भी प्राप्त नही कर पाएंगे। क्या इस तरह हम अपने भव्य इतिहास को मिटा नही देंगे।

15 करत करत अभ्यास के...........

प्रस्तावनाः रसरी आवत जात ते

सिल पर पडत निशान, करत करत अभ्यास के जडमति होत सुजान।

एक मंद बुद्धि छात्र पर गुरु बार बार कुपित होते थे, वह छात्र दुखी होकर गुरुकुल से भागा । रास्ते में थक कर एक कुंए की जगत पर बैठ गया उसने देखा कि बार बार रस्सी के खींचे जाने से कुएं की ऊपरी जगत पर बना पत्थर भी चिकना हो कर घिस गया है। उसे इससे प्रेरणा मिली उसने सोचा कि यदि बार बार रस्सी के घर्षण से पत्थर भी घिस सकता है तो प्रयास करने से मंद बुद्धि जड बुद्धि क्यों ज्ञान प्राप्त नही कर सकता ? सुज्ञान नही हो सकता ? और वह गुरुकुल लौट गया।

<u>विषय वस्तुः</u>

Trifles do not make perfection

But Perfection is made of Trifles

मनोवैज्ञानिकों का ट्रायल एंड एरर का सिद्धान्त इसी मूल विचार पर आधारित है।बार बार प्रयास करने पर गल्तियों और भूलों की संख्या में कमी आती है,सफलता पाने के समय की दूरि कम होती जाती है और अंततः कोई भी एक ही प्रयास में सफलता पा लेता है।उन्होने ये प्रयोग छोटे पशुओं चूहा बिल्ली तथा बाद में मनुष्यों पर भी किये।

उन्होने दो पिंजरे बनवाये जो दो भागों में बँटे हुए थे । एक एक भाग में चूहे और बिल्ली का प्रिय भोजन कमशः मछली और पनीर रखे गए दूसरे भाग में चूहे और

बिल्ली को रखा गया बीच मे बने हुए दोनो द्वार एक विशेष खटके के दबने से ही खुलते थे । बिल्ली और चूहे दोनो ने ही अपना अपना प्रिय भोजन पाने के लिये उछल कूद मचानी शुरू कर दी चौदह पन्द्रह प्रयासों के बाद खटका उनके किसी अंग या पंजे के दबाव से खुल गया वे अपना प्रिय भोजन खाकर खुली ओर से वापस लौट आए यह प्रयोग प्रतिदिन दोहराया जाने लगा ,पन्द्रहवें दिन दोनो प्राणी बंद होते ही एक ही प्रयास में खटका दबा कर अपना भोजन खाकर बाहर निकल आए क्यों कि वे जान चुके थे कि दरवाजा कैसे खुलेगा।

भूल करने की स्वतंत्रता न हो तो स्वतंत्रता किस काम की।

महात्मा गांधी

यह सही है कि कोई भी पत्थर की शिला कई बार चोट खाने पर टूटती है किन्तु इसका अर्थ यह नही है कि वह अंतिम चोट से टूटी है। पहली चोट और उसके बाद की गई प्रत्येक चोट उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी की अंतिम चोट। सभी को शिला के टूटने का श्रेय है।

यदि हम भूलों के डर से कर्म ना करें तो सत्य भी बाहर ही रह जाएगा।

रविन्द्रनाथ टैगोर

जन्म से कोई विद्वान बुद्धिमान बन कर पैदा नही होता । यह एक जैविकीय सत्य है कि बालक परदादा परदादी परनाना परनानी से साढे बारह साढे बारह प्रतिशत,दादा दादी एवं नाना नानी और माता पिता से लगभग इतना ही अनुवांशिक गुण लेकर जन्म लेता है किन्तु शेष साढे बारह प्रतिशत गुण उसके अपने एवं विशिष्ठ गुण होते हैं तथा प्रयासों से ही कोई भी कार्य क्षमता अथवा विशेषज्ञता पाई जा सकती है।एक अपराधी भी यदि कई वर्षों तक सत्संग में रहे तो अच्छा व्यक्ति बन सकता है तथा एक अच्छे व्यक्ति का बच्चा यदि अनाथ होकर किसी अपराधी के घर पलने बढने लगे तो वह भी अपराधी बन जाएगा । कहने का तात्पर्य यह है कि बार बार किये जाने वाले प्रयास जिसे दिशा में और जिस कार्य के लिये किये जाएंगे उन्हे सफलता मिलेगी।

महाकवि कालीदास जिस डाली पर बैठे थे उसे ही काट रहे थे किन्तु गुरु द्वारा प्रयास करने पर वे महाकवि बन गए और उन्होने अभिज्ञान शाकुन्तलम मेघदूत जैसे अच्छे ग्रंथों की रचना कर डाली।

इसी प्रकार तुलसी दास पत्नि के मोह में अंधे होकर सांप को रस्सी समझ कर चढ कर अपनी ससुराल में पत्नि से मिलने जा पहुंचे तब पत्नि रत्नावली ने उन्हे धिक्कारा और कहा यदि इतनी ही प्रीति तुम प्रभु राम से करते तो तुम्हारा कल्याण हो जाता तुलसीदास को बात चुभ गई । उन्होने रामचरित मानस के अलावा कई ग्रंथों की रचना की एवं वे महाकवि बने। महर्षि वाल्मिकी तो पहले डाकू थे वे आते जाते राहगिरों को लूट कर अपने परिवार का पालन पोषण करते थे एक बार एक महापुरुष ने उनसे पूछा तुम जो लूटते हो तुम्हारा परिवार उसमे भागीदार है लेकिन इस पाप के बोझ मे वे भागीदारी निभाएंगे?वाल्मिकी ने घर जाकर अपनी पत्नि और बच्चों से यही प्रश्न किया किन्तु सभी ने पाप का भागीदार बनने से इन्कार कर दिया और वे जो पहले डाकू रत्नाकर कहलाते थे बाद में महर्षि वाल्मिकी बने।कोई भी शीर्ष पर पहुंचा हुआ नेता हो अभिनेता हो खिलाडी हो वह एक ही छलांग में वहाँ नही पहुँचता नही किसी ने उसे उठा कर शीर्ष पर बैठा दिया है। वे सभी कठोर परिश्रम से और अनेक प्रयासों से अनेक असफलताओं के बाद वहाँ पहुँच पाए हैं।

कहा जाता है मोहम्मद गौरी ने सोमनाथ के मंदिर पर सत्रह आक्रमण किये थे और उसे सत्रहवें आक्रमण मे सफलता मिली थी। सोलह आक्रमणों के बाद एक दिन

वह अपने खेमे में बैठा था।एक छिपकली बार बार दीवार पर चढने का प्रयास करती और गिर जाती किन्तु उसने प्रयास करना नही छोडा और अंततः ऊपर चढ ही गई । इसी घटना से प्रेरित होकर मोहम्मद गौरी ने सत्रहवां आक्रमण अपने सम्पूर्ण युद्ध कौशल को लगा कर किया और वह विजयी हुआ।

उपसंहारः यह सत्य है कि असफलता से घोर निराशा उत्पन्न होती है किन्तु कभी भी निराशा को हमे अपने ऊपर हावी नही होने देना चाहिये और प्रयास की गति को रोकना नही बल्कि और तीव्र कर देना चाहिये ।

उद्यमेन ही सिध्शन्ति कार्याणि न मनौरथे

नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविश्यन्ति मुखे मृगः

अर्थात जंगल के राजा सिंह को भी भूख लगने पी दौड भाग कर मृग का आखेट करना पडता है ऐसा नही होता है कि स्वयं मृग ही वनराज के मुँह मे प्रवेश करे।

हेलेन किलर एक अंधी गूंगी और बहरी महिला थी किन्तु उसने उच्च शिक्षा प्राप्त की उसे कई कढ़िनाईयों का सामना करना पडा किन्तु वह घबराई नही । आज भी हम अक्सर ऐसे लोगों को देखते हैं जो अपंग हैं किन्तु किसी न किसी क्षेत्र में उन्होने विशेषज्ञता पाई हुई है। हमें ईश्वर ने सभी उपयोगी अंग दिये हैं मस्तिष्क में बुद्धि दी है फिर हम असफलता से घबरा कर क्या हथियार डाल दें ? अथवा प्रयास जारी रखे और सफलता पा ही लें।

16 विकास शील भारत में खेलों की स्थिति

प्रस्तावनाः सिर्फ परीक्षाएं पास कर लेने से अथवा दिमाग में ढेर सारी बातें भर लेने से सच्ची शिक्षा प्राप्त नही होती बल्कि चरित्र निर्माण से होती है।

महात्मा गांधी

मनुष्य का स्वभाव है किवह एकरसता से जल्दि ही ऊब जाता है ।वह एक ही तरह का दैनिक जीवन नही जी सकता।वह परिवर्तन चाहता है। मनोरंजन चाहता है और खेलों का उद्भव भी शायद उसकी इसी तलाश का परिणाम है। मनुष्य एक तरह का भोजन रोज नही कर सकता है मनोरंजन के भी विभिन्न साधन तलाशता रहता है इसीलिये ढेर सारे चॅनल्स वाले टी.वी. में रिमोट से वह निरंतर परिवर्तन करता रहता है।आज उसके पास ढेरों मनोरंजन के साधन हैं जिनसे वह विभिन्न प्रकार के मनोरंजन करता रहता है।सिनेमा टी.वी.,थियेटर, कॉन्सर्ट के अलावा म्यूजिक सुनने के लिये रेडियो टेपरिकॉर्डर और आई पॅाड इंटरनेट पर सुने जाने वाले गीत व देखी जाने वाली फिल्में अथवा सुने जाने वाले गीत अथवा ऑरकूट जैसी साईट पर नई मित्रता एवं उन मित्रों से की जाने वाली बातचित भी उसके मनोरंजन के साधन हैं।

खेलों का प्रवेश मनुष्य के जीवन में सबसे पहले हुआ था।यह विशुद्ध मनोरंजन का साधन था और आज भी है।कहाजाता है कि इंसानी खोपडी को पैरों से ठोकर

मारते मारते ही फुटबॉल का जन्म हुआ । हमारे देश में महाराजा अपनी रानियों के साथ चौसर या चौपड खेला करते थे।महाभारत का पूरा युद्ध द्यूत कीडा की भेंट चढ गया था। इसके अलावा गरीब घरों के बच्चे पहले भी और आज भी वे खेल खेलते हैं जिनमें विशेष साजो समान की आवश्यकता नही होती।जिसमें गुल्ली डंडा, आँख मिचौली, पकडम पाटी, लंगडी टांग, सितोलिया, इत्यादि हैं।किन्तु इनमें से किसी भी खेल को राष्ट्रीय स्तर का नही माना जाता।

विषय वस्तुः

हमारे देश के राष्ट्रीय खेलों में खो.खो कबड्डी बास्केट बॉल फुटबॉल हॉकी क्रिकेट इत्यादि हैं किन्तु इनमें से अधिकांश शालेय स्तरीय अथवा जिला एवं संभाग स्तरीय से अधिक ऊपर चर्चित नही हो पाते ।

अंतराष्ट्रीय स्तर के खेलों में क्रिकेट के अतिरिक्त अन्य खेलों में मुख्यतः कुछ खिलाडी अपने ही रूपये खर्च करके अपने प्रशिक्षण की व्यवस्था करते हैं। सानिया मिर्जा ,लियेन्डर पेस ,महेश भूपति टेनिस के ऐसे ही विश्व विख्यात खिलाडी हैं जिन्होने विश्वस्तरीय प्रतियोगिताओं में देश को गर्व करने के अवसर प्रदान किये हैं।

भारत के प्रकाश पादुकोण बेडमिंटन में ,गीत सेठी बिलियर्डस् में ,लियेन्डर पेस और महेश भूपति सानिया मिर्जा टेनिस में ,उडन परी पी.टी. ऊषा ,सुनील गावस्कर सचिन तेंदुलकर,महेन्द्र सिंह धोनी एवं पूरी

क्रिकेट टीम विश्व के जाने माने नाम हैं। रायफल शूटिंग में पहले राज्य वर्धन सिंह ने रजत पदक और फिर अभिनव बिन्द्रा ने ओलम्पिक में स्वर्ण पदक पाकर भारत का मस्तक गर्व से ऊँचा किया। कॉमन वेल्थ गेम्स में भारत भूमि पर भारतीय खिलाडियों द्वारा जीते स्वर्ण एवं अन्य पदकों ने हमें गोरवान्वित किया है।

हाल ही मे चीन मे आयोजित ओलंपिक खेलों में भारत के विजेन्दर ने बॉक्सिंग में व सुशील कुमार ने रेसलिंग में भारत को पदक दिलाया किन्तु उन्ही खिलाडियों के अनुसार पर्याप्त बजट के अभाव में भारतीय कुश्ती एवं बॉक्सिंग के खिलाडियों को पर्याप्त सुविधाएं नही मिल पाती।

हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है किन्तु आरंभिक वर्षों के अलावा इसमे आज तक कोई चमत्कार नही दिख पाया।भारतीय हॉकी संघ सदैव विवादों से घिरा रहता है चाहे खिलाडियों का चयन हो अथवा उसके रूपयों के खर्च का हिसाब हो । हाँ भारतीय महिला हॉकी ने अवश्य विजय प्राप्त कर नए कीर्तिमान स्थापित किए।

क्रिकेट एक लोकप्रिय खेल आरंभ से था। इसका जन्मदाता इंग्लेंड था किन्तु विश्व भर में इसकी लोकप्रियता बढती चली गई। 50.50 ओवर्स का क्रिकेट हो या 20.20 ओवर्स का क्रिकेट अत्याधिक लोकप्रिय हुआ । कपिलदेव की कप्तानी में सन् 1983 में एवं महेन्द्र सिंह धोनी की कप्तानी में 2007 में 20.20 का विश्वकप भारतीयों के लिये सदैव गर्व का विषय रहेंगे।

क्रिकेट का विश्व स्तर आई.सी.तथा भारतीय महासंघ बीसीसीआई अफरात पैसों के मालिक हैं एवं क्रिकेट खिलाडी जैसे जैसे खेल में पारंगत होता जाता है वैसे वैसे ही उस पर धन की बरसात होती रहती है। भारत के सबसे धनी व्यक्तियों की सूचि में सचिन तेंदुलकर और महेन्द्रसिंह धोनी के नाम भी लिये जाते हैं। यही सिद्ध करता है कि क्रिकेट पर बहुत पैसा खर्च किया जाता है।

पढोगे लिखोगे बनोगे नवाब

खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब

यह एक पुरानी कहावत है जो अब निरर्थक हो गई है क्यों कि क्रिकेट और टेनिस खेल खेल कर लाग करोडों कमा रहे हैं।किन्तु क्रिकेट में भी खिलाडियों का चयन तथा अन्य कई बातें राजनीति की शिकार हो जातीं हैं जिसका प्रभाव साफ तौर पर खेल पर दिखाई पडता है।जहाँ राष्ट्र सर्वोच्च होना चाहिये वहीं खिलाडियों के वाद विवाद,प्रेस को दिये गए बयानों से उत्पन्न विवाद अक्सर चर्चा में आते रहते हैं।विज्ञापनों में धन कमाते हुए क्रिकेट खिलाडी जब क्रिकेट के मैदान में जल्दि जल्दि आऊट हो जाते हैं तो लोगों के क्रोध और आक्रोश का शिकार होते रहते हैं। वे यही सोचते हैं कि खिलाडियों को जो काम करना चाहिये यानी क्रिकेट की प्रेक्टिस वे नही करते और धन कमाने में लगे रहते हैं। लोगों को लगने लगता है कि वे व्यर्थ में ही अपने सारे काम छोड कर क्रिकेट का मॅच देखते रहते हैं या उन्हे सर आँखों पर बिठाए रखते हैं। और वे हमेशा ही

सीरीज के अंत तक पहुँचते पहुँचते टांयटांय फिस्स हो जाते हैं।

भारतीय खिलाडी हमेशा ही खेलों में भाग लेने अलग अलग देशों में जाते हैं।क्रिकेट की अन्य देशों की टीमें भी भारत आती जाती रहतीं हैं। 2010 में होने वाले कॉमन वेल्थ गेम्स की दिल्ली में जोरों से तैयारियाँ रहीं हैं ढेर सा धन खर्च हो चुका है लेकिन बम धमाकों ने एक नया प्रश्न चिन्ह खडा कर दिया है।जब हमारे देश के निवासी ही सुरक्षित नही हैं तो अब क्या इतने विदेशी मेहमान खिलाडियों और दर्शकों को सुरक्षा दे पाएंगे?

उपसंहारः

स्वस्थ शरीर स्वस्थ जीवन का आधार है। स्वस्थ रहने के लिये व्यायाम आवश्यक है । खेलों से बडा व्यायाम कोई दूसरा नही क्यों कि खुले मैदानों में दौड भाग कर शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है।इसी तरह दौडते दौडते पी.टी. ऊषा और शाईनी अब्राहम ने विश्व स्तर पर नाम कमाया । भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर क्षेत्र में प्रतिभाएं देश के कोने कोने मे छुपी हुई हैं।हमें तहसील जिला और संभाग स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन करके इन प्रतिभाओं को ढूंढना और निष्पक्ष रूप से उन्हे खेलने का मौका देना चाहिये। हमारे लिये राष्ट्र और राष्ट्र का सम्मान सर्वोपरि है। खिलाडियों और खेलों के लिये जो पैसे और सुविधाएं नियत की गई हैं वे उन्हे ही मिलें ता राष्ट्र खेलों के क्षेत्र में भी नाम कमाए।

17 युवाशक्ति

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे मरते ही लोग तुम्हे भूल न जाएं तो या तो पढने योग्य रचनाओं की सृष्टि करो या वर्णन करने योग्य कर्म करो।

फेंकलिन

प्रस्तावनाः

युवावस्था वह अवस्था है जब प्रत्येक युवा के भीतर उत्साह अपने चरम पर होता है शक्ति अपने शीर्ष पर होती है । उसके सामने भविष्य के सुनहरे सपने होते हैं और वह कुछ भी और कहीं भी कर लेने का आत्म विश्वास रखता है।युवावस्था पर विभिन्न देशों में वहाँ की परिस्थिति समय और परंपराओं का पूर्ण प्रभाव होता है। जैसा कि कहा जाता है व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक ही नही होते वरन एक दूसरे की प्रतिच्छवि एक दूसरे के दर्पणों में देखते रहते हैं।युवावस्था कर्म करने की सर्वोत्तम अवस्था होती है क्यों कि बाल्यावस्था में तो इतना ज्ञान भी नही होता है, शक्ति भी नही होती है और वृद्धावस्था में शरीर शिथिल हो चलता है बहुत कुछ कर लेने की इच्छाएं भी शरीर की शिथिलता के आगे दम तोड देतीं हैं।युवा व्यक्ति से समाज को बडी आशाएं होतीं हैं क्यों कि समाज और राष्ट्र उसमे ही अपना उज्जवल भविष्य देखना चाहते हैं। युवावस्था में व्यक्ति मार्ग में आने वाली हर कठिनाई को सफलतापूर्वक पार कर लेता

है,वह अपने साथ कई लोगों को जुटा सकता है। नेतृत्व कर सकता है परिवर्तन ला सकता है।

विषयवस्तुः

जिस काम को तुम करना चाहते हो उसे शुरू कर दो ,साहस में प्रतिभा ाक्ति और जादू है सिर्फ काम में जुट जाओ मस्तिष्क में वेग आ जाएगा, आरंभ करो काम समाप्त हो जाएगा।

गेटे

देश काल और परिस्थिति का प्रत्येक समाज और उसके व्यक्तियों पर प्रभाव पडता है। अंग्रेजी शासन काल में उनके अत्याचारों का विरोध करने वाले और विद्रोह के प्रणेता मंगल पाण्डे से लेकर भगत सिंह चँद्रशेखर आजाद राजगुरू तथा अनेक युवाओं की संगठित शक्ति थी,जो गरम दल कहलाती थी क्यों कि उन्हे इस बात का विश्वास नही था कि गांधी जी की अहिंसा और सत्याग्रह की नीति से हमे आजादी मिल पाएगी।उन्होने अंग्रेजों से बिना डरे अपने तरीके से उनका विरोध किया। चँद्रशेखर आजाद ने अपनी माऊजर पिस्तौल जर्मन पिस्तौल से कई अंग्रेज सिपाहियों को हलाक किया और उसी की गोली से आत्मोत्सर्ग करके शहीद हुए।भगत सिंह राजगुरू और सुखदेव को एक ही दिन फाँसी दी गई थी। अंग्रेजों की जेलों में कई आजादी के दीवाने बंद थे और उनकी कठोर यातनाओं को सहते थे वे अपने देश के प्रति अपनी स्वतंत्रता के प्रति कटिबद्ध थे और वंदे मातरम् के नारे से सारे वातावरण को गुंजायमान कर दिया करते थे। उनके जीवन का एक ही

लक्ष्य था देश की आजादी उनके लिये अन्य सभी आकर्षण निरर्थक थे।

आमतौर पर भारतीय संयुक्त परिवारों के गठन में पिछली पीढी के युवक भी माता पिता के आज्ञाकारी हुआ करते थे।वे पारिवारिक कृषि अथवा व्यापार में पिता चाचा इत्यादि का हाथ बँटाते थे और घर के नियमों का पालन करते थे। पढ लिख कर नौकरी भी किया करते थे लेकिन अपवाद कहाँ नही होते इक्का दुक्का इनसे भिन्न प्रकृति के भी होते होंगे। आजादी मिल चुकी थी महान लक्ष्य प्राप्त हो चुका था अतः एक सामान्य जीवन ही अब उनकी नियति बन चुका था। पिछले 62 वर्षों मे हमने तीन युद्ध देखे जिनमें हमारे युवा फौजियों ने पूरे जोश से इस युद्ध में भाग लिया और अपनी शहादतें दर्ज कीं देश को विजय दिलाई।

युवा विद्यार्थियों का एक वर्ग शहरों में ऐसा भी था जिसने देशप्रेम की भावना को भी आगे बढाया। वे गांधीवादी कुर्ता पजामा धारी कंधों पर झोला लटकाये ,नियमित रूप से कॉलेज के समय के उपरांत किसी कॉफी हाऊस में एकत्र हो कर विभिन्न विषयों पर चर्चा करते ,चर्चा का विषय देश और देश की समस्यांएं ,सरकार और उसके द्वारा किए जाने वाले निराकरण ,उनके सही अथवा गलत होने की चर्चा परिचर्चा ,नए कवि लेखकों के लेखन जिनमे देश के और विदेशी साहित्यकार दोनो सम्मिलित थे इत्यादि पर समय पर व्यतीत करते।अपनी शिक्षा एवं अध्ययनउनके लिये सर्वोपरि था किन्तु शिक्षा पद्धति वही पुरानी लॉर्ड मेकॉले द्वारा लागू की गई हुई ही थी अतः ऐसे डिग्री धारकों

ने वही शिक्षा पाई कुछ ही विद्यार्थियों ने डॉक्टर या इंजिनीयर बन कर अलग राह चुनी । उस समय देश नया नया आजाद हुआ था अतः नौकरियाँ सभी शिक्षितों को प्राप्त हो गईं।चूँकि डॉक्टर इंजिनियर बनना अपेक्षाकृत महंगा था कुछ चुनिंदा लोगों ने उसे अपनाया।एक ऐसा वर्ग भी था जिन्होने अंग्रेजों के जाने के बाद भी उनकी भाषा जीवन शैली को नही त्यागा । वे क्लब में जाते बिलियर्डस् खेलते कांटे छुरी से भोजन करते अंग्रेजी में बतियाते उनके बच्चे कॉन्वेन्ट स्कूलों मे जाते ।पूरी तरह अंग्रेजीयत के रंग में रंगे इन बच्चों ने युवा होते ही एक अलग वर्ग बना लिया।

भारत पिछले पन्द्रह वर्षों मे तीव्र गति से प्रगति की पटरियों पर दौड रहा है । चंद चुनी हुई नौकरियों के लिये लाखों बेरोजगारो की भीड को मल्टी नेशनल कंपनीज के आने से एक सुनहरा भविष्य मिला। इन कंपनीज को अपने कर्मियों में जो योग्यताएं चाहिये थीं उनमे भारी भरकम डिग्रियों की आवश्यकता नही थी मात्र धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलना और कम्प्यूटर का ज्ञान ही आवश्यक था तनख्वाह बहुत अच्छी थी और बहुत ज्यादा थी मेहनत भी बहुत ज्यादा थी जिससे आम भारतीय युवक पीछे नही हटता जो तनख्वाह वे भारतीयों को दे रहे हैं वह उसी काम के लिये उनके अपने देश में दी जाने वाली तनख्वाह के मुकाबले में एकदम मामूली है । इस भारी आकर्षण ने न सिर्फ उच्च वर्ग और उच्च मध्य वर्ग बल्कि निम्न वर्ग के युवकों को भी अपनी ओर खींच लिया। अब भारत पूरी तरह इंडिया बना दिखता है। युवा वर्ग की भाषा भी

और द्रष्टिकोण भी विकसित विदेशियों सा हो गया है। उनकी बातचित के विषयों में कौनसी कंपनी कितने का पॅकेज दे रही है मुख्य रूप से तथा अन्य बातें गौण रूप से चर्चा में आतीं हैं।देश कभी उनका विषय नही होता। चूँकि उन्हे वोट देने का अधिकार है और सरकार की गलत नीतियों को वे समझते हैं वे सही व्यक्ति को वोट डालते हैं।महाविद्यालयों में होने वाले चुनावों को पार्टियों का संरक्षण प्राप्त होता है नेता अपने जैसी ही नई पौध तैयार करने मे जुटे रहते हैं।

उपसंहारः

यह सही है कि आज भी भारत की 70 प्रतिशत आबादी धनहीन है और 30 प्रतिशत ही धन सम्पन्न है सदूर गाँवों में अज्ञान और अशिक्षा का अंधकार है । यदि उनमें से निकले युवक अपने जीवन को अच्छा बनाने के प्रयास स्वयं के प्रयत्नों से कर रहे हैं तो यह अच्छी बात है ।सरकार ने तो पिछले 62 वर्षों में रोजगार देने के लिये कोई कारगर कदम नही उठाए। हमारी युवा शक्ति समझदार है ,प्रत्येक बात या मुद्दे के प्रति उनका द्रष्टिकोण स्पष्ट है । वे प्रगति की राह पर तेजी से बढ रहे हैं ,देश विदेश मे प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं नाम कमा रहे हैं पैसा कमा रहे हैं देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रहे हैं और देश का नाम भी ऊँचा कर रहे हैं।

18 त्योहारों का महत्व

प्रस्तावनाः

परंपराएं लेंपपोस्ट की तरह होतीं हैं बुद्धिमान उनकी रोशनी में अपनी मंजिल तय करते हैं।

बाई काउंट हेलशाम

भारत त्योहारों का देश माना जाता है वर्ष के 365 दिनों में यहाँ 372 त्योहार मनाए जाते हैं एसा कहा जाता है। चूंकि भारत विभिन्न जातियों धर्मों और संप्रदायों का देश है यदि सभी के मिले जुले त्योहारो की यदि यह संख्या है तो यह आश्चर्यजनक नही है।

प्रत्येक त्योहार का जन्म कैसे हुआ कब हुआ इसकी पृष्ठभूमि में क्या है यह कई रोचक बातें लिये हुए है।यह सत्य है की विश्व के प्रत्येक देश के रहने वाले व्यक्ति का अपने त्योहारों के प्रति गहरा आकर्षण होता है और सभी अपने अपने त्योहारों को पूर्ण हर्षोल्लास से मनाते हैं। त्योहार आने से पहले ही वे काफी उत्साहित होते हैं एवं त्योहार मनाने की तैयारियाँ बडे जोरशोर से करते हैं। त्योहार बीत जाने पर सभी को खालीपन सा महसूस होता है और अपनी पुरानी दिनचर्या में लौटना कष्टकर अनुभव होता है। त्योहार हमारे जीवन मे अत्यंत आवश्यक हैं एवं ये हमारे जीवन में नवीनता लाते हैं, उत्साह वर्धन करते हैं । एक ही तरह की उबाऊ दिनचर्या जीते जीते मनुष्य उकताहट सी महसूस करता है,त्योहार जीवन में नीरसता समाप्त करते हैं।

विषयवस्तुः

जीवन सब कलाओं से ऊपर है और जो व्यक्ति इसमे पूर्णता लाने का प्रयास करता है वही सच्चा कलाकार है।

महात्मा गांधी

त्योहार के बिना जीवन अपूर्ण है क्यों कि वैसे ही आज के विकास शील भारत में जीवन यापन के लिये,समाज में ऊँचे से ऊँचे स्थान तक पहुँचने के लिये प्रत्येक व्यक्ति जो संघर्ष करता है उसने उसके जीवन को मशीनी बना दिया है ऐसे में त्योहारों पर मिलने वाले अवकाश एवं हर्षोल्लास से मनाए जाने वाले त्योहार उसके जीवन में उत्साह का संचार करते हैं।

दीपावलीः

दीपावली हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार है। चौदह वर्षो के वनवास के बाद जब श्री रामचँद्र जी अयोध्या लौटे तो अयोध्या वासियों ने दीपमालाएं एवं आतिशबाजी से उनका स्वागत किया वही परंपरा हम आज तक निभाते आ रहे हैं।हम इस दिन संध्याकाल में लक्ष्मी पूजा करते हैं कहा जाता है कि घर की सफाई रंगाई पुताई करके नवीन वस्त्र धारण करके पाँच मेवों पाँच फलों और मिठाई का नैवेद्य लक्ष्मी जी को अर्पण कर दीपकों से घर को प्रकाशित करने से लक्ष्मी घर में आती है।इस दिन गरीब और अमीर सभी अपनी अपनी श्रद्धा और हैसियत के अनुकूल खर्च करके इस त्योहार के सभी नियमों का पालन करते हैं और त्योहार को पूर्ण हर्षोल्लास से मनाते हैं।इससे जुडी एक बुरी परंपरा भी है और वह है जुआ खेलना कई लोग समझते हैं कि इस रात जुआ खेलने और जीतने से लक्ष्मी घर में आती है। लेकिन यदि कोई जीतेगा तो कोई हारेगा भी अतः यह कहा जाना की जुआ खेलने से लक्ष्मी आती है गलत है और हमें इस परंपरा का विरोध करना चाहिये।

दशहराः दीपावली से ठीक बीस दिन पहले दशहरा होता है। राम ने रावण को युद्ध में परास्त करके इसी दिन मार गिराया था।इस दिन को हम विजयादशमी भी कहते हैं। प्रत्येक शहर के अलग अलग मैदानों में रावण कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतले जलाए जाते हैं। सोनपत्ती जिसे राम की सेना का लंका से लूट कर लाया गया सोना मानकर बडों के चरणों में अर्पित कर उनसे आशीर्वाद लिया जाता है। पुरूष जब रावण दहन देख कर घर लौटते हैं तो उनकी आरती उतार कर उन्हे घर में प्रवेश दिया जाता है।

नवरात्रीः दशहरे के ठीक पहले के नौ दिन नवरात्री माने जाते हैं। यह दुर्गा पूजा के दिन माने जाते हैं ।कहा जाता है कि राम द्वारा बार बार तीर चलाए जाने पर रावण मरता था और अमरत्व के प्रभाव से फिर से जीवित हो जाता था तब राम ने शक्ति पूजा कर दुर्गा को प्रसन्न किया और शक्ति का वरदान पाकर विभिषण की सलाह पर रावण की नाभी में तीर मार कर उसका वध किया । भारत में कई लाग पूरे नौ दिन व्रत रखते हैं कुछ सप्तमी अष्टमी का व्रत रखते हैं मंदिरों में भीड होती है बंगाल बिहार में दुर्गा पूजा धूमधाम से मनाई जाती है।मूर्ति की स्थापना व विसर्जन भी अपार जनसमूह के साथ धूमधाम से होता है।

गणेशोत्सव : नवरात्री से पूर्व पन्द्रह दिनों का श्राद्ध पक्ष होता है और उसके पूर्व के दस दिन गणेशोत्सव के रूप में मनाए जाते हैं। चतुर्थि से चर्तुदशी ,स्थापना से विसर्जन तक यह महाराष्ट्र गुजरात मध्यप्रदेश मे बडी धूमधाम से मनाया जाता है।इसका आरंभ लोकमान्य

बालगंगाधर तिलक ने लोगों को एकजुट कर अंग्रेजों के विरूद्ध जनजागरण करने के लिये किया था।

रक्षाबंधनः

यह भाई बहन का पर्व है। इसके आरंभ का कोई इतिहास ज्ञात नही है । किन्तु भाईदूज जो दीपावली के तीसरे दिन मनाया जाता है,एसा माना जाता है कि यमुना ने अपने भाई यम का तिलक कर आरती उतारी थी। रक्षाबंधन पर बहने भाईयों की कलाईयों पर राखी बांधती हैं और वे उनकी रक्षा का वचन देते हैं।

क्रिसमसः

यह इसाईयों का मुख्य पर्व है प्रति वर्ष 25 दिसंबर को मनाया जाता है । ईसा मसीह के जन्म दिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।पूरा यूरोप अमेरिका ऑस्ट्रेलिया इंग्लेंड इसे बडी धूमधाम से मनाते हैं। गिरजाघर और अपने घरों को सजाते हैं। उपहारों का लेनदेन होता है ।इस त्योहार का एक चरित्र सांताक्लॉज बच्चों को ढेरों उपहार बांटता है वह रेनडीयर से जुती स्लेज पर आता है । विश्व में सबसे बडी तादाद इसी त्योहार को मनाती है।

ईदः

यह मुस्लिमों का मुख्य त्योहार है । पवित्र रमजान में तीस दिन रोजे रखने के उपरांत चाँद दिखने पर इसे मनाते हैं। सिवैया बनाई जाती है। छोटों को ईदी के रूप में पैसे या उपहार देते हैं। इससे ठीक दो महीने बाद ईदुज्जुहा मनाया जाता है तथा बकरों की कुर्बानी

दी जाती है ये मुस्लिमों के अनिवार्य तथा लोकप्रिय त्योहार हैं

गुरूपर्वः

यह सिख्खों का मुख्य त्योहार है । सिख्ख शब्द शिष्य का अपभ्रंश है । गुरूगोविंद सिंह ने देश की रक्षा के लिये जो सेना बनाई थी। उनमें कुछ अनिवार्यताएं रखीं थीं केश, कंघी, कच्छ, कडा, और कृपाण, प्रत्येक सिख्ख को अपने पास रखना होता है। इस एकमात्र त्योहार को वे धूमधाम से मनाते हैं।

उपसंहारः

इन सभी के अलावा पारसियों, बहाई धर्म, के जैन धर्म, के अनेकों त्योहार हैं जो उसके धर्मावलंबी विश्व भर में मनाते हैं। धर्म जीवन का आधार होता है क्यों कि वही मानव को सत्य की ओर प्रेरित करता है। त्योहार धर्म से जुडे होते हैं अतः प्रत्येक व्यक्ति इसे पूर्ण आस्था से मनाता है । हमें प्रत्येक व्यक्ति के धर्म को आदर देना चाहिये और उसके धर्मावलंबीयों का सम्मान करना चाहिये यही हमारा कर्तव्य है और संविधान के अनुसार सहिष्णुता बनाए रखने का यही एक मात्र सिद्धांत है । इतने विशाल देश में एकता बनाए रखने के लिये परस्पर मैत्री और सौहार्द एक आवश्यक तत्व है जिसका हमें पालन करना चाहिये । मानव धर्म सर्वोच्च है यही हमसब को मानना चाहिये।

सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना

प्रस्तावनाः

कहाँ तो तय था चिराग हर घर के लिये

कहाँ चिराग मयस्सर नही शहर के लिये।

यहाँ दरख्तों के साये मे धूप लगती है,

चलो कहीं और चलें उम्र भर के लिये।

उपरोक्त पंक्तियाँ सामाजिक विषमता और असंतोष का वर्णन है। हमारा देश कई शताब्दियों से विषमताओं का शिकार रहा है और आज भी ये विषमताएं बनी हुई हैं।

पुराण में वर्णित है कि भगवान विष्णु के मस्तक से ब्राम्हण ,स्कधों से क्षत्रिय,जंघाओं से वैश्य और पैरों से क्षुद्रों का जन्म हुआ।बाद में इसे कार्य विभाजन की द्रष्टि से सुविधा के लिये किया गया विभाजन मान लिया गया।यही विचार हमारी जाति व्यवस्था के रूप में गहराई से जडें बढाता चला गया इसका रूप बिगड कर छुआ छूत में परिवर्तित हो गया।

छुआ छूत एक ऐसा सांप है जिसके हजार मुख हैं और प्रत्येक मुख में जहरीले दांत दिखाई देते हैं।

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी ने इसे दूर करने के लिये गंभीर प्रयास किये । उन्होने ही इन अछूत लोगों के लिये हरिजन नाम दिया । आजादी के बाद संविधान में उन्हे समान

अधिकार मिले। पहले उन्हे मंदिरों में जाना वर्जित था किन्तु अब उन्हे अधिकार है कि वे मंदिर में प्रभु की समान रूप से पूजा अर्चना कर सकें ।जो उन्हे अछूत समझ कर दुतकारते हैं वे कानून की द्रष्टि मे अपराधी है

इसके अलावा प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो सुदूर ग्राम्य क्षेत्रों से अज्ञान का अंधकार मिटे। सभी को बराबरी से अपनी कार्यक्षमता एवं श्रम के अनुकूल धन मिले ,सुविधाएं मिलें समाज में सभी को समान अधिकार मिले।

राष्ट्र के प्रति चेतना का अर्थ है हम सभी राष्ट्र के प्रति अपने अपने कर्तव्यों का निर्वाह करें । राष्ट्रीय सम्पत्ति की रक्षा करना स्वयं किसी प्रकार के भ्रष्टाचार में लिप्त न होना तथा यदि किसी भ्रष्टाचार का पता लगे तो उसकी सूचना संबद्ध अधिकारी तक पहुँचाएं, समय पर टेक्स चुकाएं। यदि राष्ट्र ने संविधान में हमे कुछ अधिकार दिये हैं तो हमें राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह भी करना चाहिये।

विषय वस्तुः

बुराई के प्रति असहयोग उतना ही बडा कर्तव्य है जितना अच्छाई के प्रति सहयोग।

महात्मा गांधी

राष्ट्र भूमि नदियाँ पहाड को नही कहा जाता । व्यक्तियों से मिलकर राष्ट्र का निर्माण होता है व्यक्ति एक इकाई है। प्रत्येक व्यक्ति के कर्म और राष्ट्र के प्रति

किए गए कर्तव्यों से राष्ट्र उन्नति करता है ,प्रगति करता है। राष्ट्र की कुछ मूलभूत समस्याएं हैं उनके निराकरण के प्रयास किस प्रकार किये जाने चाहिये ,किस प्रकार राष्ट्र को आपसी सहयोग से उन्नत बनाना चाहिये यह एक गंभीर विषय है, स्वयं से ऊपर उठ कर समाज और राष्ट्र की समस्यांएं सुलझाने का प्रयास ही सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना है।

जाति व्यवस्थाः सदियों से चली आ रही जाति व्यवस्था की बुराईयों को नष्ट करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है । बडे ही दुख की बात है कि हमारे नेतागण चुनाव में वोट पाने के लिये इसकी जडों को और मजबूत करते हैं। अंर्तजातीय एवं अंर्तप्रांतीय विवाह कर इसे पूरी तरह नष्ट करने के प्रयास किये जाने चाहिये।

धर्म एवं संप्रदायः

हमारे देश में कई धर्मो तथा संप्रदायों के लोग रहते हैं हमे सभी धर्मो का आदर करना चाहिये एवं सौहार्द बढाने में सहयोग करना चाहिये।

शिक्षाः हमारे देश में कई राज्यों और उनमें स्थित सुदूर गाँवों में अशिक्षा का अंधकार फैला है। यदि प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति एक अशिक्षित व्यक्ति को शिक्षा दे अथवा समर्थ लोग एन.जी.ओ.स्थापित कर शिक्षा का प्रसार करें तो सभी शिक्षित हो जाएंगे।

स्वास्थ्यः आज भी हमारे गाँवों में स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली ज्ञातव्य है । सरकारी अस्पतालों से दवाईयाँ बाहर निकल कर बिक जातीं हैं । हमें इस भ्रष्टाचार को रोकने के प्रयास करने चाहिये।प्रत्येक डॉक्टर को एक या

दो वर्ष गाँवों में जाकर काम करना चाहिये। अब हमारे देश में स्वास्थ्य विभाग ने यह नियम लागू कर दिया है और आशा है कि स्वास्थ्य सेवाओं पर इसका असर भी होगा और सुधार भी होगा।

अपराध रोकनाः

छोटा सा भ्रष्टाचार हो टेक्स चोरी हो सरकारी चीजों की चोरी हो अथवा चोरी डकैती अपहरण जैसे अपराध हों हमें रोकने के सकीय प्रयास करने होंगे।सर्व प्रथम हमें स्वयं पारदर्शी होना होगा तत्पश्चात जागरूक नागरिक की तरह भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों की सूचना देनी चाहिये। शिक्षा एवं रोजगार का प्रचार प्रसार होने पर अन्य अपराध भी कम होते होते नगण्य हो जाएंगे।

मताधिकार का सही प्रयोगः हमारे संविधान ने हमें अमूल्य मत देने का अधिकार दिया है हमें जाति पाँति से ऊपर उठ कर सही और कार्य करने वाले को विजय दिलानी चाहिये । यदि हमारा प्रत्याशी चुनाव जीतने के बाद कोई कार्य नही करता हो हमे उससे प्रश्न करना चाहिये ,उसकी गल्तियों को उजागर कर ,उसके भ्रष्टाचार को जनता के सामने लाकर ठोस जनमत तैयार करना चाहिये अगले चुनाव में उसे हरा देना चाहिये । इस प्रकार हम सभी प्रत्याशियों को ईमानदारी से कार्य करने के लिये प्रेरित करेंगे।

आतंकवादः यह एक ऐसी समस्या है जिसने हजारों निर्दोषों के प्राण ले लिये हैं। यह सच है कि यह सरकार का कर्तव्य है कि वह जनता की सुरक्षा करे किन्तु हमें भी जागरूक रहना चाहिये । अपने घर में

किरायेदार रखते समय ,नौकर रखते समय पुलिस से सत्यापन करा लें ,अपने क्षेत्र में घूमते अनजान व्यक्तियों की सूचना एवं किसी भी लावारिस सामान पेकेट की सूचना तुरंत पुलिस को देनी चाहिये ताकि आतंकवाद पर रोक लग सके।

राष्ट्रभक्तिः जब कोई क्रिकेट मॅच होता है तो हम सभी टी.वी. के इर्द गिर्द बैठ कर भारत की विजय की कामना करते हैं जब कोई रेल दुर्घटना होती है अथवा कोई बॉम्ब ब्लास्ट होता है अथवा कोई अन्य दुर्घटना होती है तो आसपास के सभी लोग मदद के लिये दौड पडते हैं उन्हे अस्पताल पहुँचाते हैं तो हम राष्ट्र के भ्रष्टाचार मिटाने के प्रयास क्यों नही करते ? अन्य बुराईयों को मिटाने का सकीय प्रयास क्यों नही करते?

उपसंहारः

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त अन्य छोटी छोटी बातों से हम राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। हम अपने घर को स्वच्छ एवं व्यवस्थित रखना पसंद करते हैं और घर का कूडा गली में फेंक देते हैं क्यों ?अपनी कॉलोनी अपना शहर अपना राज्य अपना राष्ट्र सभी कुछ आपको गर्वोन्नत करे क्या हमे इसके लिये प्रयास नही करने चाहिये? विकसित देशों के लोग सडक पर एक कागज का टुकडा भी नही फेंकते वे अपने देश को सुंदर रूप में देखना व दिखाना चाहते हैं। यदि देश का प्रत्येक नागरिक उपरोक्त बातों में सच्चे दिल से भागीदारी करे तो वह दिन दूर नही जब

विकसित देशों की श्रेणी में भारत का नाम भी अग्रिम पंक्ति में होगा।

20 आजादी के 62 वर्ष

प्रस्तावनाः

मूर्ति वंदनीय है इसलिये नही कि उसमे देवता है बल्कि इसलिये कि उसने तराशे जाने का दर्द सहा है।

रमेश तिवारी

भारत भी एक ऐसा ही देश है जिसने वर्षों तक अलग अलग लोगों की गुलामी को सहा ,अत्याचार सहन किए रक्तपात देखे अपनो की शहीदी देखी । भारतमाता हमारी जन्म भूमि वर्षों तक गुलामी की बेडियाँ पहने रही और कई हजार शहीदों के बलिदान के बाद 15 अगस्त 1947 को आजाद हुई। इसीलिये कहते हैं इसी की गोद में हमारा जन्म होता है इसी मिट्टी में हम पलते बढते हैं समर्थ होते हैं और अंत में इसी में समा जाते हैं।हम सभी के मन में अपने राष्ट्र के प्रति इतनी निष्ठा तो होती ही है कि हम राष्ट्र के अभिमान और राष्ट्र के अपमान को समझते हैं।

आजादी दिलाने वाली पीढी देश सेवकों की पीढी थी।जब सारे देश के युवाओं ने चाहे वे स्त्री हों या पुरुष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आजादी के इस संग्राम में भाग लिया। उसके बाद के भारत ने दो पीढीयों को देखा जिन्होने आजाद भारत में अपने तिरंगे तले अपनी सरकार का राज देखा। हम 62 वर्षों में भारत की

बहुआयामी स्थिति का अवलोकन निम्न प्रकार से कर सकते हैं

विषयवस्तुः

जो कुछ हम करते हैं केवल उसी के लिये हम उत्तरदायी नही होते बल्कि जो कुछ नही करते उसके लिये भी उत्तरदायी होते हैं।

मोलियर

एक लंबे कष्टपूर्ण संघर्ष के बाद जब देश को आजादी मिली तो सारा देश हर्षोल्लास में डूब गया । बँटवारे के जख्म अभी ताजे ही थे जब भयानक मारकाट हुई थी और वे लोग जो स्वतंत्रता संग्राम के समय एक दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर लडे थे ,बँटवारे में एक दूसरे के प्राणों के प्यासे हो गए थे। दोनो ओर के कई लोग मारे गए थे। भारत और पाकीस्तान दोनो देशों की नींव ही रक्त रंजित शवों पर रखी गई थी।

कृषिः फिर भी अपना देश अपनी सरकार के उल्लास ने आँखों की नमी को कम कर दिया। भारत मूल रूप से कृषि प्रधान देश है किन्तु आज 62 वर्षो के बाद भी भारत का कृषक गरीब है ,कर्ज में डूबा हुआ है और कृषकों की आत्म हत्याओं की संख्या पिछले तीनचार वर्षो मे ही हजारों में दर्ज है तो मन में यह प्रश्न उठता है कि 62 वर्षो में हम अपने कृषक को भी खुशहाल न कर सके। वह हमारे लिये सर्दी गर्मी और बरसात में हमारे लिये खेतों पर काम करता है किन्तु सरकार अत्यंत कम कीमत पर उसकी ऊपज खरीदती है ।उसे बेंकों से ऋण दिलवाया जाता है और उसकी वसूली के

लिये बेंक अपने ट्रेंड गुंडे भेजता है जो पिस्तौल दिखा कर उसे धमकाते हैं।बेचारे किसान के पास आत्महत्या के सिवाय कोई रास्ता नही बचता।

उद्योगः जब विश्व में औद्योगिक कांति हुई तो भारत में भी उसका प्रकाश पहुँचा किन्तु विदेशी कंपनियों के आने से पूर्व अधिकांश उद्योग बीमार थे । न तो वे विश्व स्तर का माल तैयार कर रहे थे न ही उनके पास नवीनतम मशीने थीं अतः कई शहरों की कई मीलें बंद हो गईं थीं कुछ आज भी बंद होने के कगार पर हैं।क्यों कि यह अब बडे बडे उद्योगों टाटा बिडला रिलायंस विप्रो इत्यादि के बस में ही रह गया है और वे विश्व स्तर में अग्रिम श्रेणी में हैं।उन्होने देश के कई लोगों को रोजगार दिया है। भारत की अर्थ व्यवस्था को मजबूत होने का श्रेय इन्ही उद्योग पतियों को जाताहै। अब भारत विश्व के सभी विकसित देशों के लिये आकर्षक बाजार बन चुका है।

शिक्षाः अंग्रेजों ने भारत में ऐसी शिक्षा प्रणाली लागू की थी जिससे क्लर्क ही उत्पन्न हो सकते थे । लॉर्ड मेकॉले इस प्रणाली के जन्म दाता थे। उन लोगों ने ऐसा इसलिये किया कि सभी अंग्रेज उच्च पदों पर आसीन हो सकें और भारतीय उनके नीचे काम करें। देश आजाद हुआ पर देश के नेताओं को कभी इस पद्धति को बदल देने का ख्याल नही आया हाँ मेडीकल एवं इंजिनियरिंग कॉलेजों की संख्या पर्याप्त थी पर वह महंगी शिक्षा थी जो उच्च वर्ग ही अपने बच्चों को दे सकता था। धीरे धीरे इनमें भी भ्रष्टाचार बढने लगे और डॉक्टर इंजिनियर भी नौकरियों के लिये विदेश

पलायन करने लगे। पिछले दस वर्षों में मल्टी नेशनल कंपनियों ने देश के युवाओं को बडी तादाद में नौकरियाँ दीं और उन्हे किसी उच्च शिक्षित डिग्री होल्डर की नही बल्कि कंम्प्यूटर के ज्ञान व अंग्रेजी धाराप्रवाह बोलने वालों की आवश्यकता थी।युवाओं ने अवसर को पहचाना और भारी तनख्वाह पर सरकारी नौकरियों के बजाए इन नौकरियों को प्राथमिकता दी। अब वे पुरानी शिक्षा प्रणाली द्वारा स्थापित डिग्रियाँ नही लेते बल्कि व्यावसायिक शिक्षा लेते हैं जिसके संस्थान पिछले दस वर्षों से तेजी से स्थापित हुए हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत के सरकारी स्कूलो की स्थिति दयनीय है 29 प्रतिशत स्कूलों में छतें नही हैं, 42 प्रतिशत स्कूलों में पेयजल उपलब्ध नही है, 42 प्रतिशत स्कूलों में टॉयलेट नही हैं जबकि जी.डी.पी.का 4 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया जाता है।

स्वास्थ्यः स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली हम सभी जानते हैं ।सरकारी अस्पतालों में दवाईयाँ तो दवाईयाँ बिस्तर तक गायब हो जाते हैं । निष्णात डॉक्टरों को अर्थात निपुण डॉक्टरों को सरकार जो तनख्वाह देती है उसे सुन कर मन व्यथित हो जाता है। जब महंगाई का ग्राफ दिनों दिन ऊपर जा रहा हो नेताओं की तनख्वाह और सुविधाएं लाखों तक बढ चुकीं हों जीवन रक्षक डॉक्टरों को इतनी कम तनख्वाह शर्मिंदगी की बात है इसीलिये अधिकांश डॉक्टर विदेश का रूख कर रहे हैं। देश में जब तब होने वाले किडनी रेकेट या अंग काट कर भिखारी बनाने की घटनाएं डॉक्टरी के कार्य पर काला धब्बा है जिसने हमारा सर झुकाया है। पिछले

कुछ वर्षों में प्रायवेट अस्पतालों ने विश्व स्तरीय सेवाएं दीं हैं । सरकारी अस्पतालों में जो श्रेष्ठ हैं और नामी हैं मेनेजमेंट और उनपर नेताओं के प्रभाव के कारण होने वाले टकराव से स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित होती रहतीं हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार आज भी देश में 6 लाख डॉक्टरों और 10 लाख नर्सों की आवश्यकता है।

अन्यः

इन सभी के अलावा जनसंख्या की तादाद मिलियन के पार होना गाँवों में जीविका के साधनो की कमी, आवास की कमी बिजली की अत्याधिक कमी शुद्ध और अच्छे पेयजल की व्यवस्था न होना महंगाई बढना नेताओं का गंभीरता से जनता की समस्यांओं को निपटाने का प्रयास न करना,सुरक्षा का अभाव आतंकवाद के आए दिन होने वाले हमले और शिकार होते निर्दोष मासूम लोग भ्रष्ट और अंग्रेजों के समय ही लागू की हुई पुलिस व्यवस्था आदि इतनी समस्यांएं हैं कि आम भारतीय बडी मुश्किल से ही जीवन जीता है।

उपसंहारः भारत की अर्थव्यवस्था की दिखती हुई द्रढता महानगरों बडे शहरों में दिखती मॉल संस्कृति बढती कारों की संख्या लोगों की कय क्षमता का बढना सभी कुछ मात्र 30 या 33 प्रतिशत लोगों को उपलब्ध है ,असली भारत आज भी जहाँ 70 प्रतिशत जनसंख्या रहती है गरीब है । वे अज्ञानी और अशिक्षित भी हैं । गाँवों से शहर आकर नौकर बनने वाले लोग भी लूट और हत्या जैसे जघन्य अपराध करते हैं क्यों कि वे भी

जल्दि से जल्दि अमीर बनना चाहते हैं । इतनी बातें जान लेने के बाद क्या हम कह सकते हैं कि भारत ने विकास किया है ।क्या हमें शहरों की चमक दमक देखते रहना चाहिये और गरीबों को देख कर आँखें बंद कर लेनी चाहिये।

21 कृषि का महत्व

प्रस्तावनाः तब तक ही भय से डरना चाहिये जब तक वह पास नही आता परन्तु भय को अपने पास आता देख प्रहार करना ही उचित है।

चाणक्य

संसार में अलग अलग जगहों पर अलग अलग सभ्यताओं का विकास हुआ और इस विकास में वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों का बडा हाथ रहा। यदि कहीं बर्फीला प्रदेश है तो वहाँ कोई ऊपज नही हो सकती,कहीं मरुस्थल है रेगिस्तान है तो वहाँ भी कोई ऊपज नही हो सकती किन्तु वहाँ भी मानव का विकास हुआ।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ सभी ऋतुओं का गमन आगमन होता रहता है, उपजाऊ भूमि है ,नदियाँ हैं नदी किनारे उपजाऊ समतल हैं पहाड हैं समुद्र हैं । खनीज का अमूल्य भंडार भी हैं।

कंदराओं में रहने वाले पत्थरों को नुकीला बनाकर उनसे आखेट कर पशुओं का कच्चा मांस खाने वाले मानव को जब स्वयमेव उत्पन्न अनाज के दाने दिखे और वे उसे स्वादिष्ट लगे,उसने बचे हुए दानों को छुपा कर

जमीन मे दबा दिया और उनसे फिर कोंपलें फूटीं अनाज की बालियाँ लहलहाईं तो उसे कृषि का ज्ञान हुआ । उसने उस भूमि पर अपना अधिपत्य जमा लिया और उसके जीवन में स्थायीत्व भी आ गया।वह अब अपनी जमीन के पास झोंपडी बना कर रहने लगा।पहले उसके जीवन में स्थायित्व नही था आखेट का पीछा करते करते जहाँ जा पहुँचता वहीं रह जाता।

म्यूजियम में आज जब हम हजारों वर्ष पहले की मोहनजोदडों और हडप्पा की सभ्यताओं के अवशेष देखते हैं तो हमें आश्चर्यचकित हो जाना पडता है। न सिर्फ मिट्टी के बर्तन दिखते हैं बल्कि तांबें के बर्तन भी दिखाई देते हैं। वहाँ हमें गेहूँ के जले हुए दाने भी दिखाई देते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि या तो वे जंगल में लगी आग से जले या ज्वालामुखी के लावे से जले किन्तु यह सत्य है कि मानव पूर्ण विकसित था।वह कृषि करता था। उसने सभ्य एवं पूर्ण विकसित नगर बनाए थे जिनमे स्नानागार और जल निकास की समुचित व्यवस्था थी। तांबे की बनी नर्तकी की मूर्ति बताती है कि वे मनोरंजन पर भी पूरा ध्यान देते थे।

विषय वस्तुः

उघमेन कि सिध्यन्ति कार्याणि न मनौरथे ,

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगः ।

उघम अर्थात मेहनत से ही कार्य सिद्ध होते हैं सोए हुए सिंह के मुख में मृग स्वयमेव प्रवेश नही करता ,जंगल के राजा को भी अपनी भूख मिटाने के लिये श्रम

करना पडता है।आखेट करना पडता है तभी वह अपनी भूख मिटा पाता है।

कृषि एक अत्याधिक श्रम साध्श कार्य है । आज जब सारा संसार विकसित हो चुका है और जिन जिन ऊपजों की जहाँ जहाँ कृषि होती है वह पूर्ण विकसित वैज्ञानिक तरीकों से होती है । वैज्ञानिक विधि से जाँचे परखे

उपकरणों द्वारा होती है। उनके पास अच्छे उर्वरक भी होते हैं जिनसे बहुत अच्छी नस्ल की फसलों की प्राप्ति होती है। कृषि मानव के लिये अति आवश्यक है क्यों कि भोजन हर व्यक्ति के लिये जरूरी है चाहे वह कितने भी विकसित देश का या अविकसित देश का निवासी हो । अच्छी नस्ल के पशुओं गाय भैंस के लिये भी अधिक दूध प्राप्त करने के लिये कुछ ऊपजों की आवश्यकता होती है।

हमारे देश में मुख्यतः दो फसलें होतीं हैं। रबी और खरीफ की फसल हमारे देश में गेंहूँ चावल ज्वार बाजरा मक्का गन्ना कपास मूंगफली सभी प्रकार की दालें तिल सरसों तथा सभी प्रकार की सब्जियाँ उगाई जातीं हैं। आसाम में मुख्यतः चाय के बागान हैं । पंजाब सर्वोच्च स्थान पर है जहाँ गेहूँ और चावल की बहुतायत में पैदावार होती है।पंजाब से लगभग सभी प्रदेशों में अनाज भेजा जाता है। हमारे यहाँ महाराष्ट्र में कपास की खेती की जाती है। सरकार द्वार समर्थित मूल्य समुचित न होने के कारण एवं वर्षा पर निर्भर रहने के कारण महाराष्ट्र में कृषकों की स्थिति दयनीय होती चली

गई ।पिछले तीन चार वर्षों में कृषकों द्वारा की गई आत्महत्याओं का आँकडा हजारों तक जा पहुँचा है यह न सिर्फ चिंतनीय विषय है वरन गंभीर रूप से विचारणीय भी है । इसका कारण यह रहा कि सरकार ने कृषकों को बेंकों के मार्फत कर्ज दिला दिया और उचित फसल न होने के कारण कृषक वर्ग उसे चुका न सका, तब बेंकों ने उन्हे वसूल करने के लिये अपने गुण्डे भेज कर पिस्तौलें दिखा कर उन्हे डराया धमकाया ।सरकार करोडों करोड रूपयों के सहायता पॅकेज की घोषणा कर चुकी है ,कर्ज माफी की बात भी कह चुकी है किन्तु भ्रष्ट व्यवस्था में आदेश और उसके पालन तक के रास्ते में कई छिद्र हैं अतः कृषकों तक सहायता नही पहुँच पाती ।

कितनी ग्लानि की बात है कि जो कृषक सबका पेट भरने के लिये जाडा गर्मी बरसात हर मौसम में खेतों में कठिन परिश्रम करता है उसे आवश्यक सहुलियत भी हम नही दे पाते हैं। अधिकांश गरीब किसान वर्षा पर निर्भर करते हैं। उनके पास सिंचाई के अन्य साधन नही हैं। जब विज्ञान इतनी प्रगति कर चुका है कि प्रयोगशाला में मिट्टी के उपजाऊ होने का स्तर पता लगाया जा सकता है, अच्छे से अच्छे उर्वरक और अच्छे से अच्छे नस्ल के बीज पाए जा सकते हैं तो कृषि प्रधान होते हुए भी हमारे देश की कृषि व्यवस्था इतनी पिछडी हुई क्यों है? क्यों कृषक आत्महत्या करने को बाध्य हैं।आत्म हत्या की घटनाएं महाराष्ट्र में ही नही आंध्र और पंजाब में भी हुई हैं।

बढती हुई जनसंख्या के कारण धीरेधीरे कृषि भूमि की मात्रा कम होती जा रही है । बडे बडे उद्योगों की स्थापना के लिये भी कई कई एकड भूमि अधिग्रहित कर ली जाती है और कृषकों को पर्याप्त मुआवजा भी नही मिल पाता । कृषक को धरती पुत्र कहा जाता है वही है जो धरती से सीधे तौर पर जुडा रहता है यही धरती पुत्र आज पैबंद लगे कपडों में झोंपडी नुमा घर में रहता है । महानगरों और शहरों का विकास और जंगलों को काट कर तैयार किये गए सिमेंट के जंगल बहुमंजिला इमारतें और मॉल में चहकते लोग इन सभी से अप्रभावित कृषक निरंतर हमारा पेट भरने के लिये श्रम करता रहता है। वह इतना दयनीय क्यों हैं?

उपसंहारः

लाखों रूपयों तक जा पहुँची नेताओं की तनख्वाह ,करोडों और अरबों का व्यापार करने वाले बडे बडे उद्योगपति ,बडी बडी विदेशी कंपनियों का फैलता साम्राज्य क्या किसी को फुर्सत है कि वह भारतीय कृषक के बारे में कुछ सोच सके । नही ! किसी के पास इतना समय नही है जब स्वयं कृषि मंत्री ही इस बारे में सही कदम न उठाएं अथवा कृषि के विकास के बारे में जागरूक न हों अथवा कृषकों को मिलने वाले समर्थित मूल्य में वृद्धि करें । कहीं ऐसा न हो कि कृषक की आने वाली पीढीयाँ कृषि छोड कर शहरों का रूख कर लें

प्रस्तावनाः

विज्ञान उसे कहते हैं जिस ज्ञान को या जिन तत्थ्यों पर प्रयोग शाला में प्रयोग किए जांए और परिणाम हर बार एक सा आए। भारत को एक पिछडा हुआ देश माना जाता था किन्तु शून्य और दशमलव के आवीष्कार शताब्दियों पहले भारत में हुए ज्योमेट्री जो ज्यामिती का ही समानार्थी शब्द है,ट्रिग्नॉमेट्री जो त्रिकोण मिती का समानार्थी शब्द है, दशमलव और डेसीमल सभी कुछ भारत की देन है। खगोल ज्ञान में भी भारत ही अग्रणी रहा है। चरक और आर्यभट्ट से बसु और वेंकट रामन जैसे वैज्ञानिकों की जन्म भूमि भारत ही रहा है श्री राम का पुष्पक विमान यदि सत्य था तो निश्चित रूप से विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी था।

जीवन के नियम आवश्यकता पर आधारित है और उसका आकर्षण आवश्यकताओं पर।

हेनरी

विषयवस्तुः

विश्व के कई देशों ने विज्ञान की गति को आगे बढाया है।मानव बुद्धिमान भी है और कल्पनाशील भी । जब जब उसने दोनो का एक दूसरे के लिये प्रयोग किया संसार के सामने एक नया चमत्कार आया।

टेलीफोनः ग्राहम बेल ने टेली फोन का आवीष्कार किया था जो विकसित होते होते छोटा सा मोबाईल बनकर हमारी जब या पर्स में समा गया।एक छोटे से माईक्रोचिप से हम विश्व के एक कोने से दूसरे कोने

तक बात कर सकते हैं एस. एम. एस. कर सकते हैं संगीत का आनंद ले सकते हैं फोटो खींच सकते हैं और हाल ही में आए विकसित मोबाईल में इंटरनेट का प्रयोग भी कर सकते हैं।

टेलीविजनः रेडियो ट्रांजिस्टर के मार्ग का विकसित रूप टेलीविजन है । इसमें हम अपनी मनपसंद के ढेरों चॅनल्स देख सकते हैं हम क्रिकेट या फुटबॉल का मॅच लाईव देख सकते हैं और अप्रत्यक्ष होते हुए भी प्रत्यक्ष रूप से इसका आनंद ले सकते हैं।

कंम्प्यूटरः सर्वाधिक तीव्र गति से चलने वाले सुपर कम्प्यूटर का आवीष्कार भारत मे ही हुआ था।भारतीय कंम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त इंजिनीयर्स विश्व के विभिन्न देशों में अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। कम्प्यूटर में भी माईक्रोचिप का प्रयोग होता है और कई व्यक्तियों का घंटों का काम कम्प्यूटर मिनिटों में कर देता है।हमारे देश में भी बेंकों का रेल्वे का रिजर्वेशन केन्द्रों स्कूलों कॉलेजों अन्य सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कम्प्यूटर के प्रयोग किये जाते हैं।

इंटरनेटः यह कम्प्यूटर के माध्यम से आवीष्कृत किया गया एक अगला कदम है इसने सम्पूर्ण विश्व को एक छोटे से माईक्रोचिप में समेट दिया है ।मात्र चंद क्षणों में हम टाईप करके अपना संदेश अपने प्रियजनों तक संसार के दूसरे कोने तक पहुँचा सकते हैं। टाईप करके ही प्रश्नोत्तर के रूप में चॅटिंग कर सकते हैं वेब कॅम के द्वारा उसे उसके कमरे में बैठा चाय पीते नाश्ता करते देख सकते हैं और वह हमें देख सकता है, हेड फोन

लगा कर उसकी आवाज सुन सकते हैं। हम अपने बिजली टेलीफोन के बिल जमा करना ,बेंक का स्टेटमेंट जाँचना सिनेमा की या रेल्वे की टिकिट बुक करना सभी कुछ कर सकते हैं।इसके अलावा विभिन्न साईट्स पर विभिन्न बातों का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह ज्ञान एडवांस्ड है इसलिये इसके सामने पुस्तकें भी गौण सी प्रतीत होतीं हैं। हम एक दूसरे को फोटो भेज सकते हैं और ऑरकूट जैसी साईट् पर लोगों के बारे में जान सकते हैं अपनो से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

ए.सी.एवं रेफ्रीजरेटरः फ्रीज आज घरघर में मौजूद है । इसमें हम दूध फल सब्जियाँ काफी लंबे समय तक ताजी रख सकते हैं आज यह प्रत्येक घर का एक आवश्यक उपकरण है। ए.सी. कमरे को कृत्रिम रूप से ठंडा रखने का उपकरण है गर्मीयों में यह राहत पहुँचाता है।

माईक्रोवेवः यह एक ऐसा उपकरण है जो खाना अपेक्षाकृत कम समय मे पकाता है साथ ही खाने को चंद सेकेंड्स में इतना गर्म कर देता है कि यह नही कह सकते कि यह अभी पका हुआ नही है और न ही खाने का स्वाद परिवर्तित करता है।

ग्रिलर और ओवनः ग्रिलर में आप ब्रेड तथा अन्य खाने पका सकते हैं केक तथा कोई भी सब्जी या किसी भी प्रकार का रोस्टेड खाना पका सकते हैं।

वॉशिंग मशीनः यह भी आज घर घर की जरूरत है । वॉशिंग मशीन में वॉशिंग पाऊडर डाल कर मैले कपडे डालकर मशीन चलाने का बटन दबा दें बाद में आप भले ही इसे भूल जाएं पर यह अपना काम करती रहेगी

और कपडों को धो कर सुखा कर घंटी बजा कर आपको कार्य पूर्ण हो जाने की सूचना दे देगी।

हवाई जहाजः हाल ही में एक विशालकाय डबल डेकर हवाई जहाज बनाया गया है। जिसमें जहाज की तरह रेस्त्रां इत्यादि भी हैं। राईट बंधु पहले दो व्यक्ति थे जिन्हे उडने की इच्छा हुई और उन्होने पहला विमान बनाया आज हम विभिन्न प्रकार के तीव्र गति के युद्ध में काम आने वाले विमानो तक का आवीष्कार कर चुके हैं। हजारों मील का सफर हवाईजहाज ने चंद घंटों में समेट दिया है।

टेस्टटच्यूब बेबीः यह एक कल्पनातीत बात है जिसमें उन माताओं को मातृत्व मिला जो मॉं नही बन पा रहीं थीं। आज की तारीख में सेरोगेट मदर का प्रचलन बढ गया है जिसमें इसी पद्धति से किराये की कोख में बच्चे को नौ माह रख कर जन्म कराया जाता है। इसी क्षेत्र में प्रगति करते हुए व्यस्त दंपति अपने स्पर्म को वर्षों तक सुरक्षित रखने की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

क्लोनः वैज्ञानिकों ने एक व्यक्ति के डी.एन.ए. से वैसा ही दूसरा व्यक्ति बनाना चाहा किन्तु विश्व के सभी बुद्धिजीवियों ने इसका विरोध किया तब उन्होने डॉली नामक भेड का क्लोन बनाया नाम रखा गया मॉली आगे भी कई प्रयोग पशुओं पर किये गए। यह जेनेटिक्स की दुनिया का कांतिकारी कदम है।

उपसंहारः

वैज्ञानिकों ने दिन रात खोज करके कई दुसाध्य रोगों की दवाईयों को खोज निकाला किन्तु वैज्ञानिक खोजों

में कई दोष भी हैं। फीज और एयर कंडीशनर से निकलने वाली गैस ने पृथ्वी की सुरक्षा कवच ओजोन परत में छिद्र कर दिया है।ओजोन सूर्य से निकलने वाली हानिकारक किरणों को छान कर पृथ्वी तक पहुँचाती है । वैज्ञानिक इस बात से अत्यंत चिंतित हैं कि सूर्य की अल्ट्रा वायलेट किरणें यदि सीधी पृथ्वी तक पहुँची तो कई तरह के स्किन केंसर्स होने का खतरा मानव प्रजाति पर आ जाएगा।वैज्ञानिक निरंतर इस बात का प्रयास कर रहे हैं कि इस छिद्र को बंद कर दिया जाए। इसके अलावा अंतरिक्ष में सेटेलाईट स्थापन ,चँद्र एवं मंगल ग्रह तक मानव ने पहुँच कर वहाँ की भूमि जल वायु इत्यादि का पता लगा लिया है वह दिन दूर नही जब मनुष्य रहने के लिये दूसरे ग्रह की तलाश भी कर लेगा और लोग वहाँ जाकर रहना भी शुरू कर देंगे। अब कुछ भी असंभव नही लगता।

23 भारत के दो रंग ...एक कटु सत्य

प्रस्तावनाः

ज्ञानी पुरूष विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से ,अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से।

सिसरो

भारत एक अत्यंत विशाल देश है जो आजादी से पहले भी छोटी छोटी रियासतों में बँटा हुआ था और आजादी के बाद इसे शासन व्यवस्था की सुविधा के लिये विभिन्न प्रांतों में बाँट दिया गया था। यह हम सभी

जानते हैं कि भारत ने वर्षों तक गुलामी के संघर्ष को भोगा,लंबी लडाई लडने के बाद ही देश आजाद हुआ।असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों ने इस आजादी की लंबी लडाई में अपने प्राणों की आहूति दी। जब देश आजाद हुआ तो पूरे देश में हर्ष की लहर छा गई।पंडित जवाहर लाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने एवं डॉ राजेन्द्र प्रसाद प्रथम राष्ट्रपति बने। भारत एक लोकतंत्र राष्ट्र बना और संविधान सभा ने एक संविधान का निर्माण कर उसे लागू किया।

जब अंग्रेज भारत में थे तब भी एक ऐसा वर्ग देश में मौजूद था जो अंग्रेजी तौर तरीके से जीवन को जीना पसंद करता था। यह धनवान लोगों का वर्ग था जो अंग्रेजों को पसंद करता था। इसी वर्ग के लोगों को सर रायबहादुर जैसी उपाधियाँ अंग्रेजों द्वारा दी गईं थी। इनके रहन सहन में और अंग्रेजों के रहन सहन में विशेष फर्क न था।इनके बच्चे उस समय भी विलायत जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे,डिग्रियाँ हाँसिल करते थे।

दूसरा वर्ग गरीबों का था, देशभक्तों का था । वे जिन्होने अंग्रेजों के अत्याचार सहे जेलों में लंबे लंबे समय तक रहे । वह वर्ग जो किसान था छोटे मोटे व्यापारियों का था अथवा युवकों का जो शिक्षा प्राप्त कर रहा था। अंग्रेजों द्वारा स्थापित कार्यालयों में अपमान सहते रहने के आदी कर्मियों और अंग्रेजों की सेना में कार्यरत भारतीय सिपाहियों के मन में भी विद्रोह की आग धीरे धीरे सुलगती रहती थी। देश आजाद हुआ तो ये दोनो वर्ग और इन वर्गों की आने वाली पीढीयाँ ज्यों की त्यों बनी रहीं।

विषय वस्तुः

जो व्यक्ति भलाई से प्रेरित होकर भलाई करता है वह न तो प्रशंसा का अधिकारी है न पुरस्कार का,यद्यपि दोनो स्वतः ही उसे प्राप्त हो जाते हैं।

विलियम पेन

उपरोक्त पंक्तियों में जो बात कही गई है वैसे लोग आज भारत में कहीं दिखाई नही देते ,वे भी जिनका कर्तव्य लोगों की भलाई करना है,वे जिन्हे जनता ने अपनी ही समस्याएं सुलझाने के लिये ही अपना प्रत्याशी बनाया उन्हे भारी मतों से विजयी बनाकर देश की सर्वोच्च संस्था तक पहुँचाया। वे वहाँ पहुँच कर अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं।

तुलनात्मक अध्ययनः

आर्थिक स्तरः

कृषिः कृषि के क्षेत्र में भी धनी और दबंग कृषक सफल हैं।गरीब किसान आज भी पुराने तरीकों से खेती करता है,कम फसल उगा पाता है, कर्ज नही चुका पाता है। या तो जैसे तैसे निर्वाह कर रहा है या आए दिन उनकी आत्महत्याएं अखबारों और टेलीविजन की सुर्खियाँ बनी रहतीं हैं।धनी व्यक्ति के पास सभी विकसित संसाधन भी होते हैं।सरकार के नेताओं और अफसरों से भी उनकी सांठगांठ होती है जो उनकी ऊपज का सही मूल्य दिला देते हैं।

उद्योगः

महात्मा गांधी ने कुटीर उद्योगों को बढावा दिया था । उन्होने कहा था कि ये स्वदेशी के प्रतीक हैं वे स्वयं चरखे पर सूत कात कर कपडे बना कर पहनते थे।देश में कई छोटे उद्योग चलते थे पीतल तांबे के बर्तन तालों का काम कश्मीर में अखरोट की लकडी के खिलौने व अन्य सामान ,बनारसी साडियाँ चंदेरी माहेश्वरी कांजीवरम इत्यादि साडियों के उद्योग आज भी वैसे ही नही हैं जैसे हुआ करते थे।इनमें से कई बडी मुश्किल से अंतिम सांसें ले रहे हैं।कई बडी कपडा मीलें बंद हो चुकीं हैं,बिक चुकीं हैं क्यों कि बडे उद्योगपतियों ने ज्यादा अच्छा और सस्ता माल बना कर मार्केट में उतार दिया है।विदेशी कंपनियों को भी भारत में उत्पादन सस्ता पडता है सस्ते कारिगर मिल जाते हैं तथा लागत कम पडती है।इसके अलावा यदि बाजार मे चायना का सस्ता माल बेहतरीन और बहुत सारी रुचि के अनुसार मिल जाए ,हर तरह की चीज उपलब्ध हो तो देशी उत्पाद जिनका स्तर अच्छा न हो कौन खरीदेगा?

शिक्षाः अंग्रेजों द्वारा स्थापित शिक्षाप्रणाली भी वैसी ही चलती रही और निरर्थक डिग्रियाँ लिये बेरोजगारों की भीड बढती चली गई । जो सम्पन्न थे वे ही डॉक्टर इंजिनियर बन पाते थे। अंग्रेजों के समय से लेकर आज तक शिक्षण संस्थाओं का विभाजन वैसा ही बना हुआ है। गरीबों के लिये नगरनिगम के सरकारी स्कूलों में और सम्पन्न लोगों के बच्चों के लिये अंग्रेजी माध्यम वाले पब्लिक स्कूल । मल्टी नेशनल कंपनीज के आने के बाद से व्यावसायिक शिक्षा संस्थान खुले हैं एवं लॉर्ड मेकॉले द्वारा स्थापित परंपरागत शिक्षा छोड कर इस

प्रकार की व्यवसायिक शिक्षाका प्रचलन न सिर्फ उच्च वर्ग बल्कि उच्च मध्य वर्ग एवं निम्न मध्य वर्ग में भी शहरों की ओर पलायन करके आ रहे हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार 22 प्रतिशत सरकारी स्कूलों में कम्प्यूटर नही हैं, 25 प्रतिशत कॉलेजों में अध्यापकों की कमी है। शिक्षा सिर्फ शिक्षा के लिये न हो बल्कि अर्थव्यवस्था मजबूत बनाने की सीढी हो। हमारे देश में आज भी 1 प्रतिशत बच्चे कॉलेज तक पहुँचते हैं।

स्वास्थ्यः स्वास्थ्य सेवाओं में भी गाँवों की स्थिति बदतर है । गंभीर रोगों के इलाज के लिये उन्हे शहर आना पडता है। देश की राजधानी में कुछ सरकारी अस्पतालों में गाँव वालों की भीड जुटी रहती है । धनपतियों के लिये तो अच्छे से अच्छे विकसित अस्पताल मौजूद है जो पाँच सितारा हॉटेल की तरह होते हैं। धनपति वहाँ अपना महंगे से महंगा इलाज कराते हैं।

रोजगारः गाँवों में रोजगारों की सख्त कमी है । जिन प्रदेशों में मल्टी नेशनल कंपनीज के या बडे उद्योग पतियों के बडे बडे कारखाने हैं वहाँ भले ही लोगों को रोजगार उपलब्ध हैं । प्रतिभाशाली युवक गाँवों से शहर आ जाते हैं ताकि मल्टी नेशनल कंपनीज के द्वारा स्थापित संस्थाओं में कार्य कर सकें। गरीब भी लाखों की संख्या में शहर आ जाते हैं ताकि रिक्शा चला कर ,घरेलू नौकर ,मजदूर बनकर आजीविका कमा सकें।

उपसंहारः सरकार के लिये हर व्यक्ति एक वोट है जिसकी आवश्यकता उसे हर चुनाव में पडती है । ढेर

सारी पार्टियाँ हैं सभी चुनावों के समय तरह तरह के प्रलोभन देकर इनको अपनी ओर खींचने का प्रयास करतीं हैं लेकिन सच्चे ह्रदय से कोई इनका हितचिंतक नही होता है । पिछले ढाई दशकों से दिनो दिन तेजी से फैलता आतंकवाद भारत के हर कोनेमें कई लोगों को निगल चुका है लेकिन कोई ठोस उपाय सरकार कर नही पाई क्यों कि वे स्वयं तो बख्तरबंद गाडियों में घूमते हैं मारी जाती है आम जनता। अर्थव्यवस्था की द्रढता का सार श्रेय भी बडे उद्योगपतियों मल्टी नेशनल कंपनीज के निवेशा और विदेशों में रहने वाले भारतीयों को जाता है।मॉल संस्कृति मल्टी प्लेक्स संस्कृति मात्र 30 प्रतिशत है जो असली भारत गाँवों में बसा है वहाँ बिजली का होना न होना बराबर है, शुद्ध पेय जल नही है, अज्ञान है अशिक्षा है और अपराध का राज है।

24 समाचार पत्र

प्रस्तावनाः

In character,in manners,in style,in all things the supreme excellence is simplicity.

Longfellow

अंग्रेजी में समाचार पत्र को NEWS PAPER कहा जाता है

N—North,E---East,W---West,S----Southका प्रतीक है। चारों दिशाओं का ज्ञान देने वाले पत्र को समाचार पत्र कहा जाता है।जिज्ञासा मानव की प्राथमिक भावना है क्यों कि इसी भावना से प्रेरित होकर वह अपनी बुद्धि और कार्य क्षमता का उपयोग करते हुए प्राप्तियाँ करता है।

मनुष्य का शिक्षित होना सिर्फ डिग्री या रोजगार हॉसिल करने तक सीमित नही माना जा सकता है।उसे समस्त विश्व की तमाम मुख्य जानकारियॉं हों, देश की समस्याओं का, देश में प्रतिदिन होने वाली घटनाओं की जानकारियॉं भी होनी चाहियें और उनका सबसे प्राचीन और ठोस साधन है समाचार पत्र।

विषय वस्तुः

यह ज्यादा अक्लमंदी की बात है कि हम उस ऊपरवाले की बातें कम करें जिसे देखा नही और इंसानों की बातें ज्यादा करें जिन्हे हम अच्छी तरह जानते हैं।

खलील जिब्रान

समाचारपत्रों का इतिहास काफी पुराना है। संसार का पहला समाचार पत्र हाथ से लिखा गया था।यह विचारों के प्रसार का एक सशक्त माध्यम है।आज जब टी.वी. पर चौबीसों घंटे समाचारों का प्रसारण होता है तब भी न तो समाचार पत्रों संख्या में कमी आई है। यह जनमत निर्माण के लिये बुद्धिजीवियों का सशक्त माध्यम है। हमारे देश में राष्ट्रीय स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी के समाचार पत्रों के अलावा देश की लगभग सभी भाशांओं के हजारों की संख्या में समाचारपत्र प्रकाशित होते हैं एवं पढे जाते हैं।

कार्य प्रणालीः

विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पत्रकार समाचार लेकर आते हैं एवं नियत पृष्ठों पर उन्हे प्रकाशित किया जाता है।आज

कम्प्यूटर के आ जाने पर यह कार्य अत्यंत आसान हो गया है क्यों कि अब पत्रकार अपने समाचारों को कम्प्यूटर पर ही टाइप कर देते हैं। समाचार पत्र के विभिन्न पृष्ठों पर अलग अलग विषय नियत होते हैं। उनमें देश में घटने वाली प्रमुख घटनाओं के अलावा, आपके राज्य की घटनाएं आज का सेंसेक्स ,आज का और अगले चौबीस घंटों के मौसम का अनुमान ,सोने चाँदी के आज के भाव से लेकर दाल चावल आलू प्याज तक के भाव विश्व स्तरीय डॉलर या पाऊंड की तुलना में भारत के रूपये की मजबूती या कमजोरी के बारे में प्रतिदिन प्रकाशन होता है। सप्ताह में एक दिन नई रिलिज फिल्मों की समीक्षा भी प्रकाशित होती है। नगर के छविगृहों में कौन कौन सी फिल्में चल रहीं हैं अथवा टी.वी. के विभिन्न चॅनल्स पर किस किस समय किस किस कार्यक्रम का प्रसारण होने वाला है इत्यादि सभी जानकारियाँ हमे समाचारपत्र से प्रतिदिन प्रातः काल ही मिल जातीं हैं।

इसके अलावा समाचार पत्रों में खेलों का भी एक पृष्ठ होता है।जिसमें जिला संभाग राज्य एवं राष्ट्र स्तरीय कौन कौन सी प्रतियोगिताएं हुईं अथवा होने वाली हैं जो हो गईं उनमें विजयी खिलाडियों अथवा टीमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाती है।

किसी विद्यालय अथवा महा विद्यालय के वार्षिकोत्सव की विस्तृत जानकारी अथवा मुख्य अतिथि द्वारा अभिव्यक्त विचारों का प्रकाशन भी समाचार पत्रों में किया जाता है।

विभिन्न त्योहारों की विस्तृत जानकारी, रमजान के दिनों मे प्रतिदिन के सहरी और इफ्तार के समय ,दीपावली पर लक्ष्मी पूजा एवं रक्षा बंधन पर राखी बॉंधने के मुहुर्त, ग्रहण के आरंभ एवं समाप्ति के समय का पूर्ण ज्ञान हमें समाचारपत्रों द्वारा ही प्राप्त होता है।

जिस प्रकार स्वस्थ शरीर के लिये हमें शुद्ध एवं संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मस्तिष्क का भोजन अच्छी पुस्तकें अच्छे समाचार पत्र हैं। अतः समाचार पत्रों को निष्पक्ष रूप से अपने समाचार प्रकाशित करने चाहियें। उनकी जिम्मेदारी देश के प्रति बहुत बडी है क्यों कि उन्ही के द्वारा प्रकाशित समाचारों से लोग अपने द्रष्टिकोण बनाते हैं। भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश में जनमत निर्माण का एक सशक्त माध्यम समाचारपत्र हीं हैं। संपादक द्वारा लिखा गया संपादकीय लागों को आकर्षित करता है और उसे पढ कर वे अपनी विचारधारा बनाते हैं। जब लोग आपस में बातें करते हैं और जब इस तरह के विचारों का प्रसार होता है तब जनमत तैयार होता है और स्वस्थ लोकतंत्र के लिये स्वस्थ जनमत होना अत्यंत आवश्यक है।

जब भी कोई दुर्घटना होती है वह मामूली हो अथवा बडी रेल दुर्घटना हो आतंकवादियों द्वारा किए गए बॉम्ब ब्लास्ट हों या सीमा पर होने वाली गोलाबारी वह पत्रकार ही होता है जो सर्व प्रथम वहॉं पहुँचता है। हॉलाकि टेलीकास्ट मिडिया के आने के बाद व्यक्ति को इधर दुर्घटना घटी और उधर जानकारी मिल जाती है। इसके अलावा खेलों के प्रसारण जो लाईव दिखाए जाते हैं अर्थात विश्व के किसी भी कोने में होने वाले क्रिकेट

फुटबॉल बॉक्सिंग कुश्ती अथवा रेस इत्यादि का विश्व कप या ओलम्पिक या कॉमनवेल्थ गेम्स की प्रतियोगिताओं का सीधा प्रसारण हम देख लेते हैं फिर भी समाचारपत्र हम कहीं भी घर से बाहर भी पढ सकते हैं दफ्तर में मेट्रो में या बस में पार्क में यहाँ तक की नाई की दुकान में भी अपनी बारी का इंतजार करने तक पढ सकते हैं।

उपसंहारः

समाचारपत्र का हमारे जीवन में बहुत महत्व है कुछ वर्षों पूर्व तक जब मेट्रिक या हायर सेकेंडरी के बोर्ड के नतीजे आते थे सुबह चार बजे कई अखबार वाले जोर जोर से चिल्लाकर हमें जगाया करते थे। हमारा दौड कर अखबार लेने जाना अपना रिजल्ट देख कर हर्ष से किलकारी मारना अब एक अविस्मरणीय मधुर अनुभव बन कर रह गया है।क्यों कि अब हम नई पीढी में प्रवेश कर चुके हैं और अब हमें अपने मोबाईल पर एस.एम.एस. के द्वारा ही हमारा रिजल्ट पता चल जाता है अथवा इंटरनेट पर बोर्ड अथवा वि.वि. की साईट से अपना रिजल्ट जान सकते हैं।

इन सभी बातों के अलावा कई दूर रहने वाले हमारे रिश्तेदारों मित्रों बुजुर्गों प्रियजनों की मृत्यु की सूचना हमे समाचार पत्रों से प्राप्त हो जाती है तो हम वहाँ पहुँच कर अथवा पत्र द्वारा संवेदना व्यक्त कर सकते हैं। वैवाहिक विज्ञापन एक ऐसा माध्यम है जिससे आसानी से वर वधु ढूंढे जा सकते हैं यह काफी लोकप्रिय भी है।प्रतिदिन प्रातः काल समाचारपत्र की प्रतीक्षा रहती है।

बेरोजगारों को रोजगार ढूँढने के लिये भटकना नही पडता ,उसे आवश्यकता वाले विज्ञापनों में अपनी योग्यता के अनुसार नौकरी मिल जाती है इस प्रकार मानव की जिज्ञासा यदि प्रश्न चिन्ह है तो समाचार पत्र उनके उत्तर हैं

25 वृक्षारोपण

जिन वृक्षों की जडें गहरी होतीं हैं उन्हे बार बार सींचने की जरूरत नही होती,वे जमीन से ही आर्द्रता खींच कर बढते व फलते फूलते हैं।

प्रेमचँद्र

प्रस्तावनाः

वृक्ष हमारा जीवन हैं। सृष्टि के आरंभ से ही वृक्षों का अस्तित्व पृथ्वी पर बना हुआ है। कहा जाता है कि पृथ्वी सूर्य से अलग हुआ उसका एक हिस्सा ही थी अर्थात गर्म आग का गोला थी।धीरेधीरे इसकी ऊपरी सतह ठंडी होती गई और उसपर पेड पौधे वनस्पतियाँ विभिन्न जीव जन्तु एवं मानव का अविर्भाव हुआ।

चूँकि पृथ्वी का वातावरण इन सभी के अनुकूल था, सभी का विकास हुआ।पृथ्वी की सतह ऊपर से ठंडी हो चुकी थी किन्तु भीतर से पृथ्वी गर्म थी और आज भी कहीं कहीं है ।जापान में और विश्व के अन्य कुछ स्थानों में होने वाले ज्वालामुखी पर्वतों द्वारा कभी कभी फूटने वाले गर्म लावे को देख कर यह बात सत्य सिद्ध होती है।

इसके अलावा पृथ्वी की भीतरी सतहों पर कुछ प्लेट्स का आधार बना हुआ है।ये प्लेट्स कहीं हल्की और कहीं मजबूत हैं। कभी कभी ये प्लेट्स अपने स्थान से खिसकती हैं जो कि एक भौगोलिक प्रक्रिया हैकिन्तु इसके परिणाम स्वरूप एसे स्थानों पर भूकंप आते रहते हैं। ये भूकंप कई बार बडे विनाशकारी होते हैं। ये शहर के शहर लील जाते हैं किन्तु इनका एक कारण और है और वह है बडी मात्रा में वनो का कटाव।

विषय वस्तुः

जीवन का नियम प्रगति अवश्य है किन्तु मनुष्य बनने में हमें अभी देर है।

ब्राऊनिंग

उपरोक्त कथन में कितनी सत्यता निहित है ,पृथ्वी की गोद में जन्मा इसी की गोद में पला और इसी की गोद में अंत होना है। वह मानव अपनी धरती माँ का सबसे बडा शत्रु बना हुआ है।धरती ने अपने वातावरण के सांमजस्य को बनाए रखने के लिये पेड पौधे और वनस्पतियों को जीवन दिया ,पशु पक्षी कीट पतंगे सभी का पालन किया क्यों की सभी के बीच का सांमजस्य ही पृथ्वी की सुरक्षा है।

मनुष्य ने बेतहाशा अपनी आबादी बढाई। उसे इतने लोगों के आवास के लिये जमीन की आवश्यकता थी उसने जंगल के जंगल साफ कर दिये। खिडकी दरवाजो फर्नीचर तथा अन्य सजावटी सामान बनाने के लिये अंधाधुंध पेड काटता चला गया उसने सिमेंट के जंगल खडे कर लिये कई बहु मंजिला इमारतों का निर्माण कर

लिया। जब पृथ्वी की सतह पर वन कम हुए तो इसका तापमान गर्म होता चला गया। आज वैज्ञानिक इसी ग्लोबल वार्मिंग से चिंतित हैं। वे कहते हैं जब धरती का अंत होगा तो इंसान या तो भुन कर मरेगा या अत्याधिक शीत से।

इस बेहिसाब वृक्षों के कटाव से धरती के नीचे का जलस्तर भी कम होता चला गया इसी के कारण जब तब धरती के किसी न किसी कोने में भूकंप का अब तेजी से होने लगा है। ये विनाशकारी भूकंप शहर के शहर लील जाते हैं। जो पूर्ण तया विकसित होते हैं और कई हजार जानें भी धरती के इस कोप का शिकार बन जाती हैं। ग्लेशियर्स भी पिघलते जा रहे हैं।

नदियों के आसपास के वनोंके कटाव से बंधी हुई मिट्टी जडों के अभाव में ढीली हो गई और प्रति वर्ष आने वाली बाढों का कारण बन गई ं हैं। हमारी सरकार के पास भी इनसे निपटने के लिये पर्याप्त सुविधाएं नही होतीं। इन आने वाली बाढों में कई मनुष्य तथा मवेशी अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं।लोग अपने क्षेत्रों से पलायन करने लगते हैं।

मानव के विकास का दुष्प्रभाव भी पेड पौधों पर पडता है। ढेरों धुंआ उगलती कारें स्कूटर फेक्ट्रियों की चिमनियाँ पौधों को ठीक से पनपने नही देतीं हैं यह प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है।जिन वृक्षों ने उसे जीवन दिया छांह दी वे अब उसकी कुल्हाडियों से कट कट कर समाप्त हो रहे हैं। महानगरों और शहरों में कुछ वी. आई.पी. क्षेत्रों का छोड कर कहीं भी वृक्ष दिखाई नही

देते । लोग गमलों में पौधे लगा कर उन्हे देख कर ही खुश होते हैं। क्यों कि जमीनें इतनी महंगी होती हैं कि वे सिर्फ रहने के लिये भी नाकाफी होतीं हैं फिर बगीचा कहाँलगा सकते हैं। वृक्ष नही तो चिडिया नही तितलियाँ नही सारे शहर तमाम तरह की चमक दमक के बावजूद बंजर से प्रतीत होते हैं।

इसके अलावा भूस्खलन की घटनाएं हिमस्खलन की घटनाएं अक्सर होतीं रहतीं हैं। पिछले दिनो देश के अलग अलग हिस्सों में हुई जमीन फटने की घटनाएं जो चौडाई और लंबाई में इतनी अधिक थीं कि गंभीर चिंता का विषय न सिर्फ आम आदमी के लिये बल्कि वैज्ञानिकों के लिये भी बन गया है।

जगदीश चँद्र बसु हमारे देश के महान वैज्ञानिक थे जिन्होने यह सिद्ध किया था कि पेड पौधों में भी जान होती है वे भी हमारी तरह सांस लेते हैं। वे ऑक्सीजन छोडते हैं और कार्बन डाई ऑक्साईड लेते हैं।उन्हे भी काटे या तोडे जाने पर दर्द होता है। उन्होने प्रयोग शालाओं में लताओं को बिजली का करंट देकर उनकी सिहरन को रिकॉर्ड भी किया।

वृक्ष हमें फल फूल भी देते हैं ,छांह देते हैं हमें ऑक्सीजन देते हैं हमें कई किस्म की जडी बूटियाँ भी वृक्षों से प्राप्त होतीं हैं। श्री राम रावण युद्ध में लक्ष्मण जी के अचेत होने पर श्री लंका के राजवैद्य सुषेण ने संजीवनी मंगवाई थी और हनुमान सुमेरु पर्वत ही श्री लंका की सीमा से उठा लाए थे। उसी बूटी से लक्ष्मण जी स्वस्थ हुए थे। ऐसी ही न जाने कितनी जडी बूटियाँ

हमारे वनों में पाई जाती हैं। हमारा देश आयुर्वेद का जन्मदाता है और समस्त औषधियाँ मुख्य रूप से जडी बूटियों से ही निर्मित होतीं हैं।

आज भी हमारे देश में आदिवासियों की कई जनजातियाँ वृक्षों को देवता स्वरूप मानतीं हैं। उन्होने वृक्षों के कटाव को रोकने के लिये एक आंदोलन छेडा था,जिसका नैतृत्व श्री सुंदरलाल बहुगुणा ने किया था। इस आंदोलन का नाम चिपको आंदोलन था। इसमें पेड काटने वालों के आते ही समस्त ग्रामवासी पेड से लिपट जाते थे,चिपक जाते थे उन्हे पेड नही काटने देते थे।

उपसंहारः वृक्षों के कटाव से चिंतित लोगों ने एक नारा दिया था बच्चे दो या तीन और वृक्ष पाँच अर्थात एक व्यक्ति को अपने जीवन काल में जनसंख्या को रोकना चाहिये तथा वृक्ष कम से कम पाँच लगाने चाहिये।हमारे नेता भी वृक्षा रोपण कार्यक्रम का उद्घाटन एक वृक्ष लगा कर करते हैं।धरती की सहनशीलता सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है ,किसान उसके सीने पर हल चला कर अनाज उत्पन्न करता है,हम कई तरह के खनीज भी पाते हैं हम इसी धरती पर अपना आवास भी बनाते हैं किन्तु अब धरती की सहनशीलता समाप्त होती जा रही है,अबादी का बढता हुआ बोझ बढता जा रहा प्रदूषण और वृक्षों का कटाव एक भयानक असंतुलन को जन्म दे रहा है।

व्यक्तिगत या सार्वजनिक किसी भी रूप में देखने पर हिंसा केवल निंदा के योग्य है।

बार्सन

ढाई दशकों पूर्व हम इस शब्द से अपरिचित थे,आज हम प्रतिदिन में कई कई बार रेडियों या टेलिविजन पर इसे देखते सुनते हैं,अखबारों में पढते हैं। नाम के अनुरूप ही इस शब्द का अर्थ क्यों कि इसमें रक्त ही रक्त दिखता है। बॉम्ब के धमाकों की गूँज है,चींखते चिल्लाते लोग हैं उनके चिथडों में उडते शरीर के अंग प्रत्यंग हैं, अस्पतालों में आकस्मिक भर्तियॉं हैं डॉक्टरों की अतिव्यस्तताएं हैं और आतंक के स्थान पर बिखरे आतंक के अवशेष ,लोगों के कपडे जूते दुकानों के सामान कार स्कूटरों के परखच्चे और उन्हे जॉंचते हुए पुलिस कर्मियों के दस्ते हैं। 2001 से 2008 तक धमाकों में मारे जाने वाले लोगों की सरकारी ऑंकडों के हिसाब से संख्या है 924 लेकिन हम सभी जानते हैं कि यह संख्या इससे कहीं अधिक है।

विषय वस्तुः

यदि संसार की गंदगी से बचे रहना चाहते हो तो द्रढता पूर्वक अपने काम मे जुटे रहो, चाहे तुम्हारा काम अस्तबल साफ करना ही क्यों न हो।

थोरो

देश गुलाम था तो देशप्रेमियों के हृदय में विद्रोह की चिंगारियॉं सुलग रहीं थीं । देश को आजाद कराने के

लिये महात्मा गांधी ने अहिंसा का मार्ग अपनाया तो अन्य कंतिकारियों ने अपेक्षाकृत कठोर मार्ग अपनाया जिसमे हिंसा भी सम्मिलित थी। देश आजाद हुआ इसका श्रेय सभी को था क्यों कि दोनो ही मार्गों पर चलने वालों का लक्ष्य एक ही था देश की स्वतंत्रता।वह लक्ष्य एक सत्य था जिसके आगे एक दिन अंग्रेजों को झुकना पडा।

जो भी देशभक्त थे चाहे वह महात्मा गांधी के अनुयायी हों अथवा भगत सिंह या चँद्रशेखर आजाद का संगी साथी ,चाहे वो हिन्दू रहा हो या मुसलमान अथवा सिख अंतिम लक्ष्य देश की आजादी था।वे साथ साथ रहते एक दूसरे के साथ सहमति से योजनाएं बनाते उनपर अमल करते । कभी उन्हे सफलता मिल जाती कभी असफल भी हो जाते ,पकडे जाते जेलों में अंग्रेजों की घोर यातनाएं सहते किन्तु कभी अपने संगी साथियों के नाम पते ठिकाने अंग्रेजों को न बताते ।कईयों को साथ साथ फाँसी भी दी गई पर मरते मरते भी उन्होने वंदे मातरम और इंकलाब जिंदाबाद के नारों से सारा आकाश सारा वातावरण गुंजायमान कर दिया।

अंग्रेजों ने जब देश छोडने का निर्णय लिया तो बडी ही कुटिलता से उन्होने बँटवारे का एक विषैला बीज हिन्दू और मुसलमानों के बीच बो दिया।।मोहम्मद अली जिन्ना और पंडित जवाहरलाल नेहरु दोनो ही कमशः पाकीस्तान एवं हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री के रूप में प्रस्तावित किये गए। महात्मा गांधी ने बहुत चाहा कि बँटवारा न हो किन्तु वह रुका नही । बँटवारे में भयानक मारकाट मची । वे हिन्दू मुसलमान जो कल

तक साथ साथ अंग्रेजों के विरुद्ध लडे थे वे एक दूसरे के जानी दुश्मन बन गए। इधर के लोग उधर और उधर के लोग इधर जत्थे बना कर पैदल या बैलगाडियों में रेल द्वारा या अन्य वाहनो द्वारा आ जा रहे थे और मार्ग में कईयों के कत्ल हो रहे थे।कई रास्तों में बिछड चुके थे। ब्याहता बहन बेटियाँ इधर की इधर और उधर की उधर रह गईं थीं।वे बरसों तक अपनो से मिल भी नही पाईं।

बँटवारे के जख्म दोनो ओर बहुत गहरे थे। दोनो ओर के लोगों को व्यवस्थित होने में वक्त लगा, लेकिन एक लकीर जो जमीन पर खींच दी गई थी मनों में गहराई से खींच गई थी और यह कडवाहट आज तक भी दूर नही हो सकी ।

1965 में एक बडे युद्ध में दोनो देश आमने सामने हुए फिर हाल ही मे कारगिल युद्ध में लेकिन यह शत्रुता सबसे खतरनाक रूप में आतंकवाद के रूप में उभरी जिसमें कुछ शैतान दिमागों ने धर्म के नाम पर युवाओं को बहकाया उन्हे ट्रेनिंग दी। अब वे जब तब जहाँ तहाँ शक्तिशाली बॉम्ब ब्लास्ट करते हैं और इसमें हजारों निर्दोष लोगों की जाने जाती हैं। न यह पता चलता है कि वे क्या चाहते हैं न ये कि वे यह सब किस उद्येश्य से कर रहे हैं। हम ढाई दशकों से इस दर्द को भोग रहे हैं। न तो सरकार न ही पुलिस न इंटेलिजेंस ,जनता के लिये अभी तक कुछ कर पाई है । इसने कई घरों के चिराग बुझा दिये हैं,कई बच्चों को अनाथ कर दिया है,कई स्त्रियों को विधवा कर दिया है।

पाकीस्तान में भले ही हिन्दूओं की संख्या 2 प्रतिशत हो भारत में बीस करोड से भी अधिक मुस्लिम आबादी है वे पूर्ण सुरक्षित एवं बराबरी के स्तर के अधिकारी हैं।

कश्मीर एक स्वतंत्र राज्य था जो स्वेच्छा से हमारे देश भारत में सम्मिलित हुआ यह कदम अपनी सुरक्षा के लिये वहाँ के शासक ने उठाया था।आज यह भारत का अभिन्न अंग है किन्तु भारत पाकीस्तान के बीच में विवाद और युद्ध का मुद्दा भी यही है।

आतंकवाद अब सिर्फ भारत का विषय नही रहा । इसने अमेरिका और इंग्लेंड जैसे देशो को भी गहरे जख्म दिये हैं।

अमेरिका में सन ्2001 में 11 सितंबर को एक विमान टकराकर वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के ट्विन टॉवन को ध्वस्त कर दिया गया । हजारों लोग जो वहाँ काम करते थे शहीद हो गए।

इंग्लेंड में आतंकवादियों ने ट्यूब अर्थात वहाँ की मेट्रो् तथा बस में ब्लास्ट एक साथ कई ब्लास्ट किये गए और कई लोग इस ब्लास्ट में शहीद हो गये।

उन्होने अपने देश में सख्त से सख्त कदम उठाए । एयरपोर्ट पर सख्त चेकिंग की जाती है । वैसे भी उनके देशों में अनचाहे और बेनाम लोग रह ही नही सकते हैं। वे बडी सख्ती से जाँच पडताल के बाद ही एक निश्चित समय सीमा का वीजा ही लोगों को देते हैं। किन्तु हमारे देश की सीमाएं चारों ओर से खुलीं हैं कश्मीर की ओर जो सीमा है उस पर पाकीस्तानी सेना हमेशा छिटपुट गोलाबारी करती रहती है।

पश्चिम में बांग्लादेश की सीमा इस तरह है कि लाखों की तादाद मे बांग्लादेशी भारत आकर बस चुके हैं । उनके यहाँ के निवासियों के रूप में राशनकार्ड भी बन चुके हैं। वे यहाँ वोट भी देते हैं। एक बार सरकार ने उन्हे ट्रकों में भरकर बांग्लादेश भी भेजा था किन्तु वहाँ की सरकार ने यह कह कर लौटा दिया कि वे उनके देश के नागरिक नही हैं।

उपसंहारः

हमें भी इंग्लेंड और अमेरिका की तरह सख्त कदम उठाने होंगे।हमारे पास पडौस में कौन रहता है ?कौन नया किरायेदार आया है यदि उसकी गतिविधियाँ संदिग्ध हैं तो हमें तुरंत पुलिस को सूचना देनी चाहिये बस ट्रेन मार्केट इत्यादि स्थानों पर भी लोगों की गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिये। सरकार को अब इस मामले पर गंभीर होना होगा । पुलिस विभग में निहित भ्रष्टाचार को समाप्त करना होगा । हम सभी को अपने छोटे छोटे स्वार्थों को छोड कर ऊपर उठना होगा । देश के बारे में सोचना होगा हमारी और देश की सूरक्षा एक दूसरे से जुडी हुई है।आतंक वाद एक दानव है और हम सभी को इसे नष्ट करने के प्रयास करने होंगे तभी हम सुख ाांति से जी सकेंगे।

27 मेरा प्रिय नेता महात्मा गांधी

प्रस्तावनाः

Lives of all great men remind us ,We can make our lives sublime and departing leave behind us footprints on the sands of time.

Longfellow

महात्मा गांधी एक ऐसे ही व्यक्तित्व के स्वामी थे कि वे हमारे राष्ट्रपिता कहलाए । लोगों ने उन्हे बापू कहकर पुकारा ।उनका जन्मदिन प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के नाम से मनाते हैं। उनके पिता का नाम कर्मचंद और माता का नाम पुतली बाई था।उनका जन्म गुजरात के काठियावाड जिले में हुआ था।उनका परिवार एक परंपरागत गुजराती परिवार था।

महात्मा गांधी जब अफ्रीका गए।वहाँ की रंगभेद नीति को देख कर उनका हृदय द्रवित हो गया। प्रथम श्रेणी के रेल के डिब्बे का टिकिट होते हुए भी उन्हे उतार दिया गया और उन्होने अपमानित महसूस किया। तब वे रंगभेद नीति के विरूद्ध उठ खडे हुए।उन्होने इस नीति के शिकार लोगों की अगुवाई की और अंततः सफलता प्राप्त की।

जब वे भारत लौटे तो गुलाम भारत में अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त देश की जनता की दुर्दशा देख कर उन्हे गहरा दुः ख हुआ।उन्होने सम्पूर्ण भारत की यात्रा की देश को जाना और वापस लौट कर अंग्रेजों के विरूद्ध अपना संघर्ष आरंभ किया।धीरे धीरे कांग्रेस के झंडे तले कई बडे नेता उनके अनुयायी बने और यह संघर्ष अंग्रेजों को चुनौती देने के लिये एक ठोस कार्यक्रम के रूप में परिणित हो गया।

अंततः अग्रेंजों ने भारत छोडने का फैसला कर लिया। उन्होने भारत को दो भागों हिन्दुस्तान और पाकीस्तान में बाँट दिया।15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश झंडा युनियन जॅक उतार दिया गया और उसकी जगह भारत का तिरंगा फहराया गया।पंडित जवाहर लाल नेहरु भारत के प्रथम प्रधानमंत्री एवं डॉ राजेन्द्रप्रसाद प्रथम राष्ट्रपति बने ।

विषयवस्तुः

सत्य जीवन का केन्द्र है और अहिंसा जीवन की प्रणाली ,विजय उसी को प्राप्त होती है जो विजय का साहस करता है।

महात्मा गांधी

अक्सर लोग आपस में बातें करते हैं कि महात्मा गांधी का जीवन दर्शन आज के विकास शील देश में और परिवर्तित समय में कालातीत है और उनके विचार आज के लिये प्रासंगिक नही हैं। यदि हम इस बात का विवेचनात्मक अध्ययन करें तो हम पाएंगे कि आज भी गांधीवादी विचारधारा की हमें अत्याधिक आवश्यकता है और यह हमारे देश को विकसित बनाने में सहायक सिद्ध होगी ।

सत्यः

महात्मा गांधी ने सर्वाधिक महत्व सत्य को दिया। उन्होने कहा था कठोर सत्य के शब्द लिखने व पढने में कठोर लगेंगे। सत्य का पालन करना है तो आपको झूठे को झूठा कहना होगा। चाहे शब्द कितने ही कठोर हों

किन्तु उपयोग इसी ब्द का करना होगा। महात्मा गांधी ने सत्य पर गहरा शोध किया एवं उसी का आजीवन पालन किया।आज जब हम अपने चारों ओर द्रष्टिपात करते हैं तो हमें सत्य कहीं दिखाई नही देता। लोग झूठ जितनी आसानी से बोलते हुए दिखते हैं कि हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं।साधारण निरर्थक सी बात भी वे सही रूप में नही बताते हैं।नेता अपने ही बयानों से साफ पलट जाते हैं।जब टी.वी. चॅनल वाले उनके पुराने बयानों की रिकॉर्डिंग दिखाते हैं तो हमारी आँखें खुली की खुली रह जातीं हैं।जब हमारे अग्रणी और शीर्ष पर स्थित लोग ही सत्य का पालन नही करेंगे तो ओर लोगों की बात करना निरर्थक है।

Even one word ,if true is enough.Untrue words ,how even many are worth nothing.

Mahatma Gandhi

महात्मा गांधी आजीवन सत्य के मार्ग पर चले और इसी मार्ग पर चल कर उन्होने देश को स्वतंत्रता दिलाई इसीलिये हम उन्हे राष्ट्रपिता कहते हैं वे सारे संसार में सम्मान की द्रष्टि से याद किये जाते हैं। जो झूठा है उसका झूठ खुल ही जाता है और वह फिर कभी किसी का विश्वास प्राप्त नही कर पाता।

अहिंसाः

Truth Pireces even a wall of steel.

Mahatma Gandhi

महात्मा गांधी को अहिंसा का पुजारी कहा जाता था। उन्होने सदैव ांतिपूर्ण तरीकों से अंग्रेजों का विरोध किया। उन्होने भगतसिंह और आजाद को भी समझाया था कि

वे हिंसा के मार्ग से लौट आएं।विभिन्न प्रकार के आंदोलन और सत्याग्रह जैसे विरोध करने के तरीके महात्मा गांधी ने ही आरंभ किये थे। अंग्रेजों को अंततः उनके सामने झुकना पडा क्यों कि सारा देश महात्मा गांधी के पीछे चल रहा था। बँटवारे की मारकाट से दुखी हो कर उन्होने आमरण अनशन किया तब जाकर मारकाट रुकी थी क्यों कि सभी महात्मा गांधी का सम्मान करते थे। उन्होने कहा था

यदि हम मानवीय दशा से शून्य हैं तो उसके सिंहासन के निकट ,दूसरों की निष्ठुरता से मुक्ति पाने की याचना हम नही कर सकते ।

किन्तु आज हमें अहिंसा कहीं दिखाई नही देती।

स्वावलंबनः

महात्मा गांधी ने स्वावलंबन को बहुत महत्व दिया। उन्होने स्वयं चरखे पर सूत काता । उनके आश्रम में सभी सूत कातते थे। अपने ही काते हुए सूत से बने कपडे वे और कस्तूरबा पहना करते थे।उन्होने कुटीर उद्योग को बढावा दिया था।वे चाहते थे देश का प्रत्येक व्यक्ति स्वावलंबी बने उसे अपना जीवन जीने के लिये किसी दूसरे का मुँह न देखना पडे।आज बडे बडे उद्योगपतियों एवं मल्टी नेशनल कंपनीज द्वारा स्थापित विशाल उद्योगों की प्रगति तो दिन दूनी रात चौगुनी

दिखाई देती है किन्तु हमारे देश के महान कुटीर उद्योग जिन्होने छोटे छोटे गाँवों में भी लोगों को स्वावलंबी बनाया था या तो समाप्त हो चुके हैं या समाप्ति की कगार पर हैं।

इनमें पीतल के बर्तन, ताले, सजावटी सामान, लकडी के फर्नीचर, तथा बनारसी, कांजीवरम, महेश्वरी, चंदेरी, साडियों के उद्योग जो विश्व विख्यात थे आज जैसे तैसे जी रहे हैं। गरीबों के ये आधार समाप्त होते जा रहे है।

स्वदेशीः

महात्मा गांधी ने विदेशी वस्त्रों और अन्य सामानों का विरोध किया, स्वदेशी अपनाने का आग्रह किया। लोगों ने उस समय विदेशी सामानों की होली जलाई थी। स्वदेशी की भावना हमारे हृदय में आत्म सम्मान उत्पन्न करती है लेकिन आज हम इंपोर्टेड सामान पाकर हर्षित हो जाते हैं।

अपरिग्रहः

महात्मा गांधी कहा करते थे यदि हम आवश्यकता से अधिक धन अथवा अन्य वस्तुओं का संचय करते हैं तो हम चोर हैं क्यों कि तब हम यह धन अथवा वस्तुएं उन लोगों से चुराते हैं जिन्हे उसकी आवश्यकता है। यह समाजवादी विचारधारा का आधार है। आज नेताओं ,अभिनेताओं उद्योगपतियों खिलाडियों के पास करोड और अरब तक जा पहुँची सम्पत्ति है जबकि असली भारत जो गाँवों में बसा है आज भी मुश्किल से रोटी कपडा जुटा पाता है और ये देश की 70 प्रतिशत आबादी है।क्या हम गर्व कर सकते हैं कि आजादी के 62 वर्षों

बाद भी देश के दो वर्गों में इतनी बडी खाई क्यों बनी हुई है और यह घट क्यों नही रही है ?

नारीसम्मानः

महात्मा गांधी ने कहा जीवन में जो कुछ पवित्र एवं धार्मिक है स्त्रियाँ उसकी विशेष संरक्षिका हैं। वे पुरूष की सहचरी हैं । उनकी मानसिक शक्तियाँ पुरूष से जरा भी कम नही हैं।उसकी सर्वोच्चता को उसी प्रकार स्वीकार किया जाना चाहिये जैसे पुरूष को उसके क्षेत्र में । यदि बल का अर्थ पशु बल है तो निसंदेह वह पुरूष से कमजोर है किन्तु यदि नैतिक बल है तो वे पुरूष से अनंत गुना ऊँची हैं। उसकी त्याग शक्ति भी पुरूष से अधिक है।

छुआछूत निवारणः

उस समय फैले हुए इस दोष को महात्मागांधी ने गंभीरता से समझा और उसका निराकरण किया। उन्होने अछूतों को हरिजन नाम दिया सभी सामान्य जनो के अधिकार दिये जो संविधान का आधार बने। उन्होने सभी को जोडने के प्रयास किये और आज वोटों के लिये उन सभी को तोडने के प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होने पर पीडा को महसूस किया और उसे दूर किया।

उपसंहारः

नेता का अर्थ नैतृत्व करने वाला होता है और उसका चरित्र और आचरण अनुकरण करने योग्य होना चाहिये।महात्मा गांधी इन सभी बातों में खरा उतरने वाला व्यक्तित्व थे।जब वे चले तो सारा देश उनके साथ

चला,जब उन्होने आमरण अनशन किया तो मारकाट का बँटवारे का बवंडर थम गया। 30 जनवरी को नाथुराम गोडसे ने गोली मार कर उन्हे हमसब से छीन लिया ।क्या ऐसा कोई नेता आज है?

28 समय का सदुपयोग

“Time shuts up everything in the chest of oblivion”

प्रस्तावनाः

समय एक अत्याधिक महत्वपूर्ण तत्व है क्यों कि मनुष्य के जीवन के आरंभ और अंत के बीच यही तत्व उसके जीवन का घोतक होता है। यही बात सिद्ध करती है कि व्यक्ति के पास इतना समय होता है जो उसके कर्म करने का समय होता है।

समय परिवर्तनशील होता है ऐसा कहा जाता है परन्तु वास्तव में यह एक ही गति से चलता आ रहा है। परिवर्तित हम होते हैं हमारी संस्कृति हमारी सभ्यता परिवर्तित होती है,जीवन शैली परिवर्तित होती है, प्रथाएं रीतिरिवाज परंपराएं परिवर्तित होतीं हैं।देश के अनुसार एक ही समय में ये सभी परिवर्तित रूप में द्रष्टिगत होते हैं अर्थात एक भारतीय का जीवन एक अमेरिकन का जीवन एक ब्रिटिश का जीवन शैली स्वभाव प्रथाएं रीति रिवाज परंपरा एक ही समय में भिन्न भिन्न होते हैं।

विषय वस्तुः

संकट के समय ही धैर्य तथा सिद्धान्त निष्ठा की परीक्षा होती है।

अज्ञात

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विभिन्न परिस्थितियाँ हो सकतीं हैं विभिन्न दुःख सुख हो सकते हैं किन्तु समय का कितना सही उपयोग वह कर पाया है या कर रहा है इसी पर उसके जीवन की सार्थकता निर्भर करती है।

स्वाति नक्षत्र में जल बिंदू एक ही है किन्तु केले में वह कपूर बनता है,सीप में मोती बनता है सांप के मुँह में वह विष की बूँद बनता है।

समय का सदुपयोग अथवा दुरूपयोग दोनो ही बातों से व्यक्ति का जीवन प्रभावित होता है,उसका व्यक्तित्व निर्मित होता है।

विद्यार्थि के लियेः

विद्यार्थि का विद्याध्ययन का समय ज्ञानार्जन का समय है।उसे अपने समय को अधिकाधिक इसी में लगाना चाहिये।उसे अपने स्कूल एवं महाविद्यालय में प्रतिदिन उपस्थित रह कर प्रत्येक कालखण्ड में ध्यान देते हुए विद्या ग्रहण करनी चाहिये।यदि उसकी कुछ जिज्ञासाएं हैं तो उन्हे अपने शिक्षक से अवशय पूछना चाहिये। अपने उत्तरों को सर्वश्रेष्ठ बनाने के प्रयास में पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर पढनी चाहियें । यह समय ही जीवन का स्वर्णिम काल है क्यों कि इस समय उस पर किसी प्रकार की जिम्मेदारियों का बोझ नही होता । उसे सदैव प्रतियोगिताएं एवं प्रतिस्पर्धा की भावना मन मे रखनी

चाहिये ,उसे सोचना चाहिये यदि वह प्रथम आ सकता है तो मै क्यों नही उसे कभी भी संक्षिप्त प्रश्नोत्तर नही पढ कर पूर्ण पुस्तक लगन से पढनी चाहिये यह सोच कर कि पता नही कौनसा प्रश्न कहाँ से पूछ लिया जाए तथा ज्ञानार्जन के लिये पूर्ण ज्ञान आवश्यक है।यही समय का सदुपयोग है। आज कई तरह के आकर्षण उसे अपनी ओर खींचते हैं, मित्रों के साथ घूमना ,फिल्में देखना, मोबाईल पर मित्रों से गपशप करना,बाईक लेकर घूमना मॉल्स में जाना इत्यादि आज यदि उसने अध्ययन छोड कर इन सभी चीजों में समय व्यर्थ गँवाया तो हो सकता है वह पास हो जाए परन्तु यथार्थ जीवन में जब वह अपने साथ पढने वाले किसी अध्ययन शील विद्यार्थि को बहुत ऊँचे सम्माननीय पद पर आर्थिक रूप से सम्पन्न देखेगा तो स्वयं उसे अपने आप पर कितनी ग्लानि होगी ?

छुट्टियों का समय भी उसे पूरी तरह मौज करते हुए व्यर्थ नही गँवाना चाहिये बल्कि कुछ अच्छी पुस्तकें पढने अथवा इंटरनेट से अच्छी जानकारी इकट्ठी करने में बितानी चाहिये।

यदि उसमें कोई विशेषता है जैसे वह अच्छा क्रिकेट का खिलाडी है तो उसे अच्छे कोच द्वारा अपने खेल को परिष्कृत करने का प्रयास करना चाहिये।

आज किये हुए अध्ययन एवं समय का सदुपयोग का कल जब मीठा फल उसे प्राप्त होगा तो उसके हर्ष का ठिकाना न रहेगा।

Time once gone is gone for ever.

आज जो बीत रहा है कल लौट कर नही आएगा इस बात को ध्यान में रखना चाहिये।

सामान्य व्यक्ति के लियेः

वास्तव में हमारे देश में सामान्य व्यक्ति के जीवन में कुछ भी असामान्यता नही होती। नौकरी पेशा व्यक्ति का जीवन घडी की सुईयों से बंधा होता है। रोज सुबह कार्यालय जाना और शाम को घर लौटना । उसके पास रवीवार का छुट्टी का दिन होता है जिसे वह घूमने मित्रों के साथ पार्टी करने या परिवार के साथ पिकनिक या फिर फिल्म देखने में बिताता है किन्तु यदि वह कुछ विशेष करे जिसमें गार्डनिंग इंटरनेट सर्फिंग अथवा कुछ लेखन करके बिताए तो वह प्रफुल्लित महसूस करेगा।

गृहिणियों के लियेः

आज प्रत्येक गृहिणी ने अपने आप को टी.वी. सीरियल्स से बाँध लिया है।ये निरर्थक से कार्यक्रम कभी मस्तिष्क के पोषक तत्व नही बन सकते इसकी अपेक्षा यदि वे पढी लिखीं हैं तो अपने बच्चों के अध्ययन में रूचि लें बच्चे भी अच्छा महसूस करेंगे और वे स्वयं भी।

नेताओं के लियेः

वे प्रत्याशी जिन्हे बडी आशाओं से लोग चुनकर संसद या विधानसभा में भेजते हैं कभी अपनी उसी जनता की समस्याओं को गंभीरता से नही लेते ।वे जल्दि से जल्दि वह रूपया अर्जित कर लेना चाहते हैं जो उन्होने चुनाव में खर्च किया था। यदि वे अपने लोगों की समस्यांएं सुने ,अपने क्षेत्र का दौरा करें ,समस्याओं का निराकरण

करने का प्रयास करें तो वही उनके लिये समय का सदुपयोग होगा।

कोई भी व्यक्ति जन्म से अच्छा या बुरा नही होता समय या परिस्थितियाँ उसे अच्छा या बुरा बना देतीं हैं।एक व्यक्ति महात्मा गांधी बन कर अमर हो जाता है विश्व भर में जीते जी और मरणोपरांत भी सम्मान पाता है दूसरा दिग्भ्रमित हो कर नाथूराम गोडसे या अन्य कोई आतंकवादी बन जाता है जो बिना लक्ष्य के रक्तपात करता है और किसी दिन पुलिस की गोली का शिकार बनकर अल्पायू में ही मर जाता है।

उपसंहारः

कल का समय आज इतिहास है।और आज का समय कल इतिहास बनेगा। लोग जन्म लेते हैं और मर जाते हैं।यह सत्य है कि धन जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है और आज के विद्यार्थि के लक्ष्य पूर्व निर्धारित हैं,उसने अपने लिये अपने भविष्य की कल्पना की हुई होती है और शिक्षा मुख्य रूप से उसका करियर निर्माण करने का माध्यम बन गई है तो यह एक बहुत ही अच्छी बात है कि उसका सम्पूर्ण भविष्य उसकी शिक्षा पर निर्भर करता है उसके अध्ययन पर निर्भर करता है। यह हम सभी के लिये एक आनंद की बात है कि शिक्षा ,अध्ययन और रूचि सभी एक दूसरे के अभिन्न अंग बन गए हैं।किसी भी कार्य को करने में त्वरित गति होनी चाहिये बरसों पहले कबीर ने कहा था

काल करे सो आज कर आज करे सो अब

पल में परलय होयगी बहुरि करेगा कब।

यदि हम समय का सदुपयोग कर आज उसे सम्मान देंगे तो कल समय हमें सम्मानित करेगा

29 विद्यालय का वार्षिकोत्सव

प्रस्तावनाः

जिसे तुम दूसरों में देख कर खुश होते हो वह तुममे हो तो अक्सर दूसरों को खुश करे।

चेस्टर फील्ड

विद्यालय बालक का दूसरा घर होता है। वह माता की गोद से निकल कर विद्यालय पहुँचता है। वह विद्यालय में पाँच छः घंटे व्यतीत करता है।घर में माता पिता बडे भाई बहन उसे संस्कार देते हैं और विद्यालय में वह अपने शिक्षकों को अपने प्राचार्य को अपना आदर्श बनाकर उनके संस्कार लेता है।वह अपने अच्छे और अध्ययन में तेज विद्यार्थियों से मित्रों से भी अच्छी बातें सीखता है,कई बार वह बुराई की ओर भी झुक जाता है माता पिता और शिक्षकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिये। शिक्षण संस्थान अच्छी बातें सीखाने के लिये बने हैं यहाँ आकर यदि बुराईयों को नष्ट करने का प्रयास न किया गया तो इन शिक्षण संस्थाओं की सार्थकता वर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा।

शिक्षण संस्थान में सभी कार्य दिवसों में शिक्षण होता है लेकिन जिस प्रकार हम घरों में विभिन्न त्योहार मनाते हैं उसी प्रकार प्रत्येक विद्यालय भी एक बार अपने विद्यालय का वार्षिकोत्सव मनाता है वह दिन विद्यालय का स्थापना दिवस भी हो सकता है। हमारे विद्यालय में

यह तीन दिवसीय कार्यक्रम के रूप मनाया जाता है और इतना आनंदित करता है कि मन प्रफुल्लित हो जाता है।

विषय वस्तुः

सार्थक संदर्भों से जुड पाना ही आनंद है।

केशवचँद्र शर्मा

हमारे विघालय का वार्षिकोत्सव बडे दिन की छुट्टियों से ठीक पहले होता है। उत्सव आरंभ होने से पहले सभी विघार्थियों को अपनी अपनी कक्षाएं सजाने के लिये कहा जाता है।इसके लिये हमें अंतिम पिरियड फ्री दिया जाता है।लगभग सभी बच्चे ड्रॉइंग शीट पर सुंदर सुंदर चित्रों की ड्रॉईंग बनाकर कलर कर के लाते हैं, कुछ बच्चे कोटेशन्स भी लिखकर लाते हैं। कक्षा अध्यापिका तय कर लेती है कि किसके चित्र डिसप्ले बोर्ड पर लगेंगे।हम अन्य कलर पेपर के भी कटिंग्स से डिजाईन बना लेते हैं पूरी मेहनत से सभी कक्षाएं सजाते हैं। असेंबली हॉल एवं प्रिंसिपल्स ऑफिस की रिसेप्शन सहित सजावट अध्यापिकाएं करतीं हैं।

उत्सव के पहले दिन हमारे विघालय के अहाते में बडा सा पंडाल लगाकर अलग अलग तरह के स्टॉल्स लगाए जाते हैं। स्टॉल में लगी टेबलें और पंडाल का खर्च विघालय वहन करता है। स्टॉल हमें चलाने होते हैं हमें प्रति स्टॉल कुछ मामूली रकम विघालय को देनी होती है। विशेष रूप से सबसे बडी कक्षा के रूचि लेने वाले विघार्थियों को स्टॉल चलाने की जिम्मेदारी दी जाती है।प्रत्येक स्टॉल पर तरह तरह के खाने पीने के व्यंजन

रखे होते हैं। इसका समय 12 से शाम के 4 बजे तक होता है। सभी विद्यार्थि पूरे समय खरीदते और खाते हैं। कुछ स्टॉल्स पर अलग अलग तरह के गेम्स भी होते हैं जैसे गुब्बारे पर निशाना लगाना ,बास्केट में बॉल डालना ,नियत समय में सुई में धागा डालना ,मोमबत्तियाँ जलाना इत्यादि। इसके लिये भी प्रत्येक बार खेलने के कुछ पैसे देने होते हैं। चार बजे फेट खत्म होने के बाद स्टॉल चलाने वाले विद्यार्थि अपने सामान समेटते हैं व अपने रूपये गिनते हैं उन्हे कितना फायदा या नुकसान हुआ यह हमे व्यापार करना कय विकय करना सिखाता है।

दूसरे दिन सायं सात बजे विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम होता है। इनमें भाग लेने वाले विद्यार्थि दो महीने पहले से ही प्रेक्टिस आरंभ कर देते हैं। उन्हे गेम्स या लाईब्रेरी के पिरियड्स में प्रेक्टिस करनी होती है।सांस्कृतिक कार्यक्रम की इंचार्ज टीचर्स तथा म्यूजिक एवं तबला टीचर भी कठोर परिश्रम से पूरा कार्यक्रम तैयार करते हैं। स्टेज इत्यादि टेंट हाऊस वाले आकर तैयार कर जाते हैं।छात्र छात्राओं के माता पिता भी आमंत्रित किये जाते हैं ताकि कार्यक्रम समाप्ति के उपरांत वे अपने बच्चों को घर ले जा सकें । प्रतिवर्ष यह कार्यक्रम सफलता पूर्वक एवं नवीनता लिये होता है और हम इसकी प्रतीक्षा करते रहते हैं।

तीसरे दिन प्रातः काल ग्यारह बजे पुरस्कार वितरण समारोह होता है तथा किसी विशिष्ठ व्यक्ति को मुख्य अतिथि के रूपमे बुलाया जाता है विद्यालय द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार पहले ही खरीद कर रख लिये जाते

हैं।उन पर प्रथम द्वितीय तथा तृतीय की पर्चियाँ तथा पाने वाले विद्यार्थियों के नाम भी लिख कर रख लिये जाते हैं।पाँच शिक्षिकाओं की पेनल मिल कर सभी पुरस्कारों का निर्णय करते हैं जिनमें कक्षा सजावट से लेकर फेट तक के पुरस्कार सम्मिलित होते हैं। ये विशिष्ठ घोषित पुरस्कार हमें माननीय मुख्य अतिथि के हाथों मिलते हैं। इस बीच कॉन्ट्रेक्ट पर बैठे हलवाई एवं रसोईये भोजन एवं मिठाई तैयार कर लेते हैं।पुरस्कार वितरण के बाद मुख्य अतिथि को भोजन करा कर विदा कर दिया जाता है और अब सभी छात्र छात्राएं अध्यापक अध्यापिकाएं भोजन करते हैं । कुछ छात्रों को परोसने की जिम्मेदारी दी जाती है। इस प्रकार स्वाद से आरंभ हमारा वार्षिकोत्सव स्वाद पर ही समाप्त होता है और हमें न सिर्फ वर्ष भर के लिये वरन् पूरी उम्र के लिये मीठी मीठी यादें दे जाता है।

उपसंहारः

वार्षिकोत्सव एक ऐसा आयोजन है जो बालक के जीवन की सामाजिक शुरुआत है। सहयोग और सहकारिता, परिश्रम और ज्ञान के सहयोग से एक नितांत सुंदर परिणति के रूप में हमारे सामने आता है। ऐसा नही है कि इसमें गल्तियाँ नही होती किन्तु हम उन्हे अगले वर्ष नही दोहराते ।व्यवस्थित रूप से कार्य विभाजन कर दिये जाने के उपरांत भी कुछ भूलें हो हीं जातीं हैं। किन्तु हमें इसे बालक की भावी कर्मभूमि का ही एक अंश मानना चाहिये। पूर्ण विद्यालय के सभी विद्यार्थि इस पूरे वार्षिकोत्सव में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पूर्ण उत्साह से भाग लेते हैं। फोटोग्राफर द्वारा खींचे गए फोटो विद्यार्थि

एवं शिक्षक शिक्षिकाएं खरीदते हैं यह मधुर स्मृतियों की आजीवन पूँजी है।

30 दहेज

प्रस्तावनाः

प्रकृति और परमात्मा के प्रेमपूर्ण अनुबंध का नाम नारी है।

आईंसटाईन

दहेज एक अत्यंत प्राचीन शब्द है जो आज एक भय एक अपराध एक पाप की अनुभूति कराता है।

जब किसी बेटी का विवाह किया जाता था तो यह सोच कर उसे कुछ बर्तन कुछ बिछौना रजाई तकिया चादर कुछ कपडे कुछ आभूषण यह सोच कर दिये जाते थे कि पराये घर में एक सदस्य बढेगा तो बर्तन एवं बिछौने की आवश्यकता होगी। कपडे व आभूषण देने का कारण यह था कि सदैव से भारत में यह माना जाता रहा है कि आभूषण स्त्री धन है तथा बुरे वक्त में काम आने वाला धन है।दूसरी बात यह है कि प्राचीन काल से ही परिवार अपने पुत्र को ही अपना उत्तराधिकारी मानता आया है अतः बेटी को पराया धन मान कर ही उसका पालन पोषण किया जाता है। चूँकि बेटा घर जमीन जायदाद इत्यादि का मालिक बनेगा बेटी को भी कुछ आभूषणों के रूप में धन दिया जाता है।उसके बाद वह जब जब अपने मायके अर्थात माता पिता के घर आती है उसे कुछ कपडें मिठाई फल इत्यादि देकर विदा किया जाता है।विवाह के प्रथम वर्ष मायके से लौटते हुए उसे

उसके ससुराल वालों के लिये भी कपडे फल मिठाई दिये जाते हैं यदि वह किसी विशिष्ठ त्योहार पर मायके आती है तब भी उसे कुछ विशेष उपहार दिया जाता है। यह सभी अनिवार्य नही है और प्रत्येक व्यक्ति की आय पर निर्भर करता था किन्तु आज दहेज एक विशाल काय सुरसामुख की तरह हर बेटी के पिता के सामने खडा है।

विषयवस्तुः

नारी समय का सौंदर्य और सौंदर्य की धूप है।

फेंकलीन

समय बीतता गया और दहेज का माधुर्य खो गया और उसका कुरूप सामने आया।अब यह बेटी वालों की ओर से दिया जाने वाले ऐच्छिक रूप में न हो कर बेटे वालों की ओर से लिया जाने वाला अधिकृत और अनिवार्य रूप बन गया है।अब यह एक सौदा बन गया है। यह जान सुन कर आश्चर्य होता है कि दक्षिण प्रांतों में बिहार में बाकायदा रेट तय कर दिये गए हैं डॉक्टर बेटे करोडों में इंजीनियर का उससे कुछ कम प्रोफेसर इत्यादि का उससे कुछ कम सरकारी नौकरी वाले का अधिक ,इसमें लडकी कितनी पढी लिखी व कितना कमाने वाली है इसके अनुसार भाव ऊँचा नीचा हो सकता है।कितना कॅश कितने तोले के आभूषण कौन सी कार कभी फ्लेट या जमीन भी कितने बाराती आएंगे कहाँ रहेंगे क्या खाएंगे उनकी व्यवस्था क्या उपहार दिये जाएंगे इसका अधिकार पूर्ण सुझाव अब मायके वालों का विषय नही रहा । कितनी मिलनी होगी अर्थात बेटी का

पिता बेटे के पिता से, मामा मामा से मौसा मौसा से, मौसी मौसी से, इत्यादि इन मिलनियों की फेहरिस्त छोटी या लंबी होना भी ससुराल वालों पर निर्भर होता है ये मिलनियाँ बारात के दरवाजे पर लगने पर उसी समय ही होतीं हैं जिसमें लडके के रिश्तेदारों को तो कुछ भी नही देना होता है हॉं लडकी के सभी रिश्तेदार लडके के सभी रिश्तेदारों को गले में माला पहना कर उसके हाथ में गिफ्ट देते हैं जिसमें कपडों के अलावा एक लिफाफे में रूपये दिये जाते हैं ये सब चीजें ससुराल वालों की इच्छानुसार देने होते हैं। इन सब के अलावा कई प्रांतों में लडके वाले बाजा बत्ती याने बेंड वालों के पैसे भी लडकी वालों से वसूल करते हैं।

घर के सामानो मे पहले बर्तन बिछौने के अलावा कुछ नही होता था अब इसमे टी.वी. फीज एयर कंडीशनर बेड ड्रेसिंग टेबल वॉशिंग मशीन गोदरेज की अलमारी रेशम के गद्दे तकिये रजाईयाँ चादरें सभी कुछ शामिल है।

अगर दहेज लेन देन तक ही सीमित होता तो भी कोई बुरी बात नही होती किन्तु पिछले तीन दशको से दहेज के लिये होने वाली हत्याओं की संख्या बढती जा रही है। ऐसा कहा जाता है कि दहेज के लिये जलाई जाने वाली बहू की संख्या प्रति सात मिनिट में एक है।

यदि तय शुदा दहेज में थोडी कमी रह जाए तो लडकी का पिता उसे बाद में दे देने का वचन देता है, इस बचे हुए दहेज के लिये बहू को ताने दिये जाते हैं यदि उसका पिता इसे देने में असफल होता है तो बहू को मिट्टी का

तेल छिडक कर जला दिया जाता है वह एक भयावह मौत मर जाती है लेकिन पास पडौस वाले उसकी चीखें नही सुनते ,कोई गवाह नही मिलता ।किन्तु यह कुछ समय पूर्व की बात थी, आज सरकार ने दहेज के कानून को काफी कडा कर दिया है। पुलिस में दहेज विरोधी मामले दर्ज कराने के लिये एक विशेष सेल बनाया गया है। पिछले वर्षों में कई ससुराल वालों को कडा दण्ड भी दिया गया है। इसमें सात वर्षों के भीतर हुई किसी भी बहू की मृत्यु का संदिग्ध करार दिया गया है तथा उसकी कडाई से जाँच की जाती है एवं अपराधी को दंडित भी किया जाता है। घरेलू हिंसा संबंधित कानून के भी कडा किया गया है जिसमें पति द्वारा पत्नि पर किये गए अत्याचारों के मामलों को समविष्ट किया गया है।

उपसंहारः

नारी संसार की प्रथम आवश्यकता है ग्रहस्थ की दूसरी एवं मानवता की प्रति पल आवश्यकता है।

न्यूटन

नारी के गर्भ से मानव का जन्म हुआ है कहा जाता है कि प्रभु स्वयं घर घर में नही पहुँच सकते थे इसलिये उन्होने नारी की रचना की ,परन्तु नारी के गर्भ से जनमे मानव नारी को ही सम्मान क्यों नही दे पाते जिसकी वह अधिकारिणी है।धन क्या इतना आवश्यक तत्व है कि तुच्छ वस्तुओं के लोभ में एक अनमोल जीवन को समाप्त कर दिया जाता है?क्या लोगों ने अपनी आत्मा को सात तालों में बंद कर दिया है?कि

उन्हे अच्छे बुरे सही गलत पुण्य और पाप का फर्क भी पता नही चलता। वह यह समझे कि अनंत काल की इस माता को सम्मान देना उसका धर्म और कर्तव्य ही नही उसके समस्त जीवन का स्त्रोत है।

31चलचित्र का जीवन पर प्रभाव

सादगी प्रकृति का प्रथम पग है और कला का अंतिम।

ठमसससल

चर्चा से समझ बढती है किन्तु प्रतिभा मौन में पलती है।

गिबन

प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष दोनो ही रूपों में उपरोक्त दोनो कथन कहीं न कहीं हमारे विषय से जुडे हुए हैं। चलचित्र यह शब्द अवश्य नई पीढी के लिये भूला बिसरा शब्द है क्यों कि यही शब्द अपना लंबा इतिहास समेटे सिनेमा, पिक्चर से होता हुआ मूवी बन चुका है किन्तु मूल रूप में विशेष परिवर्तन नही हुआ है।सादगी में लिपटी नारी और अपने चेहरे पर प्रसाधनों के लेप और आभूषण तथा चटख रंगों के कपडे पहनी अभिनेत्री दोनो में जमीन आसमान का अंतर है।

भारत की पहली मूक फिल्म आलमआरा थी तब से अब तक साठ दशकों से अधिक का समय व्यतीत हो चुका है। प्रगति और विकास का प्रभाव सिनेमा की तकनीक ,डॉयलॉग,म्यूजिक, वे आभूषण मेकअप सभी पर पड रहा है।कहा जाता है साहित्य समाज का दर्पण होता है।साहित्य की भॉंति फिल्म भी अभिव्यक्ति का माध्यम

है अतः इस पर भी समाज का प्रभाव पडता है किन्तु आज हमारे सामने यह विचारणीय बात है कि क्या समाज का प्रभाव फिल्मों पर पड रहा है अथवा फिल्मों का प्रभाव समाज पर पड रहा है।इसके लिये हम उदाहरणों सहित विवेचना करेंगे।

विषय वस्तुः

कई अर्थों में फिल्में प्रेरणास्पद कार्य करतीं हैं। कई कुरीतियों को मिटाने में फिल्मे सशक्त माध्यम बन कर उभरीं हैं। अपने समय की फिल्म दहेज ने दहेज विरोधी लोगों को प्रेरणा का संबल दिया। सुजाता ने छुआछूत विरोधी विचार को प्रचारित किया प्रसारित किया। इसी प्रकार धार्मिक फिल्मों ने लोगों की आस्था और विश्वास को दृढ किया। चलचित्र के छोटे रूप टी.वी. पर प्रसारित होने वाले रामायण और महाभारत धारावाहिकों ने अत्यंत लोकप्रियता अर्जित की। वे बच्चे जो इन कथाओ

से अनभिज्ञ थे इन्हे रूचि पूर्वक देख कर अच्छी तरह जान सके हमारे संस्कृति के इन स्तंभों को ज्ञान के रूप में अर्जित कर सके। किन्तु आज प्रसारित होने वाले कई पारिवारिक धारावाहिक और उनमें दिखाए जाने वाले अतिशयोक्तिपूर्ण काल्पनिक चरित्र परिवारों के विचारों को प्रदूषित कर रहे हैं। दूसरी ओर कई ज्ञान वर्धक बातों का गाँवों के अशिक्षित व अज्ञानियों तक ज्ञान पहुँचना बहुत ही आनंद दायक बात है।जिनमें मुख्य रूप से परिवार नियोजन संबंधी प्रचार एवं शिक्षित होने के प्रेरणास्पद विचारों का प्रसार प्रमुख है।स्वच्छता तथा स्वास्थ्य संबंधी दी गई जानकारियाँ भी अशिक्षित

एवं अज्ञानी लोगों पर काफी अच्छा प्रभाव डाल रहीं हैं।क्यों कि यह प्रभाव परिलक्षित होने लगा है।

सामाजिक जागरूकता बढाने के लिये नकली दवाईयाँ, नकली दूध ,रंगी हुई सब्जियाँ अन्य मिलावटी सामानों संबंधी जानकारियाँ एवं अपराधी लोगों की धरपकड दिखाने के भी कारगर असर समाज पर दिखाई पडते हैं।

व्यक्ति को अपने अधिकारों की जानकारी एवं उसके प्रति जागरूकता में फिल्मों का बडा हाथ है। उसका वोट अनमोल है एवं नेता किस प्रकार किस प्रकार जनता को सिर्फ वोटो की संख्या मात्र मानते हैं।उनके द्वारा कर्तव्यों का निर्वाह नही किया गया। वे अपने प्रत्याशी के आचरण के बारे में चौकन्ने हो गए हैं।वे अब उसी व्यक्ति को वोट देना चाहते हैं जो उनकी समस्याओं का निराकरण करे । पुलिस व राजनीति में फैला भ्रष्टाचार फिल्मों और टी.वी. पर दिखाए जाने वाले बडे बडे घोटालों का पर्दाफाश होते राज और मिडिया द्वारा किए गए स्टिंग ऑपरेशन ये सभी बातें जनता को अपने अधिकारों के प्रति पूर्ण सजग बनाए रखतीं हैं।

इसके अलावा औद्योगिक जगत को भी फिल्मों से काफी लाभ होता है। सर्व प्रथम तो सिनेमा स्वयं एक उद्योग है जो प्रति वर्ष करोडों से अधिक का व्यापार करता है।दूसरे सिनेमा के हीरो हीरोईन के परिधान उनके द्वारा चलाई जाने वाली बाईक ,उनके द्वारा उपयोग किये घडी हेयरस्टाईल जीन्स यहाँ तक कि टोपी अंगूठी सभी समाज का फॅशन बन जाता है और कई कई दिनो तक

मार्केट में ये चीजें मिलने लगतीं हैं, बिकती हैं और खूब बिकतीं हैं लोग इनसे काफी पैसे कमा लेते हैं।जब तक एक प्रचलन खत्म होता है, दूसरा शुरु हो जाता है।और इसी प्रकार यह चक्र चलता रहता है।।

इसप्रकार आर्थिक प्रभाव हम पर भी पडता है। मल्टी प्लेक्स के प्रचलन में फिल्मों की महंगी टिकिट और इंटरवल में 200 रूपये तक के पॉपकॉर्न एक सामान्य व्यक्ति की जब पर काफी भारी पडते हैं।युवाओं के लिये इनकी कीमतों का प्रभाव विशेष नही है क्यों कि वे मल्टी नेशनल कंपनीज में लाखों में गिने जाने वाले पॅकेज की नौकरी करते हैं।बाईक वर्ल्ड फॅशन मेगजीन्स पढकर स्टार्स के बारे में जान सुन कर उनकी नकल करने में भारी रूपया खर्च करने में भी पीछे नही हटते हैं।वेशआभूषण और स्टाईल तक तो यह अनुकरण बुरा नही लगता किन्तु आचरण में कुछ दुष्प्रभाव पडते हैं जो संस्कारों का हनन करते हैं तब हानिकारक माने जाएंगे।

1993 अथवा उससे पहले एक फिल्म आई जिसमें फिल्म के हीरो ने अत्याचार करने वाले डॉन बिल्डर की कई बिल्डिंग्स में बॉम्ब प्लांट किये और एक के बाद एक धमाके करा कर उन्हे ध्वस्त कर दिया और उसी के बाद उसी तर्ज पर मुंबई में बॉम्ब धमाके किये गए जिसमें सैकडों जाने गईं और कई परिवारों ने अपने अपने प्रियजनो को खो दिया तब से आज तक विश्व में कई स्थानों पर ऐसी घटनाएं दोहराई गईं। भारत स्वयं तीन दशकों से आतंकवाद का शिकार बन रहा है।

उपसंहारः

एक समय था जब फिल्मों के आदर्श पिता माता भाई भाभी अनुकरणीय चरित्र हुआ करते थे। फिल्म में बुरे चरित्र भी थे और अंत में वे क्षमा मांगते हुए दिखते थे। वे सभी अनुकरणीय थे और उस पीढी के अधिकांश लोगों में उन मूल्यों की गहराई से पैठ बनी।नैतिकता सच्चाई आपसी प्रेम सम्मान इन सभी भावनाओं को समाज में बढते हुए पाया गया। इन सभी में सर्वोच्च भावना देश प्रेम की है।आज भी हमें स्कूलों में सामाजिक कार्यक्रमों में या राजनैतिक रैलियों में वही देशभक्ति के गाने ही सुनाई पडते हैं।आज के युवा का सारा ध्यान स्वकेन्द्रित है,यह एक तरह से अच्छी बात है कि वे अपनी शिक्षा, अपने विशेष कोर्स, अपनी बेहतर नौकरी और करियर के बारे में सोचते हैं किन्तु देश एकदम गौण होकर रह गया है। उन्हे वोट देने का अधिकार है वे सभी अच्छे बुरे राजनीतिज्ञों के बारे में अच्छी तरह जानते हैं व अपना द्रष्टिकोण भी रखते हैं,दिनो दिन बढते जा रहे आतंकवाद को भी समझते हैं और उसकी आलोचना भी करते हैं, किन्तु उनके पास क्या, समाज में किसी के पास भी

इतना समय नही कि वह कुछ सकारात्मक कार्य देश के लिये भी कर सकें । राजनीतिज्ञों द्वारा संरक्षण पाने वाले अपराधी एवं महाविद्यालयों के चुनावों में इन्ही दलों का प्रतिनिधित्व करने वाले और विजय पाने वाले विद्यार्थि ही कल के नेता बनेंगे। आज फिल्मों का कोई चरित्र उन्हे देश भक्ति की प्रेरणा नही देता यदि देता भी है तो उसका प्रभाव सिनेमा हॉल में फिल्म देखने तक ही सीमित होता है।

32 अंतरिक्ष की उडान

प्रस्तावनाः

विश्व हट कर उस व्यक्ति को राह दे देता है जो जानता है कि वह कहाँ जा रहा है।

डी.एस. जॉर्डन

मानव का मस्तिष्क जिज्ञासाओं के प्रश्नचिन्हों का भंडार है और वह सदैव इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढता रहता है। मानव की प्रगति निसंदेह प्रशंसनीय है और उसकी आज तक की लंबी यात्रा और उसकी प्राप्तियाँ श्रम बुद्धिमत्ता ज्ञान चतुराई के स्तंभों पर टिकी है।उसने जितने भी आवीष्कार किये हैं या तो आवश्यकता से प्रेरित होकर किये अथवा पिछले आवीष्कार का परिष्कृत रूप बनाने के लिये किये हैं। कुछ आवीष्कार उसकी अदम्य जिज्ञासा का परिणाम हैं। अंतरिक्ष तक पहुँची उसकी उडान उसकी जिज्ञासा का ही परिणाम है।

प्रकृति उसके लिये रहस्यों का पिटारा सदैव से बनी रही।पौधों में जीवन है,वर्षों पहले जगदीशचँद्र बसु ने सिद्ध कर दिया। अंटार्कटिका तक की यात्रा,हिमालय की चोटी पर झंडा गाड देना प्रयोग शाला में विभिन्न गॅसेज और उनके उपयोग परिणाम इत्यादि उसकी जिज्ञासाओं के ही परिणाम हैं। भारत को विश्वगुरु माना जाता है क्यों कि सभी प्रकार के गणीतीय ज्ञान के लिये शून्य एवं दशमलव का प्रयोग भारत में ही आरंभ हुआ । आज के स्वास्थ्य विज्ञान की आरंभिक प्रेरणा के रूप में आयुर्वेद के महान आचार्य चरक

आर्यभट्ट इत्यादि भारत भूमि पर ही जन्मे।प्रभु राम के पुष्पक विमान के हॉलाकि कोई प्रमाण नही हैं किन्तु महाकवि वाल्मिकी एवं तुलसीदास ने वर्षो पहले यदि उसका वर्णन किया तो वह मात्र कल्पना पर आधारित नही होगा।

विषय वस्तुः

हम जितना अधिक कार्य करेंगे उतनी ही अधिक हमारे अंदर कार्यक्षमता उत्पन्न होगी हम जितने अधिक व्यस्त रहेंगे हमे उतना ही अधिक विश्राम मिलेगा।

हैजलिट

यह सत्य है कि अपने आरामदेह जीवन में कुछ और विस्तार कुछ और वृद्धि कर लेने की इच्छा मानव में सदैव से रही है और वह आवीष्कार पर आवीष्कार करता गया।लकडी कोयले जलाते जलाते स्टोव और गॅस के चूल्हे ग्रिल माईकोवेव ओवन तक के आवीष्कार उसके आराम बढाते रहे।पंखों सीलींग फॅन, टेबल फॅन ,कूलर ए.सी. तक बैलगाडी से हवाई जहाज तक ग्रामोफोन से टी.वी. तक वह रुका नही आज भी प्रत्येक वस्तु को परिष्कृत करने में लगा है।एक समय था जब टी.बी. का इलाज भी उसके पास नही था और लोग उसे राजरोग कहा करते थे,आज गंभीर से गंभीर बीमारियों का इलाज भी उसने ढूँढ निकाला है।समुद्र की गहराई ने भी उसे हमेशा अपनी ओर आकर्षित किया है एवं आकाश की ऊँचाई ने भी। यूरी गॉगारिन ने सर्वप्रथम चँद्रमा क यात्रा की थी तो सभी आश्चर्यचकित रह गए थे। जो चँद्रमा केवल कविताओं में नायिका के चेहरे की उपमा

देने के लिये शब्दों में प्रयुक्त होता था अथवा तिथियों की गणना और व्रत उपवास गृहण इत्यादि के निमित्त जिसकी बात होती थी उस चँद्रमा पर मनुष्य ने कदम रख दिया यह मानव मात्र के लिये आश्चर्य तो था ही गर्व भी था।

रशिया ने स्पूतनिक नामक सेटेलाईट उपग्रह आरंभ में भेजे अब प्रत्येक देश अपने अपने उपग्रह स्थापित करता है। मौसम की भविष्यवाणी ,वायुमंडल के दबाव के क्षेत्र आने वाले समुद्री अथवा अन्य किसी भी प्रकार के तूफान के बारे में वैज्ञानिक पहले ही चेतावनी दे देते हैं।सुनामी के बारे में और भूकंप के बारे में वैज्ञानिक दिन रात इन प्रयासों में जुटे हैं कि पहले ही जान सकें ।हाँ यह वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी के किस झोन में भूकंप बहुतायत से आ सकते हैं। कहाँ कहाँ धरती के अंदर प्लेटों में हल्कापन है या ठोस हैं।

राकेश शर्मा पहले भारतीय हैं जिन्होने अंतरिक्ष की उडान भरी । प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी से उन्होने अंतरिक्ष से बात भी की थी। जब इंदिरा गांधी ने पूछा था पृथ्वी कैसी लग रही है उन्होने कहा था बहुत सुंदर नीली आभा लिये श्रीमती गांधी ने जब पूछा था भारत कैसा लग रहा है तब उन्होने कहा था “सारे जहाँ से अच्छा“ इस प्रकार अंतरिक्ष में भारत का यह पहला कदम था।

हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे.अब्दुल कलाम भी वैज्ञानिक हैं एवं हाल ही में उन्होने इस यान से यात्रा की है। भारतीय मूल की करनाल की रहने वाली

कल्पना चावला नासा की जानी मानी वैज्ञानिक थीं । उनका यान दुर्भाग्यवश क्षतिग्रस्त होकर अमेरिका के टेक्सास में गिर गया था और कल्पना चावला अमर हो गईं।उसी कडी में सुनीता विलियम्स जो भारतीय मूल की हैं सफलता पूर्वक वहाँ कई माह रह कर कई तरह के परीक्षण करके लौटीं । यह भारत के लिये गर्व की बात है। सुनीता विलियम्स ने भी अंतरिक्ष से बातें कीं थीं हम उन्हे विशाल स्क्रीन पर देख भी पा रहे थे।

वैज्ञानिकों ने यह भी जान लिया कि हमारे सौरमंडल की तरह कई सौर मंडल आकाश में हैं और अन्य ग्रहों पर भी जीवन की संभावना से इंकार नही किया जा सकता। अमेरिका ने मंगल ग्रह पर उपग्रह भेजा था जो तमाम जानकारियाँ लेकर आया। वहाँ की भूमि मानव के रहने योग्य है वायुमंडल में ऑक्सीजन है ,पानी मौजूद है इतनी बातें यह सकारात्मक सोच बढा रही हैं कि हो सकता है कल को मानव वहाँ जाकर अपनी कॉलोनी बसाए और टिकिट लेने वालों की लंबी कतार भी लग जाए।हाल ही में यह भी ज्ञात हुआ है की चाँद पर भी पानी मिलने के प्रमाण उपलब्ध हो गए हैं। अब इतनी कल्पनाएं सत्य हो चुकीं हैं कि यह बात भी आश्चर्यचकित नही करती । हाल ही में पाताल लोक की खोज के लिये भी अमेरिकी वैज्ञानिकों ने कई तरह के उपकरण लगा कर समुद्र के भीतर भी खोज शुरू कर दी है।

उपसंहारः

मानव की महत्वाकांक्षाओं का अंत नही है उसके मन का कल्पनाओं का आकाश निस्सीम है जिसमें वह उडान भरता रहता है तब तक जब तक उसे यथार्थ बना कर नही छोडता।इसके लिये वह अपनी तमाम बुद्धि शक्ति कार्यक्षमता एवं अनुभवों का निचोड भी लगा देता है।वह इसी तरह अपने साम्राज्य को प्रस्तारित करता जा रहा है।एक आदर्श जब सामने होता है तो अनुकरण करने वालों की संख्या भी कम नही होती। कल्पना चावला प्रेरणा बनीं तो एस्ट्रोनोट बनने की इच्छा कई लडकियों में कुलबुलाने लगी और इसी प्रकार के शिक्षण संस्थानों में सीखने वालों की संख्या भी कम न रही।जब सुनीता विलियम्स भारत आईं तो हृदय खोल कर देश ने उनका स्वागत किया।हमें प्रतीक्षा है उस दिन की जब भारत विकासशील का ठप्पा हटा कर पूर्ण विकसित राष्ट्र इंग्लेंड अमेरिका और युरोप के अन्य सभी विकसित देशों की श्रेणी में खडा होकर गर्वोन्नत हो सकेगा,इसके लिये देश के प्रत्येक नागरिक को प्रयास रत होना होगा आगे बढने के लिये । प्रत्येक व्यक्ति का सर्वांगीण विकास ही भारत को यह गर्व दे सकेगा।

33 पर्यावरण

हम जिन्हे पुराने जमाने का कहते हैं वे अपने युग में हर मामले में नए थे।

पास्कल

प्रस्तावनाः

पर्यावरण शब्द पिछले तीन दशकों से ज्यादा से ज्यादा चर्चा में आया, इसका अर्थ यह नही है कि पहले यह

निरर्थक था। पहले भी इस शब्द का अस्तित्व था,और इसके अर्थ का भी अस्तित्व था क्यों कि वह प्रदूषण की मोटी परत के नीचे ढका हुआ नही था इसलिये प्रचलित नही था।

हमारे इर्द गिर्द के प्राकृतिक वातावरण हवा पानी पेड पौधे सूर्य की रोशनी नदी पहाड समुद्र और इन सभी के पृथ्वी पर पडने वाले सकारात्मक प्रभाव को ही हम पर्यावरण कहते हैं।

पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य के अंश के रूप में आग के गोले की तरह हुई थी। धीरे धीरे इसकी ऊपरी परत ठंडी होती गई उसमें जीवन के लिये सकारात्मक वायुमंडल जिसमे वायू जल इत्यादि बना उसके इर्द गिर्द सुरक्षा परत बनी और उस पर पेड पौधे वनस्पतियों और अन्य जीवों का अविर्भाव हुआ । कई प्रजाति के पशु पक्षी कीट पतंगे उत्पन्न हुए और मानव की भी उत्पत्ति हुई । सभी कुछ एक दूसरे पर निर्भर और एक दूसरे से जुडा हुआ था। सूर्य के प्रकाश से पेड पौधे पुष्पित और पल्लवित होने का अवसर मिला और इन्ही वनों में जीवधारियों वन्य पशुओं को संरक्षण मिला। एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण में मानव को भी अपने लिये विकास की परिस्थितियाँ मिली ।आदिम मानव भी पशु से अधिक भिन्न न था। वह भी शिकार करके कच्चा मांस खाकर अपना पेट भरता था कंदराओं में रहता पेड की छाल या पशु की खाल से अपना तन ढकता था। वह बुद्धिमान था किन्तु अन्य बडे वन्य प्राणीयों की तरह शक्तिशाली नही था, अतः शिकार करने के लिये उसने पत्थरों को नुकीला बना कर उसके हथियार बनाए

एवं उसीसे अन्य पशुओं का शिकार अपना पेट भरने के लिये करने लगा।इसीलिये उस विशिष्ठ काल को पाषाण युग कहा जाता है। उसकी बुद्धि उसकी जिज्ञासा उसकी कार्यक्षमता उसे विकसित करते हुए आज तक की विकसित दुनिया तक ले आई ।उसमें स्वयं आरामदेह जीवन जीने की अदम्य लालसा ही विभिन्न आवीष्कारों की जननी बनी। उसने विकास अवश्य किया किन्तु विकास की इस दौड में वह अपने पर्यावरण की सुरक्षा भूल गया। वह पर्यावरण जो उसके जीवन का आधार है और उसके लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है उसकी उपेक्षा का शिकार हुआ।जाने अनजाने वह स्वयं ही इस पर्यावरण पर प्रहार करता चला गया और इसे विनष्ट करने का मुख्य कारण बन गया। आज यह मानव के लिये एक विशाल प्रश्न चिन्ह बन कर खडा हो गया है।

विषयवस्तुः

जो विवेक के नियमों को सीख लेता है किन्तु उनके अनुसार अमल नही करता वह उस आदमी की तरह है जिसने अपने खेतों में मेहनत की पर बीज नही डाला।

शेखसादी

मनव बुद्धिमान है विवकेशील है किन्तु उसने अपनी आबादी बेतहाशा बढाई इतनी आबादी को रहने के लिये आवास की आवश्यकता थी स्थान की आवश्यकता थी उसने वन काटने शुरू किये उसने उन पर आवास के रूप में सिमेंट के बडे बडे जंगल खडे कर दिये। इतनी बडी संख्या में पेडों के कटाव से धरती की ऊपरी सतह को जो संचित जल मिलता था वह बंद हो गया धरती

पर गर्मी बढने लगी जिसे आज हम ग्लोबल वार्मिंग के रूप में जानते हैं। नदियों के तटबंध भी पेडों के कटाव से खुल गए और प्रतिवर्ष आने वाली विभिन्न राज्यों की भयानक बाढ का कारण बने । आज बाढ में हजारो लोग उजड जाते हैं कई पशु मर जाते हैं। लोगों की बस्तियाँ और पूरे गाँव के गाँव इसमे प्रवाहित हो जाते हैं और मनुष्य के पास इसको रोकने का कोई उपाय नही है। भूतल मे जलस्तर भी कई मीटर नीचे जा चुका है। गर्मीयों में जल की कमी हो जाती है कई प्रांतों में सूखा पडता है वर्षा मे बाढ आती है भूगर्भ में बढती गर्मी के कारण भूकंप का ऊँचे स्तर पर आना विशव के अन्य देशों के सहित भारत में भी बढा है। हिमालय के ग्लेशियर्स पिघल रहे हैं। धरती का स्खलन और हिमस्खलन की बाते तो हम पिछले कई वर्षो से सुन रहे हैं किन्तु पिछले दिनो देश में कई स्थानों पर काफी चौडी और कई कीलोमीटर तक लंबी धरती के फटने की घटनाओं ने सभी को चिंतित कर दिया है। वैज्ञानिक इस बारे में शोध कार्य करने में लग गए हैं। अमेरिका में पिछले वर्षो आए केटरिना और एक अन्य तूफान की भयानकता सभी ने टी.वी. पर देखी सुनी। जापान भी कई बार तूफानों का शिकार हुआ।चीन में पिछले दिनो आए भूकंप में धरती फटने और उसमें चलते ट्रेफिक के समाने के द्रश्य हम सभी को सिहरा देने के लिये काफी हैं। पृथ्वी के पर्यावरण में सबसे महत्वपूर्ण वह सुरक्षापरत है जो पृथ्वी के चारो ओर ओजोन परत के रूप में जानी जाती है और अब उसमें एक छिद्र हो गया है जो दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। इस परत का कार्य सूरज की रोशनी को छान कर

दोषपूर्ण तत्वों को बाहर रख कर शुद्ध रोशनी और गर्मी पृथ्वी तक पहुँचाना है। यदि इस छिद्र को बंद करने का कोई उपाय वैज्ञानिक नही ढूँढ सके और यह बढता गया तो सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणें कई तरह के स्किन केंसर्स के अलावा अन्य कई बीमारियों को बढा देंगी। वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं कि किसी प्रकार एक सुरक्षा छतरी बनाकर पृथ्वी को इस असुरक्षा से बचाया जा सके।

उपसंहारः

मानव के पास अपने पर्यावरण और अपनी पृथ्वी के बारे में सोचने का समय नही हैकुछ लोग हैं जो सजग हैं।मेधा पाटकर एक ऐसा ही नाम है । टिहरी बाँध बनाते समय एक आंदोलन नेत्री के रूप में अधिक प्रकाश में आई ,वैसे पर्यावरण संरक्षण उनके लिये एक व्रत के रूप मे है और वे वर्षों से इसके लिये सजग रह कर कार्य कर रहीं हैं।

इसके अलावा सुंदरलाल बहुगुणा चिपको आंदोलन के नैतृत्व करने वाले महान व्यक्ति के रूप में सामने आए। उनके अनुयायी कई ऐसे आदिवासी संगठन हैं जो वृक्षों को अपना देवता समझते हैं और उसके लिये अपने प्राण तक देने को तैयार रहते हैं।ये लाग वृक्ष काटने वालों के आते ही एक एक व्यक्ति पेडों से चिपक जाता है या लिपट जाता है अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए उसे पेड नही काटने देता।हाल ही मे नए बनते हुए नगरों मे जलसंचय की आधुनिक तकनीक काम मे लाई जा रही है। जिससे वर्षा ऋत्तु में बरसने वाले पानी को

संचित कर ग्रीष्म में होने वाली पानी की कमी को दूर किया जा सके।इसके अलावा प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन काल में कम से कम पाँच पेड अवश्य लगाने चाहियें और उनकी

देखभाल भी करनी चाहिये। इस प्रकार शायद हम पर्यावरण को शुद्ध रख कर पृथ्वी को लंबी उम्र दे सकें।

34 विश्वशशांति

अधिकार विनाशकारी प्लेग के समान है,यह जिसे स्पर्श करता है उसे ही नष्ट कर देता है। युवा हो या वृद्ध किसी को नही छोडता।

शैली

प्रस्तावनाः जब मानव का अविर्भाव हुआ वह पशुसम जीवन जीता था। पशु में संचय की प्रवृति विशेष नही होती।शशेर हर बार नया शिकार कर के पेट भरता है। चिडिया रोज अपना दाना चुगती है,और घोंसला सिर्फ अंडे देने के समय और उसी के लिये बनाती है।पशु सिर्फ आज मे जीता है। हाँ कुत्ता अवश्य अपना भोजन हड्डी छुपा कर जमीन में दबा कर रख लेता है।

जब तक मानव आखेट कर के उदर भोषण जीवन यापन करता था,कंदराओं में रहता था तब तक उसमें अधिकार की प्रवृति नही थी। जब उसे कृषि और पशुपालन की जानकारी हुई, उसके जीवन में स्थायीत्व आया तब से ही उसके अंदर अधिकार की प्रवृति आई।

विश्व का इतिहास अलग अलग देशों में इसी तरह के युद्धों ,गुलामी प्रथा उपनिवेषवाद,दूसरे देशों पर हमले

लूटमार ,खूनखराबे से भरे पडे हैं।इन सब के पीछे मानव की अदम्य लालसा ,अधिकार की प्रवृति को पूर्ण करने की दुर्दमनीय वृत्ति अर्थात दुष्टतापर्वक दमन है। मानव के अंदर धन संचय ,पत्नि पर संतान पर अधिकार और काफी सारी जायदाद संग्रह करके अधिकारों के विस्तार की प्रवृति कूट कूट कर भरी हुई है।

यही प्रवृति जब समग्र रूप ले लेती है तो अपने राज्य की सीमाओं को बढाने ,युद्ध करके दूसरे राज्य की जमीन को हथियाने ,अपनी अर्थ व्यवस्था को द्रढ करने के कोई भी कदम उठाने में लग जाती है। हमारे देश में भी चकवर्ती सम्राटों की प्रथा प्रभु श्री रामचँद्र से हमारे संज्ञान में है। प्रभु राम ने अपने राज्य की सीमाओं को बढाने के लिये अश्वमेध यज्ञ किया था।चकवर्ती सम्राट अशोक ने भी अपनी सीमाओं को बढाने के लिये कई युद्ध किये। इस श्रंखला में कई सम्राटों के नाम हैं। मुस्लिम मुगल सभी का साम्राज्य विस्तार प्रेम हम सभी को ज्ञात है। भारत में पुर्तगाली ,डच ,फ्रेंच ,और अंग्रेज सभी व्यापार करने के बहाने से आए किन्तु जब और जहाँ भी उन्हे मौका मिला उन्होने उसे हथिया कर अपने साम्राज्य का अंग बना लिया चाहे इसके लिये स्थानीय लोगों पर उन्हे कितने भी अत्याचार करने पडे।

विषयवस्तुः

कितनी दयनीय है वह जाति जो आपसी मनमुटावों के कारण कई संप्रदायों में बँट चुकी है, और हर संप्रदाय अपने आप को एक जाति मानने लगा है।

खलील जिब्रान

सम्पूर्ण विश्व 1914 और 1939 में दो विश्वयुद्धों को झेल चुका है और इसके भयानक दुष्परिणाम भी भोग चुका है। जापान के नागासाकी और हीरोशिमा पर दो एटम बॉम्ब फेंके गए और उसकी रेडियोधर्मिता के दूरगामी परिणाम यह हुए कि आज भी वहाँ अंधे बहरे और अपंग संतानों का जन्म हो रहा है। इन विश्व युद्धों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संसार के सभी देश सम्मिलित थे और धन जन की हानि को सह रहे थे। न जाने अपने देश को छोड कर हजारों मील दूर अंग्रेजों की ओर से लडने वाले भारतीय सैनिक कौन थे उनमें से कितने जीवित लौट पाए और जो नही आए थे वे अपने पीछे कितने प्रियजनों को अनाथ बना कर छोड गए।

विश्व के इतने देशों के न जाने कितने आम से लोग सैनिकों के रूप में सत्ता के लोभी अपने राष्ट्राध्यक्षों की महत्वाकांक्षा की आग में जल गए,अपने प्राणों की आहूति दे गए। सत्ताध्यक्ष की महत्वाकांक्षा सीमाओं के विस्तार में होती है किन्तु वह अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिये अपने देश की सेना को युद्ध में झोंक देता है।

जब दूसरा विश्वयुद्ध समाप्त हुआ तो सभी देशों को इस बात का गंभीरता से आभास हुआ कि इस प्रकार की निरंकुशता से तो विश्व की शांति खतरे में पड जाएगी और उन्होने संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना की जिसमें बडे बडे राष्ट्रों के प्रतिनिधि सदस्य राष्ट्र बनाए गए।इस संघ

को पूर्ण लोकतांत्रिक ढंग से एक संविधान के अनुकूल कार्य प्रणाली में कार्य करने के लिये नियमबद्ध किया गया। यह लगभग 60 वर्षों से सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है। यह सभी मामलों पर निष्पक्षता से निर्णय करके उन्हे लागू करवाता है। युद्ध का मसला हो या शांति प्रकि्रया का निर्णय ,निः शस्त्रीकरण संबंधी संधि हो अथवा अविकसित देशों के विकास के प्रयास, सोमालिया जैसे देश के बच्चों का कुपोषण दूर करना हो अथवा पशु पक्षियों की सुरक्षा, बच्चों के गोद लेने देने का मसला हो संयुक्त राष्ट्रसंघ के विभिन्न विभाग ये सभी कार्य सुचारु रूप से सफलतापूर्वक करते हैं। भूकंप पीडित अथवा अन्य किसी भी प्रकार की आपदा से पीडित देशों को अविलंब आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सहायता पहुँचाना संयुक्त राष्ट्रसंघ का वर्षों से किया जा रहा सफलतम कार्य है। निः शस्त्रिकरण संबंधी संधि पर विभिन्न देशों की सहमति लेना ,एवं सख्ती से युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न न होने देने का आदेश का समस्त देश विनम्रतापूर्वक पालन करते हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के जन्म के बाद से युद्धों की संख्या में कमी आई है और इस काफी सी शांति में भी विश्व के कई देश पूर्ण विकसित होकर प्रगति कर रहे हैं। उनकी आर्थिक स्थिति द्रढ है और उनके नागरिक प्रसन्न हैं।वे शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं,अपने धन ज्ञान विज्ञान एवं कियाशीलता को मानव कल्याण के लिये नएनए शोध करने में व्यय कर रहे हैं। जो विकास शील हैं वे भी विकसित राष्ट्रों के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।

अविकसित देशों का ध्यान स्वयं संयुक्त राष्ट्रसंघ रखता है।

उपसंहारः

भारत एक शांतिप्रिय देश है महात्मा गांधी ने विश्व को अहिंसा के द्वारा चमत्कारिक रूप से देश को आजाद कराके दिखाया। गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने अहिंसा और शांति का प्रचार प्रसार किया।पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी पंचशील के सिद्धांत को लागू किया और भारत के शांतिप्रिय होने की घोषणा की। भारत एक ऐसा देश है जो स्वयं किसी पर आक्रमण नही करने की नीति और नीयत नही रखता किन्तु यदि कोई उसकी सीमाओं का दुःस्साहसपूर्ण अतिक्रमण करता है तो वह साहस के साथ इसका उत्तर देता है।

आज विश्व में चारों ओर आतंकवाद की ज्वाला धधक रही है।पिछले वर्षों में कई देश इसके शिकार हुए हैं। भारत भी पिछले तीस वर्षों से अधिक समय से इसका शिकार बनता आ रहा है। यह एक प्रकार का अघोषित युद्ध है जो आतंकवादियों के कायरतापूर्ण कृत्यों को दर्शाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ को तथा विश्व के सभी देश को इसकी गंभीरता को समझना चाहिये एवं सभी देशों को मिलकर एकजुट होकर इसे दूर करने के उपाय ढूँढने चाहिये क्यों कि यह देश से या सेना का सेना से किसी युद्ध भूमि में किया जाने वाला युद्ध नही है इसके शिकार निर्दोष सामान्य लाग हैं जो किसी भी सार्वजनिक स्थल पर रोज इसके शिकार हो रहे हैं।

35 हमारी ऐतिहासिक धरोहर

प्रस्तावनाः

किसी देश की उन्नति छोटे विचार के बडे आदमियों पर नही ,बडे विचार के छोटे आदमियों पर निर्भर होती है।

स्वामी रामतीर्थ

किसी भी देश की सबसे बडी सम्पत्ति वहाँ की ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित अनुपम इमारतें एवं उस देश का साहित्य होता है। प्रत्येक देश के नागरिकों को अपने देश की इन धरोहरों पर गर्व होता है क्यों कि वे इमारतें उनके देश की प्रमुख पहचान होतीं हैं।वे उनके प्रति सम्मान की द्रष्टि रखते हैं एवं उनकी सुरक्षा के प्रति पूर्ण सजग होते हैं। ये भव्य इमारतें उनके देश के इतिहास से जुडी रहतीं हैं,उनके गौरवमय अतीत की प्रतीक होतीं हैं।

भारत का इतिहास भी हजारों वर्षों के अनुभवों को समेटे हुए है क्यों कि जब सिन्धु नदी के किनारे खुदाई की गई तो उसके नीचे पूरा बसा हुआ नगर प्राप्त कर सके थे।वह एक पूर्ण विकसित नगर था जो हम मोहनजोदडो और हडप्पा नामक स्थानों के गर्भ से प्राप्त कर सके थे। इस पूर्ण विकसित नगर को बनाने में पत्थर का प्रयोग किया गया था।स्त्रियों और पुरुषों को स्नान के लिये अलग अलग सरोवर एवं स्नानागार एवं घाट बने थे। पीतल एवं तांबे के बर्तन जिनमें तवा और कडाही के तरह के बर्तन मिट्टी के नक्काशी वाले बर्तन

,तांबे की एक नर्तकी की आभूषण पहनी हुई मूर्ति भी प्राप्त हुई।

संसार में मिश्र की सभ्यता को सबसे पुराना माना गया है। और वहाँ के पिरामिड्स संसार के आश्चर्यों मे से एक हैं।निः संदेह उन्होने वहाँ आज तक शवों को ममीज के रूप में सुरक्षित रखा हुआ है। जो उनके उस समय भी विकसित होने को संकेत है। पेरिस का आई फिल टॉवर ,पीसा की झुकी मीनार ,चीन की दीवार के अतिरिक्त विश्व के सभी देशों में कई सुंदर और मनमोहक इमारतें हैं। लंदन का टॉवर ब्रिज वेस्ट मिनिस्टर ,बिग बेन ,स्कॉटलेंड की अत्यंत भव्य पत्थरों से बनी इमारतें सभी कुछ संदर्भित देशों के गौरव मय इतिहास को दर्शाते हैं।

विषयवस्तुः

मनुष्य जब तक जीवन के एक क्षेत्र में गलत काम करता है तबतक दूसरे क्षेत्र में वह सही काम नही कर सकता।

महात्मा गांधी

भारत में कई ऐतिहासिक इमारतें हैं। जो अलग अलग शासकों के काल में विभिन्न स्थानों पर बनाई गईं।

ताजमहलः

ताजमहल इन सभी में सर्वोत्तम है क्यों कि हाल ही में इसे विश्व के आँठवे ंआश्चर्य के रूप में सम्मिलित कर लिया गया है। मुगल काल के चौथे शहंशाह शाहजहाँ ने इसे अपनी प्रेमिका पत्नि मुमताज महल की याद में बनाया था।यह सफेद संगमरमर के पत्थर से बना भव्य मकबरा है,बाद में शाहजहाँ को भी मुमताज के साथ की कब्र में दफनाया गया।यह एक अद्भुत कृति है क्यों कि ऊँचाई और आकार में समान होने और समान दूरी पर होने के बावजूद भी इर्द गिर्द की चारों मीनारें हर ओर से दिखाई देतीं हैं। इसे बनाने में बीस हजार मजदूरों ने कार्य किया था। कहा जाता है इसके बनने के बाद शाहजहाँ ने उन सभी के हाथ कटवा दिये थे ताकि वैसी दूसरी इमारत न बना सकें । दुनिया के कोने कोने से लोग इसे देखने आते हैं।कुछ वर्षों पहले मथुरा रिफाईनरी से निकलने वाले धूँए से इस पर पीलापन छाने लगा था। सरकार ने तत्काल रिफाईनरी को दूसरी जगह ले जाने का आदेश दिया था।

लालकिलाः

दिल्ली का लाल किला लाल पत्थर से बना एक सुंदर किला है यह भी शाहजहाँ ने बनवाया था। इसमें दीवाने खास और दीवाने आम हैं। यहाँ उसका दरबार लगता था। इसके चारों ओर गहरी खाईयाँ बनी हैं।शशत्रुओं से सुरक्षित रहने के लिये कहा जाता है उनमें पानी भरा रहता था,एवं बडेबडे मगरमच्छ पाले जाते थे। यह भारत के दर्शनीय स्थलों में एक है।

कुतुबमीनारः

गुलामवंश के शासक कुतुबुद्दीन और अल्तमश ने इसे बनवाया था।यह अपने समय की सबसे ऊँची इमारत थी। इसको देखने के लिये भी देश विदेश के पर्यटक हमेशा आते रहते हैं।

हुमायूँ का मकबराः

यह भी दिल्ली में स्थित है।इसमें भी मुख्य रूप से लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है।यह हुमायूँ का मकबरा है।

बुलंद दरवाजाः

यह फतहपुर सीकरी में स्थित है। यह आगरा से कुछ कीलोमीटर की दूरी पर स्थित है।एक विशालकाय द्वार है जो पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है।

बीबी का मकबराः

यह ताज महल की तरह की एक इमारत है जो लाल पत्थर से बनी है इसे औरंगजेब ने औरंगाबाद में अपनी पत्नि की याद में बनवाया था।

चारमीनारः

यह हैदराबाद में बाहर के बीचों बीच बनी हुई इमारत है,इसे निजाम ने बनवाया था।

हवामहलः

यह जयपुर में स्थित है और शहर के बीच है। गुलाबी रंग की ढेर सारे झरोखों वाली यह इमारत अत्यंत ही आकर्षक है।

चूँकि भारतवर्ष कई छोटी बडी रियासतों में बँटा हुआ था अतः प्रत्येक राज्य के बडे शहरों में हमे ऐतिहासिक किले और इमारतें दिखाई पड जाती हैं।

हमारे देश में पुरातत्व और उत्खनन संरक्षण विभाग अपना कार्य पूर्ण कार्यक्षमता से करता है। विभिन्न प्रकार की सभी ऐतिहासिक इमारतें उसके संरक्षण मे है एवं उसकी सुरक्षा और रखरखाव पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विभिन्न स्थलों पर इस विभाग द्वारा उत्खनन किए जाते हैं एवं नई नई खोजें प्रकाश में आतीं हैं। हमें तभी ऐतिहासिक तत्थ्यों की जानकारी हो पाती है।

उपसंहारः

जितने दिन जिंदा रहे हों गनीमत समझो ।अब इसके पहले कि लोग तुम्हे मुर्दा कहें कुछ नेकी का काम कर डालो।

शेखसादी

श्री अशोक कुमार कैंथ नामक व्यक्ति ने हाल ही में श्रीलंका की सरकार की मदद से श्रीलंका में अशोक वाटिका खोज निकाली है। वहाँ रामसेतु का अस्तित्व, रावण के महल, एयरपोर्ट इत्यादि भी खोज निकाले हैं।नालंदा एवं तक्षशिला के खंडहर हमारे देश के भव्य इतिहास के सूचक हैं।कहा जाता है नालंदा एक अंतराष्ट्रीय विश्व विद्यालय था जहाँ विश्व के कोने कोने

से विद्यार्थि पढने आते थे। वहाँ विशाल वेधशालाएं एवं पुस्तकालय भी थे। आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने वहाँ हमला किया एवं इन संस्थानों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। उसने छः   माह तक पडाव डाला और उसकी सेना का भोजन वहाँ की अमूल्य पुस्तकों को जला जला कर बनाया जाता रहा। चक्रवर्ती सम्राट अशोक का बनाया विजय स्तंभ जिस पर चार शेर बने हैं हमारे देश की करंसी पर चिन्हित किया गया है इसके तीन शेर दिखाई देते हैं । इसके अलावा जैन धर्म के सभी तीर्थ स्थल दर्शनीय हैं। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर दिल्ली का बिडला मंदिर एवं जामा मस्जिद सभी हमारी ऐतिहासिक धरोहरें हैं हमें इन पर गर्व है।लोगों को भी इन पर या इनकी सीमाओं में अवैध निर्माण नही करना चाहिये और उसकी रक्षा में सहयोग करना चाहिये।

36 नारी सशक्तिकरण अथवा भारतीय नारी प्रगति के कदम

प्रस्तावनाः

यत्र नार्यस्तु पुज्यंते वसन्ते तत्र देवाः

भारत वह देश है जहाँ नारी को पूजा जाता रहा है। जब बेटी का जन्म होता है तो लक्ष्मी आई है ऐसा कहा जाता है। यह देश सीता, सति और अनुसुया जैसी अनकों सती नारियों का देश है। इतिहास में भी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, दुर्गावती ,कर्णवती इत्यादि कई उदाहरण हैं,जो अलग अलग समय में भारत के आकाश में नक्षत्रों की तरह जगमगाए।कहा जाता है कि आर्य

जो हमारे प्रथम पूर्वज थे, उनके समय में मातृमुखी परिवार हुआ करते थे। अर्थात माता ही परिवार की मुखिया होती थी और उसी के नाम से उसके पुत्र पुत्रियाँ जाने जाते थे।

जीवन में जो कुछ पवित्र और धार्मिक है स्त्रियाँ उसकी विशेष संरक्षिका हैं।

महात्मा गांधी

मुस्लिम आकमणकारियों के काल में कुछ अप्रिय घटनाएं घट जाने से हिन्दूओं ने अपनी स्त्रियों को पर्दे में रखना आरंभ किया। शिक्षा भी उनके लिये वर्जित हो गई।कुछ कुप्रथाओं ने भी जन्म लिया जिनमें सती प्रथा प्रमुख थी। पति के साथ पत्नि को भी उसी अग्नि में जल कर प्राण देने होते थे।बाल विवाह में अत्यंत छोटी उम्र में बच्चों का विवाह कर माता पिता अपने कर्तव्य से मुक्ति पा लेते थे। अंग्रेजों में लॉर्ड विलियम बेंन्टिंक ने इन प्रथाओं को राजा राम मोहन राय जैसे समाज सुधारक के सहयोग से दूर किया।विधवा विवाह का प्रचलन शुरू हुआ।और उनपर होने वाले तमाम अत्याचार बंद कर दिये गए। स्त्री उसके बाद भी विशेष प्रगति न कर सकी। हाँ स्त्री शिक्षा का प्रचार प्रसार अवश्य हुआ।वह अब भी माता पिता द्वारा चुने हुए व्यक्ति से विवाह करती थी। इन संदर्भों मे दहेज एक विशालकाय राक्षस के रूप में उभरा। आज भी प्रति सात मिनिट में दहेज के लिये एक बहू जलाकर मार दी जाती है।इतने विकास के बाद भी नारी की यह स्थिति वास्तव में शोचनीय है।

विषयवस्तुः

पुरूष के उच्चतर ज्ञान की उद्दंड धारणा की अपेक्षा नारी की अंतः प्रेरणा अक्सर ज्यादा सही सिद्ध हुई है।

महात्मा गांधी

पिछले पंद्रह वर्षों में स्त्रियों की प्रगति तीव्र गति से हुई है।परंपरागत शिक्षा लेकर मात्र अध्यापिका नर्स या समाज सेविका बनने वाली स्त्रियों ने अब कम्प्यूटर शिक्षा एम.बी.ए. जैसे व्यवसायिक कोर्स में एडमिशन लेना शुरू कर दिया है क्यों कि देश में निवेश करने वाली तमाम मल्टी नेशनल कंपनीज मे इसी प्रकार की योग्यता वालों की रिक्तियाँ थीं।आज वे लाखों रूपये के पेकेज लेकर अच्छी अच्छी कंपनियों में कार्य कर रहीं हैं। इंदिरा नुई का नाम कौन नही जानता एच.एस.बी.सी. के सर्वोच्च पद पर आसीन है और दो करोड से अधिक जिनकी मासिक आय है। इसी प्रकार के उच्च पदों पर भारत की कई महिलाएं हैं। जैसे चंदा कोचर जो आई . सी.आई. सी. आई बेंक की सर्वोच्च अधिकारी हैं,निरूपमा राव जो विदेश सचिव हैं,अगाथा संगमा जो अत्यंत छोटी उम्र की सांसद हैं,टेसी थॅामस जो अग्नि 3 की असोसिएट प्रोजक्ट डायरेक्टर हैं। अंबिका सोनी जो युनियन मिनिस्टर हैं इत्यादि।

कल्पना चावला का नाम कौन नही जानता वे भारतीय मूल की करनाल की रहने वाली थीं । नासा में उच्च पद पर आसीन थीं। किन्तु दुर्भाग्य वश कोलंबिया दुर्घटनाग्रस्त होकर टेक्सास में जा गिरा और वे अमर

हो गई।कई युवा कन्याओं के लिये एस्ट्रोनोट का कोर्स करने की दिशा में वे प्रेरणा बन गई।

सुनीता विलियम्स भी भारतीय मूल की महिला हैं और अंतरिक्ष में काफी समय बिताकर धरती पर लौटीं। उनका भारत आने पर भव्य स्वागत किया गया उन्होने इस दिशा में जाने के लिये भारतीय युवतियों की प्रेरणा को और द्रढ किया।

कोई क्षेत्र ऐसा नही है जिसमें स्त्रियों के कदम पीछे हों। आज वह पायलट भी है और इंजन ड्राईवर भी। वे अंटार्कटिका के दल में भी हैं और बछेन्द्री पाल ने हिमालय पर भी झंडा गाडा है। वे मुक्केबाजी की टीम मे भी हैं, भारतीय महिला क्रिकेट टीम भी चर्चा में बनी रहती है और हॉकी में तो अंतराष्ट्रीय स्तर पर चेंपियन बन कर देश का नाम ऊँचा किया है।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश का नाम ऊँचा किया। उनके शासन काल में देश ने काफी प्रगति की। आतंकवादियों ने बडी क्रूरता से उनकी हत्या कर दी किन्तु देश विदेश में उनका नाम सदैव जीवित रहेगा।कांग्रेस की चेयरपर्सन के रूप में उनकी बहू सोनिया गांधी ने अपने पति राजीव गांधी की हत्या के बाद बिना कोई राजनैतिक पद लिये देशसेवा का व्रत लिया है।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सरोजिनी नायडू ,विजय लक्ष्मी पंडित जैसे नाम राजनीति के आकाश मे चमकते रहे हैं।

नारी परमात्मा के अलौकिक जादू की प्रतिमूर्ति है।नारी का जन्म शांति और प्रेरणा का अमर संदेश है।

सी.वी.रमण

एक पीढी पहले नारी माता पिता बडे भाई की आज्ञाकारिणी शाम होने से पहले घर लौट आने वाली,ससुराल में संयुक्त परिवार से जुडी सास, ननदो, जेठानियों की आज्ञा का पालन करती थी,अपने से छोटे देवरों, ननदों को मातृत्व का स्नेह देतीं थीं ऐसी नारी थी। उसकी सुबह से शाम कैसे होती थी उसे पता ही नही चलता था। पूरे घर के सारे कार्य उसकी जिम्मेदारी थे।वह चकरघिन्नी की तरह सारे दिन घूमघूम कर सारे कार्य करती रहती थी। जो स्त्रियॉं शिक्षित थीं व किसी स्कूल या दफ्तर में कार्य करतीं थीं वे भी घर के सारे कार्य निपटाकर ही अपने दफ्तर या स्कूल जाया करतीं थीं। किन्तु आज समय परिवर्तित हो गया है अब वह कॉल सेंटर्स मे भी काम करती है जिसमें ड्यूटी का समय ही सारी रात होता है अथवा अन्य मल्टी नेशनल कंपनीज में भी डशूटी का समय आठ से दस घंटे होता है उच्च पदों पर आसीन लडकियों को कार्यालय में और भी अधिक समय देना होता है।

आज नारी पॉंच मीटर की साडी से बाहर निकल आई है अब वह अपने कार्य के अनुरूप पुरूषों की भॉंति जीन्स टॉप पहनने लगीं हैं। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। अपने करियर को सर्वाधिक महत्व देती है। अपनी शर्तों पर विवाह करना चाहती है और पुरूष की ही कार्य में बराबर की भागीदारी चाहती है।

उपसंहारः

नारी की प्रगति और उसका नवीन रूप देखकर गर्व होता है। चौके चूल्हे तक सीमित पिछली पीढी की नारी जो अब माता या सास बन चुकी है इन प्रगतिशील विचारों को समझती है और उसने अपनी बेटी बहू को आगे बढने ही प्रेरणा ही दी है। अपवाद स्वरूप कुछ घटनाएं जो दहेज हत्या के रूप में हमारे सामने आती रहती हैं,हमें विचलित कर देतीं हैं।आज की नारी देश की प्रगति की भी एक इकाई है क्यों कि समाज के समग्र रूप में वह भी सम्मिलित है। पिछडे वर्गों में तथा कुछ कठोर परंपरागत वर्गों मे भ्रूण हत्या के मामले सामने आते रहते हैं किन्तु प्रगति शील परिवारों में पुत्रियों को प्रगति के उतने ही अवसर मिलते हैं जितने कि पुत्रों को और हमारे संविधान में उसे सम्पत्ति में बराबरी का हकदार बनाकर उसकी शक्ति में वृद्धि ही की है।

37 पुलिस प्रशासन और हम

प्रस्तावनाः

परंपराएं लेंप पोस्ट की तरह होतीं हैं बुद्धिमान उनकी रोशनी में अपनी मंजिल तय करते हैं और आलसी और अकर्मण्य उनके द्वारा अपनी विफलताओं का समर्थन करते हैं।

बाई काऊंट हेलशाम

विषय के तीनो शब्द एक दूसरे से जुडे हुए हैं क्यों कि किसी भी देश के नागरिक के जीवन को पुलिस और

प्रशासन दोनो ही प्रभावित करते हैं।जब हमारा देश आजाद हुआ तो हमारा संविधान बनाया गया,नई सरकार बनी राष्ट्रपति के पद पर डॉ.राजेन्द्र प्रसाद व प्रधानमंत्री के पद पर पंडित जवाहर लाल नेहरू विराजमान हुए,नया मंत्रीमंडल था किन्तु दो वस्तुएं नही बदलीं एक तो शिक्षा प्रणाली और दूसरी पुलिस। शिक्षा प्रणाली तो स्वयं ही नई पीढी ने बदल कर रख दी है आज बी.ए. एम.ए. करने वालों की संख्या अत्यंत कम शायद पिछडे शहरों में कुछ अधिक हो सकती है, लेकिन नई पीढी के युवक युवतियों ने व्यवसायिक शिक्षा का हाथ थाम लिया है क्यों कि इसी शिक्षा ने उन्हे अच्छी से अच्छी नौकरियाँ दिलवाई हैं मल्टी नेशनल कंपनीज को अपने कर्मियों में जिस योग्यता की आवश्यकता थी वह परंपरागत पद्धति मे नही इसी शिक्षा पद्धति में है।

पुलिस का स्वरूप वही है जो अंग्रेजों ने यहाँ बनाया था।इसमें रत्ती भर भी परिवर्तन नही हुआ है। यह एक आश्चर्य की बात है कि प्रशासन और पुलिस दोनो की इतने वर्षों में अवनति ही हुई है।

विषयवस्तुः

एक प्रजातंत्र को हम अपने तरूणों को शिक्षित करने से बढ कर कौनसा उपहार दे सकते हैं।

सिसरो

शिक्षा ही जनता प्रशासन और पुलिस सभी की आधार शिला है,वह शिक्षा नही जो स्कूल कॉलेजों की डिग्री मात्र मे छुपी है अथवा सिमटी है। संस्कारों की शिक्षा ,कर्तव्य निष्ठा की शिक्षा देश के प्रति कृतज्ञता की शिक्षा

देशप्रेम की शिक्षा।इन सभी का अंशमात्र भी अब दिखाई नही देता । हर व्यक्ति के सारे कार्य स्वार्थ पर आधारित होते हैं वह स्वार्थ वश जो कार्य करता है उसमें उसे यह नही दिखाई देता कितना नैतिक है अथवा पूर्णतः अनैतिक है।

हाल ही में 13 सितंबर 2008 को हुए आतंकवादियों द्वारा किए गए बॉम्ब ब्लास्ट में पुलिस इंस्पेक्टर मोहनचँद्र शर्मा के हताहत होने से एवं शहीद होने से तथा सम्पूर्ण 19 वर्षों के कार्यकाल में ढेरों इसी तरह के साहसिक प्रयासों द्वारा सैकडों अपराधों का शमन किए जाने के इतिहास को जान कर गर्व से मस्तक ऊँचा हो उठा, उनकी श्रद्धा में नत हो गया और उनकी मृत्यु पर आँखें नम हो उठीं।

किन्तु कितने पुलिसवाले ऐसे हैं? शायद नगण्य अर्थात नही के बराबर हमारे मन मे पुलिस की एक भ्रष्ट छवि बन चुकी है।वह पुलिस जो सभ्य और सज्जन व्यक्तियों को मौका मिलते ही ,सताने से बाज नही आती। जिसकी अपराधियों से सांठ गांठ होती है हर रेड लाईट पर चालान बुक लिये खडी रहती है और वहाँ जितना सरकारी खजाने के लिये इकठ्ठा करेगी उससे चौगुना बिना चालान काटे अपनी जेब के लिये। दहेज हत्या के कितने प्रतिशत मामलों में अपराधी सजा पाते हैं? बेहद कम क्यों कि बाकी के मामले धन लेकर रफादफा हो जाते हैं। महाराष्ट्र में पुलिस द्वारा किये गए दो मामलों ने पुलिस पर अविश्वास को और बढा दिया है जब रक्षक ही भक्षक बन जाए तो कोई कहाँ जाए? जहाँ नही करना है वहाँ काम करेगी वह भी गलत ,आतंकवादी

समझ कर कनॉट प्लेस मे मारे गए उधोगपति का परिवार क्या कभी पुलिस के प्रति अच्छी छवि बना पाएगा?इंटेलिजेंस द्वारा पुख्ता जानकारी मिल जाती है,आतंकवादी ई.मेल के द्वारा अपराध की पूर्व सूचना भी दे देते हैं किन्तु अपराध नही रोका जाता।बॉम्ब ब्लास्ट होते रहते हैं पूरे देश में अलग अलग स्थानो पर ,हजारों लोग मारे जाते हैं किसकी जिम्मेदारी है? क्यों नही पहले सुरक्षा के उपाय किये जाते? संसद पर हमला होता है और मुख्य अभियुक्त को पॉँच साल बाद आज तक फॉँसी नही दी जाती,कैसा है हमारा प्रशासन ?

सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य यही भारत का पूरा नाम है।हमारा संविधान है हमारे प्रतिनिधि चुन कर राज करेंगे अर्थात हमारी समस्याओं को संसद के पटल पर रखेंगे उनका निराकरण करेंगे। पिछले 62 वर्षों में यह मौलिक तत्व समाप्त होता चला गया। विभिन्न जातियों, धर्मों सम्प्रदायों भाषा भाषियों वाले इस देश को नेताओं ने वोटों की राजनीति करते करते इन भेदों की खाईयों को और गहरा कर दिया है, चौडा कर दिया है। नेता के लिये हर व्यक्ति एक वोट है और उस एक वोट को पाने के लिये वह उसकी समस्या नही सुलझाता बल्कि उसे धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर भडकाता है,और वोट हॉँसिल कर लेता है

प्रति पॉँच वर्ष में वह ढेरों आश्वासन और लालच देकर वोट लेता है और फिर पॉँच वर्षों तक अपने उस चुनाव क्षेत्र की सुध भी नही लेता। उसे क्षेत्र के विकास के लिये जो रूपया मिलता है उसका भी एक मामूली सा प्रतिशत ही वहॉँ के विकास पर खर्च करता है।बिजली,

अशुद्ध पेय जल, तथा गर्मियों मे दोनो की कमी, महंगाइ,ि मिलावट, तथा अपराध, भ्रष्टाचार,कभी न खत्म होने वाली जनता की समस्याओं की लंबी फेहरिस्त और उनसे बेखबर नेता जो सही अर्थों में राज करता है, वह शानदार कोठी में रहता है कई नौकरों की फौज, और बुलेट प्रुफ गाडी की सुरक्षा, मुफ्त ट्रेन , मुफ्त प्लेन यात्रा , मुफ्त बिजली , मुफ्त टेलीफोन और ऊपर से अच्छी खासी तनख्वाह भी इसे राज करना ही कहा जा सकता है।

उपसंहारः

अपने मन को मत गिरने दो । लोग गिरे हुए मकान की ईटें तक उठा ले जाते हैं पर सीधी खडी इमारत को कोई हाथ तक नही लगाता।

कुरान

प्रत्येक धर्म अच्छी बात सिखाता है। हर व्यक्ति किसी न किसी धर्म का अनुयायी होता है फिर क्यों इतने अत्याचार अन्याय और भ्रष्टाचार होते हैं। नेता गण आराम की जिन्दगी जीते हैं उन्हे कभी किसी समस्या का सामना नही करना पडता है इसीलिये समस्याओं से जूझते हुए इंसानों के दर्द को वह नही समझता। वह स्वयं बुलेटप्रुफ गाडी में ढेरों सुरक्षाकर्मियों के बीच चलता है अतः आतंकवादियों द्वारा मार्केट में, बस में, ट्रेन में ,सिनेमाघर में होने वाले बॉम्ब ब्लास्ट से लोगों के क्षत विक्षत शरीर और उसके प्रियजनों का आर्तनाद उसे सुनाई नही देता, दिखाई नही पडता और जनता की सुरक्षा के लिये बनाई गई पुलिस ? उसे अपने

कर्तव्य की गंभीरता का ज्ञान ही नही है,न ही उसके अंदर या सी.बी.आई जैसी सर्वोच्च संस्था जो गुप्तचर एजेंसी है पर हम गर्व कर सकते हैं।एक घर में चार व्यक्ति हैं चार में से दो के कत्ल हो जाते हैं और एक डेढ वर्ष बाद भी दोनो न तो पुलिस न ही सी.बी.आई कातिल का पता लगा पाती है। बरामद सामान का क्या होता है? यदि चोर पकडा जाता है तो? क्या वह सामाान चोरी के शिकार व्यक्ति को मिल पाता है? जी हॉं मिलता है किन्तु आधाअधूरा या बदल दिया हुआ।पुलिस और प्रशासन के बीच पिसती है जनता।

38 मेरे जीवन का अविस्मरणीय दिवस

विश्व एक सुंदर पुस्तक है व शिक्षाप्रद भी जो इसे पढ कर हृदयंगम नही कर सकता उसके लिये वह सर्वथा निरूपयोगी है।

गोल्डोनी

प्रस्तावनाः मनुष्य के जीवन में अनेकानक घटनाएं घटतीं हैं जिन्हे वह कभी भूल नही पाता।ये घटनाएं अच्छी भी हो सकतीं हैं और बुरी भी,लेकिन अविस्मरणीय अवश्य होतीं हैं।

वैसे तो छात्रावस्था स्वयं ही ऐसी अवस्था होती है जब मनुष्य जीवन का अधिकांश समय स्कूल में व्यतीत होता है। उसके मित्र उसके अध्यापक और स्कूल की बातें सभी कुछ हर्षित करता है।

स्कूल में वह शिक्षा गृहण करने जाता है और प्रातः काल असेंबली से लेकर छुट्टी तक का सारा समय

शिक्षण का ही होता है जिसमें अनुशासन बद्ध होकर अध्ययन करना होता है। स्पोर्टस् का अथवा लाईब्रेरी के पिरियड के अलावा रिसेस में ही वह कुछ बातें या वार्तालाप मित्रों से कर सकता है। कुछ बच्चे स्कूल के बाहर भी मित्रता रखते हैं, स्कूल बस से आने जाने वाले अथवा एक दूसरे के घर नोटबुक लेने या देने जाने के लिये अथवा एक दूसरे के साथ अध्ययन करने के लिये एक दूसरे के घर आने जाने वाले बच्चों की मित्रता गहराती है। मेरे जीवन का अविस्मरणीय दिवस भी मेरे एक मित्र से जुडा है।

विषय वस्तुः

ज्ञान जब इतना घमंडी बन जाए कि वह रो न सके ,और इतना गंभीर हो जाए कि

वह हँस न सके और इतना आत्मकेन्द्रित हो रहे कि अपने अलावा किसी को सोच ही न पाए,तो वह ज्ञान अज्ञान से अधिक भयानक है।

खलील जिब्रान

तब मै कक्षा 9 का विद्यार्थि था।मेरा विद्यालय काफी बडा है।यह चार मंजिल की इमारत में है,इसमें लगभग तीस कमरे हैं और पचास अध्यापक और अध्यापिकाओं का स्टाफ है।हमारी प्राचार्या हमें बहुत प्रिय है क्यों कि वह हमारी सारी समस्याओं को समझदारी के साथ सुलझाती है।वे अध्यापकों छात्रों और मेनेजमेंट के बीच सकारात्मक संतुलन बनाए रखतीं हैं।

मेरी कक्षा में एक नए विद्यार्थि का एडमिशन हुआ। उसका नाम विजय था।वह एक साधारण सा दिखने वाला विद्यार्थि था। मै कक्षा ८ में चारों सेक्शंस में सर्वोच्च अंक लेकर पास हुआ था और पाठशाला में होने वाली सभी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेता था।मै सभी अध्यापक और अध्यापिकाओं एवं प्राचार्या महोदया का प्रिय विद्यार्थि था क्यों कि इन सब गतिविधियों में मै सक्रीय रूप से भाग लेता था और प्रथम ही आता था। मैने विद्यालय के लिये कई अंर्तविद्यालयीन भाषण, तात्कालिक भाषण एवं वाद विवाद इत्यादि प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कई ट्रॉफियाँ जीतीं थीं। मुझे अपने आप पर काफी गर्व था।मै किसी भी विद्यार्थि को अधिक महत्व नही देता था।

मै चूँकि एक सम्पन्न परिवार से हूँ मुझे पुस्तकों की कोई कमी कभी न थी फिर भी मै लाईब्रेरी से भी पुस्तकें इशू करा कर पढता था और उसमें से अच्छे अच्छे पॉईन्ट्स एवं बहुत अच्छे कोटेशन्स भी नोट कर लेता था। मै अपने बहुत अच्छे नोट्स बनाता था और उन्हे किसी को नही दिखाता था।मै विद्यालय की और घर की नोटबुक्स अलग अलग ही रखता था किन्तु किसी टेस्ट अथवा परीक्षा में अपने घर में रखे अच्छे नोट्स से ही याद करके उत्तर लिखा करता था।

विजय ने काफी देर से एडमिशन लिया था और शीघ्र ही हमारी अर्धवार्षिक परीक्षा आरंभ होने वाली थी। प्राचार्या महोदया ने कक्षा में आकर मुझसे कहा कि अभी तक के सभी विषयों के प्रश्न उत्तरों की नोटबुक मै उसे एक एक कर देता रहूँ ताकि वह उन्हे अपनी

नोटबुक में उतार ले । पहले तो मैने बहाना बनाना चाहा कि मॅडम मै कैसे पढूँगा? यदि नोटबुक्स उसे दे दूंगा? विजय ने तुरंत ही कहा कि वह एक दिन में एक नोटबुक का कार्य अपनी नोटबुक में उतार लेगा तब मै निरुत्तर हो गया और प्राचार्या महोदया आश्वस्त हो गई। एक सप्ताह में ही उसने सारे नोट्स उतार लिये यह बताने की आवश्यकता नही कि मैने उसे स्कूल वाले नोट्स ही दिये थे। बात आई गई हो गई और हम अपनी अपनी पढाई मे जुट गए।निश्चित तिथि को परीक्षा आरंभ हो गई।मै प्रश्नपत्र आरंभ होने के पहले और बाद में किसी विघार्थि से बात न करता था। मेरे बहुत से मित्र थे किन्तु वे सामान्य से अंक अर्जित करने वाले विघार्थि थे।

जब रिजल्ट आया प्रत्येक कक्षा में सुनाया गया तो मुझे अपने कानो पर विश्वास नही हुआ।कक्षा में सर्वोच्च अंक पाने वाले छात्र का नाम विजय था।मुझे ऐसा लग रहा था कि विजय ने मेरे मुँह पर कस कर तमाचा मार दिया हो । सारी क्लास तालियाँ बजा रहीं थी।अध्यापिका भी मुस्कुरा रही थी उसे बधाई दे रहीं थीं।इतने थोडे से दिनो में उसने न सिर्फ सर्वोच्च अंक पाए थे बल्कि अपने अच्छे और मिलनसार स्वभाव से पूरी क्लास के विघार्थियों को अपना मित्र भी बना लिया था। मै बडी देर तक सकते में बैठा रहा।किसी पिरियड में क्या पढाया गया मुझे कुछ समझ में नही आया। कब छुट्टी हुई और कब मै घर पहुँचा मुझे कुछ याद नही।मैने अपना रिपोर्टकार्ड भी मम्मी को नही दिखाया किन्तु दस्तखत कराने थे सो रात में दिखाना ही

पडा।मम्मी भी रेंक में द्वितीय देख कर चौंकी,उन्होने कारण पूछा मैने गोलमाल जवाब देकर छुटकारा पा लिया।

रिजल्ट आने के बाद हम सभी अपने अगले पाठ्यक्रम को पढने और नोट्स वगैरह बनाने मे जुट गए 3 मार्च से हमारी परीक्षाएं आरंभ होने वाली थीं और यह घटना 28 जनवरी की है। हमने गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया था मेरे भाषण पर खूब तालियाँ बजीं थीं।विजय अन्य गतिविधियों में भाग नही लेता था वह शर्मीला और चुप रहने वाला छात्र था।

विद्यालय आते समय मै पहले बस पर चढता था और वह बाद में।विजय का स्टॉप आया वह चढने ही जा रहा था कि अचानक एक साईकिल वाले ने उसे परे धकेल दिया।उसका बॅग छिटक कर दूर जा गिरा।वह तो सम्हल कर उठ खडा हुआ किन्तु तेजी से आता हुआ एक ऑटो उसके बॅग को कुचलता हुआ निकल गया। उसने जाकर बॅग उठाया जो पूरी तरह जीर्ण शीर्ण होकर फट गया था तमाम पुस्तकें और नोट बुक्स दो चक्कों के गुजरने के बाद कैसी होंगी यह हम सभी अंदाज लगा सकते हैं।विजय बस मे चढा उसने अपनी नोटबुक्स देखीं और उसकी आँखों से अविरल अश्रु धारा बह निकली। वह सारा दिन स्कूल मे रोता रहा सभी उससे अपनी सहानुभूति जताते रहे।मै नही गया मै खुश था कि अच्छा हुआ अब कैसे पढेगा?

रात को मुझे देर तक नींद नही आई। मै करवटें बदलता रहा। मेरी अंतरात्मा मुझे धिक्कार रही थी ।

दूसरे दिन रवीवार था। मैने अपनी पॉकेटमनी से अपनी तमाम नोटबुक्स की फोटोकॉपी करवाई। सोमवार को जैसे ही वह बस में चढा मैने इशारे से उसे अपने पास बुला कर बैठाया।वह उदास था। मैने अपने बॅग मे से सारे फोटोकॉपी किये नोट्स उसे दिये। हर्ष और आश्चर्य से उसने मुझे देखा फिर भाव विव्हल हो कर मुझसे लिपट कर फूटफूट कर रोने लगा। मेरी आँखों से भी आँसू बह रहे थे । मुझे लगा मै द्वितीय नही प्रथम आया हूँ। इसके बाद हम दोनो गहरे दोस्त बन गए। दसवीं की अर्द्ध वार्षिक परीक्षा हुई इस बार मै प्रथम था दो अंकों से पिछड कर वह द्वितीय स्थान पर था किन्तु वह खुश था उसने मुझे बधाई दी। बोर्ड की वार्षिक परीक्षा आरंभ होने से पहले ही उसके पापा की ट्रांसफर हो गई वह विद्यालय से चला गया। चूँकि वह बडे दिन की छुट्टियों मे चला गया था उससे मुलाकात भी न हो सकी थी।अध्यापिका से ही उसके जाने का कारण भी पता चला था। आज मेरे पास उसका पता भी नही है। वह मुझे हमेशा याद आता है व आता रहेगा।उसने ही मेरी अंर्तआत्मा को जगाया था। अब कक्षा में सभी मेरे मित्र हैं मै सभी की मदद करता हूँ।

उपसंहारः

यह सत्य मैने जान लिया है कि अपने लिये तो सभी करते हैं दूसरों की मदद करके जो आनंद मिलता है वह बडी से बडी दौलत पाकर भी शायद ही मनुष्य को मिल पाता हो।

सुख के बारे में बहुत सोचने पर मै इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वह एक तितली के समान है जो पीछा करने पर पकड मे नही आती पर उसकी लालसा नही रखने पर स्वयं आकर हाथ पर बैठ जाती है।

मॉन्टेस्क्यू

39 मेरा प्रिय मनोद्योग

प्रस्तावना: हमारा सबसे बडा मित्र हमारा आत्म विश्वास है।

स्वामी विवेकानन्द

केवल कार्य करते रहने से व्यक्ति का जीवन नीरस हो जाता है और वह ऊब सी महसूस करने लगता है चिडचिडा भी हो जाता है।हमारी स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी दिन के अठारह घंटे कार्य करतीं थीं और थकान भी महसूस नही करतीं थीं।एक बार जब एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि ऐसा क्यों है? तब उन्होने हँसते हुए कहा कि वे जब एक काम करते हुए थकान महसूस करने लगतीं हैं तब दूसरा काम करना शुरू कर देतीं हैं।और उनकी थकान दूर हो जाती है।

मनुष्य जीवन में कार्य होने पर मनोरंजन चाहता है। मनोरंजन करने से वह नवीन उत्साह महसूस करता है और फिर दूने उत्साह से अपने कार्य को करने में जुट जाता है।यह मनोरंजन वह किसी भी प्रकार से कर सकता है। फिल्म या टी.वी. देख कर अपनी पसंद का कोई खेल देख कर या खेल कर अथवा अपनी पसंद

की कोई पुस्तक पढ कर । खाली समय में अधिकाधिक वह जिस प्रकार से मनोरंजन करता है उसे ही मनोद्योग अर्थात भ्ठ्ठठल कहते हैं प्रत्येक व्यक्ति की पसंद अलग अलग होती है और कुछ लोगों की एक सी भी। मेरा प्रिय मनोद्योग पुस्तकें पढना है और यह मुझे बहुत प्रसन्नता देता है।

विषय वस्तुः

पुस्तकें पंडित बनने के लिये नही पढी जाती हैं,वे पढी जाती हैं जीना सीखने के लिये ,जिंदगी के राजमार्ग पर चलने के लिये।

जवाहर लाल नेहरु

बचपन मे मै कॉमिक्स पढा करती थी, वैसे आज भी कॉमिक्स देख कर मेरा मन उन्हे पढने को ललचाने लगता है। मै अपने सभी कॉमिक्स सम्हाल कर रखा करती थी। मम्मी ने मुझे कॉमिक्स खरीदकर देने मे कभी कंजूसी नही की।शायद इसलिये कि यह कोई महंगा शौक नही था और मैने दूसरे बच्चों की तरह कभी फिजूल के खिलौनों के लिये जिद नही की।

यही कॉमिक्स पढने का शौक बढता गया। बचपन मे मै स्वयं ही अपने ऊपर अनुशासन करती स्कूल का होमवर्क समाप्त करने के बाद ही कॉमिक्स पढूंगी मै इस नियम का कठोरता से पालन करती। जब मै कुछ बडी हुई तो पापा मुझे अक्सर शिक्षाप्रद कहानियों की पुस्तकें लाकर दिया करते थे इनमे मातृपितृ भक्त बालक बालिकाओं की, गुरु भक्त बालक बालिकाओं की, साहसी बालक बालिकाओं की कहानियाँ होतीं थीं। इन्हे

जब भी मै पढती मेरी आँखों से आँसू अवश्य बहते। मै एक प्रकार की प्रेरणा महसूस करती। देशभक्त बालकों की कहानियाँ मेरे मन में देश प्रेम को कूटकूट कर भरतीं इसी प्रकार माता पिता गुरुओं के प्रति भी मै कहानी के पात्रों के अनुकूल श्रद्धा और सम्मान अनुभव करती। जब मै कुछ बडी हुई तो मै स्कूल लाईब्रेरी से पुस्तकें इशू कराकर पढने लगी।हमारी स्कूल लाईब्रेरी में ढेरों अच्छे अच्छे कहानीकारों की उपन्यासकारों की पुस्तकें हैं।मैने शहर की सबसे बडी लाईब्रेरी भी जॉईन कर ली। अब मेरे पास प्रति सप्ताह दो पुस्तकें हुआ करतीं थीं।

लाईब्रेरी वाली मॅडम भी मुझे अच्छी तरह पहचानने लगीं हैं। मै समय पर और यथावत पुस्तक को लौटाती हूँ क्योंकि मै पुस्तकों का सम्मान करती हूँ। आज मै यह कह सकती हूँ भारतीय साहित्य अनमोल पुस्तकों से भरा पडा है।हमारे देश के महान उपन्यास कार शरतचँद्र, बंकिमचँद्र, प्रेमचँद्र, रविन्द्रनाथ टैगोर, शिवानी ,मृणाल पांडे, राजेन्द्रसिंह बेदी, अमृता प्रीतम सभी की पुस्तकें मै पढती हूँ और मुझे सभी पुस्तकें एक से बढकर एक लगतीं हैं।सभी के कथानक भिन्न होतें हैं देश काल परिस्थिति भाषा सभी कुछ भिन्न होता है किन्तु सभी पुस्तकें मेरे मन को मोह लेतीं हैं। टी.वी. के धारावाहिक मुझे कभी आकर्षित नही करते । इन पुस्तकों का सकारात्मक प्रभाव मेरे मनो मस्तिष्क पर पडता है। मै आज भी अपने प्रति उतनी ही कठोर अनुशासित हूँ आज भी मै पहले अपनी पढाई करती हूँ फिर अपनी पुस्तक पढती हूँ।कक्षा में प्रथम आती हूँ इसलिये मम्मी

पापा को भी मेरे इस मनोद्योग से कोई शिकायत नही है। अब मैने धीरे धीरे अपनी पॉकेटमनी से अपनी पसंद की पुस्तकों को खरीदना भी आरंभ कर दिया है और मेरी अपनी एक छोटी सी लाईब्रेरी है ,पापा ने इसके लिये मुझे स्टील के ग्लास लगे अलमीरा खरीद कर दिये हैं। मै इसके रख रखाव पर पूर ध्यान देती हूँ।

परीक्षा के दिनों मे मै कोई पसंदीदा पुस्तक नही पढती हूँ बल्कि कोर्स की पुस्तकों मे ही अपना ध्यान लगाती हूँ।

जब से मै समझदार हुई मैने एक और विशेष काम किया।जब भी मै कोई पुस्तक पढती हूँ मुझे उस पुस्तक के आरंभ से अंत तक जो विशेष वाक्य अच्छे लगते हैं उसे मै एक मोटी सी नोटबुक में कहानीकार अथवा उपन्यासकार के नाम के साथ लिख लेती हूँ।मै कभी कभी अपनी इस नोटबुक को पढ कर भी आनंदित होती हूँ।ये वाक्य मुझे प्रेरणा भी देते हैं। कभी कभी मेरा मित्रवर्ग मुझसे नाराज भी हो जाता है जब वे मुझसे कहीं घूमने चलने का आग्रह करते हैं और मै इन्कार कर देती हूँ।मम्मी भी अक्सर कहती रहती है कभी कभी घूम भी आया कर लेकिन मुझे भीड भाड वाले बाजार या मॉल मे फिजूल घूमते रहना अच्छा नही लगता। हाँ फिल्म देखने अवशय मम्मी पापा या फिर कभी कभी मित्रों के साथ भी जाती हूँ।मेरा मनोद्योग ऐसा है कि उसके बारे मे किसी से बात नही कर पाती क्यों कि मेरे मित्र वर्ग में किसी को इसमे रुचि नही है न ही मम्मी पापा को । इस तरह पुस्तकें मेरी मित्र हैं और अभिन्न

मित्र हैं जो एकांत मे मेरा साथ देतीं हैं मुझे आनंद देतीं हैं मुझे अच्छी बातें सिखाती हैं और साथ ही मुझे प्रेरणा भी देतीं हैं।

उपसंहारः

इस पृथ्वी पर ऐसा कोई दुः ख ऐसी कोई वेदना नही है जिसे अच्छी पुस्तकें समाप्त न कर दे।

प्लीनी

किसी दार्शनिक ने कहा है कि पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होतीं हैं यह बात शत प्रतिशत सही है । आपके मित्र आपके साथ हमेशा नही रहते किन्तु पुस्तकें आपके साथ हमेशा रह सकतीं हैं।

पुस्तकें वे प्रकाश स्तंभ हैं जो समय के विशाल समुद्र मे खडे किये गए हैं।

विपिल

इन प्रकाश स्तंभों के प्रकाश में हम जीवन की कठिनाईयों के अंधकार को आसानी से पार कर लेते हैं। मेरे लिये पुस्तकें संसार का सबसे बडा धन है। अब मैने धीरे धीरे अंग्रेजी की छोटी छोटी कहानियों की पुस्तकें भी पढनी आरंभ कर दी हैं मुझे आशा है कि इसमें भी अंग्रेजी के नए शब्द नए वाक्य मिलेंगे जो मेरा ज्ञान वर्धन तो करेंगे ही मुझे अच्छी अंग्रेजी भाषा बोलने मे भी मेरी मदद करेंगे।

पुस्तक प्रेमी सबसे अधिक धनी व सबसे अधिक सुखी है।

थोरो

40 सच्ची मित्रता

प्रस्तावनाः

केवल सज्जनों में ही सच्ची मित्रता हो सकती है।

सिसरो

दार्शनिक दूरद्रष्टा होते हैं, वर्षों पहले कहा गया यह कथन कितना सत्य है।ऐसा नही कि आज मित्रता का अस्तित्व समाप्त हो गया है।मित्रता है किन्तु उसका रूप बदल गया है।उसके आधार भूत स्तंभ जो स्नेह त्याग विश्वास अथवा सहयोग पर आधारित थे, समाप्त हो गए हैं।

A friend in need is friend indeed.

मित्र वही जो संकट के समय आपकी सहायता करे। स्कूल से लेकर आने वाले जीवन पर्यंत एक अच्छा मित्र सदैव सहायता के लिये तत्पर रहता है।

जीवन फूलों की सेज नही होता इसमें काँटे भी होते हैं। बाधाएं भी आतीं हैं किसी के जीवन में अधिक, किसी के जीवन में कम, किसी के जीवन के आरंभिक काल में और किसी के जीवन के उत्तरार्ध में, किन्तु बाधाएं आतीं अवश्य हैं।ये बाधाएं आर्थिक कठिनाई बनकर ,स्वास्थ्य संबंधी अथवा अचानक कोई दुर्घटना बन कर भी आ सकतीं हैं।उस समय व्यक्ति को अचानक तीव्रता से किसी मित्र की जरूरत होती है जो उसे ढांढस बँधा सके ,उसकी हिम्मत बढा सके, उसकी तात्कालिक रूप से

मदद कर सके।अच्छे विचार रखने वाले ,अच्छे परामर्श देने वाले और ऐसे भी जिनसे हम कुछ सीख सकें, मार्गदर्शन पा सकें, अच्छे और सच्चे मित्र हैं।

विषय वस्तुः

कीटो अपि सुमनः संगति आरोहति सतां शिरः

अर्थात एक छोटा सा कीडा भी यदि वह फूल के अंदर छुपा है मंदिर में प्रभु की मूर्ति के ीतर पर आरोहित हो जाता है। इसी प्रकार अच्छे मित्र की संगति आप पर पूरा प्रभाव डालती है और आपके व्यक्तित्व को भी निखारती है।

A friend is who knows the best and worst of us and loves just the same.Be slow in choosing a friend ,slower in changing.

प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाईयाँ और बुराईयाँ दोनो ही होतीं हैं।कोई भी व्यक्ति सर्वगुणसम्पन्न नही होता है। हम मानव हैं हमसे भूलें होतीं ही रहतीं हैं। किसी भी व्यक्ति का मूल्यांकन करते हुए हमे उसके छोटे मोटे दुर्गुणों को एक ओर रख देना होगा।पानी का स्वभाव नीचे की ओर जाने का होता है उसी प्रकार दुर्गुण की ओर मन जल्दि भागता है।छोटे मोटे दुर्गुण को हम अपने मैत्रीपूर्ण परामर्श से आपस में दूर करना चाहिये।मित्रता का कोई मापदंड नही होता। श्री कृष्ण और सुदामा की मित्रता इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें प्रभु श्री कृष्ण ने गरीब सुदामा के आत्म सम्मान को बचाते हुए उसे उसकी गरीबी से मुक्ति दिला दी थी,उन्होने सुदामा का सत्तु भी बडे प्रेम से खाया था।

आज हमें सच्ची मित्रता के उदाहरण देखने को नही मिलते हैं। आज की मित्रता महज तिपमदर्कोपच बनकर रह गई है।एसा भी नही है कि विदेशों में सच्ची मित्रता के उदाहरण कभी नही थे।आज का समय प्रगतिशीलता का युग है,सभी के बीच गहन प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा की भावना है प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से आगे निकल जाना चाहता है।यदि उसे दूसरे को गिरा कर अथवा कंधे पर पैर रख कर भी ऊपर चढना हो तो वह उसमे भी परहेज नही करता। ऐसे मे सच्ची मित्रता की संभावना तलाश करना भी मूर्खता है।

आज की मित्रता घूमने फिरने के लिये ,फिल्म देखने के लिये ,पिकनिक पार्टी तक सीमित है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने ज्ञान को दूसरे से छुपा कर रखता है,यदि आप जानते हैं किसी विशिष्ठ निर्दिष्ठ तक पहुँचने का मार्ग अथवा प्रकि्या तो आप कभी नही चाहेंगे कि दूसरा उसे जाने क्यों कि यदि आप ने उसे बता दिया तो उसी मार्ग से पहुँच कर जिस पद पर आप प्रत्याशी हैं,वह पद वह स्वयं हथिया लेगा। आज के युवक युवतियों में अपने करियर के प्रति जागरुकता अत्याधिक है एवं वह भावुक न होकर जीवन में यथार्थ वादिता को महत्व देता है इसीलिये स्वयं के पास जो जानकारी होती है उसे दूसरे से छुपा कर रखना ही श्रेयस्कर समझता है।इस स्थिति में हमेशा किसी के द्वारा कुछ भी पूछे जाने पर झूठ ही उसकी जुबान से निकलता है और यह आदत इतनी जड पकड चुकी है कि निरर्थक सी बातों का भी वह सही उत्तर नही देता मसलन यदि

आपने पूछा यह शर्ट कहाँ से खरीदी है तो वह कहेगा यह मेरी

यू.एस. वाली आंटी ने उपहार में दी है भले ही उस शर्ट को लोकल मार्केट से ही क्यों न खरीदा गया हो।ऐसी स्थिति में गंभीरता कहाँ रहेगी?

कहा जाता है कि जब व्यक्ति अपने जूते दुकान पर जाकर पहन कर देख कर अपनी पसंद से खरीदता है तो मित्रता क्यों नही सोच कर के करता है? मित्रता का प्रभाव निश्चित रूप से व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पडता है। बुरी संगत से बिगड जाने वालों की संख्या भी कम नही है। आज के तीव्र गति वाले युग में व्यस्त माता पिता बच्चों पर विशेष ध्यान नही दे पाते हैं सभी अपनी अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहते हैं,ऐसे में युवा होते बच्चों को स्वयं ही समझदारी से काम लेना चाहिये एवं मित्रों का चयन सोच समझ कर करना चाहिये।

प्रगति जीवन मे कई अच्छी और नई बातें लाई है तो समाज में कई तरह की बुराईयाँ भी आ गईं हैं। इन बुराईयों से अछूता रह पाना भी एक दुष्कर कार्य हो गया है।

सम्पन्नता मित्र बनाती है किन्तु उनकी परख विपदा में ही होती है।

शेक्सपीयर

उपसंहारः

हितोपदेश में कहा गया है कि बुरे व्यक्ति से कभी मित्रता नही करनी चाहिये। जिसप्रकार कोयला यदि जल

रहा है तो उसे छूने पर हाथ जल जाएगा यदि ठंडा है तब भी उसे छूने पर हाथ काले हो जाएंगे।

अगर तुम्हारे मित्र ऐसे हैं जो तुम्हारी गलत तारीफ करने के बजाय तुम्हारी गल्तियों से आगाह करते हैं तो तुम अक्लमंद हो कि तुमने अच्छे दोस्तों का इंतखाब अर्थात चयन किया।

फीतागोरत

हमे कहानियों फिल्मों में मित्रता के ऐसे उदाहरण मिलते हैं किन्तु वास्तविक जगत में शायद ही कोई मित्रता के इस उत्कृष्ट रिश्ते को निभाता हुआ दिखे।कठिनाई किसके जीवन में नही आती ? ऐसी स्थिति में तात्कालिक रूप से व्यक्ति की स्वयं की बुद्धि एवं चेतना ठीक से कार्य नही करती। वैसी स्थिति ही सच्चे मित्र के परामर्श एवं सहायता और कुछ प्रेरणा देने वाले हिम्मत बढाने वाले शब्दों की होती है। अक्सर लोग धनसम्पन्न के इर्द गिर्द जमा होते हैं क्योंकि उसका साथ उन्हे नित्य कुछ न कुछ देता रहता है किन्तु यदि उसकी स्थिति बदल जाए और दुर्भाग्यवश वह धनहीन हो जाए तो उसके इर्द गिर्द की समस्त भीड छँट जाएगी और पीठ पीछे उसका मजाक उडाने वाले भी कम न होंगें।

41 परिश्रम का महत्व

प्रस्तावनाः

निठल्लापन वह दरवाजा है जिसमे सारी बुराईयाँ बेरोकटोक घुस आतीं हैं। एक निठल्ला आदमी बिना

दीवारों के उस घर की तरह है जहॉं हर दिशा से शैतान बडी सुगमता से प्रवेश पा लेता है।

चॉसर

आलस्य ही मनुष्याणाम शरीरस्तो महा रिपुः

आलस्य मनुष्य के शरीर का सबसे बडा शत्रु है, उसी प्रकार परिश्रम मनुष्य शरीर का सबसे बडा मित्र है। परिश्रम करने से शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। विश्व के आधुनिकतम् स्वास्थ्य संबंधी अन्वेषण ने सिद्ध किया है कि भोजन में कितनी केलोरी व्यक्ति रोज लेता है उनमें से शक्ति वर्धक अंश लेने के बाद बची हुई केलोरीज बर्न कर दी जानी चाहिये जो कि परिश्रम से ही संभव है जो लोग ज्यादातर कार्यों में नौकरों पर निर्भर करते हैं वे मोटापे का शिकार हो जाते हैं और कई प्रकार की बीमारियों जैसे ओबेसिटी,हाई ब्लडप्रेशर, हायपर टेंशन और हार्ट डिजीज इत्यादि का शिकार हो जाते हैं। बडे शहरों और महानगरों में अस्पतालों में इस तरह के मरीजों की संख्या दिन प्रतिदिन बढती जा रही है।

विषयवस्तुः

भाग्य के हाथ में सब कुछ है किन्तु रुकना कभी श्रेयस्कर हुआ है? सांस रुकती है,उसे मौत कहते हैं,गति रुकती है उसे भी मौत कहते हैं,हवा रुकती है वह भी मौत है।

जैनेन्द्रकुमार

व्यक्ति का पूरा जीवन और उसकी प्रगति भी परिश्रम पर आधारित होती है।कहा जाता है कि जंगल का राजा सिंह भी भूख लगने पर शिकार के पीछे भागता है तब कहीं अपना पेट भर पाता है।कोई मृग स्वयमेव उसके मुख मे प्रवेश नही करता।

एक कृषक दिन भर खेतो मे कठोर परिश्रम करता है।चाहे कडकती हुई गर्मी हो उसका शरीर झुलसता हो ,ठिठुरती हुई ठंड हो, अथवा घनघोर वर्षा हो रही हो वह काम करता ही रहता है,उसके इस कठोर परिश्रम के फल के रूप में पूरा देश अनाज सब्जियाँ और फल पाता है। इसी प्रकार के कार्य लोहार, सुतार, राजमिस्त्री और मजदूर भी करते हैं।ये सभी हमारे जीवन के सहायक व्यक्ति हैं जो हमारे लिये कठोर परिश्रम करते हैं। हमारे लिये घर बनाते हैं,लोहे और लकडी का सामान बनाते हैं।इसी प्रकार कई छोटे बडे सामान जो हम बाजार से खरीद कर लाते हैं कितने ही लोगों के कठोर परिश्रम का परिणाम होते हैं।

स्वास्थ्य परिश्रम में है और परिश्रम के अतिरिक्त वहाँ तक पहुँचने का कोई दूसरा राजमार्ग नही है।

वेंडेल फिलिप्स

आज का जीवन भागदौड भरा है,व्यस्त है।प्रत्येक को चाहे वह विद्यार्थि हो अथवा उसके माता पिता ,बडे भाई बहन भाभी इत्यादि। लगभग सभी किसी न किसी कंपनी कार्यालय अथवा स्कूल में काम करते हैं। जो व्यापारी हैं वह भी सुबह से शाम तक अपने व्यवसाय में व्यस्त रहता है। इस प्रकार सभी के जीवन परिश्रम से

परिपूर्ण हैं।केवल कुछ उच्च वर्ग के लोगों के जीवन मे परिश्रम नही है। उनके सभी कार्य नौकर कर देते हैं।उन्हे एक ग्लास पानी भी स्वयं लेकर पीने की आवश्यकता नही पडती। उनके बागों को माली संवारता है,बटलर खाना पका कर खिलाता है, ड्रायवर उन्हे शॉपिंग या पार्टी पर ले जाता है। उनके जीवन में बीमारियों का आधिक्य होता है।कुछ समझदार उच्च वर्ग के लोग इसलिये जिम जॉईन करते हैं।एरोबिक्स और योगा का सहारा लेते हैं।वे पार्क में चक्कर लगाते हुए अथवा दौडते हुए नजर आ जाते हैं।उच्च वर्ग के बच्चे अधिकांशतः काफी ज्यादा स्थूल दिखते हैं। क्यों कि उनके खान पान में भी पिज्जा, बर्गर ,चिप्स, कुरकुरे, और कोल्ड ड्रिंक्स की बहुतायत होती है।ये सभी चीजें स्वास्थ्य के लिये अत्यंत हानिकारक होतीं हैं।

आज की नई पीढी अधिकांशतः मल्टी नेशनल कंपनीज में कार्य करती है।उनके कार्य करने का समय आठ से दस घंटे का होता है।इतना लंबा समय एक ही कुर्सी पर बैठने से परिश्रम नगण्य हो जाता है एवं उन्हे अधिकांशतः रीढ की हड्डी से जुडे रोगों का शिकार हो जाना पडता है। कॉल सेंटर्स में काम करने वालों की दिनचर्या उल्टी हो जाती है वे रात भर कार्य करते हैं और दिन में ऊंघते नजर आते हैं उनके जीवन में शारीरिक श्रम नही के बराबर होता है।

मेहनत से शरीर मजबूत होता है और कठिनाईयों से मन। हमें मधुमक्खियों की तरह मेहनत को अपना मनोरंजन बना लेना चाहिये।

गोल्ड स्मिथ

मधुमख्खी दिन भर व्यस्त रहती है एवं अपने श्रम का मीठा फल शहद भी लोगों को देती है। पक्षी दिन भर व्यस्त रहते हैं वे कभी आराम करते हुए नही दिखते ।तिनका तिनका जोड कर अपना घोंसला बनाते हैं अपने अंडे सेते हैं और जब तक बच्चे स्वावलंबी बन कर उडने न लगें उन्हे उडना सिखाने में व्यस्त रहते हैं। परिश्रम विद्यार्थि के लिये अत्यंत आवश्यक तत्व है। चाहे कितना भी बुद्धिमान विद्यार्थि हो उसे अपने पाठ याद करने के लिये परिश्रम करने की आवशयकता होती है। थोडा सा भी आलस्य उसे असफल कर सकता है अथवा कक्षा में उसकी श्रेणी पिछड सकती है अथवा उसके अंकों का प्रतिशत कम हो सकता है।

उपसंहारः

ऐसा नही है कि हर बार परिश्रम के सार्थक फल मिलते हैं कई बार ऐसा भी होता है कि आपके अत्याधिक परिश्रम के बाद भी फल नही मिल पाता वैसी स्थिति में भी मानव को निराश नही होना चाहिये । महाकवि श्री मैथिलीशशरण गुप्त ने कहा है

नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो कुछ काम करो

जग में रह कर कुछ नाम करो ।

प्रयास और परिश्रम की गति कम नही होने देनी चाहिये क्यों कि अंततः वही सफलता की नींव बनेगी। कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नही होता और कोई भी

व्यक्ति सदैव सफलता नही पाता रहता ।कठिनाई और दुः ख प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आते जाते रहते हैं। पूर्ण तया धैर्य रखकर उसे इसका सामना करना चाहिये। अपने परिश्रम की गति को और बढा देना चाहिये एक दिन उसे सफलता अवश्य मिलती है। जीवन गतिशील है दिन के बाद रात और एक ऋतु के बाद दूसरी ऋतु का आना जाना तय है फिर हमारी गति क्यों रुके? परिश्रम ही वह नींव है जिसके ऊपर हम अपनी सफलता प्रगति और साथ में देश की सफलता प्रगति को गति देकर पूर्ण विकसित कहला पाएंगे।

42 प्रस्तावनाः आपदा प्रबंधन

जीम च्नदपीउमदज ूीपबी जीम ूपेम `नीमित ूीव तमनिम जव जांम चंतज पद ळवअजण्पे जव सपअम नदकमत जीम ळवअजर्ण्वा ूवतेम उमदशण

च्स्।ज्व

उपरोक्त कथन वर्षों देश महान दार्शनिक प्लेटो ने कहा था किन्तु आज भी यह सत्य है, विशेषतः हमारे देश में तो यह बात प्रतिशत सत्य है। हमारे इतने विशाल देश की जनता, सच पूछें तो भगवान के भरोसे ही है क्योंकि जिन लोगों को वह चुन कर सत्ता में भेजती है वे स्वयं तो ऐश ओ आराम की जिंदगी जीते है और जनता की रक्षा ,सुविधा ,समस्याएं दुःख दर्द किसी से भी कोई वास्ता उन्हे नही होता । वे पूरे पाँच वर्ष का समय अपनी कुर्सी को बचाए रखने की जोड तोड में ही लगे रहते हैं।वे एकदम ही संवेदना हीन होते हैं। जनता के दुःख दर्द को महसूस करना तो दूर, वे किसी बॉम्ब ब्लास्ट के बाद जिस तरह मशीनी अंदाज मे वक्तव्य देतें हैं वह जन जन

के मन के क्रोध को भडका देता हैं।वे अपने कपडों की क्रीज और जूतों की पॉलिश का भी उस समय विषेश पर भी बहुत ध्यान रखते हैं जब वे घायलों को अस्पताल में देखने को जा रहे होते हैं या जाने का दिखावा कर रहे होते हैं।हमें ग्लानि होती है कि हमारे देश के कर्णधार ऐसे लोग हैं

विषय वस्तुः

बदी करने के मौके दिन में सौ बार मिलते हैं लेकिन नेकी करने का मौका साल में मुश्किल से एक बार मिलता है।

<u>वॉल्टेयर</u>

आपदा प्रबंधन के बारे में जानने से पहले देश हमें विभिन्न आपदाओं के बारे में जानना होगा।

रेलदुर्घटनाएंः

हमारे देश में रेल दुर्घटनाएं काफी संख्या में होतीं हैं। क्यों होती हैं? इसके कारणों की जाँच होगी, यह वक्तव्य तो हम प्रत्येक रेलमंत्री के मुँह से हर रेलदुर्घटना के बाद सुनते हैं किन्तु बाद में जाँच का क्या नतीजा निकला यह देश की जनता कभी नही जान पाती । कभी साबरमती एक्सप्रेस की दो बोगियाँ 140 लीटर पेट्रोल छिडक कर आतंकवादी जला देते हैं, और 59 लोग अंदर ही जल कर खत्म हो जाते हैं।कभी जलमग्न स्थान और पटरियों पर रेल आगे नही बढ पाती है और कई कई घंटों तक यात्री वहाँ फँसे रहते हैं वे बाहर नही निकल पाते क्यों कि बाहर गले तक पानी होता है। रेल दुर्घटना जब भी होती है,कई कई दबी हुई लाशें उसमें से निकाल कर एक कतार में रख दी जाती हैं।कईयों के रिश्तेदार उन्हे ढूँढ कर ले जा पाते हैं कई नामालूम से यूँ ही अपनी अंत्येष्टी की प्रतीक्षा में पडे रहते हैं।कभी रेलदुर्घटना पुरानी अंग्रेजों के जमाने की पटरियों के कारण होतीं हैं,अधिकांश

मानवीय भूलों का परिणाम होतीं हैं और कभी कोई पुराना पुल ही नीचे गुजरती हुई ट्रेन पर जा गिरता है।

बॉम्बब्लास्टः यह आज के दिन की सबसे बडी आपदा है। 2001 से आज तक सरकारी आँकडों के हिसाब से लगभग एक हजार लोग इसके शिकार हो चुके हैं।इस अघोषित युद्ध का न तो कोई उधेश्य पता चलता है न ही इसके कारणो का पता चलता है।आमने सामने सीमा पर किए जाने वाले युद्ध की स्थिति भिन्न होती है किन्तु यदि आतंकवादी संगठन धमकी दे देकर मार्केट के विभिन्न स्थानों पर पॉलीथीन बॅग्स में बॉम्ब प्लांट कर देते है, व टाईमर लगे होने के कारण वे भीड भरे बाजारों में फट जाते हैं, दर्जनो लोग मर जाते हैं और उससे कहीं अधिक घायल हो जाते हैं।जो मरतें हैं उनके शरीर के चीथडे उड जाते हैं ।क्या वे ऊपर वाले से इतनी वीभत्स मौत लिखवा कर आए थे? इस बॉम्ब ब्लास्ट के बाद घटनास्थल पर चींख पुकार मच जाती है, भाग दौड मच जाती है। उस समय क्या होना चाहिये ?

बाढः एक समय था जब कभी कभी कुछ नदियों मे ऊफान के कारण नदी तट पर स्थित नगरों में बाढ आ जाया करती थी। अब यह प्रतिवर्ष बिहार, उडीसा, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे राज्यों में आ जाती है। अब यह मानवीय कारणों से भी आ जाती है। किसी बाँध के टूट जाने की सूचना देश ही मुख्यमंत्री को दी जा चुकी होती है किन्तु समय रहते उसके उपाय नही किये जाते परिणाम स्वरूप पानी के वेग को वह सीमा रेखा सम्हाल नही पाती कईकई बस्तियाँ पानी में बह जाती हैं पशु बह जाते हैं । छत पर चढे लोग आठ आठ दिन तक मदद की प्रतीक्षा करते वहीं दम भी तोड देते हैं।

भूकंपः

धरती का सतही तापमान पेड कटते जाने के कारण वन कटते जाने के कारण दिन प्रति दिन गर्म होता जा रहा है। वन

कटते जा रहे हैं और उनके स्थान पर सिमेंट के जंगल खडे होते जा रहे हैं,भूगर्भ में जल स्तर घटता जा रहा है। यही कारण है कि अब जब तब भूकंप आ जाते हैं जो देश वर्षों मे एकाध की संख्या में थे।ये भयानक विनाशकारी होते हैं। गुजरात के भुज मे आए भूकंप का प्रभाव कई राज्यों पर देखा गया था। महाराष्ट्र के वर्धा सेवाग्राम में हल्के फुल्के भूकंप रोजमर्रा की घटना की तरह देखे जाते हैं। रिक्टर पैमाने पर 7 और 8 की तीव्रता वाले भुज के भूकंप ने शहर को ही ध्वस्त कर दिया था। उत्तरकाशी, लातूर और हिमालय की तराई में भी भयानक भूकंप आए। भूकंप से होने वाली तबाही सब कुछ लील जाती है। कई परिवार काल के गाल में समा जाते हैं कई बच्चे अनाथ हो जाते हैं कई स्त्रियाँ विधवा हो जातीं हैं।सारा विकास नष्ट हो जाता है।

सुनामी और समुद्री तूफानः

हमारे देश में सुनामी का कहर एक बार हुआ जो अपने साथ दक्षिण प्रदेश की पूरी की पूरी बस्तियाँ बहा ले गया। इसमें लाखों जनों की, कई करोडों की धन की हानि होती है।

वर्षाः वर्षा एक ऐसा शब्द है जो मन को आनंदित करता है, कवियों के लिये यह सदा से कविता का विषय रहा है।कोई सोच भी नही सकता कि यह भी आपदा कर रूप गृहण कर सकता है।किन्तु ऐसा अब होने लगा है तीन वर्ष पूर्व मुंबई में और 2009 में कर्नाटक और महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग तथा अन्य स्थानों पर होने वाली लगातार और भारी वर्षा ने सम्पूर्ण जीवन को अस्त व्यस्त ही नही किया बल्कि कई जिंदगियों को नष्ट कर दिया,करोडों रूपयों की सम्पत्ति नष्ट हो गई हजारों

पशु पानी में बह गए। मुंबई मे लोगों के घरों में पानी घुस आया। ट्रेन बस के अभाव में लोगों को मीलों दूर पैदल चलना पडा था। अथवा शहर की सडकों पर कारों के स्थान पर चलने वाली नावों से जाना पडा था।कई लोगों को दो दो रातें अपने दफ्तरों में गुजारनी पडी थीं कई लोगों की इस वर्षा ने जानें भी ले लीं थी।

आगः अचानक लग जाने वाली आग भी मानव जीवन की सबसे बडी आपदा है दिल्ली में उपहार सिनेमा हॉल में बिजली की खुली तारों के कारण शॉट सर्किट हो जाने से आग लगी, कई बच्चे, युवा और उनके माता पिताओं के दम घुट जाने से मौत हो गई थी। मेरठ में एक एक्जीबिशन में जो चारों ओर से प्लास्टिक शीट्स से घिरा था ,एयर कंडीशंड था और बाहर निकलने का कोई रास्ता न था उसमें जब शॉट सर्किट से आग लगी तो सैकडों लोग भयानक मौत मरे थे।आग कहीं भी लग सकती है किन्तु बहुमंजिला इमारतों में यह सबसे ज्यादा खतरनाक होती है।इसके अलावा बसों का रेलिंग तोडते हुए नदी में जा गिरना या नाव दुर्घटना का होना कई तरह की मानवीय भूलों के कारण हुई आपदाएं हैं।

प्रबंधनः आज तक जितनी भी रेल दुर्घटनाएं हुई हैं उसमें आसपास की बस्ती के लोग देश दौड कर सहायता करने पहुँच जाते हैं।वे बडी तत्परता से घायलों को अस्पताल पहुँचाने का प्रबंध करते हैं।इसी प्रकार बाम्ब ब्लास्ट में भी लोग स्वयं अपने अपने वाहनों से घायलों को अस्पताल पहुँचाने के काम में जुट जाते हैं। इनमें से कई स्वयं भी चोटों का शिकार होते हैं परन्तु वे उसकी परवाह किये बगैर सहायता करते हैं।मृतकों को भी निकालने अथवा उठा कर एक ओर रख देने का कार्य भी करते हैं। प्रशासन के लोग पुलिस और मंत्री काफी देर से पहुँचते हैं वे जाँच का आश्वासन देकर चलते बनते हैं।भूकंप, रेल दुर्घटना, किसी निर्माणाधीन बिल्डिंग के गिरने पर क्रेन की तुरंत आवश्यकता होती है। आग लगने पर फायर ब्रिगेड की

तुरंत आवश्यकता होती है,बिल्डिंग में फंसे लोगों को निकालने की तुरंत आवश्यकता होती है किन्तु ये प्रशासन के साधन काफी देर से पहुँचते हैं। बाढ की गंभीरता देखते ही मंत्री या मुख्यमंत्री को युद्ध स्तर पर सेना द्वारा फंसे हुए लोगों को निकालने का प्रबंध करना चाहिये जो नही होती और भ्रष्टाचार इतना अधिक है कि किसी बाढ राहत कोश की सहायता ठीक से पीडितों तक नही पहुँच पाती और वे भगवान के भरोसे हो जाते हैं। मेरठ की एक्जीबिशन में लगी आग मानवीय भूल का परिणाम थी और फायर ब्रिगेड के काफी देर से पहुँचने के कारण कई लोगों को अपने प्राण गँवाने पडे। मुंबई की वर्षा कारण भी अंग्रेजों के जमाने के बने ड्रेन सिस्टम का परिणाम थी जिसने लोगों के ड्राईंग रूम तक पानी पहुँचा दिया था। देश को आजाद हुए 62 वर्ष हो चुके हैं कौन है इन सब का जिम्मेदार ? उपहार सिनेमा की खुली तारों का क्या दिल्ली नगर निगम को पता न था? क्या इन सभी बातों की समय समय पर जाँच कर, सिनेमा हॉल का लाईसेंस रद्द नही किया जाना चाहिये था?और इन सब आपदाओं के बीच मंत्रियों के रटेरटाए वक्तव्य देना और मात्र आश्वासन दे देना मन में ग्लानि उत्पन्न कर देता है।क्या ये वही हैं जिन्हे हमने अपनी सुरक्षा ,सहायता और प्रगति का ठेका दिया हुआ है?शशासन तंत्र भी बेहद कमजोर है निष्क्रिय है। वे बस खानापूर्ति करते हैं।मानवता कहीं दिखाई नही पडती है। मानवाधिकार आयोग की मानवता ब्लास्ट में मरे हुए लोगों के प्रति न होकर अपराधी को फाँसी न दी जाए इसमे होती है।जो आतंकवादी पकडे जाते है उन्हे केस लडने में सरकारी सहायता मिले यह वकालत स्वयं मंत्री महोदय करते हैं।

उपसंहारः

आपदा चाहे प्राकृतिक हो अथवा मानवीय भूलों का परिणाम उसमें हताहत जनता ही होती है।वह जनता जो नेताओं के लिये मात्र वोट बेंक होती है।उनकी असंवेदन शीलता देख कर

हैरत होती है।वे स्वयं अपनी सुरक्षा के सभी प्रबंध किये रहते हैं।वे बुलेट प्रुफ गाडियों में घूमते हैं।उनके सुरक्षा कर्मियों के भारी तादाद में होने के बावजूद भी पुलिस कर्मियों की फौज उन्ही की जी हुजूरी में लगी रहती है।जो पुलिस जनता की सुरक्षा के लिये है वह इतने भ्रष्टाचार में लिप्त है कि उसे रेड लाईट पर घूस खाने से फुर्सत नही है। कौन करेगा इन आपदाओं का प्रबंधन? मंत्री महोदय पत्रकार से कहते हैं कि हम कहाँ कहाँ क्या क्या कर सकते हैं।ये वक्तव्य क्या जनता के अंदर असुरक्षा की भावना को और नही बढाएंगे?कुछ एन. जी.ओ. अवश्य कार्य करते हैं ।बाढ पीडितों एवं रेल दुर्घटना से ग्रस्त लोगों को लंगर बना कर खिलाते हैं।किन्तु अब भी अधिकांश एन.जी.ओ.मात्र कागजों में मौजूद होते हैं।वे सरकारी व गैर सरकारी सहायता में मिले सारे रूपयों को हजम कर जाते हैं। देश में अनैतिकता और भ्रष्टाचार का चरम उत्कर्ष हो चुका है।पकडे गए लोग कभी सजा नही पाते । ईश्वर ही आपदाओं से देश की जनता को बचाए।

43 भ्रष्टाचार

प्रस्तावनाः

कंटकानां खलानां च,द्विविर्धव प्रतिकिया,

उपानान्मुख भंगो वा,दूर तो वा विसर्जनम्।

अर्थात दुष्टों और काँटों के साथ दो प्रकार से प्रतिकार लिया जा सकता है,एक तो चप्पल से मुँह पर दे मारना और निकाल कर दूर फेंक देना।

जब देश आजाद हुआ था और सारे देश की जनता अत्यंत हर्षित हुई थी कि अब हमारा अपना संविधान है, हमारे अपने प्रतिनिधि ही सरकार बनाएंगे,वे हमारी समस्याओं को समझेंगे।वे उनका निराकरण करेंगे।किन्तु ऐसा न हो सका।इस भ्रष्टाचार का आरंभ प्रथम प्रधान मंत्री के कार्यकाल से ही हो गया था किन्तु भोली भाली जनता ने इसे गंभीरता पूर्वक नही लिया था। आज यह शब्द इतना सामान्य हो गया है कि हमे किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार के अनावरण होने पर आशचर्य नही होता, आक्रोश भी उत्पन्न नही होता ।हम उसके परिणाम को भी जानते हैं।यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि हमने इसे स्वीकार कर लिया है।देश भक्ति ,देश प्रेम जैसे शब्द एवं इसका अनुकरण करने वाले अब किताबों में सिमट कर रह गए हैं। देश को आजाद कराने वाले महात्मा गांधी एवं उनके मूल्य, उनके सच्चे अनुयायी और उनकी अधिकांश समय व्यतीत की जाने वाली कर्मभूमि में सिमट कर रह गया है।

विषयवस्तुः

जिस तरह आग आग को नही बुझा सकती उसी तरह पाप
पाप का शमन नही कर सकता।

टॉलस्टॉय

हमारे स्वतंत्र भारत में पिछले तीन दशकों में इतने भ्रष्टाचार हो रहे हैं।बोफोर्स घोटाला ,चीनी घोटाला, गेहूँ घोटाला ,शेयर घोटाला, स्टाम्प पेपर घोटाला, कोलतार घोटाला, फौज की वर्दियों का घोटाला, और न जाने कितने बडे बडे हजारों हजार करोड के घोटाले जिनमे चारा घोटाला प्रमुख है,होते ही रहे हैं और हो रहे हैं और इनकी समाप्ति की कोई धूमिल सी आशा की किरण भी नही दिखाई दे रही है। कई घोटालों का पर्दाफाश होता है,कई स्टिंग ऑपरेशन होते हैं मिडिया के सभी चॅनल्स दिन दिन भर वही सब दिखाते रहते हैं,दूसरे दिन वह शायद एक छोटी सी खबर बन जाती हैं कोई टी.वी.चॅनल दूसरे

दिन उसका फॉलो अप नही दिखाते हैं। अगर केस शुरु हुआ तो दस से पन्द्रह वर्ष तो उसकी सुनवाई पूरी होते होते लग जाते हैं इस बीच एकाध बार, कांड का केस करने वाला व्यक्ति स्वयं ही मृत्यु को प्राप्त हो गया।किसी ने बडे नेताओं या सांसदों को कठोरता पूर्वक जेल में दिन काटते हुए नही देखा। भ्रष्टाचार का उन्मुलन हो भी तो कैसे?

ले के रिश्वत फँस गया तो दे के रिश्वत छूट जा।

ये पंक्तियाँ शतप्रतिशत सत्य प्रतीत होतीं हैं।

आज भ्रष्टाचार की जडों ने गहराई से जमीन में पैठ बना ली है।इसकी मजबूत श्रंखला बद्ध कडियाँ होतीं हैं जो टूटती हुई नही दिखती बल्कि दिन प्रतिदिन यह और मजबूत होता ही दिखाई दे रहा है।

यदि हमे अपने बच्चे का स्कूल मे एडमिशन करवाना है तो हमें स्कूल में भारी डोनेशन देना पडता है क्या यह भ्रष्टाचार नही है? आपके घर में बिजली का मीटर लगवाना है, टेलीफोन लगवाना है, राशन कार्ड बनवाना है,क्या बिना कुछ खर्च किये आप काम करवा सकते हैं? कतई नही ,तो ये सभी भ्रष्टाचार की श्रेणी में ही हैं जिसे हम और आप स्वीकार कर चुके हैं। अप्रत्यक्ष रुप से इस पेड की जड में एक एक लोटा पानी डाल कर हम उसे और हराभरा करते जा रहे हैं।

हमारे देश में कोई कार्यालय ऐसा नही है जिसमें घूस दिये बिना न तो कोई फाईल आगे बढती है न ही कोई कार्य सिरे से लग पाता है अर्थात पूर्ण हो पाता है। हम न चाहते हुए भी इसमे लिप्त होते चले जा रहे हैं।

यह तो छोटे मोटे भ्रष्टाचार की बात हुई।जब करोडों करोड रुपयों में सांसदों विधायकों की खरीद बिकी होती है तब देश में प्रजातंत्र कहाँ रह पाता है।मेडीकल कॉलेज की सीट, इंजिनियरिंग कॉलेज की सीट,लाखों रुपयों की घूस देकर

खरीदी गई सरकारी नौकरी की सीट,मकान बनाते बनाते बिजली विभाग, पुलिस विभाग को दी जाने वाली घूस कहाँ नही है भ्रष्टाचार ?

पुलिस का भ्रष्टाचार तो सभी को ज्ञात है।हर रेड लाईट पर लोगों से रूपये वसूलती पुलिस, दहेज हत्या के केस में तगडी घूस लेकर अपराधियों को छोड देती पुलिस ,चोरो और अपराधियों से सांठ गांठ करके रूपया लेने वाली पुलिस शायद यह भूल चुकी है कि उसे सद् रक्षणाय अर्थात अच्छे सदाचारी लागों की रक्षा के लिये और दुष्ट दुराचारी लोगों को पकड कर न्याय के मंदिर तक पहुँचाने के लिये रखा गया है।

आज मात्र मल्टी नेशनल कंपनी की नौकरियाँ शायद योग्यता के आधार पर मिल पाती है,और इसीलिये अब युवा पीढी का सरकारी नौकरियों से मोह भंग हो चुका है और वे एम.एन.सी. की तरफ मुडने लगे हैं।

इस भ्रष्टाचार की कमाई से अपने बच्चों का पालन पोषण करने वाले लोग अपने बच्चों को कैसे संस्कार दे पाते होंगे और उनके परिवार स्नेह के बंधन में कैसे बँधे रह पाते होंगे।

नेताओं का भ्रष्टाचार उच्च स्तर का होता है। बडे बडे उद्योग पतियों को बडे बडे ठेके दिलवाना और उसके बदले चुनावों के समय उनसे चंदे के नाम पर करोडों रूपये ऐंठ लेना दफ्तरों के मुख्य सचिव से लेकर चपरासी तक अपने अपने पद और हैसियत के अनुसार घूस वसूलते रहते हैं और आम जनता ही जेब खाली होती रहती है।

उपसंहारः

जिस मिडिया को हम अपना सबसे बडा शुभचिंतक समझते हैं वह भी इससे अछूता नही है।किस के पक्ष में बोलना है किसके विरुद्ध सभी कुछ धन पर निर्भर करता है तभी तो सनसनी खेज खबर जिसका सुबह से शाम तक पीछा किया जाता रहा

दूसरे दिन वह इस तरह गायब हो जाती है जैसे उसका अस्तित्व ही कभी न रहा हो। आज भ्रष्टाचार देश के पोर पोर में समा गया है।संसार के सर्वाधिक भ्रष्टाचारी देशों की अग्रिम पंक्ति में भारत का भी नाम है। दीमक की तरह सारे देश को चाट चाट कर खोखला कर दिया गया है। इसका कोई अंत दिखाई नही देता । हमें केवल हमारी न्याय प्रणाली से आशा है किन्तु न्याय प्रणाली इतनी लंबी और दुश्कर है कि वहाँ तक पहुँचने की नौबत ही नही आती ।बडे बडे केस भले ही सुलझा लिये गए हों किन्तु न्यायालय में लाखों की संख्या में मुकदमे लंम्बित हैं,और उन्हे सिर्फ तारीख पर तारीख मिलती रहती है।

भ्रष्टाचार एक ऐसा नासूर है जो देश की प्रगति को कदम दर कदम रोक रहा है। देश में भ्रष्टाचार निरोधी कानून भी हैं, और विभाग भी कभी किसी न्यूज अथवा समाचार पत्र में हमे यह देखने पढने में नही आता कि फलां व्यक्ति को फंला भ्रष्टाचार में गिरफ्तार करके कानून के दरवाजे तक पहुँचाया गया।

44 रेलयात्रा

मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन अनंत के लिये की जाने वाली एक यात्रा है।

महात्मा गांधी

<u>प्रस्तावनाः</u>

यात्रा करना मनुष्य को सदैव से प्रसन्नता देता है।कई बार यात्रा उसे मजबूरी में करनी पडती है अथवा किसी कंपनी के सेल्स एजेंट या मेडिकल रिप्रजेन्टेटिव को हमेशा ही रेलयात्राएं करनी पडतीं हैं और वे उससे ऊबे रहते हैं किन्तु किसी हिल स्टेशन पर जाने के लिये,किसी विवाह में ट्रेन द्वारा बारात ले जाने के लिये

,किसी स्पोर्टस् कंपीटीशन में जाने वाले छात्रों की टोली की यात्रा अत्यंत ही मनोरंजक होती है एवं सम्पूर्ण यात्रा इस तरह बीत जाती है मानो समय चुटकियों में बीत गया हो।

विषयवस्तुः

पक्षियों की तरह शुद्ध वर्तमान में जियो।

शशी प्रभा शास्त्री

युवावस्था ऐसी अवस्था होती है जिसमें युवा सिर्फ वर्तमान में जीता है उसे वर्तमान आनंद देता है।उसके कंधों पर ग्रहस्थी का बोझ नही होता । वह निश्चिंत होता है। उस पर रोजगार का बोझ भी नही होता।चिंता नामक चीज से उसका पाला नही पडा होता ।उसके सामने समय और स्वतंत्रता का दूर दूर तक फैला स्वच्छ नीला आकाश होता है और वह विहगों की भांति उसमें उडता फिरता है।माता पिता का संरक्षण और स्नेह उसे निर्भीक बना देता है। वह प्रसन्नता अनुभव करता रहता है।

मै जिस रेल यात्रा का वर्णन कर रही हूँ वह मन्दसौर से शाजापुर स्टेशन तक की यात्रा है। इस यात्रा में हमारे विघालय की खो खो और टेबल टेनिस की टीम थी। हमारे साथ हमारे एक स्पोर्टस् के अध्यापक एवं एक अध्यापिका थीं। हमने सिलेक्शन होते ही संभाग स्तरीय इस प्रतियोगिता में जाने के लिये तैयारियाँ शुरु कर दीं थीं। हमें सिर्फ एक बॅग ही लेकर जाना था किन्तु उसे सहेजने में हमने पूरे पन्द्रह दिन लगाए। ए!तू कौनसी ड्रेस ले जा रही है? और कौनसे जूते? या अन्य सामान ले जा रही है? मित्रों और सहेलियों से पूछ पूछ कर अंत में निष्कर्ष निकाला जाता है। प्रत्येक मित्र एक दूसरे की सलाह और मशविरे को ध्यान में रख कर अंततः अपना बॅग पॅक करने में सफल होता है।

अब यात्रा के दिन की प्रतीक्षा शुरु होती है। विधालय में कोई भी पिरियड अटेंड न करने की छूट मिली हुई थी सो दिन दिन भर प्रेक्टिस में गुजर जाता था।मन में इस बात को बार बार दोहराया जाता था कि हमें विजयी हो कर आना है,यही भावना हमारी प्रेक्टिस में और जोश भर देती थी और खेलने की गति और सुधार दोनो में ही तीव्रता आ जाती है।

अंततः वह दिन आ पहुँचता है जिस दिन हमें यात्रा करनी थी । हमें शाम चार या साढे चार बजे की ट्रेन पकडनी थी हम सभी ने अपनी तैयारी कर ली थी।मम्मी की हिदायतें भी साथ साथ सुनते जा रहे थे।माता पिता के बिना की जाने वाली यह पहली यात्रा थी सो हम भी और मम्मी भी एक प्रकार के डर के भाव से ग्रस्त थे।उचित समय पर मै और मेरे मित्र सभी स्टेशन पर पहुँच गए। सभी रोमांचित थे।

मेरे एक दो मित्र मॅडम से परमीशन लेकर मेक्जिन्स वगैरह खरीद लाए थे।जल्दि ही सिग्नल डाऊन हो गया ,घंटी बजी और स्पीकर में अनाऊंसमेंट हुई यह ट्रेन के प्लेटफॉर्म पर पहुँचने की घोषणा थी।हम सभी ने अपने अपने बॅग्स अपने अपने कंधों पर टांग लिये । ट्रेन की गति थमते थमते कुछ समय लगा और लगातार ट्रेन को गतिमान देखते हुए मुझे चक्कर सा आने लगा।मैने अपनी एक सहेली को थाम लिया और बडी मुश्किल से अपना संतुलन बनाए रखा।

सभी को कमशः चढाने में हमारे सर और मॅडम ने मदद की । हमारा रिजर्वेशन था।सबने अपनी अपनी सीट पर कब्जा जमा लिया।सर और मॅडम को मिला कर हम दस लोग थे।हम सभी एक साथ थे और सर और मॅडम अगले हिस्से में थे।हम सभी ने अपने अपने घुटने जोड कर टेबल सी बना ली उस पर अखबार बिछा लिया और ताश की गड्डी निकाल कर ताश खेलना शुरु कर दिया।बीच बीच में स्टेशन आते रहे और गुजरते रहे हमें कुछ पता भी न चला।दरअसल हम सभी को आजादी से एक साथ रहने का मौका ही कब मिलता था।नौ

बजे मॅडम ने आकर कहा कि अब हम खाना खा लें । सभी को यह बात सुन कर भूख लग आई। हमने अपनी उसी टेबल पर सबके डिब्बे खोले और मजे से मिल जुल कर खाना खाया। अब मॅडम ने कहा सो जाओ हमें सोने का मन तो न था पर मन मार कर सभी अपनी अपनी बर्थ पर सो गए।

सुबह सात बजे मॅडम ने हमें उठाया। सभी ने फ्रेश होकर अपने अपने बाल सँवारे। शायद कोई बडा स्टेशन आने वाला था। मॅडम ने केंटीन वाले को ही सभी के लिये ब्रेड ऑमलेट, और चाय का ऑर्डर दे दिया था।सभी ने हँसते बोलते और चुहलबाजी करते नाश्ता किया।दस बजे ट्रेन मक्सी पहुँचने वाली थी। मॅडम ने हमें सही समय पर अपने अपने बॅग्स सम्हाल लेने को कहा।हमें मक्सी में ही उतरना था। ट्रेन के मक्सी पहुँचते ही हम उतरे और प्लेटफॉर्म के बाहर ही स्थित बस स्टेंड पर पहुँचे। यहाँ से हमें शाजापुर तक का सफर बस में करना था। यही मेरी पहली रेल यात्रा थी जो इतनी मजेदार थी । उसकी याद रह रह कर ताजा हो उठती है।

उपसंहारः

जीवन एक लंबी यात्रा है जिसमें युवा होते बच्चों की अवस्था सबसे स्वर्णिम होती है।इस अवस्था में घटी हुई घटनाएं आजीवन मानव मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड जाती हैं।आगे के प्रतियोगिताओं में खेलने के दिन और अधिक रोमांचक थे।दुर्भाग्य वश हमारी टीम में एक ही खिलाडी का आगे के लिये चयन हुआ, और वह भी स्पोर्टस् मीट निरस्त किये जाने के कारण आगे जाकर खेलने का सपना पूरा न कर सका।

वापसी की रेल यात्रा उदासी भरी थी। हमें अपने खेल में और सुधार की आवश्यकता थी यह हम अच्छी तरह समझ चुके थे।हमने वहाँ अच्छे अच्छे खिलाडियों के खेल देखे थे। वापसी पर मॅडम और सर हमें हौसला देते रहे कि आगे हमे अवश्य ही सफलता मिलेगी। शाजापुर जाते समय हम जितने उत्साहित

थे उतने ही उदास लौटते समय थे कोई किसी से बात नही कर रहा था सभी सोच विचार में डूबे थे।मॅडम के शब्दों ने अवश्य मन पर प्रभाव डाला था कि हार जीत जीवन में चलती ही रहती है।हमने भी अपने दिलों को समझा लिया था।मंदसौर स्टेशन पर सभी को मम्मी पापा लेने आए थे। हम सभी उनसे मिलकर खुश थे। रेल यात्रा का यह वर्णन अविस्मरणीय है।

45 किसी पर्वतीय स्थल का वर्णन

प्रस्तावनाः

सौन्दर्य तो दर्शक के नेत्रों में होता है। प्रकृति के सौन्दर्य से बढ कर कोई सौन्दर्य नही होता।प्रकृति हर मौसम में हर जगह सुन्दर ही दिखाई देती है। वर्षा ऋतु में सभी तरफ फैली हरियाली ही हरियाली ।नवीन पल्लवों और पुष्पों से लदे पेड वर्षा की बूंदों को अपने आप पर संजोए पत्ते सभी कुछ मनभावन लगता है।आसमान में उमडते घुमडते बादल और बीच बीच में चमकती कडकती बिजली, तो शीत ऋतु में बर्फीले प्रदेश में पहाडों पर जीम हुई शुभ्र स्वच्छ बर्फ और जब उन पर सूर्य की सुनहरी किरणे पडतीं हैं तो वह स्वर्णकणों की भांति चमकने लगती है।पर्वतीय प्रदेशों में अधिकांश समय यही मौसम होता है।कशमीर एक ऐसा ही स्थान है। भारत के मुकुट में जडे हुए हीरे की भांति आकर्षक और लुभावना पर्वतीय स्थान । लोग यहाँ छुट्टियाँ बिताने आते हैं।यहाँ विदेशी पर्यटक भी काफी संख्या में आते हैं।पिछले तीस वर्षों में इसे आतंकवाद के खूनी पंजों ने अपने कब्जे में ले लिया है। अतः पर्यटकों की संख्या में भारी कमी आ गई है।चूंकि यहाँ के लोगों के जीवन यापन का मुख्य जरिया पर्यटन उद्योग ही है अतः इस कारण से लोगों का जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। यहाँ से अधिकांश हिन्दू आबादी पलायन कर देश के अलग अलग हिस्सों में जा बसी है। उनकी जमीने, घर, जायदाद

सभी कुछ वहाँ है।यहाँ वे मात्र 1500 रुपये माह की सरकारी सहायता का मुँह जोहते हैं या रोजी की तलाश में मारे मारे इधर उधर भटकते रहते हैं।

देख ए बुलबुल ,गुलशन को आँखें खोलकर,

फूल में गर आन है, काँटे में भी एक शान है।

यह कुछ वर्षों देश की बात है जब हमारे परिवार ने अक्टूबर की छुट्टियों में कश्मीर जाने का निर्णय लिया। हम सभी उत्साहित थे। हम लोगों ने दिल्ली से जम्मू तक का शालीमार एक्सप्रेस का रिजर्वेशन कराया हुआ था।

हम सभी नियत दिन और नियत समय पर रेल्वे स्टेशन पर जा पहुँचे । दिल्ली तक की यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हो गई ।वहाँ से हमें दूसरी रात यात्रा करनी थी। दिल्ली से मेरी दीदी और जिजाजी भी साथ चलने वाले थे,अतः दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर वे दोनो हमें लेने आए थे।वह सारा दिन हमने दीदी और जिजाजी के यहाँ बिताया।दिल्ली से कुछ शॉपिंग भी की।दूसरे दिन सुबह से ही घर में चहल पहल थी।दीदी और मम्मी ने मिलकर सब्जी पूरी बनाई, खाने के और सामान भी पॅक कर लिये।दो बडे वॉटर बॅग्स में ठंडा पानी भी ले लिया।रात आठ बजे की ट्रेन थी,हम कुछ जल्दि ही स्टेशन पर पहुँच गए। सही समय पर ट्रेन आई और हमारी यात्रा आरंभ हो गई।नौ बजे खाना खा कर हम लोग अपनी अपनी बर्थ पर सो गए। सुबह नौ बजे हम जम्मू पहुँचे। वहाँ से हमने श्रीनगर तक का सफर एक डिलक्स बस में तय किया।

हमें श्रीनगर पहुँचते पहुँचते रात के ग्यारह बज गए।बस से उतरे तो हल्की बूंदाबांदी हो रही थी और ढेर सारे हॅटेल के एजेंट और हाऊस बोट वाले हमें अपने अपने साथ चलने का आग्रह कर रहे थे।वे व्यवहारिक और व्यवसायिक तौर पर रेट और सुविधाएं भी बताते जा रहे थे।बूंदाबांदी तेज होती जा रही थी अतः हमने एक हाऊस बोट वाले से हाँ कह दी।ठंड जोरों से

लग रही थी।उसकी ही गाडी में सारा सामान रख कर हम डल झील के किनारे पहुँचे ,फिर शिकारे में सामान लाद कर हम ताज महल नामक उसकी हाऊस बोट तक पहुँच गए। मैने हाऊस बोट पहली बार देखी थी,वह सच में पानी में तैरता हुआ एक घर था,बस लकडी के फर्श पर चलते हुए महसूस होता था कि हम बोट पर हैं।उसने हमे हमारे बेडरूम्स दिखाए। पूरी तरह फर्निश्ड हाऊस बोट थी।वहाँ ड्रॉइंग रूम भी था और हर बेड रूम से अटेच्ड बाथरूम भी।साफ सुथरे पलंगों पर बिस्तर और कंबल वगैरह थे। हम अपने अपने बिस्तर में घुस कर सो गए।

दूसरे दिन सुबह हमें समय पर चाय नाश्ता मिल गया,और शिकारे ने हमे डल के किनारे उतार दिया।वहाँ से हमने टूरिस्ट बस की और सोनमर्ग के लिये रवाना हुए।यह एक अत्यंत सुंदर रमणीय स्थान था।स्वच्छ जल से भरी कल कल निनाद करती नदी और किनारे पर ढेर सारे गोल गोल पत्थर।काफी देर हमने उस प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद उठाया और शाम के बाद ही हाऊस बोट पर पहुँचे। इसी प्रकार अगले दिन हमने गुलमर्ग की यात्रा की। गुलमर्ग के एक ओर एक विशाल पहाड था। वहाँ हमने कुछ फोटो भी खिंचवाए। रात को हाऊस बोट पर लौट आए। अगले दिन हमने शालीमार बाग निशात बाग देखे। एक कतार में सडक के दोनो ओर लगे युक्लिप्टस के लंबे लंबे पेड ऐसे लग रहे थे मानो कतार बद्ध हो कर सभी आने जाने वालों के सम्मान मे खडे हों।दोनो ही बाग बेहद सुंदर थे, अवर्णनीय सौन्दर्य से परिपूर्ण। ऐसे ऐसे फूल थे जो हमने कभी देखे ही नही थे। हमने अनंत नाग में एक जलस्त्रोत में ढेरों मछलियाँ भी देखीं थीं। यह त्राऊट मछली थी जो मुख्यतः बर्फीले प्रदेश में ही होती है। वैसे तो पूरा कश्मीर ही इतना रमणीय है कि किसी विशिष्ठ स्थान की प्रशंसा करना अन्य स्थानों के साथ अन्याय होगा।एक ओर हरी भरी गहरी घाटी , दूसरी ओर ऊँचे ऊँचे पहाड। हमने शिकारे पर फ्लोटिंग गार्डन्स भी देखे हमें यह चमत्कारिक लगे। क्या झील के पानी

पर बाग हो सकता है? क्या उन बागों में सब्जियाँ उगाई जा सकतीं हैं?हाँ! ऐसा ही होता है। वहाँ के स्थानीय लोग कहते थे कि जोरों की वर्षा में एक बाग दूसरे के बाग से जा मिलता है या कहीं ओर चला जाता है तो उसी की सम्पत्ति बन जाता है। सेबों के पेड तो वहाँ हर ओर दिखाई देते हैं और सेब खाने की इच्छा ही नही होती है। अगला दिन हमारा अंतिम दिन था।हमने मार्केट में जाकर शॉपिंग की । सभी के लिये गिफ्ट खरीदे। हमने लाल चौक भी देखा। हमने बर्फ देखनी चाही और इसीलिये टट्टू पर चढ कर पहाड पर चढे। हाँ! अक्टूबर के महीने में दूर दूर तक फैली बर्फ भी दिखाई दी। कश्मीर हमें इतना अच्छा लगा कि लौटने का मन ही नही कर रहा था लेकिन आखिर लौटना ही पडा।

उपसंहारः

कश्मीर को देखने के बाद इतिहास में लिखी यह बात सत्य प्रतीत हुई कि बाबर ने जब कशमीर की धरती पर कदम रखा था तो उसने अपनी सेना से कहा था।अपनी सारी ताकत लगा कर युद्ध करो यदि जीत गए तो स्वर्ग में रहोगे यदि मर गए तो भी स्वर्ग में जाओगे क्यों कि यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है यहीं है यहीं है।

कश्मीर की यात्रा एक मधुर स्मृति की तरह अमिट है। अब टी. वी. पर वहाँ होने वाले बॉम्ब ब्लास्ट , और वहाँ सेना और आतंक वादियों की झडपें देख कर मन दुःखी हो जाता है। इतने सुंदर स्थान को मानव ने अपने अहं की लडाई में स्वर्ग से नर्क बना दिया है

46 मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर

प्रस्तावनाः

जो भूतकाल में हो गया वह सीमाबद्ध हो चुका है,जो भविष्य में होने वाला है उसकी कोई सीमा नही।

सूक्ति

मध्यप्रदेश को मालव प्रदेश कहा जाता था। यह भारत के मध्य में स्थित है।यहाँ की मिट्टी काली है और गेहूँ,मुंगफली और अन्य दलहनों के लिये उपजाऊ मानी जाती है।मध्यप्रदेश भी अंग्रेजों की गुलामी के दौरान कई छोटी छोटी रियासतों में बँटा हुआ था इनमें इंदौर ,उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर, देवास, रीवा के अलावा कई छोटी बडी रियासतें थीं। कुछ शासक बहुत अच्छे थे और कुछ सामान्य से किन्तु प्रजा के मन में अपने शासकों के प्रति पूर्ण सम्मान था। आज भी वे उनके उत्तराधिकारियों के प्रति वैसा ही सम्मान रखते हैं।जब भी उन्हे अवसर मिलता है वे अपने सम्मान को प्रदर्शित करते हैं। देश आजाद हुआ सारी की सारी छोटी बडी रियासतें एक भारत का अंग बनीं और राज्यों के रूप में सभी ने देश के विभाजन को स्वीकार किया। कुछ समय बाद बडे बडे राजमहल वगैरह का भी सरकार को हस्तांतरण कर दिया गया और वे राष्ट्रीय सम्पत्ति बना दिये गए। अधिकांश शासक कला संस्कृति के प्रेमी थे और उन्होने अपने अपने शासन काल में एक से बढ कर एक कृतियों का निर्माण करवाया। इसका संक्षिप्त वर्णन हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं।

विषय वस्तुः

महान पुरूष जो उपकार करते हैं,उसका बदला नही चाहते हैं ,भला संसार में जल बरसाने वाले बादलों का ऋण कभी कोई चुका सकता है ?

संत तिरूवल्लुवर

मनुष्य को चाहिये कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हो ,तो उसे ग्रहण करें।

¸शेखसादी

मध्यप्रदेश के समग्र रूप में कई ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरें हैं।

सॉंची का स्तूप : यह एक बौद्ध कालीन ऐतिहासिक इमारत है। एवं यह शिल्प कला का अद्भुत नमूना है।यह गोलाकार गुंबद के रूप में निर्मित हुआ है। कई पर्यटक इसे देखने आते हैं।

खजुराहो के मंदिर :

यह छतरपुर से कुछ किलोमीटर पर स्थित है। इसे चंदेल वंश के शासकों ने बनवाया था। इन मंदिरों के बाह्य भाग में बनी मूर्तियॉं मूर्तिकला के अद्भुत नमूने हैं।इन्हे देखने वालों में विदेशी पर्यटकों की संख्या अधिक होती है और वे मंत्रमुग्ध से इसे देखते और फोटोग्राफी करते नजर आते हैं। भीतरी भाग में देवताओं की मूर्तियॉं हैं और प्रत्येक प्रवेशद्वार पर दो ड्रेगन्स बने हुए हैं। यह सभी उपमात्मक रूप से बना हुआ है। इस दर्शन का मुख्य विचार यह है कि ड्रेगन रूपी बाह्य मूर्तियॉं जिनमें शारीरिक सौन्दर्य ही दिखाया गया है। इनसे जो अप्रभावित रखेगा वही अंदर जाकर प्रभु के दर्शन कर पाएगा।

देवास के मंदिर :

देवास का अर्थ ही है जहॉं देवी देवताओं का वास हो। देवास की पहाडी पर दो देवियों के मंदिर बने हुए हैं। अतीत में वहॉं न ये मूर्तियॉं थीं न ये मंदिर कहा जाता है, लोगों ने बडी जोरों की आवाज सुनी जो पहाड से आ रही थी।फिर वह पहाड ऊपर से दो हिस्सों में बॅंट गया।दोनो देवियों की मूर्तियॉं दो दिशाओं में हो गईं। एक दूसरे से विपरीत दिशाओं में। कहा जाता है कि ये दोनो ही देवियॉं आपस में बहनें हैं।जो बडी बहन मानी जाती है उसकी मूर्ति छोटी एवं शांत रूप धारण की

हुई है और जो छोटी बहन मानी जाती है उसकी मूर्ति बडी ,आक्रोश से भरी और खडग हाथ में धारण की हुई है। कई स्थानीय दर्शनार्थी वहाँ रोज भी जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि पहाड पर पडे छोटे छोटे पत्थरों को इकठ्ठा सा कर के घर की शक्ल दे देने से भक्त का अपना घर बन जाता है। अतः पहाड पर ढेरों इस प्रकार के घर देखने को मिलते हैं

राजा भोज का महल : भोपाल के राजा भोज एक अच्छे शासक के रूप में विख्यात हैं। भोपाल का नाम भी वास्तव में भोजपाल था। वहाँ का ताल भी बहुत प्रसिद्ध है यह कई कई किलोमीटर तक दिखाई पडता है। राजा भोज का महल तथा कुछ मंदिर भी बहुत दर्शनीय हैं।

महांकालेश्वर : उज्जैन आज सिर्फ महांकालेश्वर के मंदिर के लिये प्रसिद्ध है । कुंभ के मेले के लिये भी उज्जैन प्रसिद्ध है। महांकाल की भस्मारती देश के किसी भी ज्योतिर्लिंग से भिन्न है और भक्तों को अभिभूत कर देती है। उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने प्रजाप्रेमी प्रजापालक एवं न्याय प्रियता के लिये नाम कमाया।

राजवाडा :

इंदौर के मध्य में स्थित राजवाडा सभी के आकर्षण का केन्द्र है।अहिल्या बाई होल्कर होल्कर वंश की प्रजा वत्सल रानी थी। दीपावली पर राजवाडे को बिजली की लडियों से सजाया जाता है,कई लोग इसे देखने आते हैं। अब इसके अधिकांश भीतरी भाग को सरकार द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया है। 84 के दंगों में फैली आग ने राजवाडा के पृष्ठ भाग को अपनी लपेट में ले लिया था। किन्तु अब इसका पुर्ननिर्माण करा दिया गया है। इसके अलावा होल्कर वंश के अन्य शासकों की छतरियाँ भी प्रसिद्ध हैं। जैनियों का ी महल तथा गोम्मट गिरि के मंदिर भी प्रसिद्ध हैं।

पंचपढीः

यह एक सुरम्य पहाडी स्थान है।यहाँ पांडवों की गुफाएं हैं।कहा जाता है कि अपने अज्ञात वास के दौरान पांडव यहाँ रहे थे। अन्य पहाडी स्थानों की तरह अंग्रेजों ने इस स्थान पर भी कई निर्माण एवं कई सुधार किये।इसे आकर्षक बनाया। हांडी खो नामक गहरी घाटी भी यहाँ है।कहा जाता है कि मोटी और मजबूत लताओं के सहारे आदीवासी आसानी से इसमें उतर जाते हैं और जडी बूटियाँ ढूँढ लाते हैं।

मांडवगढ :

रूपमती और बाज बहादुर की प्रेमकथा दर्शाने वाले यहाँ रानी रूपमती का महल,बाजबहादुर का महल ,जहाज महल,हिंडोला महल ,अत्यंत सुंदर हैं एवं अपने समय की शिल्पकला के नमूने हैं। इन्दौर से यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या समीप होने के कारण अधिक है। यह पहाडी पर बसा सुरम्य स्थान है। यहाँ से नर्मदा एक पतली चमकीली लकीर की तरह दिखाई पडती है।

ग्वालियर का किला :

ग्वालियर में सिंधिया वंश का राज्य था।वहाँ आज भी राजघराने का किला मौजूद है।इसका निर्माण इस प्रकार किया गया है कि ताली बजाने पर पहाडी के नीचे द्वारपाल को इशारा किया जा सके यह सुरक्षा को द्रष्टिगत रख कर किया गया था।इसके अलावा पहाडी पर बना सिंधिया स्कूल भी बहुत विख्यात है। वहाँ के विद्यार्थि उच्च पदों पर ही पहुँचते हैं ऐसा माना जाता है।

उपसंहारः

इसके अलावा मध्यप्रदेश के सतना जिले में मैहर की शारदा देवी का मंदिर ,रीवा के महाराजा का महल, उनके चिडियाघर में विश्व के एकमात्र चिडियाघर में वहाँ के महाराजा द्वारा पाले गए सफेद शेरों की प्रजाति के बारह शेर थे। बाद में जब केवल

एक ही बचा रह गया तो पशु संरक्षण विभाग ने उस प्रजाति को बढाने के लिये सामान्य शेरनी के संसर्ग से कई सफेद शेरों के शावक प्राप्त किये।आज उन सभी को पूर्ण सुरक्षा एवं देखभाल प्रदान की जा रही है।मध्यप्रदेश एक समृद्ध राज्य है तथा सांस्कृतिक रूप से भी भारत के समस्त सांस्कृतिक वास्तु शिल्प में उसका योगदान भरपूर है। पुरातत्व विभाग इन सभी का संरक्षण एवं रखरखाव पूरे मनोयोग से करता है।

47 मेरा प्रिय कवि कबीर

प्रस्तावनाः

घिरी बदरिया पाप की,बरसन लगे अंगार,

संत न होते जगत में,तो जल जाता संसार।।

आज सम्पूर्ण संसार कहीं युद्ध तो कहीं आतंकवाद की विभीषिका में जल रहा है।ऐसा लगता है मानो मनुष्य बारूद के ढेर पर बैठा है।कब कहाँ बॉम्ब ब्लास्ट हो जाए कहा नही जा सकता। वह सडक पर बाजारों में ट्रेन में ,सिनेमाघर में ,हर जगह अपने आप को असुरक्षित महसूस करता है।भौतिकता की अंधी दौड में दौडता हुआ व्यक्ति शांति चाहता है परन्तु शांति भी उसे नही मिलती। आधुनिक काल में जो लोग स्वयं को संतो ंके रूप में प्रचारित करते हैं,उनकी विश्वसनीयता की कोई गॅरेन्टी नही होती। कबीर मेरे प्रिय कवि हैं,वे मध्ययुगीन कविता के अग्रणी माने जाते हैं।

विषयवस्तुः

कबीर के जन्म के विषय में कोई तथ्यगत जानकारी नही है। कहा जाता है कि नीमा एवं निरू नामक जुलाहा दम्पति को वे नदी के किनारे खेत में पडे हुए मिले थे।वे दोनो ही निः संतान थे,अतः उन्होने उसे अपने घर लाकर बडे प्रेम से पाला।कवि रविदास भी कबीर के समकालीन थे और दोनो मे मैत्री थी ,यहाँ तक कहा जाता है कि कबीर खड्डी पर बैठे बैठे

दोहे गुनगुनाते हुए चादरें बुनते रहते थे और रविदास ही उन्हे लिपिबद्ध किया करते थे।आज भी कबीर पंथी अनुयाईयों की संख्या की कमी नही है। गुरूग्रंथसाहिब में दोनो द्वारा रचित पदों का समावेश किया गया है।यह कबीर का ही काल था जब हिन्दू और मुस्लिम दोनो ही धर्मों में घोर आडंबर व्याप्त थे।कबीर को यह बात रास नही आई और उन्होने समान रूप से दोनो पर प्रहार किये। कबीर ने छोटे छोटे सुंदर दोहों की रचना के माध्यम से इनपर चुटिला व्यंग किया है। जैसे.... केसन कहा बिगारिया,जो मूडौ सौ बार,

बार बार के मूडते भेड न बैकुंठ जाए।

मन को क्यों नही मूडिये, जामे विषय विकार।

अर्थात हिन्दू धर्म में जनेऊ के समय ,किसी की मृत्यु के समय सर मुडाने की प्रथा थी इसी पर कबीर ने कहा कि केशों ने क्या बिगाडा है जो इन्हे बार बार मूडा जाता है,बार बार मूडने पर भी भेड वैकुंठ नही जा पाती। मन को लोग क्यों नही मूडते जिसमें समस्त प्रकार के विषय विकार जैसे पाप , अपराध काम क्रोध लोभ मोह इत्यादि समाए है।

पाहन पूजे हरि मिले,तो मै पूजूं पहार।

अर्थात पत्थर पूजने से यदि हरि मिलते हैं प्रभु की प्राप्ति होती है तो मै पहाड पूजने को तैयार हूँ।

इसी प्रकार

माला फेरत जुग गया,गया न मन का फेर,

करका मनका छाँडि के ,मनका मनका फेर।

अर्थात हिन्दू धर्म के अविर्भाव से लेकर आज तक हिन्दू माला फेरते रहते हैं फिर भी वे इसके द्वारा अपने मन का मैल यानी दूसरे के प्रति दुर्भावना,छूआछूत ,क्रोध,मोह लोभ,काम इत्यादि को दूर नही कर पाते हैं।अच्छा हो यदि वे हाथ की माला के मोतियों को फेरना बंद करके मन के मोती को फिरा लें।

वे अद्वैतवाद में विश्वास करते थे।नर और नारायण में कोई भेद नही।नर को नारायण का ही अंश मानते थे।उनका कहना था मनुष्य को उस प्रभु के अंश के रूप में ही संसार में रहना और सत्कार्य करना चाहिये।

मै मै बुरी बलाय है,सकहूँ निकसौ भागि,

कहे कबीर कब तक रहै,रूई लिपटी आगि।

अर्थात मनुष्य को मै यह हूँ,मै ऐसा हूँ,मै इतना शक्तिशाली हूँ, जैसी मै की भावनाएं नही रखनी चाहियें इस मै से जितनी जल्दि भाग सके भाग जाना चाहिये। यदि किसी लकडी पर रूई रूपी मै को लपेट कर प्रभु रूपी अग्नि में जलाया जाय तो वह रूई कब तक अग्नि से एकाकार नही होगी?इन्ही भावनाओं को अभिव्यक्त करता हुआ...मेरा मुझ में कुछ नही,जो कुछ है सो तोर,

तेरा तुझको सौंपते क्या लागत है मोर।

इसी प्रकार...

चूना पत्थर ईंट ले मस्जिद लई चुनाय,

ता चढि मुल्ला बांग दे ,क्या बहरा हुआ खुदाय।।

अर्थात ईंट चूना पत्थर को जोडकर मस्जिद बना ली है और उसके ऊपर चढ कर मौलवी जोरों से अजान देते हैं जैसे मुर्गा बांग दे रहा हो,क्या खुदा बहरा हो गया है कि उसे इतनी जोर से चिल्ला कर पुकारने की आवश्यकता है।उन्होने समान रूप से हिन्दू मुस्लिम दोनो ही धर्मों के आडंबर कुरीतियों एवं

कुप्रथाओं पर प्रहार किए।जो लोग उन्हे समझ गए वे उनके सच्चे अनुयायी बन गए।

उन्होने उस समय के शासकों की सत्ता और भयभीत तथा जुल्मों से सताई हुई प्रजा के दर्द को भी समझा और उन्हे मार्गदर्शन देने का प्रयास किया।।

प्रभुता को सब कोई भजे, प्रभु को भजै न कोय,

जो कबीर प्रभु को भजै, प्रभुता चेरी होय।।

अर्थात लोग प्रभु से अधिक प्रभुता अर्थात शासक की पूजा करते हैं,यदि वे प्रभु को भजेंगे तो प्रभुता स्वयं चेरी अर्थात अनुगामिनी ,चेली ,नौकरानी बन जाएगी। सर्वोच्च सत्ता प्रभु की है और मनुष्य को उसी को भजना चाहिये। सारा संसार प्रभु का बनाया हुआ है।जीवन की नश्वरता को उन्होने हृदय की गहराई से महसूस किया और उनके अधिकांश दोहों में आत्मा परमात्मा की एकरूपता दर्शाते हुए इस बात को उल्लेखित किया गया है।

माली आवत देखि करि,कलियन करि पुकार,

फूले फूले चुन लिये,काल हमारी बार।।

माली रूपी मृत्यु को आते देख कर कलियों रूपी अल्पायु के लोग पुकार उठते हैं कि जर्जर वृद्ध अर्थात खिले हुए फूल तो आज चुन लिये हैं कल हमारी भी बारी है।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात,

देखत ही छुप जाएगा, ज्यों तारा परभात।।

पानी के बुलबुले के समान मनुष्य का जीवन एक रात का है। सुबह का तारा उगते ही यह उसके प्रकाश से स्वयं नष्ट हो जाएगा।

क्षण भंगूर जीवन और मृत्यु के सत्य को उन्होने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

नौ द्वारे का पींजरा, ता में पंछी पौन,

रहबे को अचरज भलो,जाय जो अचरज कौन।।

अर्थात यह शरीर नौ द्वारों का पिंजरा है जिसमें आत्मा रूपी पवन का रहना ही आश्चर्यजनक है निकल जाना नही।

उन्होने संसार की गति को अर्थात एक दूसरे की नकल करने की प्रवृति को परिहास करते हुए कहा......

ऐसी गति संसार की,ज्यों गाडर का ठाठ,

एक गया जेहिं खाड में,सबै जात तेहिं बाट।।

अर्थात भेडों के रेवड में यदि आगे वाली भेड को एक छोटा सा गड्ढा सामने दिखता है वह उसमें से उतर कर ,ऊपर चढ कर ,पार करती है तो सारी भेडें उसी का अनुकरण करेंगी।

उन्होने नश्वर शरीर के लिये कहा...

कबीर शरीर सराय है, भाडा देकर बस,

जब भटियारी खुस रहै, तब जीवन का रस।।

यह शरीर एक सराय है,इसमें आत्मा को सत्कर्मों का किराया देकर सराय की मालकिन को खुश रखने पर ही जीवन में रस है, आनंद है।

उन्होने गुरू की महत्ता को स्वीकारा और उसे अपने दोहों में वर्णित किया

कबीरा ते नर अंध हैं, गुरू को कहते और,

हरि रूठे गुरू ठौर है, गुरू रूठे नही ठौर।।

उनके अनुसार गुरु ही पथप्रदर्शक होता है।वे अंधे लोग हैं जो इसे नही स्वीकारते।यदि प्रभु रूठ जाय तो गुरु ही उस तक पहुँचने का मार्ग बताता है किन्तु यदि गुरु ही रूठ जाय तो मनुष्य का कहीं ठौर नही।

तेरा सांई तुझमें,ज्यों पुहपन में वास,कस्तूरी के मिरग ज्यों, फिरी फिरी ढूँढे वास।।

अर्थात जिस प्रकार मृग की नाभी में कस्तूरी होती है वह उसकी सुगंध को ढूँढता वन में इधर उधर भटकता है उसी प्रकार प्रभु मानव के मन में होते हैं और वह उन्हे धार्मिक स्थलों में ढूँढता फिरता है।

उपसंहारः

कबीर ने अधिकांशतः दोहों की रचना की वह भी सरल भाषा में अतः वे लोकप्रिय हो गए।उन्होने बडे पद भी लिखे हैं जैसे ....कुछ लेना न देना मगन रहना,

पंचतत्व का बना पिंजरा,जामै बोले मैना,

गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिया के निकट रहना,

कहे कबीर सुनो भाई साधो, गुरु चरण सो लिपट रहना।।

अथवा...

आप बिना कौन सुने प्रभु मेरी, दास की विपत निवारण कीजे,

अरज करूँ मै तोरी,करजोरी,

तुम समरथ लायक सब दाता,

सबपर कृपा घनेरी,

कहत कबीर शरण मै आयो,

नाथ करत क्यों देरी।।

कबीर ने प्रत्येक बुराई पर छोटे छोटे दोहों में प्रहार किये ।हिन्दू मुस्लिम धर्म की कुरीतियों को तोड कर उससे बाहर निकलने की प्रेरणा दी। उन्होने आत्मा परमात्मा के रिश्ते के माधुर्य को वर्णित किया। जो सच्चे ह्रदय से प्रभु के गुण गाए उससे प्रभु दूर नही रह सकते।

गाया तिन पाया नही,अनगाये ते दूर,

जिन गाया विश्वास गहि,

तिनके सदा हुजूर।।

उनके अनुयाइयों में हिन्दू मुस्लिम दोनो ही बडी संख्या में थे। कहा जाता है कि उनकी मृत्यु पर दोनो सम्प्रदायों में उन्हे दफनाने अथवा दाह संस्कार करने की जिद पर बहस छिड गई, परन्तु जब शरीर से चादर उठाई तो वहॉं शरीर न होकर पुष्प थे जिनका दोनो ही अनुयाईयों ने अपने अपने तरीके से अंतिम संस्कार किया।

48) परहित सम धरम नही कोई

प्रस्तावनाः

देश का भविष्य उन्ही लोगों के हाथों सुरक्षित है जिन्हे उसके अतीत से प्यार है।

रॉलफाईजे

हमारा देश ऐसे महात्माओं से ,ऋषि मुनियों से ,महापुरूषों से,शशहीदों से ,सन्नारियों से ,उनके इतिहास से भरा हुआ है जिन्होने जितने परोपकारी कार्य किये शायद उतने विश्व इतिहास में ,अन्य देशों में नही किये गए।

सत्य प्रेम अहिंसा परोपकार दया सहिश्णुता कर्तव्य निष्ठा मातृपितृ भक्ति,गुरू भक्ति,देश भक्ति,ऐसा कोई मूल्य नही जो इस देश की नींव में न हो।

राम और कृष्ण के अवतारों ने परहित भावना के कारण ही रावण और कंस जैसे अत्याचारियों से लोगों को मुक्ति दिलाई। महात्मा बुद्ध ,महावीर स्वामी, ने राजपुत्र होते हुए भी अपना राज्य छोड कर परहितकारी उपदेश दिये। कबीर, रविदास, नानक और ऐसे ही कई महान व्यक्तियों ने हमारे देश की जडों को सद्गुणों,संस्कारों और उत्तम विचारों के जल से सींचा।बडे बडे महाराजाओं ने भी प्रजा के प्रति हितकारी भावना और प्रजा वत्सलता की भावना को ही नींव बनाया।पन्ना धाय ने महाराजा उदयसिंह के प्राण बचाने के लिये उनकी वेशभूषा, वस्त्र, आभूषण पहना कर शत्रु की तलवार की धार के नीचे अपने पुत्र को रख दिया।झांसी की रानी, रानी दुर्गावती,पि नी सभी ने किसी न किसी मूल्य को जीवित रखने के लिये प्राणोत्सर्ग किये।

विषयवस्तुः

ईश्वर वह वृत्त है, जिसका कृपा केन्द्र हर जगह है किन्तु जिसकी परिधि कहीं नही है।

एम्पीडाक्लीज

ईशवर की बनाई हुई इस सृष्टि में सभी कुछ ऐसा है जो परोपकार के भाव से ओतप्रोत है।नदियाँ जल देतीं हैं जो मनुष्य का जीवन है,वृक्ष हमें फल, फूल, सब्जियाँ, देते हैं, धरती हमें अन्न देती है,विभिन्न खनीज देती है, गाय हमें दूध देती है, सभी कुछ परहित के धर्म का निर्वाह करते हुए अपना जीवन जीते हैं।केवल मानव ही ऐसा है जो सिर्फ अपने लिये जीता है विषेश रूप से आज का मानव, उसने किसी भी मूल्य को अपने जीवन में कोई स्थान नही दिया है। वह अपने समय,अपने धन, अपने ज्ञान अथवा जानकारी,,अपनी क्षमता

सभी का प्रयोग सिर्फ अपने लिये ही करना चाहता है। दूसरे के प्रति हित की भावना कभी भूले से भी उसके मन में उत्पन्न नही होती। यह जीवन पशुसम है।

धन ही उसका केन्द्र बिंदू बन गया है जिसके इर्द गिर्द ही उसका जीवन घूमता है।यदि कहीं उसे अपने हित के रास्ते में दूसरे का हित बाधा बना दिखाई देता है तो वह क्षणांश की भी देर नही लगाता उसका अहित करने से ।देश लोग देश ,मातृभूमि ,प्रांत, प्रदेश, शहर, पडौस, मोहल्ला ,गली, परिवार सभी के हितों को सर्वोपरि रखते थे किन्तु अब ऐसा नही होता अब केन्द्र में वह स्वयं होता है और दूर दूर तक फैली परिधि में भी उसके स्वयं के स्वार्थ होते हैं।

महात्मा गांधी ने अपना सारा जीवन देश को अर्पण कर दिया था। उन्होने नही चाहा कि वे ऐश ओ आराम का जीवन जीयें। उन्होने अपनी धोती को भी छोटा कर लिया था कि देश के गरीबों को वस्त्र मिल सकें।अफ्रीका से मिले सोना,हीरे ,जवाहिरात के उपहारों पर भी उन्होने अपना अधिकार नही समझा और मेडिकल कॉलेज की नींव रखने में उसका उपयोग किया।महात्मा गांधी इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंसेज सेवाग्राम वर्धा महाराष्ट्र में उन्ही के द्वारा स्थापित किया गया था।

वे स्वयं सूत कातते थे तथा कई लोगों को स्वावलंबी बनाने के लिये उन्होने कुटीर उद्योगों को विकसित करने की प्रेरणा दी।

सम्पूर्ण विश्व में हुए वैज्ञानिक आवीष्कार मानव कल्याण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा किये गए हैं।टेलीफोन से मोबाईल तक ,कम्प्यूटर ,टी.वी.,बस से ट्रेन हवाई जहाज तक सभी कुछ आज मानव के जीवन को अधिकाधिक आराम देह बनाने के काम आता है।महान संतों ने लोगों को अच्छे विचारों के प्रवचन देकर मार्गदर्शन किया। सभी कवियों ,साहित्यकारों,कहानीकारों,नाटककारों, उपन्यासकारों ने अपनी

रचनाओं से सत्य का प्रकाश फैलाया और इसके द्वारा परहित परकल्याण के मूल्यों को भी स्थापित किया। यहाँ तक कि हिन्दी सिनेमा में भी वर्षों देश अर्थात अपने आरंभिक काल में इन्ही मूल्यों की स्थापना के लिये कार्य किया एवं समाज पर उसका काफी सकारात्मक प्रभाव पडा।

विश्व के सभी देशों में मूल्यों को महत्व दिया जाता है।इनकी आधारशिला हमेशा बाल्यकाल में ही रखी जाती है।अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अपने बाल्यकाल में जब वे स्वयं काफी गरीब थे रास्ते से एक कोढी बूढे आदमी को अपने घर उठा लाए थे। उन्होने अपने हाथों से उसके घाव धोए मरहम पट्टी की । वह बूढा चिडचिडा था और लगातार उन्हे गालियाँ देता रहा परन्तु उन्होने उसकी परवाह नही की और उसकी सेवा करते रहे। महात्मा गांधी ने भी इसी प्रकार कोढियों की सेवा की।उनके अनुयायी बाबा आमटे ने तो आनंद वन स्थापित किया जहाँ कुष्ट रोगियों का इलाज किया जाता है और उन्हे आत्म निर्भर भी बनाया जाता है। पहाड तोड कर रास्ता बनाने वाले ,बंजर जमीन पर हरे भरे पौधे लहलहाने वाले गरीबों की सेवा करने वाले निरिह पशु पक्षियों की सेवा करने वाले कई महापुरूषों ने हमारे इस पवित्र देश में जन्म लिया और उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन इन्ही परोपकारी कार्यों में लगा दिया।

जब महाराणा प्रताप अपने राज्य से च्युत होकर वनो मे भटक रहे थे तो उनके पास खाने को कुछ न था वे घास की बनी रोटी खाते थे। उस समय अचानक एक भिखारी के आने व अपने भूखे होने की बात कहे जाने पर उनकी अत्यंत छोटी बेटी ने अपने हिस्से की रोटी उस बूढे भिखारी को दे दी। हमारे देश में अतिथि को भगवान माना जाता है। कुछ समय के उपरांत महाराणा प्रताप की वह छोटी सी परोपकारी बेटी ने अपने प्राण भी त्याग दिये थे।

उपसंहारः

आज के आसपास के वातावरण को देख कर मन दुःखी हो उठता है।मरणासन्न होते इन जीवन मूल्यों को पुर्नजीवन देने की आवश्यकता है और उसे नवयुग के युवक युवतियाँ ही कर सकते हैं।न तो राजनीति में परहित और परोपकार की भावना रखने वाला नेता है और न ही समाज में कोई ऐसा दिखता है। नेताओं का कार्य समाज सेवा होता है और इसीलिये उन्हे चुन कर संसद में भेजा जाता है किन्तु वे जनता को वोटों से तौलते हैं। जनता के कष्ट का उन्हे लेशमात्र भी खयाल नही होता।कुछ एन.जी.ओ. परोपकार और परहित के लिये स्थापित किये जाते हैं किन्तु उन्हे अपने प्रचार प्रसार में अधिक रुचि होती है। कई लोग इन संस्थाओं को मिलने वाले अनुदान में अधिक रुचि रखते हैं।जब कहीं रेल दुर्घटना होती है, बॉम्ब ब्लास्ट होता है तो ये संस्थाएं कहीं दिखाई नही पडतीं हॅं! कुछ सेवाभावी ,परोपकारी,परहित कारी लोग अवश्य घायलों की मदद करते दिखाई पड जाते हैं।

जीवन इतना छोटा भी नही कि सौजन्य के लिये समय न मिले।

एमर्सन

49 आवश्यकता आवीष्कार की जननी है।

प्रस्तावनाः

जो दूसरों को कठिन प्रतीत हो उसे आसानी से कर दिखाना कौशल है ,जो दूसरों को असंभव लगे उसे कर दिखाना प्रतिभा है।

एमिली

मनव की आज तक की प्रगति अपने आप में एक लंबा इतिहास समेटे हुए है और इसकी आधार शिला यही वाक्य आवश्यकता आवीष्कार की जननी है।

यह सत्य है कि विश्व के अलग अलग देशों में अलग अलग समय मे सभ्यताए विकसित हुई।पृथ्वी के करोडों वर्शों के पूर्व के इतिहास में अभी तक हम वैज्ञानिकों की इस धारणा को सत्य मानते हैं कि पृथ्वी सूर्य का ही एक हिस्सा है और उससे अलग होकर धीरे धीरे ठंडा हो गया इस पर सृष्टि और विभिन्न जीव जन्तुओं का और मानव का अविर्भाव हुआ। प्रागेतिहासिक काल का मानव पशु की तरह था। उस युग को पाषाण युग भी कहते हैं।क्यों कि प्रस्तर अर्थात पत्थर की गुफाओं में रहना ,पत्थर के नुकीले औजारों के प्रयोग से आखेट अर्थात शिकार करना ,पशुओं का कच्चा मांस खाना ,उसकी खाल लपेटना या पेड की छाल को शरीर पर लपेटना। एक बार धरती से निकले लावे में जब उसके शिकार का मांस भुन गया वह उसे स्वादिष्ट लगा तो उसने स्वयं आग उत्पन्न करने की ठानी। पत्थर से पत्थर रगड कर उसने जो आग निकाली वो माचिस की डिबिया ,लाईटर ,इलेक्ट्रॉनिक लाईटर में सिमट गई है।वह आग उत्पन्न करने के तरीकों को परिष्कृत करता गया और यह सब संभव हो सका।

विषयवस्तुः

यदि कठिनाईयाँ न होतीं तो मनुष्य की प्रगति न होती,न मानव चरित्र का उद्‌घाटन और विकास होता।

जेम्स एलन

जब मानव को जमीन पर बिखरे अनाज के दाने मिले , तो उसने कुछ खाए और कुछ जमीन में दबा दिये,वे फिर से कोंपल बन कर प्रस्फुटित हुए और उसने कृषि करना शुरू कर दिया।

जब उसने बछडे को गाय का दूध पीते देखा तो उसने स्वयं दुधारू पशुओं को पाला। जब पैदल एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना उसे कष्टकर अनुभव हुआ तो उसने घोडे ऊँट और गधे की सवारी की। उसमें और गति लाने के लिये उसने

पहिया या चक्का बनाया जो बैलगाडी, घोडागाडी, रेलगाडी, बस, कार, ऑटो से होता हुआ तीव्रतम गति वाली बुलेट ट्रेन तक आ पहुँचा है।

स्टेज थियेटर रेडियो ट्रांजिस्टर टेपरिकॉर्डर ,टी.वी., वी.सी.आर., आईपॉड इत्यादि मनोरंजन के आधुनिकतम आवीश्कारों तक की उसकी यात्रा ,उसकी और अधिक और अधिक आरामदेह मनोरंजन पाने की प्रवृति की घोतक है।हल और बैलों के स्थान पर वह तीव्र गति वाले ट्रेक्टर से खेती करने लगा। अपने आराम के साधनों में गर्मी लगने पर पंखा,कूलर,ए.सी. ,बनाए।बर्तन धोने की मशीन कपडे धोने की मशीन झाडू लगाने के लिये वेक्यूमक्लीनर, इत्यादि उसने अधिक से अधिक आराम पाने की आवश्यकता के कारण किये गए आवीष्कार हैं।

अब उसके हाथ में रिमोट है जिससे वह एक स्थान पर बैठे बैठे टी.वी. के चॅनल्स बदल सकता है,कार लॉक कर सकता है।उसकी घास फूस से बनी झोपडी अब शानदार बंगलों और विशालकाय अट्टालिकाओं जो कि बहु मंजिला होतीं हैं में परिवर्तित हो गई है।

अपने लेखन को आसान बनाने के लिये उसे रजिस्टर करने के लिये टाईपराईटर के बाद उसने कम्प्यूटर का आवीष्कार किया।अपने संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने के लिये देश कबूतरों का प्रयोग किया,फिर दौडने वाले हरकारे,फिर घोडों पर हरकारे भेजे। अंग्रेजों ने एक सुद्रढ डाक व्यवस्था का निर्माण किया जो आज फोन मोबाईल और इंटरनेट तक आ पहुँचा है। क्षण मात्र में विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक संदेश आ जा सकते हैं, टाईप कर के एक दूसरे से बात की जा सकती है जिसे चॅटिंग कहते हैं,वेब कॅम की सहायता से बातें करने वाले दोनो व्यक्ति एक दूसरे को देख भी सकते हैं,हेड फोन लगा कर उसकी आवाज भी सुनी जा सकती है। यह सत्य है कि विकास की प्रकृिया इंग्लेंड अमेरिका और युरोप में देश आरंभ हुई अतः वे लोग देश विकसित हुए और उपरोक्त

वस्तुओं में अधिकांश आवीष्कार वहीं हुए किन्तु कम्प्यूटर के क्षेत्र में भारत ने सबसे तीव्र गति के सुपर कम्प्यूटर का निर्माण भी किया और भारत के बुद्धिमान युवा विश्व के विकसित देशों में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हैं।

अब मानव का कम्प्यूटर घंटों का काम मिनिटों में करता है,हजार व्यक्तियों का कार्य अकेला कम्प्यूटर निपटा देता है,मानव की हजारों मील की यात्रा चंद घंटों में सिमट गई है।ये सारी सफलताएं उसे एक ही प्रयास में नही मिली उसे कई बार असफलता का मुँह भी देखना पडा होगा परन्तु उसने प्रयास रोके नही।

व्नत हतमंजमेज हसवतल पे दवज पद दमअमत
पिसपदहएइनज पद तपेपदह मअमतलजपउम ूम सिसण

ब्वदमिबपने

उपसंहारः

मानव की प्रगति पर कहीं भी विराम नही है।उसने मेडिकल साईंस में आज दुःसाध्य रोगों का इलाज ,लेप्रोस्कोपी से किये जाने वाले ऑपरेशन सभी कुछ ढूँढ निकाले हैं।उसकी प्रयोगशालाओं में नित नए प्रयोग करने की गति अबाध गति से चलती रहती है। जब कोई नया आवीश्कार हमारे सामने आता है तो हम आश्चर्य मिश्रित हर्ष से भर उठते हैं। आज वह पृथ्वी के इर्द गिर्द बनी ओजोन परत के छिद्र को बंद करने के लिये प्रयास रत है क्यों कि ए.सी. और फीज से निकलने वाली गैस से यह छिद्र दिनो दिन बढता जा रहा है।यह सूर्य के प्रकाश को छान कर उसके दूषित पदार्थों को रोक कर प्रकाश एवं ऊष्मा को धरती तक भेजती है। यदि इस छिद्र को बंद न किया गया तो सूर्य की किरणे सीधी धरती पर आएंगी जो हमारे लिये घातक है क्यों कि सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणे कई प्रकार के स्किन केंसर्स को बढाएंगी।

इसके अलावा विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, पृथ्वी के गर्भ में घटता जलस्तर, और बढता तापमान सभी कुछ मानव के लिये चिंता का विषय हैं और वह इनके उपाय ढूँढने में दिन रात लगा है।

सबसे देश मानव ने चँद्रयात्रा की,अंतरिक्ष में अपने अपने उपग्रह स्थापित किये। हमारे देश के राकेश शर्मा प्रथम अंतरिक्ष यात्री थे। अमेरिका की नासा नामक संस्था नित्य नए प्रयोग करती है। उसने मंगल ग्रह की भी पूरी जानकारी प्राप्त कर ली है। हाल ही में चँद्रमा पर भी जल की तलाश में विस्फोट किया। भारतीय मूल की कल्पना चावला नासा की एस्ट्रोनॉट थी। दुर्भाग्य वश बारह सदस्यों वाला यान कोलंबिया दुर्घटनाग्रस्त हो कर टेक्सॉस में जा गिरा और सभी सदस्य मृत्यु को प्राप्त हुए। प्रयास रुके नही भारतीय मूल की ही सुनीता विलियम्स काफी लंबे समय तक अंतरिक्ष में रह कर ढेर सारी जानकारियाँ लेकर सुरक्षित लौट आईं।प्रगति के कदम कभी रुकते नही।

50 अहिंसा परमो धर्म

प्रस्तावनाः

स्वयं को पहचानने के लिये हमें स्वयं से बाहर निकल कर तटस्थ बन कर खुद को देखना चाहिये।

महात्मा गांधी

अहिंसा ब्द सर्वप्रथम उल्लेख वर्धमान महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध ने किया।दोनो ही कमशः जैन एवं बौद्ध धर्म के प्रणेता थे।जैन धर्म के अनुयायी हमारे देश में काफी संख्या में हैं एवं वे अपने धर्म के सभी नियमों का कट्टरता से पालन करते हैं।वर्धमान महावीर राजपुत्र थे किन्तु राजपाट छोड कर वे सन्यासी हो गए एवं जीवन दर्शन की खोज में घर से निकल पडे थे।आने वाले समय में जितने भी तीर्थंकर जैन धर्म में हुए

उन्होने महावीर स्वामी का अनुकरण किया।उन्होने जो दर्शन स्थापित किया उसके अनुसार प्रत्येक जीव जो मनुष्य हो पशु हो अथवा छोटा सा कीट हो जीवन का अधिकारी है और किसी को किसी की हत्या करने का अधिकार नही है।

भगवान बुद्ध ने भी राजपुत्र होते हुए भी राजमहल त्याग दिया। अपनी पत्नि और पुत्र को त्याग कर घर से निकल पडे ।कहा जाता है कि उनके पिता ने उन्हे इतने सुख दिये थे कि उनका दुःख से परिचय ही न हो।उन्होने अपने पुत्र को महल की चारदीवारी में सभी सुख उपलब्ध कराये।बुद्ध जिनका आरंभिक नाम सिद्धार्थ था का विवाह अत्यंत सुंदर कन्या यशोधरा से किया।शीघ्र ही उन्हे राहुल नामक पुत्र की प्राप्ति हुई ।एक दिन सिद्धार्थ ने सारथी से महल से बाहर घूमने की इच्छा प्रकट की ।सारथी उन्हे लेकर निकल पडा।रथ में बैठे सिद्धार्थ ने कमशः रोगी, कोढी, वृद्ध एवं अर्थी को देखा। चारों कौन है इसके उत्तर सारथी ने उन्हे दिये।जीवन के ये रूप वृद्धावस्था और मृत्यु की सत्यता को जान कर उन्हे संसार से विरक्ति हो गई और वे महल छोड कर निकल पडे।बोधगया में बोधीवृक्ष के नीचे उन्हे ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होने बौद्ध धर्म की स्थापना की।

विषयवस्तुः

सम्राट अशोक बहुत ही वीर शासक थे और युद्ध करके आसपास के राज्यों को अपने साम्राज्य में मिलाने का शौक था। जब उसने कलिंग पर आकमण किया तो वहॉं की सेना बहादुरी से लडी। अशाोक को विजय प्राप्त हुई किन्तु जब वह युद्ध भूमि में गया तो चारों ओर बिछी लाशे ही लाशें देख कर उसका मन ग्लानि से भर गया उसने बौद्ध धर्म की शरण ली उसने इस धर्म का प्रचार प्रसार भी किया।उसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को भी प्रचार करने के लिये श्रीलंका, जावा ,सुमात्रा इत्यादि स्थानों पर जिनमें चीन जापान प्रमुख है,बौद्ध धर्म के विशव भर में कई अनुयायी हैं।भारत में बौद्ध

धर्मावलंबियों की संख्या कम है। भीमराव अंबेडकर ने इस धर्म को ग्रहण किया था।उनके अनुयायी भी यह धर्म ग्रहण करने में रुचि रखते हैं।

महात्मा गांधी ने अहिंसा का प्रयोग एक महान उधेश्य के लिये किया था।अंग्रेजों से दो सौ वर्षों की गुलामी से स्वतंत्रता पाना और वह भी अहिंसा द्वारा, असंभव सा प्रतीत होता है किन्तु यह चमत्कार हुआ।अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त देश की जनता को उन्होने विश्वास दिलाया। असहयोग और सत्याग्रह जैसे हथियारों से उन्होने यह लडाई लडी। सारा देश उनके पीछे था। कुछ क्रांतिकारियों को अहिंसा पर विश्वास नही था उन्होने दूसरा मार्ग अपनाया। इनमें भगतसिंह ,चँद्रशेखर आजाद,राजगुरु,खुदीराम बोस,इत्यादि कई लोग थे जो शहीद हुए। अंग्रेजों ने देश को आजाद किया किन्तु जाते जाते उन्होने बँटवारे का जहरीला बीज भी बो दिया। हिन्दुस्तान पाकीस्तान दो टुकडों में देश विभक्त हुआ।भारी मारकाट मची। दोनो ओर के हजारों लोग मारे गए।वे जो कल तक अंग्रेजों के विरुद्ध एक दूसरे के कंधे से कंधा मिला कर लडे थे, वे ही एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए।जो ट्रेनें इधर से उधर जा रहीं थीं उनमें भी लाशें भरीं हुईं थीं और जो उधर से इधर आ रहीं थीं उनमें भी लाशें भरीं हुईं थीं।इतनी हिंसा हो रही थी ,पैदल काफीलों में जाने वाले लोगों पर भी हमले हो रहे थे।महात्मा गांधी बहुत दुःखी हो गए और आमरण अनशन आरंभ कर दिया। दोनो ओर के लोग उनका बहुत सम्मान करते थे और उन्होने मारकाट बंद कर दी।इस प्रकार बापू ने एक बार फिर अहिंसा के अस्त्र से विजय प्राप्त की। महात्मा गांधी का बँटवारे के निर्णय पर सहमति देना कुछ लोगों को नही भाया और उनमें से एक नाथूराम गोडसे ने 30 जनवरी को महात्मा गांधी को ,जब वे प्रार्थनासभा में जा रहे थे,तीन गोलियाँ मारकर उनके प्राण ले लिये।इस प्रकार अहिंसा और ाांति का पुजारी एक हिंसक मृत्यु का शिकार हुआ।

आजादी के बाद हमने दो बडे युद्ध, एक चीन और एक पाकीस्तान के साथ देखे।एक युद्ध हाल ही में कारगिल युद्ध पाकीस्तान से हुआ। कश्मीर आजादी के बाद से ही दोनो देशों के बीच विवादित मुद्दा बना हुआ है।सीमा पर हमेशा ही सुरक्षा बलों और उनके सैनिकों के बीच हमेशा ही गोलाबारी होती ही रहती है। किन्तु पिछले 22 वर्षों से आतंकवाद के जो हमले देश के विभिन्न भागों में हो रहे हैं वे त्रासदायी हैं।कभी भी, कहीं भी बॉम्ब ब्लास्ट हो जाता है और कई निर्दोष लोग, स्त्रियॉं बच्चे मारे जाते हैं। ये ब्लास्ट कभी ट्रेन में, कभी बस में, कभी मार्केट में या सिनेमाघर में होते रहते हैं।इनकी कठोरता पूर्वक समाप्ति आज के समय की अविलंब आवश्यकता है।सरकार को इन्हे दबाने के कठोर प्रयास करने होंगे।कडे कानून बना कर इन मुकदमों का फैसला भी जल्दि से जल्दि करवाना होगा। ये दीमक की तरह देश की जडों को खा रहे हैं और यह अहिंसा से खत्म किया जाने वाला रोग नही है।

उपसंहारः

किसी भी तत्थ्य अथवा मूल्य का जीवित रहना, पुष्पित पल्लवित होना देश काल परिस्थिति पर निर्भर करता है। यह सही है कि कलिंग युद्ध की भयावहता देख कर सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तित हुआ और उसने बौद्ध धर्म की ारण ली किन्तु आज के आतंकवाद से निपटने के लिये इंग्लेंड और अमेरिका को भी कठोर कदम उठाने पडे क्यों कि दोनो ही देशों में आतंकवादियों ने दुस्साहसपूर्ण हमले करके वहॉं की अर्थ व्यवस्था को चोट पहुँचाने का प्रयास किया। अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हवाई जहाज टकराकर और इग्लेंड की लाईफलाईन मानी जाने वाली ट्यूब अर्थात मेट्रो पर एक साथ पॉंच जगहों पर आतंकवादी हमले किये गए।

ये आतंकवादी रक्त बीज की तरह पनप रहे हैं। यदि इन्हे कठोर कदम उठा कर समाप्त न किया गया तो धीरे धीरे क्रोध और आक्रोश की ज्वाला भभक उठेगी और सारा देश भयानक अराजकता का शिकार हो जाएगा।

महात्मा गांधी की अहिंसा क्या आज प्रासंगिक है? अहिंसा परमो धर्म को यदि लोग मानते हैं तो निरिह पशु पक्षियों को न मारें,गरीब और मजबूरों पर अत्याचार न करें,क्रोध न करें,शशांति से प्रेमपूर्वक बोलें।इतनी अहिंसा भी यदि हम अपनाएं तो काफी है।

51 आधुनिक मनोरंजन के साधन

प्रस्तावनाः

कल का दिन किसने देखा है

आज का दिन हम खोएं क्यों?

जिन घडियों में हँस सकते हैं

उन घडियों में रोएं क्यों?

मनुश्य का जीवन आकस्मिकताओं से भरा हुआ है,और संभावनाएं एवं आशंकाएं दोनो ही इसके महत्वपूर्ण अंग हैं।दो तीन पीढीयों देश जीवन जीने के तरीके बिल्कुल भिन्न थे।सुबह होती है ,शाम होती है,जिंदगी यों ही तमाम होती है की तर्ज पर जीवन गुजरता था। त्यौहार और घर में होने वाले उत्सव जनेऊ, विवाह इत्यादि ही उसके लिये मनोरंजन थे। सिनेमा का आगमन समाज मे हो चुका था किन्तु अधिकांश घरों में सिनेमा देखना अच्छा नही माना जाता था।अच्छी पुस्तकों की कमी नही थी और बुद्धिजीवी वर्ग उन्हे पढ कर अपना मनोरंजन भी करता था। ताश खेलना अच्छा नही समझा जाता था।चारों ओर से प्रतिबंधित जीवन कैसा होता होगा? स्त्री का सारा जीवन घरेलू कामकाज में ही व्यतीत हो जाता

था और पुरूष जीवन यापन के साधन जुटाने में व्यस्त रहते थे।विवाह जल्दि कर दिये जाते थे। आज की तरह आराम के संसाधन नही थे अतः दिनचर्या कठोर परिश्रम से युक्त थी। बच्चों को सात वर्श की उम्र से देश स्कूल नही भेजा जाता था और यह कह कर कि पढोगे लिखोगे बनोगे नवाब ,खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब यह कह कर उन्हे खेलने भी नही दिया जाता था।

विषायवस्तुः

मानव जीवन की प्रगति जो आज के स्तर तक पहुँची है,विज्ञान की देन है।विज्ञान ने उसे अनेक ऐसे साधन दिये हैं जिनसे मनोरंजन कर वह अपने नीरस जीवन और उबाऊ दिनचर्या से कुछ देर के लिये मुक्ति पा सकता है।मनोरंजन एक आवश्यक तत्व है क्यों कि वह व्यक्ति के जीवन में नवस्फूर्ति का संचार करता है।

आधुनिक काल में मनोरंजन के निम्न साधन है।

खेलः

खेलना यदि इनडोर है तब वह मनुष्य के मस्तिष्क को प्रखर बनाता है जिसमें शतरंज प्रमुख है।अंग्रेजों के जमाने से ही यह खेल खेला जा रहा है। भारत में भी इस खेल के विश्वस्तरीय खिलाडी हैं। खेल यदि आऊटडोर हैं तब भी वह मनोरंजन तो करता ही है साथ ही स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी मददगार साबित होता है। खेलों को देश में राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर के खिलाडी ढूँढने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। जिसे खेलने का शौक होता है उसे उससे बेहतर कोई मनोरंजन नही लगता है,वह मौका मिलते ही खेलने लग जाता है। क्रिकेट, हॉकी ,फुटबॉल, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल इत्यादि ऐसे खेल हैं जिसमे बच्चे और युवक पूर्ण रूचि रखते हैं और राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर चेंपियनशिप जीत कर देश का नाम रोशन करते हैं। बहुत कम लडकियाँ खेल में रूचि लेती दिखाई देतीं हैं लेकिन हॉकी टीम ने विश्व विजेता बन कर देश को गर्वोन्नत कर दिया।

सिनेमाः

दूसरा मनोरंजन का साधन सिनेमा है।सिनेमा का इतिहास साठ वर्षों से अधिक पुराना है। आरंभ में मूक फिल्मे बनतीं थीं। मुख्य रूप से धार्मिक कथाओं पर आधारित हुआ करतीं थीं,फिर बोलती फिल्मों में पहली फिल्म आलमआरा थी,आज रंगीन फिल्में बनतीं हैं जो देश श्वेतश्याम यानी ब्लेक एन्ड व्हाईट होतीं थीं। फिल्मी कहानियों के स्तर में भी परिवर्तन हुए हैं। जहाँ 60 और 70 के दशकों को अच्छी पटकथा के कारण अच्छे संगीत के कारण गोल्डन ईरा कहा गया है वहीं उसके बाद स्तर गिरने का सिलसिला आरंभ हुआ। तकनीकी द्रष्टि से विकसित हुई कुछ फिल्में बेहतरीन स्तर की बनीं। लगान, ब्लॅक, देवदास जैसी फिल्में ऑस्कर के लिये नॉमीनेट भी हुईं। तारे जमीन पर का भी नॉमीनेशन हुआ था। देश फिल्म देखने का शौक ज्यादा महंगा नही था आज इसे मल्टी प्लेक्स में 150, 170, 180 रूपये की टिकिट लेकर देखना पडता है।इंटरवल में खरीदे जाने वाले पॉपकॉर्न भी 200 रूपयों में मिलते हैं तो एक सामान्य आदमी के लिये परिवार के साथ देखना काफी महंगा शौक है।

टी.वी.ः

टी.वी. मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम है।1980...81 मे भारत में इसका आगमन हुआ उससे देश तक लोग रेडियो ट्रांजिस्टर पर फिल्मी गाने अथवा कहानियाँ सुनकर अपना मनोरंजन करते थे। आरंभ में टी.वी.भी ब्लेक एन्ड व्हाईट हुआ करता था बाद मे रंगीन हुए। आरंभ में ंदूरदर्शन विभाग के पास प्रसारण के समस्त अधिकार हुआ करते थे अतः बेकार उबाऊ कार्यक्रम देखने पडते थे।आज प्रायवेट चॅनल्स में मनोरंजन की भरमार है और 24 घंटे इनका प्रसारण होता रहता है।यह हर वर्ग में लोकप्रिय है क्योंकि बच्चों युवाओं वृद्धों सभी को अपनी अपनी पसंद के कार्यक्रम इसमे मिल जाते हैं।

विडियो गेमः

ये हाथ में रिमोट लेकर खेला जाने वाला खेल है।यह मोबाईल के स्क्रीन पर अथवा कम्प्यूटर में इन्सर्ट कर के अथवा इन्स्टॉल करके, तथा बडे बडे पार्लर्स में भी खेला जाता है। इस मनोरंजन पर भी काफी खर्च होता है यदि वह पार्लर में खेला जाए।

राईड्सः

यदि आपके शहर में बडा पार्क है जहाँ इस तरह के राईड्स हैं तो आप उन पर भी मनोरंजन ,रोमांच का आनंद ले सकते हैं। इसकी टिकिट खरीदने के लिये भी आप को रूपये खर्च करने होते हैं। ये राईड्स बहुत रोमांचक होती है एवं जिन्हे इनसे डर लगता है वे इससे दूर ही रहते हैं।यह बडे शहरों तथा महानगरों तक सीमित है। छोटे शहरों तथा गाँवों तक इनकी पहुँच नही है।

आईपॉड,मोबाईलः

मोबाईल गेम खेलना ,एस.एम.एस. अथवा एम.एम.एस भेजना आज के युवा वर्ग को बहुत भाता है।मोबाईल में म्युजिक इन्स्टॉल किया हुआ होता है,हर युवा वर्ग के कानों में लगे ईयर फोन और उसका आनंद लेता युवा वर्ग आपको हर जगह ट्रेन ,बस,मेट्रो,अथवा रोड पर चलता हुआ दिखाई दे जाएगा। आई पॉड में गानों की संख्या बहुत अधिक होती है अर्थात अपनी पसंद के गानों को एक बार चला दें और देर तक आप अपना मनारंजन कर सकते हैं और आपको बार बार सी.डी. या केसेट की तरह बदलते रहने की आवश्यकता नही होती।

क्लबः विदेशों में इसका प्रचलन बहुत है और वहाँ के लोग सप्ताहांत वहीं मनाते हैं।नाच गाना सभी कुछ वहाँ होता है।धीरे धीरे हमारे देश में भी प्रचलित हो रहा है। यहाँ भी विभिन्न मनोरंजक खेल खेले जाते हैं।

विज्ञान दिन रात प्रगति कर रहा है।मानव का मन भी हर बार नवीन और नवीन और नवीन चाहता रहता है अतः आज जो हमें नवीनतम लगता है हो सकता है कल यह पुराना लगे क्योंकि कल कोई और विकसित मनोरंजन का साधन हमारे सामने हो और हम उससे अपने मन को बहला रहे हों।

जीवन से सामंजस्य बनाए रखने के उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं, परन्तु उनकी आवश्यकता और कल्पना ,भावना के साथ घटती बढती रहती है।

पुरस्कार के सौजन्य से द्वारा जयशंकर प्रसाद

52 मेरी प्रिय पुस्तक ....देवदास

प्रस्तावनाः

स्याही की एक बूंद दस लाख आदमियों को विचार मग्न कर सकती है।

मुझे बचपन से ही कॉमिक्स कहानियाँ और उपन्यास पढने का शौक रहा।मेरे माता पिता ने इस मामले में मुझे कभी हतोत्साहित नही किया। मैने पुस्तक पढने को ही अपना मनोरंजन बनाया,और मुझे विभिन्न पुस्तकें पढने से ज्ञान भी प्राप्त हुआ।विभिन्न कहानीकारों ,साहित्यकारों और उपन्यास कारों की भाषाशैली का वैविध्य उसकी पृष्ठभूमि में अलग अलग काल ,समाज एवं संस्कृतियों का उल्लेख ,मुझे यह विभिन्नता बहुत अच्छी लगती रही। इससे व्यक्ति किसी विशिष्ठ स्थान पर जाए बिना ही वहाँ की षा रहन सहन ,रीति रिवाज,परंपराएं संस्कार,एवं संस्कृति के बारे में जान पाता है।मैने एक नोटबुक भी बना ली है जिसमें मे कोई भी अच्छा वाक्य जो पुस्तक का अंश हो ,पुस्तक के नाम और लेखक के नाम के साथ नोट कर लेती हूँ।ये वाक्य मुझे बडी प्रेरणा देते हैं।मैने शरत्चँद्र, बंकिमचँद्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर , प्रेमचँद्र,

शिवानी, मृणाल पाण्डे इत्यादि कई लेखक लेखिकाओं की पुस्तकें पढीं और सर्वश्रेष्ठ का चयन करना दुष्कर कार्य है।

विषयवस्तुः

किसी सुंदर वाक्य का निर्माण करने वाले के बाद उसकी बारी आती है जो सर्वप्रथम उसका प्रयोग करता है।

एमर्सन

जिसप्रकार पुरानी लकडी जलाने में उपयोगी,पुराना घोडा चढने में अच्छा,पुरानी पुस्तक पढने में अच्छी होती है, उसी प्रकार पुराने मित्र भी विश्वसनीय होते है।

लियोनॉर्ड राईट

मैने शरतचँद्र के लगभग सभी उपन्यास पढे।जिनमें श्रीकांत,चँद्रनाथ,परिणिता,मँझली दीदी,देवदास प्रमुख हैं। इन सभी में देवदास मुझे अत्यंत प्रिय है। भारतीय फिल्म उद्योग के लिये भी यह प्रेरणा बनी और इस पर तीन बार फिल्में भी बन चुकी हैं।

देवदास और पारो दो छोटे छोटे बच्चे जो अडौस पडौस में रहते हैं,साथ साथ खेलते हैं,शशरारतें करते हैं,बागों से अमरूद चुरा कर खाते हैं और इसी तरह अपना दिन बिताते हैं।देवदास एक बहुत बडे जमींदार के सबसे छोटे पुत्र हैं,विशालकाय हवेली में रहते हैं, घर में माता पिता भाई भाभी के अलावा ढेर सारे नौकर चाकर हैं। देवदास एक उच्च कुल के पुत्र हैं।

पारो एक गरीब घर से संबंध रखती है और नीच कुल की है।मै यहाँ यह बता दूँ कि बंगाली समाज में कुछ समय पूर्व तक या शायद आज भी इस बात को अत्यंत महत्व दिया जाता है कि कौन उच्च कुल का है कौन नीच कुल का है,यह ब्राम्हणों का विभेद है और इसे बंगाली समाज की कुरीति ही माना जाना चाहिये।ब्राम्हणों में गांगुली शीर्ष पर हैं,एवं मुखर्जी

,चटर्जी ,बॅनर्जी कमशः गिरते हुए स्तर के प्रतीक माने जाते हैं।

पारो की माँ देवदास को प्रेम से भोजन कराती है और देवदास के घर उसका आना जाना या संदेश ले जाना, संदेश एक प्रकार की बंगाली मिठाई जो छेने से बनती है। एक प्रकार का मैत्रीपूर्ण रिश्ता वर्णित किया गया है।

युवावस्था वह अवस्था है जब लडका और लडकी में परस्पर आकर्षण होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। पारो और देवदास भी खेलते कूदते हुए युवावस्था की दहलीज तक आ पहुँचे और एक दूसरे के प्रति गहरा आकर्षण महसूस करने लगे किन्तु इसके पहले कि वे इस भावना को प्रकट कर पाते देवदास को शिक्षा प्राप्ति के लिये लंदन भेज दिया जाता है।

देवदास के पिता उन चंद भारतीयों में से एक हैं जो अंग्रेजों के हिमायती थे और इसीलिये रायबहादुर जैसी पदवी से अंग्रेजों द्वारा नवाजे गए।वे एक ओर अंग्रेजी रहन सहन को अपनाकर प्रगतिशीलता का दम भरते थे दूसरी ओर अपनी जातिगत कुरीतियों अर्थात उच्च कुल और नीच कुल की बेडियों से बँधे हुए थे।वे आर्थिक स्तर को भी विवाह का मापदंड मानते थे।

देवदास की दादी उससे बहुत प्रेम करती थी,माता भी माता ही थी और निर्विवाद रूप से अपने बेटे से प्रेम करती थी किन्तु उच्च कुल और नीच कुल की गहरी जडें उसके मन में भी थीं। भाई अवश्य देवदास से प्रेम करते थे किन्तु अपनी पत्नि के कहने पर देवदास को घर से बेदखल कराने के ृषडयंत्र में उसके सहायक बन जाते हैं। घर का बूढा नौकर निश्छल रूप से देवदास से प्रेम करता है।

देवदास के लंदन से लौटने पर पारो और देवदास दोनो ही एक दूसरे से मिलने को आतुर रहते हैं।विरह ने उनके प्रेम को और द्रढ कर दिया था।पारो की माँ दोनो के प्रेम को जानती और समझती है और इस विवाह का प्रस्ताव लेकर देवदास के घर

जाती है।वहाँ से अपमानित कर निकाल दी जाती है।पारो द्वारा देवदास से पूछे जाने पर देवदास का कायरता पूर्ण उत्तर उल्लेखित है।एक ऐसा युवक जो अपने दबंग और प्रभावशाली पिता का विरोध न कर पाया। पारो की माँ ने अपमानित होकर लौटने के बाद मात्र आठ दिनो में पारो का विवाह देवदास से भी ज्यादा धनवान घर में कर देने की कसम खाई। उसने अपनी कसम का निर्वाह किया और पारो का विवाह एक ऐसे व्यक्ति से कर दिया जो बडा जमींदार है और युवा पुत्र पुत्रियों का पिता है। पारो बडी सी हवेली में आकर ठकुराईन तो बनी किन्तु वह पत्नि न बन सकी,उसके भीतर की प्रेमिका भी सांसे लेती रही।पारो के विरह में देवदास विरक्ति की चरम सीमा पर पहुँच जाता है,मदिरापान कर कर के उसने अपने शरीर को नष्ट होने के कगार तक पहुँचा दिया।इस बीच चँद्रमुखी नामक नर्तकी का उसके जीवन में प्रवेश होता है।देवदास के बार बार उलाहना देने पर ,उसके नर्तकी होने को उपेक्षा की द्रष्टि से देखने पर वह नृत्य करना त्याग कर योगिनी सा जीवन बिताने लगती है। पारो और चँद्रमुखी दोनो एक दूसरे से मिलतीं हैं और मैत्री के संबंध में बँध जाती है।दोनो ही देवदास को मदिरापान के दलदल से बाहर निकालना चाहतीं हैं पर सफल नही हो पातीं हैं और अंत में पारो से मिलने की आस लिये देवदास उसके गाँव की चौपाल पर दम तोड देता है।

उपसंहारः

उपन्यास का अंत बडा ही मार्मिक है।पारो के पति पारो और देवदास दोनो के बारे में जान चुके थे।चौपाल पर पारो के गाँव का कोई देवदास नाम का युवक अंतिम सांसे ले रहा है यह सुनते ही पारो व्याकुल होकर मुख्य द्वार की ओर भागती है और जमींदार पति द्वारपाल को ऊपर से चिल्ला कर द्वार बंद करने का आदेश देता है, द्वारपाल पारो के वहाँ पहुँचते ही द्वार बंद कर देता है।पारो रोती बिलखती द्वार पीट पीट कर

आर्तनाद कर रही है और दूसरी ओर पारो की प्रतीक्षा में देवदास खुली आँखों से प्राण त्याग देता है। यह अत्यंत मार्मिक वर्णन है जो मानस पटल पर गहरी छाप छोड जाता है।

आरंभ से समाज का दोनो के प्रेम में बाधा बनकर उपस्थित होना देवदास की मृत्यु तक अस्तित्व में रहा।अपनी संतान को अपनी जायदाद समझने वाले उस पीढी के माता पिताओं के प्रति कोई अच्छी भावना जाग्रत नही करता है। पुत्र पुत्रियों को स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में निखरने देना ही प्रत्येक माता पिता का कर्तव्य है।पुत्र पुत्रियों की इच्छाओं का सम्मान भी होना चाहिये।

53 वृद्धावस्था आज के परिप्रेक्ष्य में

प्रस्तावनाः

सबसे निकृष्ट घृणा अपने संबंधी की होती है।

टेसीटस

कहा जाता है कि जडों को पानी दो तो वृक्ष सदा हरा भरा पुष्पित पल्लवित होता रहेगा,फलों से लदा रहेगा। हमारे देश में जहाँ माता पिता को भगवान का दर्जा दिया गया है, कहा जाता है कि जब देवताओं में इस बात के लिये प्रतिस्पर्धा रखी गई कि जो पृथ्वी की परिक्रमा सर्वप्रथम लगा कर आएगा उसी की सर्वप्रथम पूजा की जाएगी तो सभी देवता अपने अपने वाहनो पर सवार होकर दौड चले तब गणेश जी ाांति से बैठे रहे और थोडी देर में उठ कर उन्होने माता पिता की परिक्रमा कर ली।ब्रम्हा जी ने उन्हे ही विजयी घोषित कर दिया और आज भी कोई भी कार्य गणेश पूजा से ही आरंभ होता है,पढाई हो ,घर बनाने के लिये भूमि पूजा हो अथवा गृह प्रवेश हो ,विवाह हो ,यज्ञोपवित हो सभी कार्य गणेश पूजा से ही आरंभ

होते हैं।यह कथा सिद्ध करती है कि माता पिता से बढ कर कुछ नही।

अज्ञानियों के लिये बुढापा पतझड है ,ज्ञानियों के लिये फसल कटाई का मौसम है।

ऐसे देश में वृद्धाश्रम का होना ही एक आश्चर्य की बात है किन्तु वृद्धाश्रम हैं और इनकी संख्या भी दिनो दिन बढती जा रही है।ऐसा नही है कि वहाँ लावारिस गरीब वृद्ध वद्धाएं रहतें हों ,वहाँ मध्य वर्ग ,उच्च मध्य वर्ग और उच्च वर्ग के माता पिता ही अधिसंख्य रूप में रहते हैं। वे कौन हैं ? वो पुत्र पुत्रियाँ जिनके माता पिता इस तरह उपेक्षित होकर वृद्धाश्रम में रहने को बाध्य हैं।

विषयवस्तुः

अहं एक चट्टान है जो स्वयं अपने भीतर से किसी को जन्म नही देती ,तथा जितना स्थान घेर लेती है,वहाँ सृष्टि या जन्म संभव नही हुआ करता।

नरेश मेहता

देश संयुक्त परिवार हुआ करते थे।माता पिता घर के मुखिया होते थे। यदि दादा दादी जीवित हैं तो अधिकांश निर्णय उनसे पूछ कर किये जाते थे।घर की सम्पत्ति इकठ्ठी ही हुआ करती थी।किस मद पर कितना खर्च होगा ,त्योहार में सबके लिये क्या उपहार खरीदे जाएंगे,विवाह में कितना खर्च होगा ,मकान बनाने मरम्मत कराने कोई नई वस्तु खरीदने के निर्णय बुजुर्ग लोग ही करते थे ,किन्तु पिछले चालीस वर्षों से संयुक्त परिवारों के टूटने का जो कम आरंभ हुआ वह आज भी निरंतर चल रहा है और संयुक्त परिवार समाप्तप्राय हो चुके हैं। अपवाद स्वरूप कुछ ही संयुक्त परिवार जीवित हैं।देश ये नौकरी, ट्रांसफर इत्यादि के कारण से टूटना शुरू हुए आज भी अधिकांश इसी बहाने से अलग रहते हैं।विवाह के बाद पुत्र और

पुत्रवधु का अपना पारिवारिक जीवन आरंभ होता है,उनकी अपनी समस्याएं हैं, कभी अवास बदलना कभी ट्रांसफर, कभी बच्चों के शिक्षण की समस्याएं ऐसे में उनके लिये संभव नही होता कि वे अपने माता पिता का ध्यान रख सकें। ऐसी स्थिति मे माता पिता अकेले ही घर में नौकर के भरोसे रह जाते हैं।

कुछ बच्चे माता पिता के घर में तमाम सुविधाएं जुटा देते हैं और यही नौकर अपराधियों के लालच का कारण बनते हैं और वृद्ध माता पिता की मृत्यु का कारण भी।असहाय वृद्धों की अशक्त काया शक्तिशाली काल का सामना नही कर पाती और वे क्रूर हत्यारों का शिकार बन जाते हैं।पिछले तीस वर्षों में इन आँकडों में इतनी वृद्धि हुई है कि हर व्यक्ति सोचने पर मजबूर हो गया है।अधिकांशतः जो लोग विदेशों में जा बसते हैं वे अपने माता पिता को वृद्धाश्रम में रखना श्रेयस्कर समझते हैं कि वहाँ उनकी उनके स्वास्थ्य की ठीक से देखभाल होगी। माता पिता को वहाँ भर्ती कराकर वे निश्चिंत हो जाते हैं। बूढे माता पिता अगर साथ हैं तो शायद इस एकांत को बाँट लें ,यदि दोनो में एक साथ छोड चुका है तो दूसरे के लिये मृत्यु तक एक वनवास काटना ही बाध्यता है। बूढी आँखों की टिमटिमाती रोशनी या तो पुत्र या पुत्रों के पत्रों की प्रतीक्षा करती हैं या वृद्धाश्रम के मुख्य द्वार पर उनके आगमन के स्वप्न देखतीं हैं। वे कभी उनसे मिलने आते हैं या नही, कभी उन्हे घर ले जाते हैं या नही यह बात शायद अलग अलग पुत्रों के नैतिक स्तर पर निर्भर करती है। वृद्धाश्रम में रहने वाले सभी वृद्धों के पास ऐसी ही दर्द भरी कहानियाँ होतीं हैं जिन्हे वे एक दूसरे से अधिक दिनो तक छुपा नही पाते हैं। उनकी कितनी देखभाल होती है ? स्वास्थ्य सुविधाएं मिल पातीं हैं या नही ये सभी बातें इस बात पर निर्भर करतीं हैं कि क्या वृद्धाश्रम में भी किसी तरह के भ्रष्टाचार हो रहे हैं?

कुछ बेटे अपनी पत्नि और माता के बीच रोज बा रोज होने वाली चिक चिक से दुःखी होकर अपनी माता को वृद्धाश्रम छोड आते हैं और जो साथ में रहते हैं उनमें भी इतनी कटुता होती है कि दोनो पक्षों का जीना दूभर हो जाता है।माता पिता समय की गति को देखते हुए सामंजस्य स्थापित करने की पूरी पूरी कोशिश करते हैं,वे अपने हिस्से का काम करते ,चुपचाप भोजन करके अपने कमरे में कैद जिंदगी बिताते हैं।न तो उनकी किसी सलाह या सुझाव की किसी को आवश्यकता होती है और न ही अपेक्षा। उनके निर्णय भी उनके पुत्र और पुत्रवधु ही करते हैं। यदि वृद्ध दम्पति की कोई विवाहिता बेटी भी है तो वह कभी वार त्योहार पर आकर हालचाल पूछ जाती है।

वे माता पिता जो बडे कष्टों से अपने बच्चों को पाल पोस कर बडा करते हैं कि बेटा बडा होकर उनके बुढापे की लाठी बनेगा ,वे मंद होती आँखों की रोशानी से हाथ में लाठी लिये ठोकरें खाते फिरते हैं।

इन सारी स्थितियों के लिये पुत्र पुत्रवधु भी दोषी हो सकते हैं और माता पिता भी।माता पिता के अंदर जो अधिकार जमाने की प्रवृति होती है उससे उसे उन्हे छुटकारा पाना होगा।अपने निर्णय थोपने की आदत को बदलना होगा ।बेमतलब ही बेटे बहू के मामलों में टांग अडाने की आदत को छोडना होगा।उन्हे समझना होगा कि बेटे का अपना परिवार है और उसकी जिम्मेदारियाँ हैं उन्हे बेटे की समस्याओं को और नही बढाना चाहिये।

उपसंहारः हमारे देश में श्रवण कुमार जैसे बेटे हुए जिन्होने अपने कंधे पर काँवर में माता पिता को बिठाकर सारे तीर्थ कराए,राम जैसे पुत्र हुए जिन्होने पिता और माता की आज्ञा पर सहर्ष चौदह वर्षों का वनवासी जीवन जिया।हम आशा करते हैं कि शायद नई पीढी इस सामंजस्य को अच्छी तरह बना कर चलेगी।वृद्धों की जो समस्याएं हैं उनपर सरकार ध्यान देगी।उनकी सुरक्षा के उपाय किये जाएंगे। वृद्ध कोई टूटा फूटा

फर्नीचर नही हैं कि उन्हे कबाड में फेंक दिया जाय। उनके साथ प्रत्येक पुत्र पुत्रियों की ढेरों मधुर स्मृतियाँ जुडी होतीं हैं।पुत्री अपने माता पिता को कभी नही भूलती और भरसक उनकी सहायता करती है अवसर मिलने पर सेवा भी करती है फिर वह पुत्रवधु के रूप में अपने पति के माता पिता की देखभाल क्यों नही कर पाती है?

54 बढते अपराध

सांप और मनुष्य में क्या फर्क है ?देखने में सांप पेट के बल चलता है और मनुष्य पैरों के बल चलता है परन्तु यह दिखावा है जो मनुष्य पेट के बल चलता है उसका क्या ?

महात्मा गांधी

प्रस्तावनाः

प्रत्येक देश में ,उसके इतिहास में अच्छाई के साथ बुराई का होना भी पाया जाता है किन्तु कहीं इस पर सख्त से सख्त कार्यवाही करके इनकी संख्या में कमी करने की कोशिश बडी ही ईमानदारी और निष्ठा के साथ की जाती है जबकि हमारे देश मे ऐसा नही हो पाता।

एक समय था जब मामूली से मिट्टी के घरों में सेंध लगा कर चोरियाँ होतीं थीं और आज अपराध का ग्राफ जिस ऊँचाई तक जा पहुँचा है वह सम्पूर्ण समाज के लिये शर्मनाक हैं।ऐसी किवदंतियाँ भी प्रचलित हैं कि मरूस्थल में जरायम पेशा लोग बहुतायत में होते थे वे पूरे के पूरे यात्रा करते काफिलों को खत्म कर दिया करते और उन्हे रेत में दफना कर उनका सारा माल असबाब लूट लिया करते थे।

ठगी का इतिहास भी बहुत पुराना है।ठग विघा पर कई कहानीकारों की कहानियाँ धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ करती थीं।डाकू भी बहुत पुराने समय से देश के बीहडों में अपना इतिहास समेटे हुए हैं। नटवरलाल जैसे ठग और

वीरप्पन जैसे चंदन तस्कर ठगों के नवीनतम एवं प्रसिद्ध संस्करण हैं।वैसे ये कई रूपों में हमारे समाज में बिखरे हुए हैं।

विषयवस्तुः

जब मनुष्य पशु हो जाता है तो उसका व्यवहार पशु से भी बदतर हो जाता है।

रविन्द्रनाथ टैगोर

वैसे तो समाज में आज अपराध इतना घुल मिल गया है कि उसे अलग करना नामुमकिन सा लगता है।

टेक्स चोरीः जो लोग व्यापारी हैं वे टेक्स जमा करने के रजिस्टर अलग बनाकर रखते हैं जिसमें कम बिकी दर्शाई जाती है और कम टेक्स जमा किया जाता है।इसी प्रकार लोग अपनी इनकम भी बेनामी सम्पत्तियाँ खरीदने लॉकर में रूपया और जेवरात छुपा कर रखने में करते हैं।लोग भी बिना बिल का सामान खरीद कर खुश हो जाते हैं ताकि टेक्स न चुकाना पडे। सरकार ने इन्हे रोकने के प्रयास में ट़।ण्ज़्भी लागू किया है इसका थोडा बहुत असर दिखाई पड रहा है।

भ्रष्टाचारः

चपरासी से लेकर कई बडे से बडे अफसर एवं कई मंत्री भी इसमें लिप्त हैं।कोई फाईल बिना उस पर वजन रखे आगे नही बढती, कोई भी सरकारी काम बिना घूस दिये कहीं भी नही हो पाता।धीरे धीरे लोग इसे स्वीकार करते जा रहे हैं। हमारे देश में घूस का इतिहास बहुत पुराना है।चाणक्य ने अपनी पुस्तक में इसे उत्कोच नाम से उल्लेखित किया है अब लोग इसे सुविधा शुल्क कहने लगे हैं।सरकारी संस्थानों की तरह प्रायवेट स्कूलों ने भी इसे भारी रकम के रूप में डोनेशन के नाम पर लोगों की जेब से निकाला है उन्होने स्कूलों को विशुद्ध

व्यापारिक केन्द्र बना दिया है जहाँ नई नई चीजों के नाम पर अलग अलग रूपये वसूले जाते हैं।

व्यापारः अब व्यापार भी शुद्ध व्यापार नही रहा लोग मिलावटी सामान बेचते हैं।डिटर्जेंट से दूध और मावा पनीर घी मिठाईयाँ बना कर बेच लेते हैं।किसी मशहूर ब्रांड की हूबहू नकल बना कर बेच लेते हैं। कई बार इन नकली सामानों का घटियापन खुल कर सामने आ जाता है,छापे पडते हैं और फिर क्या होता है?

पुलिसः फिर पुलिस या नियंत्रण विभाग उस नकली कंपनी से ढेरों पैसा वसूल कर लेती है और वही माल वापस मार्केट में पहुँच जाता है। पुलिस तो रेडलाईट पर वसूली से लेकर बडे बडे दहेज के ,हत्याओं के ,बलात्कार के मामलों में भी घूस खाकर अपराधियों को छोड देती है। हमारे देश में पुलिस की छवि एक भ्रष्ट एवं अकर्मण्य विभाग की है।उसकी चोरों से सांठ गांठ होती है और वह अधिकांश अपराधियों से अपना हिस्सा लेती है।

डकैतीः घरों की घंटी बजाकर अकेली महिलाओं और बच्चों को बंधक बना कर लूट की घटनाएं बहुत आम हैं। सडक पर कारों को ,मोटर साईकिल को रोकने ,उन्हे लूटने की घटनाएं पिछले दिनों बहुतायत में हुई। बेंकों में सभी ग्राहकों और कर्मियों को बंधक बना कर लाखों रूपयों की लूट की भी कई घटनाएं हो चुकीं हैं।

अपहरणः

किसी सूनी सडक पर कार रोक कर किसी प्रसिद्ध धनी उद्योगपति के बच्चे का अपहरण और फिर फिरौती की मांग ,यह अपराध भी काफी संख्या में होते हैं।

बलात्कारः

बलात्कार की जितनी घटनाएं प्रकाश में आतीं हैं वे असली आँकडों का केवल 10 प्रतिशत होंगीं।चलती कार में बलात्कार ,विदेशी राजनायिक महिला का बलात्कार ,जर्मन महिला का बलात्कार, पुष्कर जैसे तीर्थ स्थल में विदेशी महिलाओं का बलात्कार की दो घटनाओं ने हमारे देश को शर्मसार कर दिया है।पिछले वर्षों में जब पुलिस कर्मी द्वारा बलात्कार किया गया तो हर सभ्य नागरिक के मन में बस एक ही प्रश्न उठा यदि रक्षक ही भक्षक बन जाए तो जनता का क्या होगा?

आतंकवादः पिछले बीस वर्षों में आतंकवाद के राक्षस ने देश में अपने खूनी पंजे गडा दिये हैं।जब तब जहाँ तहाँ ब्लास्ट हो जाते हैं और देश का कानून आज तक इस अपराध में लिप्त एवं सजा के लायक अपराधी को फांसी भी न दे पाया। घूस लेने में व्यस्त पुलिस आतंकवादियों को ढूँढ भी नही पाती यदि ढूँढ भी लेती है तो पूरा नेटवर्क नही तोड पाती है और ये घटनाएं दिन प्रतिदिन घटने के स्थान पर बढती ही जा रहीं हैं।

उपसंहारः

क्या हम सभी किसी न किसी रूप में इन अपराधों में सम्मिलित नही हैं ?हम टेक्स बचाते हैं,हम घूस देकर अपना बिजली का मीटर लगवाते हैं,राशन कार्ड बनवाते हैं। घर बनवाते हुए हम जल विभाग को बिजली विभाग को और पुलिस विभाग को भी घूस देते हैं।कौन है जो इन अपराधों को रोक पाएगा ? हमारे नेताओं के लिये अपनी कुर्सी और उसे बचाये रखने के लिये जोड तोड करते रहने से अधिक कुछ भी महत्वपूर्ण नही है।उनके लिये सारी जनता उनका वोट बेंक है जिसे अपने लाभ के लिये ,उन्होने जातियों ,संप्रदायों के बीच दुर्भावनाएं बढा कर बाँट रखा है।जब तक लोग बँटे रहेंगे उन्हे वोट मिलते रहेंगे उन्हे अपने हिस्से के वोटों की चिंता रहती है बस। वे इनके बीच की खाईयों को चौडा और गहरा करने में लगे रहते हैं।आप कभी किसी नेता के भाषण में प्रेम और सौहार्द्र की बातें नही सुनेंगे।यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि

हमारे देश के नेताओं के नाम अलग अलग किस्म के घोटालों से हमेशा जुडते रहते हैं,हमारे देश में समय समय पर इतने घोटाले होते हैं, कभी चारा घोटाला कभी चीनी घोटाला, फौजी वर्दियों का घोटाला, बोफोर्स तोप का घोटाला इत्यादि इत्यादि किन्तु आज तक किसी घोटाले में लिप्त नेता को इस अपराध की कोई सजा नही मिल पाई है।

55 राजनीति ...अवनति के पथ पर

प्रस्तावनाः

यह बात कोई महत्व नही रखती कि आदमी मरता कैसे है लेकिन यह कि वह जीता कैसे है।

जॉनसन

जंगल का कानून होता है कि जो सर्वाधिक शक्तिशाली है वही जंगल का राजा है।मानव के इतिहास के आरंभिक काल में ऐसा ही हुआ होगा,और अलग अलग देशों राष्ट्रों में राजतंत्र का उदय हुआ होगा।द्वितीय विश्व युद्ध के पाश्चात और अंग्रेजों से देश को आजाद कराने के बाद देश सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में उभरा। भीम राव अंबेडकर के नैतृत्व में संविधान समिति का गठन किया गया और हमारे लिये संविधान निर्मित किया गया जिसमें हमें कुछ मौलिक अधिकार दिये गए, जिसमें मतदान का अधिकार प्रमुख था, देश को सभी धर्मों संप्रदायों, जातियों भाषाओं वाला सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न सहिष्णु देश घोषित किया गया। कानून की धाराएं बनाई गईं। न्याय पालिका को स्वतंत्र रखा गया।लोक सभा और राज्य सभा केन्द्रीय स्तर पर और विधान सभा तथा विधान परिषद राज्य स्तर पर सदन बनाए गए। तीनो सेनाओं का प्रमुख राष्ट्रपति को बनाया गया और राष्ट्रपति सहित सभी चुनावों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा या जन प्रतिनिधियों द्वारा किया जाना तय किया गया।

विषयवस्तुः

देश की आजादी के बाद सभी देशवासियों को आशाएं थीं कि अब हमारी सभी समस्याओं का अंत हो जाएगा और हमें अपने द्वारा चुने गए लोगों की स्वच्छ निष्पक्ष और पारदर्शी सरकार मिलेगी।

पंडित जवाहर लाल नेहरू हमारे प्रथम प्रधान मंत्री थे और उनके काल में भी एक भ्रष्टाचार उजागर हुआ था जिसे शायद देश ने गंभीरता से नही लिया था और जनता ने उस ओर ध्यान नही दिया था।

जहाँ आत्मा को छोड कर शरीर को सबकुछ समझना शुरू किया वहीं आपकी हार हुई।

स्वामी रामकृष्ण परमहँस

और आज कहीं आत्मा नाम की वस्तु दिखाई नही पडती ।स्वअस्तित्व ही सब कुछ है,मेरा घर,,मेरी जायदाद,मेरा लॉकर, उसमें छुपी मेरी अकूत सम्पत्ति,मेरे बच्चे,मेरी कुर्सी ,मेरी सत्ता,कोई नेता नही सोचता मेरी जनता हॅं ! वह जनता को अपना वोट बेंक अवश्य ही मानता है।धर्म एवं सम्प्रदाय के बीच बनी महीन सी रेखा को उसने चौडी खाईयों में तब्दिल कर दिया है ताकि वह उनकी भावनाओं को भडका कर ,उनके सच्चे हितैषी होने का आडंबर करके उनका वोट हॅंसिल कर सके।

हमारे देश में भ्रष्टाचार की जड नीचे से नही ऊपर से नीचे की ओर बढी है ।यह अमर बेल की तरह भारत रूपी वृक्ष के ऊपर छा गई है और इसके सारे पोषक तत्व को चूस चूस कर स्वयं को मजबूत बनाती जा रही है।

नेता उसे कहा जाता है जो आपका अग्रणी हो जो आपका नैतृत्व कर सके ,हमारे देश में आज कोई भी नेता ऐसा नही है।अधिकांश के कोई मूल्य नही हैं, वे नंबर एक के बेईमान

भ्रष्ट है। उन्होने धन कमाने के ढेरों गुप्त तरीके ढूँढ रखे हैं।किसी को ठेका दिलाना ,किसी को लाइसेंस देना ,पेट्रोल पंप,गैस ऐजेंसी दिलवाना, रेल्वे के पुल बनाने के ठेके इत्यादि। विदेशी कंपनियों से कमीशन खाना ,बोफोर्स तथा अन्य रक्षा मंत्रालय के घोटाले इसी श्रेणी में आते हैं। देश का गेहूँ गोदामों मे सड जाता है और दूसरे देश से अत्यंत घटिया किस्म का गेहूँ खरीद लिया जाता है।कई बार खरीद कम होती है ज्यादा दिखाई जाती है।कई बार खरीद इतनी महंगी होती है कि आश्चर्य से आँखें फटी की फटी रह जाती हैं। इसमें ऊपर से नीचे तक के लोग मिले होते हैं और देश के धन को इस प्रकार अपने अपने खातों में जमा कर लिया जाता है। पिछले कई वर्षों से सैकडों घोटालों का पर्दाफाश हुआ चीनी घोटाला ,कोलतार घोटाला इत्यादि कई पत्रकारों ने स्टिंग ऑपरेशन किये लेकिन नतीजा वही ढाक के तीन पात । मुद्दई भी भ्रष्ट और गवाह भी भ्रष्ट तो मुकदमा किस प्रकार चल पाएगा। यही कारण है कि सारे नेताओं के खिलाफ किये गए केस बीच राह में ही दम तोड देते हैं। हमने किसी को सजा पाते नही देखा।यदि सजा के शिकार होते हैं तो इस कतार में नीची श्रेणी वाले। नेता के ऊपर इस बदनामी का कोई प्रभाव नही पडता वह अगले चुनाव में ताल ठोक कर फिर खडा हो जाता है।आपके बीच वही वैमनस्य के जहरीले बीज बोता है,आप मूर्ख की तरह फिर से उसी को वोट देते हैं और वह कुटील सी हँसी हँसता हुआ फिर से पाँच वर्षों के लिये फिर से सत्तासीन हो जाता है।

उसे जितना रूपया अपने क्षेत्र के विकास के लिये मिलता है उसका वह मात्र दस प्रतिशत ही खर्च कर पाता है क्यों कि यह पैसा हिसाब किताब देकर खर्च करना होता है अतः उसे इस पैसे को खर्च करने में,मेहनत करने में,और जनता के विकास में कोई रूचि नही होती है।बिजली घंटों घंटों तक ना रहे कोई परवाह नही ,दूषित और मटमैला पेय जल पीकर जनता मरे कोई परवाह नही,रेल दुर्घटनाओं में बॉम्ब ब्लास्ट में सैकडों

लोग मरें उसके चेहरे पर दुःख की शिकन तक नही दिखती। वह मशीनी अंदाज में संवेदना प्रकट करता है,मरने वालों के परिवारों को और घायलों को कितने कितने रूपयों की राशि बतौर सहायता सरकार प्रदान करेगी इसकी घोशणा करता है और चल देता है।

उपसंहारः

नेता स्वयं बख्तरबंद गाडी में चलता है, ढेरों नौकर चाकरों और सुरक्षाकर्मियों के अलावा जनता के लिये बनी पुलिस की फौज के बीच सुरक्षित चलता है।वह ट्रेन में मुफ्त सफर करता है,हवाई जहाज की भी उसे कई कई कीलोमीटर की यात्राओं की मुफ्त सुविधा मिली होती है,टेलीफोन और बिजली की इतनी ज्यादा सीमा इन नेताओं ने स्वयं के लिये तय कर रखी है कि उनके अलावा उनके कर्मी भी घंटों घंटों तक अपने मित्रों से घरवालों से एस.टी.डी. पर बातें करते रहते हैं।कहने का तात्पर्य यह कि पॉंच वर्षों तक वह राजाओं की तरह रहता है और उस जनता को पलट कर भी नही देखता है जिसने उसे कुर्सी तक पहुँचाया है।इससे तो प्राचीन काल के रियासतों के छोटे छोटे राजा ही अच्छे रहे होंगे वे लगान अवश्य लेते थे लेकिन कुछ अपवादों को छोड दे ंतो वे सभी प्रजा वत्सल थे और वे प्रजा के दुःखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करते थे।

56 जल संचय ...एक आवश्यकता

प्रस्तावनाः

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून,

पानी गए न ऊबरे,मोती,मानस,चून।।

वर्षों देश कहे रहीम कवि के ये शब्द कितने सत्य हैं।वे कहते हैं पानी को बचा कर रखो क्यों कि पानी के बिना सब कुछ सूना है। पानी के बिना न मोती में आभा रहती है, न मनुष्य

जीवित रह सकता है,और न ही चून अर्थात आटा गूंधा जा सकता है।

यह पानी की महत्व की सत्यता का एक शत प्रतिशत सत्य कथन है।हाल ही के सर्वेक्षणों से यह बात सत्य सिद्ध हो चुकी है कि वनों के कटाव और बेहिसाब बढती जनसंख्या और उसके लिये बने आवासों से पृथ्वी का धरातल दिन प्रतिदिन गर्म होता जा रहा है और भूगर्भ में जो पानी है उसका स्तर दिनो दिन नीचे होता जा रहा है। वैज्ञानिकों के लिये यह गहन चिंता का विशय है और वे दिनरात इस विषय पर शोध कर रहे हैं। पानी मानव जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। शरीर के पंचतत्वों में भी पानी को एक माना गया है।मानव की सारी आवश्यकताएं भी पानी से जुडी होतीं हैं। पानी प्रथम तत्व है,एवं आगे सभी कुछ श्रंखलाबद्ध है।

विषय वस्तुः

हमारी इच्छाएं हमारी अपनी कैसे हैं,यह हमको विदित नही है।हमारी इच्छाएं तो तभी हमारी हैं,जब हम उनको आपकी इच्छा का रूप दे सकें।

टेनीसन

उपरोक्त कथन यह प्रेरणा देता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य में जनकल्याण के तत्व को सर्वोपरि रखना चाहिये।सिर्फ स्वार्थी बनकर अपने बारे में सोचने अपने लिये प्रयास करने वाले तो पशु भी होते हैं। ईश्वर ने हमें बुद्धि दी है,हाथ पैर दिये हैं, कार्यक्षमता भी दी है, भावनाएं दी हैं। जिस जननी की गोद में जन्म लेकर हम पलते बढते हैं ,फलते फूलते हैं, हमारा अंत भी धरती की गोद में ही होता है, क्या हम हमारी प्यारी धरती के लिये कुछ नही कर सकते हैं? उसकी सुरक्षा के लिये कुछ नही कर सकते हैं? हम जो कुछ भी करेंगे वह हमारे लिये और हमारे आने वाले बच्चों के लिये लाभकारी होगा।

सर्व प्रथम तो हमें भरसक प्रयास करना चाहिये कि लोग अज्ञान और अशिक्षा के अंधकार से बाहर निकलें ताकि वे स्वयं ही जनसंख्या की बढती हुई तदाद पर अंकुश लगा सकें।प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति को एक अशिक्षित को शिक्षित करना चाहिये। इसका तात्पर्य यह नही कि उसे बी.ए. एम.ए. कराना है। हाँ! मौलिक जानकारियाँ ,जो स्वयं उसके समाज राष्ट्र और धरती से जुडी है इनकी सुरक्षा और प्रगति से जुडी है हमें उसे देनी चाहिये।

हमें वनों के कटाव को रोकना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को जिसका विवाह हो रहा हो यह प्रण करना चाहिये कि वह एक से अधिक संतान उत्पन्न नही करेगा और अपने जीवन काल में कम से कम पाँच वृक्ष अवश्य ही लगाएगा। नदियों के किनारे हमें ढेरों वृक्ष लगाने होंगे ताकि प्रत्येक वर्ष अलग अलग स्थानों पर आने वाली बाढों को हम रोक सकें और ये नदियों के किनारे वाले वृक्ष मजबूत तटबंध बन कर जल संचय कर रख सकें।

हमारे देश में वर्षा ऋतु का सारा जल बह जाता है हाल ही में वॉटर हारवेस्टिंग की नई तकनीक इजाद हुई है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर के चारों ओर इस पद्धति से जल संचय की व्यवस्था करनी होगी ताकि वर्षा ऋतु में हम जल संचय कर लें तथा यही जल ग्रीष्म ऋतु में हमारे और हमारे पौधों के भी काम आ सके।

हमारे देश में कई प्रदेशों में ऐसे ऐसे स्थान हैं जहाँ लोगों को ,विषेश रूप से स्त्रियों को मीलों दूर से जल लेकर आना होता है।वे जल के मूल्य को समझतीं हैं क्यों कि अत्यंत कष्ट पाकर वे घर के लिये जल लेकर आतीं हैं। उनके घर के लोग किफायत से पानी खर्च करते हैं किन्तु हम शहरों में आमतौर पर यह द्रश्य देखते हैं कि वॉटर पंप की मोटर चली हुई है, पानी बहता जा रहा है, किसी को यह देखने की फुर्सत नही है, न ही इतनी जागरूकता है कि मोटर बंद कर दें।इसी प्रकार

रेल्वे स्टेशन तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लोग नलों को खुला छोड देते हैं।

हमारे देश के लोगों की यह बुरी आदत आम है कि वह सिर्फ स्वयं के बारे में सोचते हैं। उसका घर साफ है, कूडा उठा कर घर के बाहर गली में फेंक दिया उसे इस बात से क्या मतलब है कि गली साफ है या नही। घर में पानी किफायत से उपयोग करने वाले भी सार्वजनिक स्थानों पर बेपरवाही से अथवा जानबूझ कर नल खुले छोड देते हैं जो उचित नही है।

आपको ब्रश करना है तो ब्रश करलें बाद में नल चलाएं ।लेकिन ऐसा नही होता नल चला दिया जाता है ब्रश करते करते चाहे न्यूज पेपर ही पूरा पढ लें। आज कल कई शहरों और उसके कई इलाकों में सरकार सीमित समय के लिये ही जल सप्लाय करने लगी है क्यों कि उसके पास कोई उपाय ही नही है इस दुरूपयोग को रोकने के लिये।

सरकार बडे बडे बेनर्स लगवाती है, पोस्टर्स लगवाती है, जिसमें लिखा होता है, जल ही जीवन है, इसकी एक एक बूंद बचाईये। किन्तु इसे देख पढ कर कितने लोग प्रभावित होते हैं? कितने अपने आप को सुधारते हैं और जलसंरक्षण करते हैं।

उपसंहारः

जब कभी मनुष्य को दुःख होता है अपने ही भ्रम के कारण होता है, यदि मन में भ्रम न रहे तो किसी का भय न रहे।

विराटा की प[ ]नी के सौजन्य से..... वृंदावनलाल वर्मा द्वारा

यह सत्य है कि मानव अपने दुःखों का कारण स्वयं ही है।उसने कभी धरती का ध्यान नही किया। उसने बेहिसाब आबादी बढाई,उसने बेहिसाब वन काट दिये,उसने फीज और ए.

सी. जैसे उपकरण बनाए जिसकी दुष्प्रभाव डालने वाली गैस ने पृथ्वी की सुरक्षा परत ओजोन नामक आवरण में छिद्र कर दिया जो दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है,और अब वह परेशान है कि धरती का तापमान क्यों बढ रहा है? हिमालय से ग्लेशियर्स क्यों पिघल रहे हैं? भूकंप क्यों आ रहे हैं ? जमीन क्यों धसक रही है ?हिमस्खलन क्यों हो रहे हैं ?पिछले दिनो देश के कई कई स्थानों पर विभिन्न हिस्सों में कई कई किलोमीटर लंबी एवं कई फीट चौडी धरती क्यों फटी ?इतनी बाढ क्यों आती है ? ये सभी प्रश्न बहुत ही कठिन हैं और जल्दि से मानव को इनके उपाय ढूँढ लेने होंगे।यह पृथ्वी हम सभी की है और इसीलिये हम सभी का कर्तव्य है कि जितना और जो थोडा सा हम कर सकते हैं हम अवश्य करें।

57 वन्य जीवन और पशुसंरक्षण

प्रस्तावनाः

पुरानी रोशनी और नई रोशनी में फर्क इतना ही है कि इसे कश्ती नही मिलती उसे साहिल नही मिलता।

अज्ञात

उपरोक्त कथन कितना सत्य है। मानव और पशु का संबंध सृष्टि के आरंभिक काल से है। वैज्ञानिकों का कथन है कि धरती देश सूर्य का ही एक हिस्सा थी एवं इससे किसी भौगोलिक कारण से करोडों वर्षों देश अलग हुई। धीरे धीरे इसकी ऊपरी सतह ठंडी होती चली गई और उस पर विभिन्न पशु ,पक्षी,कीट,पतंगे,जलचर,के साथ मानव का भी उद्भव हुआ।मानव ही ऐसा प्राणी है इसे प्रभु ने बुद्धि और कार्यक्षमता के साथ भावनाएं भी दीं हैं। अविर्भाव के आरंभिक काल में मानव भी पशुवत ही था और पत्थर के औजार बनाकर पशुओं का आखेट किया करता था और अपना पेट भरता था और पत्थर की कंदराओं में रहता था, उसका कोई स्थायी आवास भी नही था।वह शिकार के पीछे पीछे भागते भागते जहाँ जा

पहुँचता वहीं रह जाता था। वह पेड की छाल और पशुओं की खाल पहन कर अपना शरीर ढकता था।वह पशुओं का कच्चा मांस ही खाता था। उस काल को पाषाण काल कहा जाता है।

विषयवस्तुः

विपत्ति सत्य की और जाने की प्रथम सडक है।

बायरन

मानव ने ज्वालामुखी के लावे में पके हुए मांस का स्वाद जब चखा तो उसे वह बडा स्वादिष्ट लगा और पत्थर पर पत्थर रगड कर उसने आग उत्पन्न की।जब उसने बछडों को मादा पशु का दूध पीते देखा तो उसने भी उस दूध को चखा और उसके मन में पशुपालन की इच्छा जागृत हुई और वह पशुओं को पालने लगा।जब उसे स्वयमेव उत्पन्न अनाज के दाने दिखे तो उसने उन्हे चख कर देखा और उसे वे स्वादिष्ट लगे उसने बचे हुए दानों को जमीन में दबा दिया।उसे आश्चर्य हुआ कि उस स्थान पर फिर बालियाँ उग आई हैं और उनमें ढेरों दाने लगे हुए थे। इस प्रकार स्थायी रूप से कहीं रहने ,भूमि पर कृषि करने और दुधारू पशुओं का पालन करने का सभ्य मानव जीवन आरंभ हुआ।किन्तु मांस खाने की प्रवृति और लालच की भावना ने उसे पशुओं के प्रति सदैव ही संवेदनाहीन बनाए रखा। उसने बैलों ,घोडों ,गधों को खेती करने और सवारी के काम में लाने का कार्य शुरू किया। भेडों को वह ऊन के लिये पालता रहा। बर्फीले प्रदेशों में रेनडीयर, और याक को उसने इस काम के लिये उपयोग किया। उपयोग समाप्त होते ही वह उन्हे मार कर खाने लगा।

विश्व के विभिन्न देशों में जो पशु मार कर खाए जाते हैं उनके बारे में जान कर मन वितृष्णा से भर उठता है।बर्फीले अंटार्कटिका में लोग घोडों का मांस खाते हैं।अफ्रीकी देशों में कहा जाता है कि पेडों पर एक चिडिया भी नही दिखाई देती क्यों कि उन सभी को मानव ने उदरस्थ कर लिया है। जापान

में एक पक्षी का घोंसला ही खाया जाता है और वह काफी महंगा बिकता है क्यों कि चिडिया इसे अपनी लार से बनाती है।हाल ही के सर्वेक्षण बताते हैं कि अब इन चिडियों की संख्या ही बहुत कम हो गई है।

ढेरों मछलियाँ, केकडे, कछुए, यहाँतक कि ऑक्टोपस जैसे समुद्री जीव भी मानव की जीभ का शिकार हो गए हैं। धार्मिक त्योहारों पर दी जाने वाली पशु बलि समस्त देशों में इतनी बडी तादाद में होती है कि इसे सोच कर ही संवेदन शील व्यक्ति सिहर उठता है।

आज का सबसे भयावह चेहरा यह है कि आज ट्रेक्टर से खेती होती है और बैलों की आवश्यकता नही रह गई है। तो गाय को यदि बछडा पैदा हुआ है तो उसे दूध न पिला कर भूखा रख रख कर मार दिया जाता है। मानव अब दानव बन गया है।

पिछले कई वर्षों में देश में वन्य पशुओं की संख्या में भी आश्चर्यजनक रूप से कमी आई है।पशु संरक्षण विभाग ने प्रोजक्ट टायगर जैसे प्रोजेक्ट चलाए हैं लेकिन इसका विषेश प्रभाव पडता नही दिखता।ये दुष्ट शिकारी शेर चीतों का शिकार उनकी बहुमूल्य खाल के लिये हाथियों को शिकार उनके दाँतों के लिये करते हैं।ये इन सामानों की तस्करी करके करोडों रूपये कमाते हैं। इनके अलावा भी कई वन्य पशुओं को मार कर उनकी खाल बेचते हैं।कई पक्षियों को पिंजरों में बंद करके सजावट के सामान की तरह लोग रखते हैं।अर्थात इनकी खरीद बिकी भी छुप छुपा कर होती रहती है।

कई बार कछुओं को भारी तादाद में ले जाते हुए तस्कर पकडे गए हैं।वे उन्हे विदेश भेजने की तैयारी में थे। गायों से भरे ट्रक भी कई बार पकडे गए लेकिन जिन घटनाओं को हम जान पाते हैं वे शायद 1 प्रतिशत से भी कम होते होंगे क्यों

कि विभिन्न स्थानों पर विभिन्न स्तरों पर ये दुष्टता पूर्ण कार्य किये जाते हैं।

उपसंहारः

देश पशु संख्या मानव से दुगनी हुआ करती थी अब आधी से भी कम रह गई है। कई बहुमूल्य एवं अनमोल पशु पक्षी पृथ्वी से विलुप्त प्रजाति के रूप में उल्लेखित किये जाते हैं। नॉर्थ ईस्ट में कई पशुओं को उनके अत्यंत सुंदर सींगों के लिये मार दिया जाता है।

पृथ्वी पर जो कुछ भी था वह पृथ्वी के धरातल का संतुलन बनाए रखने के लिये था। नदियों के तट पर पेड थे तो बंधी मिट्टी बाढ को रोकती थी, पक्षी एक स्थान से दूसरे स्थान पर बीजों के प्रसार का कार्य करते थे। कीट पतंगे पराग कणों का प्रसार करते थे।वन और वन्यपशु का गहरा संबंध भी पृथ्वी के धरातल को ठंडा बनाए रखने के लिये था परन्तु मानव ने स्वयं के पैर पर कुल्हाडी मार कर सारी प्रकृति को नष्ट करने के प्रयास किये हैं।यदि उसने यह सब नही रोका तो वह दिन दूर नही जब पृथ्वी पर प्रलय आ जाएगा। प्रत्येक मनुष्य को इस बात को समझना होगा और जो कार्य वह पृथ्वी और उसके पर्यावरण को बचाने के लिये कर सकता है करना चाहिये।

58 पत्रकारिता कितनी सार्थक ?

प्रस्तावनाः

जितनी पराधीनता उतना दुःख ,जितनी स्वतंत्रता उतना सुख।।

मनु

हमारे आदिमानव मानव के जन्मदाता मनु का यह कथन कितना सार्थक है।प्रजातंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सरकार

अपने लिये चुनने का अधिकार है।उसे सरकार के कार्यकलापों के बारे में जानने का अधिकार है,उनकी आलोचना करने का भी अधिकार है,यदि वह ना सुधरे तो उसे बदल देने का भी अधिकार है।

भारतवर्ष ने लंबा गुलामी का दौर देखा। आरंभिक काल में शक, हूण इत्यादि के आकमण हुए,फिर गुलाम वंश का शासन हुआ जिसे सल्तनत काल के रूप में भी जाना जाता है। उसके बाद मुगल काल का शासन हुआ जो बाबर से बहादुर शाह जफर तक रहा। अंग्रेजों की पैठ जहॉंगीर के काल से ही आरंभ हो गई थी जब उन्होने व्यापार करने के लिये कलकत्ता में कोठी बनाने की आज्ञा प्राप्त कर ली थी। धीरे धीरे अंग्रेजों ने सारे देश में अपने पांव पसार लिये और हमे गुलाम बना लिया। 200 वर्षों के लंबें काल मे हम गुलाम थे और हम पर अंग्रेजों का शासन था।

विषयवस्तुः

प्रत्येक असत्य आचरण समाज के स्वास्थ्य पर एक सीधा आघात है।

इमर्सन

जब हम स्वतंत्र हुए तो भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में संविधान समिति बनी जिसने हमारे लिये संविधान बनाया। यह संविधान 26 जनवरी 1950 से लागू किया गया। इसमें हमें विभिन्न अधिकार मिले । हमें मतदान का अधिकार है।हम अपनी सरकार को स्वयं चुनते हैं। हमें कहीं भी रहने ,कोई भी कानून सम्मत कार्य करने, और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी गई।हम अपनी सरकार के किया कलापों की, समाज में होने वाली अनैतिकताओं की खुल कर आलोचना कर सकते हैं, अपने सुझाव दे सकते हैं। किसी संस्था के, व्यक्ति के अन्याय के विरोध में हडताल कर सकते हैं,आंदोलन कर सकते हैं। उन्हे अपना मांगपत्र देकर अपनी मांगों को मनवाने के

लिये कानून सम्मत तरीके से दबाव डाल सकते हैं। इन सभी अधिकारों के अलावा कुछ नीति निर्देशक तत्व भी संविधान में हैं जिसमें कहा गया है कि यदि हमें अधिकार मिले हैं तो हमारे कुछ कर्तव्य भी हैं क्यों कि अधिकार और कर्तव्य दोनो ही एक सिक्के के दो पहलू हैं।

इन सभी में सबसे महत्व पूर्ण है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।अपने संदेशों को लोगों तक पहुँचाने के लिये पहला समाचार पत्र हस्त लिखित था। बाद में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने केसरी नामक अखबार का संपादन किया।

हमारे इस विशाल देश में सभी भाषाओं में छपने वाले अखबारों की संख्या हजारों में एवं पढने वालों की संख्या लाखों में है।

दूरदर्शन और विभिन्न चॅनल्स के 24 घंटे समाचार प्रसारण के बाद भी अखबार पढने वालों की संख्या में कमी नही आई है और प्रिंटमिडिया ने काफी हद तक नीतिगत बातों का ध्यान रखा है। किन्तु टी.वी. पर जो समाचार दिखाए जाते हैं उनमें मुख्य रूप से सनसनी खेज तत्व को ही प्रसारित किया जाता है ताकि चॅनल्स की प्रतिस्पर्धा में टी.आर.पी. बढाई जा सके। वे झूठ नही दिखाते हैं किन्तु साधारण घटना को सनसनी खेज बना कर पेश करते हैं।

जब भी कोई बॉम्ब ब्लास्ट होता है हमें तुरंत ही ज्ञात हो जाता है। उसे पूरे दिन इस समाचार को सबसे अधिक स्थान दिया जाता है। घायल व्यक्तियों के साथ पत्रकार व टी.वी. केमरे अस्पतालों तक भी जा पहुँचते हैं।डॉक्टर के वक्तव्य, घायलों की स्थिति ,मृतकों की मृत्यु का कारण एवं घायलों तथा मृतकों की सही संख्या भी प्रसारित की जाती है। नेताओं के वक्तव्य एवं उनकी संवेदनहीनता की आलोचना भी की जाती है किन्तु दूसरे दिन वह समाचार मात्र एक लाईन का वक्तव्य बन कर सिमट जाता है। दूसरे दिन अथवा उसी दिन थोडी देर के बाद

मृतकों की संख्या कम बताना भी कई बार शुरू हो जाता है। यही बात मन में संशय उत्पन्न करती है। यह बात झूठ नही है कि वे निष्पक्ष नही होते।

प्रत्येक रातनैतिक पार्टी पत्रकारों को विशेष भोज देती है यह तो ज्ञातव्य है किन्तु कुछ उपहार एवं आर्थिक वजन भी देती है ऐसा आभास होता है। कोई स्टिंग ऑपरेशन होता है मंत्री महोदय टी.वी. पर घूस लेते हुए दिखलाई पडते हैं, संसद भवन में सांसद महोदय नोट लहराते हुए दिखलाई पडते हैं किन्तु उसका कोई फॉलो अप नही दिखाया जाता है। यह तो सत्य है कि यदि कोई दहेज हत्या हुई और जोर शोर से टी.वी. पर अभियुक्त के नाम पर सास ,ससुर पति इत्यादि दिखलाए जाते हैं फिर आगे क्या हुआ ? क्या वे गिरफ्तार हुए? क्या उनपर मुकदमा दायर हुआ ? जी नही ! आगे आप कुछ नही देख पाते क्यों कि आगे कुछ होता नही। आगे पैसा लेकर मामला रफा दफा हो जाता है। पुलिस भी और पत्रकार भी अपना अपना हिस्सा ले कर मामले से अलग हो जाते हैं।

उपसंहारः

क्या यही सही पत्रकारिता है ? क्या यह पत्रकारिता के नाम पर धब्बा नही है ? जनता को सत्य जानने का हक है और पत्रकारों की सत्य को उजागर करने की जिम्मेदारी, पुलिस की अपराधी को पकड कर कानून की दहलीज तक ले जाने की जिम्मेदारी है लेकिन ये आरंभिक कडियाँ ही लालच के वशीभूत होकर कार्य करती हुई कमजोर कडियाँ साबित हो रही हैं तो अपराध समाप्त कैसे होंगे ? भ्रष्टाचार कैसे रूकेंगे ? आतंकवाद को कैसे समाप्त किया जा सकेगा ? देश की अधिकांश जनता गरीब है, किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं, बॉम्ब ब्लास्ट में थोडे थोडे दिनों में निर्दोष लोग हताहत होते जा रहे हैं।महंगाई की मार से जनता जूझ रही है, कई तरह के भ्रष्टाचार हर सरकारी विभाग में पनप रहे हैं।क्या सच्ची पत्रकारिता का यह कर्तव्य

नही है कि इन बुराईयों को जड से उखाड फेंकने के लिये सत्य को आखिरी अंश तक उजागर करें।

42 प्रस्तावनाः आपदा प्रबंधन

“The Punishment which the wise suffer who refuse to take part in Govt.is to live under the Govt.of worse men”.

PLATO

उपरोक्त कथन वर्षों देश महान दार्शनिक प्लेटो ने कहा था किन्तु आज भी यह सत्य है, विशेषतः हमारे देश में तो यह बात प्रतिशत सत्य है। हमारे इतने विशाल देश की जनता, सच पूछें तो भगवान के भरोसे ही है क्योंकि जिन लोगों को वह चुन कर सत्ता में भेजती है वे स्वयं तो ऐश ओ आराम की जिंदगी जीते है और जनता की रक्षा ,सुविधा ,समस्याएं दुः ख दर्द किसी से भी कोई वास्ता उन्हे नही होता । वे पूरे पाँच वर्ष का समय अपनी कुर्सी को बचाए रखने की जोड तोड में ही लगे रहते हैं।वे एकदम ही संवेदना हीन होते हैं। जनता के दुः ख दर्द को महसूस करना तो दूर, वे किसी बॉम्ब ब्लास्ट के बाद जिस तरह मशीनी अंदाज मे वक्तव्य देतें हैं वह जन जन के मन के कोध को भडका देता हैं।वे अपने कपडों की कीज और जूतों की पॉलिश का भी उस समय विषेश पर भी बहुत ध्यान रखते हैं जब वे घायलों को अस्पताल में देखने को जा रहे होते हैं या जाने का दिखावा कर रहे होते हैं।हमें ग्लानि होती है कि हमारे देश के कर्णधार ऐसे लोग हैं

विषय वस्तुः

बदी करने के मौके दिन में सौ बार मिलते हैं लेकिन नेकी करने का मौका साल में मुश्किल से एक बार मिलता है।

<u>वॉल्टेयर</u>

आपदा प्रबंधन के बारे में जानने से पहले देश हमें विभिन्न आपदाओं के बारे में जानना होगा।

रेलदुर्घटनाएंः

हमारे देश में रेल दुर्घटनाएं काफी संख्या में होतीं हैं। क्यों होती हैं? इसके कारणों की जॉंच होगी, यह वक्तव्य तो हम प्रत्येक रेलमंत्री के मुँह से हर रेलदुर्घटना के बाद सुनते हैं किन्तु बाद में जॉंच का क्या नतीजा निकला यह देश की जनता कभी नही जान पाती । कभी साबरमती एक्सप्रेस की दो बोगियॉं 140 लीटर पेट्रोल छिडक कर आतंकवादी जला देते हैं, और 59 लोग अंदर ही जल कर खत्म हो जाते हैं।कभी जलमग्न स्थान और पटरियों पर रेल आगे नही बढ पाती है और कई कई घंटों तक यात्री वहॉं फॅंसे रहते हैं वे बाहर नही निकल पाते क्यों कि बाहर गले तक पानी होता है। रेल दुर्घटना जब भी होती है,कई कई दबी हुई लाशें उसमें से निकाल कर एक कतार में रख दी जाती हैं।कईयों के रिश्तेदार उन्हे ढूँढ कर ले जा पाते हैं कई नामालूम से यूँ ही अपनी अंत्येष्टी की प्रतीक्षा में पडे रहते हैं।कभी रेलदुर्घटना पुरानी अंग्रेजों के जमाने की पटरियों के कारण होतीं हैं,अधिकांश मानवीय भूलों का परिणाम होतीं हैं और कभी कोई पुराना पुल ही नीचे गुजरती हुई ट्रेन पर जा गिरता है।

बॉम्बब्लास्टः यह आज के दिन की सबसे बडी आपदा है। 2001 से आज तक सरकारी ऑंकडों के हिसाब से लगभग एक हजार लोग इसके शिकार हो चुके हैं।इस अघोषित युद्ध का न तो कोई उधेश्य पता चलता है न ही इसके कारणो का पता चलता है।आमने सामने सीमा पर किए जाने वाले युद्ध की स्थिति भिन्न होती है किन्तु यदि आतंकवादी संगठन धमकी दे देकर मार्केट के विभिन्न स्थानों पर पॉलीथीन बॅग्स में बॉम्ब प्लांट कर देते है, व टाईमर लगे होने के कारण वे भीड भरे बाजारों

में फट जाते हैं, दर्जनो लोग मर जाते हैं और उससे कहीं अधिक घायल हो जाते हैं।जो मरतें हैं उनके शरीर के चीथडे उड जाते हैं ।क्या वे ऊपर वाले से इतनी वीभत्स मौत लिखवा कर आए थे? इस बॉम्ब ब्लास्ट के बाद घटनास्थल पर चींख पुकार मच जाती है, भाग दौड मच जाती है। उस समय क्या होना चाहिये ?

बाढः एक समय था जब कभी कभी कुछ नदियों मे ऊफान के कारण नदी तट पर स्थित नगरों में बाढ आ जाया करती थी। अब यह प्रतिवर्ष बिहार, उडीसा, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे राज्यों में आ जाती है। अब यह मानवीय कारणों से भी आ जाती है। किसी बॉंध के टूट जाने की सूचना देश ही मुख्यमंत्री को दी जा चुकी होती है किन्तु समय रहते उसके उपाय नही किये जाते परिणाम स्वरूप पानी के वेग को वह सीमा रेखा सम्हाल नही पाती कईकई बस्तियॉं पानी में बह जाती हैं पशु बह जाते हैं । छत पर चढे लोग आठ आठ दिन तक मदद की प्रतीक्षा करते वहीं दम भी तोड देते हैं।

भूकंपः

धरती का सतही तापमान पेड कटते जाने के कारण वन कटते जाने के कारण दिन प्रति दिन गर्म होता जा रहा है। वन कटते जा रहे हैं और उनके स्थान पर सिमेंट के जंगल खडे होते जा रहे हैं,भूगर्भ में जल स्तर घटता जा रहा है। यही कारण है कि अब जब तब भूकंप आ जाते हैं जो देश वर्षों मे एकाध की संख्या में थे।ये भयानक विनाशकारी होते हैं। गुजरात के भुज मे आए भूकंप का प्रभाव कई राज्यों पर देखा गया था। महाराष्ट्र के वर्धा सेवाग्राम में हल्के फुल्के भूकंप रोजमर्रा की घटना की तरह देखे जाते हैं। रिक्टर पैमाने पर 7 और 8 की तीव्रता वाले भुज के भूकंप ने शहर को ही ध्वस्त कर दिया था। उत्तरकाशी, लातूर और हिमालय की तराई में भी भयानक भूकंप आए। भूकंप से होने वाली तबाही सब कुछ लील जाती है। कई परिवार काल के गाल में समा जाते हैं

कई बच्चे अनाथ हो जाते हैं कई स्त्रियाँ विधवा हो जातीं हैं।सारा विकास नष्ट हो जाता है।

<u>सुनामी और समुद्री तूफानः</u>

हमारे देश में सुनामी का कहर एक बार हुआ जो अपने साथ दक्षिण प्रदेश की पूरी की पूरी बस्तियाँ बहा ले गया। इसमें लाखों जनों की, कई करोडों की धन की हानि होती है।

वर्षाः वर्षा एक ऐसा शब्द है जो मन को आनंदित करता है, कवियों के लिये यह सदा से कविता का विषय रहा है।कोई सोच भी नही सकता कि यह भी आपदा कर रूप गृहण कर सकता है।किन्तु ऐसा अब होने लगा है तीन वर्ष पूर्व मुंबई में और 2009 में कर्नाटक और महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग तथा अन्य स्थानों पर होने वाली लगातार और भारी वर्षा ने सम्पूर्ण जीवन को अस्त व्यस्त ही नही किया बल्कि कई जिंदगियों को नष्ट कर दिया,करोडों रूपयों की सम्पत्ति नष्ट हो गई हजारों पशु पानी में बह गए। मुंबई मे लोगों के घरों में पानी घुस आया। ट्रेन बस के अभाव में लोगों को मीलों दूर पैदल चलना पडा था। अथवा शहर की सडकों पर कारों के स्थान पर चलने वाली नावों से जाना पडा था।कई लोगों को दो दो रातें अपने दफ्तरों में गुजारनी पडी थीं कई लोगों की इस वर्षा ने जानें भी ले लीं थी।

आगः अचानक लग जाने वाली आग भी मानव जीवन की सबसे बडी आपदा है दिल्ली में उपहार सिनेमा हॉल में बिजली की खुली तारों के कारण शॉट सर्किट हो जाने से आग लगी, कई बच्चे, युवा और उनके माता पिताओं के दम घुट जाने से मौत हो गई थी। मेरठ में एक एक्जीबिशन में जो चारों ओर

से प्लास्टिक शीट्स से घिरा था ,एयर कंडीशंड था और बाहर निकलने का कोई रास्ता न था उसमें जब शॉट सर्किट से आग लगी तो सैकडों लोग भयानक मौत मरे थे।आग कहीं भी लग सकती है किन्तु बहुमंजिला इमारतों में यह सबसे ज्यादा खतरनाक होती है।इसके अलावा बसों का रेलिंग तोडते हुए नदी में जा गिरना या नाव दुर्घटना का होना कई तरह की मानवीय भूलों के कारण हुई आपदाएं हैं।

प्रबंधनः आज तक जितनी भी रेल दुर्घटनाएं हुई हैं उसमें आसपास की बस्ती के लोग देश दौड कर सहायता करने पहुँच जाते हैं।वे बडी तत्परता से घायलों को अस्पताल पहुँचाने का प्रबंध करते हैं।इसी प्रकार बाम्ब ब्लास्ट में भी लोग स्वयं अपने अपने वाहनों से घायलों को अस्पताल पहुँचाने के काम में जुट जाते हैं। इनमें से कई स्वयं भी चोटों का शिकार होते हैं परन्तु वे उसकी परवाह किये बगैर सहायता करते हैं।मृतकों को भी निकालने अथवा उठा कर एक ओर रख देने का कार्य भी करते हैं। प्रशासन के लोग पुलिस और मंत्री काफी देर से पहुँचते हैं वे जाँच का आश्वासन देकर चलते बनते हैं।भूकंप, रेल दुर्घटना, किसी निर्माणाधीन बिल्डिंग के गिरने पर केन की तुरंत आवश्यकता होती है। आग लगने पर फायर ब्रिगेड की तुरंत आवश्यकता होती है,बिल्डिंग में फंसे लोगों को निकालने की तुरंत आवश्यकता होती है किन्तु ये प्रशासन के साधन काफी देर से पहुँचते हैं। बाढ की गंभीरता देखते ही मंत्री या मुख्यमंत्री को युद्ध स्तर पर सेना द्वारा फंसे हुए लोगों को निकालने का प्रबंध करना चाहिये जो नही होती और भ्रष्टाचार इतना अधिक है कि किसी बाढ राहत कोश की सहायता ठीक से पीडितों तक नही पहुँच पाती और वे भगवान के भरोसे हो जाते हैं। मेरठ की एक्जीबिशन में लगी आग मानवीय भूल का परिणाम थी और फायर ब्रिगेड के काफी देर से पहुँचने के कारण कई लोगों को अपने प्राण गँवाने पडे। मुंबई की वर्षा कारण भी अंग्रेजों के जमाने के बने ड्रेन सिस्टम का परिणाम थी जिसने लोगों के ड्राईंग रूम तक पानी पहुँचा दिया था।

देश को आजाद हुए 62 वर्ष हो चुके हैं कौन है इन सब का जिम्मेदार ? उपहार सिनेमा की खुली तारों का क्या दिल्ली नगर निगम को पता न था? क्या इन सभी बातों की समय समय पर जाँच कर, सिनेमा हॉल का लाईसेंस रद्द नही किया जाना चाहिये था?और इन सब आपदाओं के बीच मंत्रियों के रटेरटाए वक्तव्य देना और मात्र आश्वासन दे देना मन में ग्लानि उत्पन्न कर देता है।क्या ये वही हैं जिन्हे हमने अपनी सुरक्षा ,सहायता और प्रगति का ठेका दिया हुआ है?शशासन तंत्र भी बेहद कमजोर है निष्क्रिय है। वे बस खानापूर्ति करते हैं।मानवता कहीं दिखाई नही पडती है। मानवाधिकार आयोग की मानवता ब्लास्ट में मरे हुए लोगों के प्रति न होकर अपराधी को फाँसी न दी जाए इसमे होती है।जो आतंकवादी पकडे जाते है उन्हे केस लडने में सरकारी सहायता मिले यह वकालत स्वयं मंत्री महोदय करते हैं।

उपसंहारः

आपदा चाहे प्राकृतिक हो अथवा मानवीय भूलों का परिणाम उसमें हताहत जनता ही होती है।वह जनता जो नेताओं के लिये मात्र वोट बेंक होती है।उनकी असंवेदन शीलता देख कर हैरत होती है।वे स्वयं अपनी सुरक्षा के सभी प्रबंध किये रहते हैं।वे बुलेट प्रुफ गाडियों में घूमते हैं।उनके सुरक्षा कर्मियों के भारी तादाद में होने के बावजूद भी पुलिस कर्मियों की फौज उन्ही की जी हुजूरी में लगी रहती है।जो पुलिस जनता की सुरक्षा के लिये है वह इतने भ्रष्टाचार में लिप्त है कि उसे रेड लाईट पर घूस खाने से फुर्सत नही है। कौन करेगा इन आपदाओं का प्रबंधन? मंत्री महोदय पत्रकार से कहते हैं कि हम कहाँ कहाँ क्या क्या कर सकते हैं।ये वक्तव्य क्या जनता के अंदर असुरक्षा की भावना को और नही बढाएंगे?कुछ एन. जी.ओ. अवश्य कार्य करते हैं ।बाढ पीडितों एवं रेल दुर्घटना से ग्रस्त लोगों को लंगर बना कर खिलाते हैं।किन्तु अब भी अधिकांश एन.जी.ओ.मात्र कागजों में मौजूद होते हैं।वे सरकारी

व गैर सरकारी सहायता में मिले सारे रूपयों को हजम कर जाते हैं। देश में अनैतिकता और भ्रष्टाचार का चरम उत्कर्ष हो चुका है।पकडे गए लोग कभी सजा नही पाते । ईश्वर ही आपदाओं से देश की जनता को बचाए।

43 भ्रष्टाचार

प्रस्तावनाः

कंटकानां खलानां च,द्विविर्धव प्रतिकिया,

उपानान्मुख भंगो वा,दूर तो वा विसर्जनम्।

अर्थात दुष्टों और कॉंटों के साथ दो प्रकार से प्रतिकार लिया जा सकता है,एक तो चप्पल से मुँह पर दे मारना और निकाल कर दूर फेंक देना।

जब देश आजाद हुआ था और सारे देश की जनता अत्यंत हर्षित हुई थी कि अब हमारा अपना संविधान है, हमारे अपने प्रतिनिधि ही सरकार बनाएंगे,वे हमारी समस्याओं को समझेंगे।वे उनका निराकरण करेंगे।किन्तु ऐसा न हो सका।इस भ्रष्टाचार का आरंभ प्रथम प्रधान मंत्री के कार्यकाल से ही हो गया था किन्तु भोली भाली जनता ने इसे गंभीरता पूर्वक नही लिया था। आज यह शब्द इतना सामान्य हो गया है कि हमे किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार के अनावरण होने पर आशचर्य नही होता, आकोश भी उत्पन्न नही होता ।हम उसके परिणाम को भी जानते हैं।यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि हमने इसे स्वीकार कर लिया है।देश भक्ति ,देश प्रेम जैसे शब्द एवं इसका

अनुकरण करने वाले अब किताबों में सिमट कर रह गए हैं। देश को आजाद कराने वाले महात्मा गांधी एवं उनके मूल्य, उनके सच्चे अनुयायी और उनकी अधिकांश समय व्यतीत की जाने वाली कर्मभूमि में सिमट कर रह गया है।

विषयवस्तुः

जिस तरह आग आग को नही बुझा सकती उसी तरह पाप पाप का शमन नही कर सकता।

टॉलस्टॉय

हमारे स्वतंत्र भारत में पिछले तीन दशकों में इतने भ्रष्टाचार हो रहे हैं।बोफोर्स घोटाला ,चीनी घोटाला, गेहूँ घोटाला ,शेयर घोटाला, स्टाम्प पेपर घोटाला, कोलतार घोटाला, फौज की वर्दियों का घोटाला, और न जाने कितने बडे बडे हजारों हजार करोड के घोटाले जिनमे चारा घोटाला प्रमुख है,होते ही रहे हैं और हो रहे हैं और इनकी समाप्ति की कोई धूमिल सी आशा की किरण भी नही दिखाई दे रही है। कई घोटालों का पर्दाफाश होता है,कई स्टिंग ऑपरेशन होते हैं मिडिया के सभी चॅनल्स दिन दिन भर वही सब दिखाते रहते हैं,दूसरे दिन वह शायद एक छोटी सी खबर बन जाती हैं कोई टी.वी.चॅनल दूसरे दिन उसका फॉलो अप नही दिखाते हैं। अगर केस शुरू हुआ तो दस से पन्द्रह वर्ष तो उसकी सुनवाई पूरी होते होते लग जाते हैं इस बीच एकाध बार, कांड का केस करने वाला व्यक्ति स्वयं ही मृत्यु को प्राप्त हो गया।किसी ने बडे नेताओं या सांसदों को कठोरता पूर्वक जेल में दिन काटते हुए नही देखा। भ्रष्टाचार का उन्मुलन हो भी तो कैसे?

ले के रिश्वत फँस गया तो दे के रिश्वत छूट जा।

ये पंक्तियाँ शतप्रतिशत सत्य प्रतीत होतीं हैं।

आज भ्रष्टाचार की जडों ने गहराई से जमीन में पैठ बना ली है।इसकी मजबूत श्रृंखला बद्ध कडियाँ होतीं हैं जो टूटती हुई

नही दिखती बल्कि दिन प्रतिदिन यह और मजबूत होता ही दिखाई दे रहा है।

यदि हमे अपने बच्चे का स्कूल मे एडमिशन करवाना है तो हमें स्कूल में भारी डोनेशन देना पडता है क्या यह भ्रष्टाचार नही है? आपके घर में बिजली का मीटर लगवाना है, टेलीफोन लगवाना है, राशन कार्ड बनवाना है,क्या बिना कुछ खर्च किये आप काम करवा सकते हैं? कतई नही ,तो ये सभी भ्रष्टाचार की श्रेणी में ही हैं जिसे हम और आप स्वीकार कर चुके हैं। अप्रत्यक्ष रूप से इस पेड की जड में एक एक लोटा पानी डाल कर हम उसे और हराभरा करते जा रहे हैं।

हमारे देश में कोई कार्यालय ऐसा नही है जिसमें घूस दिये बिना न तो कोई फाईल आगे बढती है न ही कोई कार्य सिरे से लग पाता है अर्थात पूर्ण हो पाता है। हम न चाहते हुए भी इसमे लिप्त होते चले जा रहे हैं।

यह तो छोटे मोटे भ्रष्टाचार की बात हुई।जब करोडों करोड रूपयों में सांसदों विधायकों की खरीद बिकी होती है तब देश में प्रजातंत्र कहॉं रह पाता है।मेडीकल कॉलेज की सीट, इंजिनियरिंग कॉलेज की सीट,लाखों रूपयों की घूस देकर खरीदी गई सरकारी नौकरी की सीट,मकान बनाते बनाते बिजली विभाग, पुलिस विभाग को दी जाने वाली घूस कहॉं नही है भ्रष्टाचार ?

पुलिस का भ्रष्टाचार तो सभी को ज्ञात है।हर रेड लाईट पर लोगों से रूपये वसूलती पुलिस, दहेज हत्या के केस में तगडी घूस लेकर अपराधियों को छोड देती पुलिस ,चोरो और अपराधियों से सांठ गांठ करके रूपया लेने वाली पुलिस शायद यह भूल चुकी है कि उसे सद् रक्षणाय अर्थात अच्छे सदाचारी लागों की रक्षा के लिये और दुष्ट दुराचारी लोगों को पकड कर न्याय के मंदिर तक पहुँचाने के लिये रखा गया है।

आज मात्र मल्टी नेशनल कंपनी की नौकरियाँ शायद योग्यता के आधार पर मिल पाती है,और इसीलिये अब युवा पीढी का सरकारी नौकरियों से मोह भंग हो चुका है और वे एम.एन.सी. की तरफ मुडने लगे हैं।

इस भ्रष्टाचार की कमाई से अपने बच्चों का पालन पोषण करने वाले लोग अपने बच्चों को कैसे संस्कार दे पाते होंगे और उनके परिवार स्नेह के बंधन में कैसे बँधे रह पाते होंगे।

नेताओं का भ्रष्टाचार उच्च स्तर का होता है। बडे बडे उद्योग पतियों को बडे बडे ठेके दिलवाना और उसके बदले चुनावों के समय उनसे चंदे के नाम पर करोडों रुपये ऐंठ लेना दफ्तरों के मुख्य सचिव से लेकर चपरासी तक अपने अपने पद और हैसियत के अनुसार घूस वसूलते रहते हैं और आम जनता ही जेब खाली होती रहती है।

उपसंहारः

जिस मिडिया को हम अपना सबसे बडा शुभचिंतक समझते हैं वह भी इससे अछूता नही है।किस के पक्ष में बोलना है किसके विरुद्ध सभी कुछ धन पर निर्भर करता है तभी तो सनसनी खेज खबर जिसका सुबह से शाम तक पीछा किया जाता रहा दूसरे दिन वह इस तरह गायब हो जाती है जैसे उसका अस्तित्व ही कभी न रहा हो। आज भ्रष्टाचार देश के पोर पोर में समा गया है।संसार के सर्वाधिक भ्रष्टाचारी देशों की अग्रिम पंक्ति में भारत का भी नाम है। दीमक की तरह सारे देश को चाट चाट कर खोखला कर दिया गया है। इसका कोई अंत दिखाई नही देता । हमें केवल हमारी न्याय प्रणाली से आशा है किन्तु न्याय प्रणाली इतनी लंबी और दुश्कर है कि वहाँ तक पहुँचने की नौबत ही नही आती ।बडे बडे केस भले ही सुलझा लिये गए हों किन्तु न्यायालय में लाखों की संख्या में मुकदमे लंम्बित हैं,और उन्हे सिर्फ तारीख पर तारीख मिलती रहती है।

भ्रष्टाचार एक ऐसा नासूर है जो देश की प्रगति को कदम दर कदम रोक रहा है। देश में भ्रष्टाचार निरोधी कानून भी हैं, और विभाग भी कभी किसी न्यूज अथवा समाचार पत्र में हमे यह देखने पढने में नही आता कि फलां व्यक्ति को फंला भ्रष्टाचार में गिरफ्तार करके कानून के दरवाजे तक पहुँचाया गया।

44 रेलयात्रा

मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन अनंत के लिये की जाने वाली एक यात्रा है।

महात्मा गांधी

प्रस्तावनाः

यात्रा करना मनुष्य को सदैव से प्रसन्नता देता है।कई बार यात्रा उसे मजबूरी में करनी पडती है अथवा किसी कंपनी के सेल्स एजेंट या मेडिकल रिप्रजेन्टेटिव को हमेशा ही रेलयात्राएं करनी पडतीं हैं और वे उससे ऊबे रहते हैं किन्तु किसी हिल स्टेशन पर जाने के लिये,किसी विवाह में ट्रेन द्वारा बारात ले जाने के लिये ,किसी स्पोर्टस् कंपीटीशन में जाने वाले छात्रों की टोली की यात्रा अत्यंत ही मनोरंजक होती है एवं सम्पूर्ण यात्रा इस तरह बीत जाती है मानो समय चुटकियों में बीत गया हो।

विषयवस्तुः

पक्षियों की तरह शुद्ध वर्तमान में जियो।

शशी प्रभा शास्त्री

युवावस्था ऐसी अवस्था होती है जिसमें युवा सिर्फ वर्तमान में जीता है उसे वर्तमान आनंद देता है।उसके कंधों पर ग्रहस्थी का बोझ नही होता । वह निश्चिंत होता है। उस पर रोजगार का बोझ भी नही होता।चिंता नामक चीज से उसका पाला नही पडा होता ।उसके सामने समय और स्वतंत्रता का दूर दूर तक फैला स्वच्छ नीला आकाश होता है और वह विहगों की भांति उसमें उडता फिरता है।माता पिता का संरक्षण और स्नेह उसे निर्भीक बना देता है। वह प्रसन्नता अनुभव करता रहता है।

मै जिस रेल यात्रा का वर्णन कर रही हूँ वह मन्दसौर से शाजापुर स्टेशन तक की यात्रा है। इस यात्रा में हमारे विघालय की खो खो और टेबल टेनिस की टीम थी। हमारे साथ हमारे एक स्पोर्टस् के अध्यापक एवं एक अध्यापिका थीं। हमने सिलेक्शन होते ही संभाग स्तरीय इस प्रतियोगिता में जाने के लिये तैयारियाँ शुरू कर दीं थीं। हमें सिर्फ एक बॅग ही लेकर जाना था किन्तु उसे सहेजने में हमने पूरे पन्द्रह दिन लगाए। ए!तू कौनसी ड्रेस ले जा रही है? और कौनसे जूते? या अन्य सामान ले जा रही है? मित्रों और सहेलियों से पूछ पूछ कर अंत में निष्कर्ष निकाला जाता है। प्रत्येक मित्र एक दूसरे की सलाह और मशविरे को ध्यान में रख कर अंततः अपना बॅग पॅक करने में सफल होता है।

अब यात्रा के दिन की प्रतीक्षा शुरू होती है। विघालय में कोई भी पिरियड अटेंड न करने की छूट मिली हुई थी सो दिन दिन भर प्रेक्टिस में गुजर जाता था।मन में इस बात को बार बार दोहराया जाता था कि हमें विजयी हो कर आना है,यही भावना हमारी प्रेक्टिस में और जोश भर देती थी और खेलने की गति और सुधार दोनो में ही तीव्रता आ जाती है।

अंततः वह दिन आ पहुँचता है जिस दिन हमें यात्रा करनी थी । हमें शाम चार या साढे चार बजे की ट्रेन पकडनी थी हम सभी ने अपनी तैयारी कर ली थी।मम्मी की हिदायतें भी साथ

साथ सुनते जा रहे थे।माता पिता के बिना की जाने वाली यह पहली यात्रा थी सो हम भी और मम्मी भी एक प्रकार के डर के भाव से ग्रस्त थे।उचित समय पर मै और मेरे मित्र सभी स्टेशन पर पहुँच गए। सभी रोमांचित थे।

मेरे एक दो मित्र मॅडम से परमीशन लेकर मेक्जिन्स वगैरह खरीद लाए थे।जल्दि ही सिग्नल डाऊन हो गया ,घंटी बजी और स्पीकर में अनाऊंसमेंट हुई यह ट्रेन के प्लेटफॉर्म पर पहुँचने की घोषणा थी।हम सभी ने अपने अपने बॅग्स अपने अपने कंधों पर टांग लिये । ट्रेन की गति थमते थमते कुछ समय लगा और लगातार ट्रेन को गतिमान देखते हुए मुझे चक्कर सा आने लगा।मैने अपनी एक सहेली को थाम लिया और बडी मुश्किल से अपना संतुलन बनाए रखा।

सभी को कमशः चढाने में हमारे सर और मॅडम ने मदद की । हमारा रिजर्वेशन था।सबने अपनी अपनी सीट पर कब्जा जमा लिया।सर और मॅडम को मिला कर हम दस लोग थे।हम सभी एक साथ थे और सर और मॅडम अगले हिस्से में थे।हम सभी ने अपने अपने घुटने जोड कर टेबल सी बना ली उस पर अखबार बिछा लिया और ताश की गड्डी निकाल कर ताश खेलना शुरू कर दिया।बीच बीच में स्टेशन आते रहे और गुजरते रहे हमें कुछ पता भी न चला।दरअसल हम सभी को आजादी से एक साथ रहने का मौका ही कब मिलता था।नौ बजे मॅडम ने आकर कहा कि अब हम खाना खा लें । सभी को यह बात सुन कर भूख लग आई। हमने अपनी उसी टेबल पर सबके डिब्बे खोले और मजे से मिल जुल कर खाना खाया। अब मॅडम ने कहा सो जाओ हमें सोने का मन तो न था पर मन मार कर सभी अपनी अपनी बर्थ पर सो गए।

सुबह सात बजे मॅडम ने हमें उठाया। सभी ने फेश होकर अपने अपने बाल सँवारे। शायद कोई बडा स्टेशन आने वाला था। मॅडम ने केंटीन वाले को ही सभी के लिये ब्रेड ऑमलेट, और चाय का ऑर्डर दे दिया था।सभी ने हँसते बोलते और

चुहलबाजी करते नाश्ता किया।दस बजे ट्रेन मक्सी पहुँचने वाली थी। मॅडम ने हमें सही समय पर अपने अपने बॅग्स सम्हाल लेने को कहा।हमें मक्सी में ही उतरना था। ट्रेन के मक्सी पहुँचते ही हम उतरे और प्लेटफॉर्म के बाहर ही स्थित बस स्टेंड पर पहुँचे। यहाँ से हमें शाजापुर तक का सफर बस में करना था। यही मेरी पहली रेल यात्रा थी जो इतनी मजेदार थी । उसकी याद रह रह कर ताजा हो उठती है।

उपसंहारः

जीवन एक लंबी यात्रा है जिसमें युवा होते बच्चों की अवस्था सबसे स्वर्णिम होती है।इस अवस्था में घटी हुई घटनाएं आजीवन मानव मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड जाती हैं।आगे के प्रतियोगिताओं में खेलने के दिन और अधिक रोमांचक थे।दुर्भाग्य वश हमारी टीम में एक ही खिलाडी का आगे के लिये चयन हुआ, और वह भी स्पोर्टस् मीट निरस्त किये जाने के कारण आगे जाकर खेलने का सपना पूरा न कर सका।

वापसी की रेल यात्रा उदासी भरी थी। हमें अपने खेल में और सुधार की आवश्यकता थी यह हम अच्छी तरह समझ चुके थे।हमने वहाँ अच्छे अच्छे खिलाडियों के खेल देखे थे। वापसी पर मॅडम और सर हमें हौसला देते रहे कि आगे हमे अवश्य ही सफलता मिलेगी। शाजापुर जाते समय हम जितने उत्साहित थे उतने ही उदास लौटते समय थे कोई किसी से बात नही कर रहा था सभी सोच विचार में डूबे थे।मॅडम के शब्दों ने अवश्य मन पर प्रभाव डाला था कि हार जीत जीवन में चलती ही रहती है।हमने भी अपने दिलों को समझा लिया था।मंदसौर स्टेशन पर सभी को मम्मी पापा लेने आए थे। हम सभी उनसे मिलकर खुश थे। रेल यात्रा का यह वर्णन अविस्मरणीय है।

45 किसी पर्वतीय स्थल का वर्णन

प्रस्तावनाः

सौन्दर्य तो दर्शक के नेत्रों में होता है। प्रकृति के सौन्दर्य से बढ कर कोई सौन्दर्य नही होता।प्रकृति हर मौसम में हर जगह सुन्दर ही दिखाई देती है। वर्षा ऋतु में सभी तरफ फैली हरियाली ही हरियाली ।नवीन पल्लवों और पुष्पों से लदे पेड वर्षा की बूंदों को अपने आप पर संजोए पत्ते सभी कुछ मनभावन लगता है।आसमान में उमडते घुमडते बादल और बीच बीच में चमकती कडकती बिजली, तो शीत ऋतु में बर्फीले प्रदेश में पहाडों पर जीम हुई शुभ्र स्वच्छ बर्फ और जब उन पर सूर्य की सुनहरी किरणे पडतीं हैं तो वह स्वर्णकणों की भांति चमकने लगती है।पर्वतीय प्रदेशों में अधिकांश समय यही मौसम होता है।कशमीर एक ऐसा ही स्थान है। भारत के मुकुट में जडे हुए हीरे की भांति आकर्षक और लुभावना पर्वतीय स्थान । लोग यहाँ छुट्टियाँ बिताने आते हैं।यहाँ विदेशी पर्यटक भी काफी संख्या में आते हैं।पिछले तीस वर्षो में इसे आतंकवाद के खूनी पंजों ने अपने कब्जे में ले लिया है। अतः पर्यटकों की संख्या में भारी कमी आ गई है।चूंकि यहाँ के लोगों के जीवन यापन का मुख्य जरिया पर्यटन उद्योग ही है अतः इस कारण से लोगों का जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। यहाँ से अधिकांश हिन्दू आबादी पलायन कर देश के अलग अलग हिस्सों में जा बसी है। उनकी जमीने, घर, जायदाद सभी कुछ वहाँ है।यहाँ वे मात्र 1500 रूपये माह की सरकारी सहायता का मुँह जोहते हैं या रोजी की तलाश में मारे मारे इधर उधर भटकते रहते हैं।

देख ए बुलबुल ,गुलशन को आँखें खोलकर,

फूल में गर आन है, काँटे में भी एक शान है।

यह कुछ वर्षो देश की बात है जब हमारे परिवार ने अक्टूबर की छुट्टियों में कश्मीर जाने का निर्णय लिया। हम सभी

उत्साहित थे। हम लोगों ने दिल्ली से जम्मू तक का शालीमार एक्सप्रेस का रिजर्वेशन कराया हुआ था।

हम सभी नियत दिन और नियत समय पर रेल्वे स्टेशन पर जा पहुँचे । दिल्ली तक की यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हो गई ।वहाँ से हमें दूसरी रात यात्रा करनी थी। दिल्ली से मेरी दीदी और जिजाजी भी साथ चलने वाले थे,अतः दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर वे दोनो हमें लेने आए थे।वह सारा दिन हमने दीदी और जिजाजी के यहाँ बिताया।दिल्ली से कुछ शॉपिंग भी की।दूसरे दिन सुबह से ही घर में चहल पहल थी।दीदी और मम्मी ने मिलकर सब्जी पूरी बनाई, खाने के और सामान भी पॅक कर लिये।दो बडे वॉटर बॅग्स में ठंडा पानी भी ले लिया।रात आठ बजे की ट्रेन थी,हम कुछ जल्दि ही स्टेशन पर पहुँच गए। सही समय पर ट्रेन आई और हमारी यात्रा आरंभ हो गई।नौ बजे खाना खा कर हम लोग अपनी अपनी बर्थ पर सो गए। सुबह नौ बजे हम जम्मू पहुँचे। वहाँ से हमने श्रीनगर तक का सफर एक डिलक्स बस में तय किया।

हमें श्रीनगर पहुँचते पहुँचते रात के ग्यारह बज गए।बस से उतरे तो हल्की बूंदाबांदी हो रही थी और ढेर सारे हॉटेल के एजेंट और हाऊस बोट वाले हमें अपने अपने साथ चलने का आग्रह कर रहे थे।वे व्यवहारिक और व्यवसायिक तौर पर रेट और सुविधाएं भी बताते जा रहे थे।बूंदाबांदी तेज होती जा रही थी अतः हमने एक हाऊस बोट वाले से हाँ कह दी।ठंड जोरों से लग रही थी।उसकी ही गाडी में सारा सामान रख कर हम डल झील के किनारे पहुँचे ,फिर शिकारे में सामान लाद कर हम ताज महल नामक उसकी हाऊस बोट तक पहुँच गए। मैने हाऊस बोट पहली बार देखी थी,वह सच में पानी में तैरता हुआ एक घर था,बस लकडी के फर्श पर चलते हुए महसूस होता था कि हम बोट पर हैं।उसने हमे हमारे बेडरूम्स दिखाए। पूरी तरह फर्निश्ड हाऊस बोट थी।वहाँ ड्रॉइंग रूम भी था और हर बेड रूम से अटेच्ड बाथरूम भी।साफ सुथरे पलंगों

पर बिस्तर और कंबल वगैरह थे। हम अपने अपने बिस्तर में घुस कर सो गए।

दूसरे दिन सुबह हमें समय पर चाय नाश्ता मिल गया,और शिकारे ने हमे डल के किनारे उतार दिया।वहाँ से हमने टूरिस्ट बस की और सोनमर्ग के लिये रवाना हुए।यह एक अत्यंत सुंदर रमणीय स्थान था।स्वच्छ जल से भरी कल कल निनाद करती नदी और किनारे पर ढेर सारे गोल गोल पत्थर।काफी देर हमने उस प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद उठाया और शाम के बाद ही हाऊस बोट पर पहुँचे। इसी प्रकार अगले दिन हमने गुलमर्ग की यात्रा की। गुलमर्ग के एक ओर एक विशाल पहाड था। वहाँ हमने कुछ फोटो भी खिंचवाए। रात को हाऊस बोट पर लौट आए। अगले दिन हमने शालीमार बाग निशात बाग देखे। एक कतार में सडक के दोनो ओर लगे युक्लिप्टस के लंबे लंबे पेड ऐसे लग रहे थे मानो कतार बद्ध हो कर सभी आने जाने वालों के सम्मान मे खडे हों।दोनो ही बाग बेहद सुंदर थे, अवर्णनीय सौन्दर्य से परिपूर्ण। ऐसे ऐसे फूल थे जो हमने कभी देखे ही नही थे। हमने अनंत नाग में एक जलस्त्रोत में ढेरों मछलियाँ भी देखीं थीं। यह त्राऊट मछली थी जो मुख्यतः बर्फीले प्रदेश में ही होती है। वैसे तो पूरा कश्मीर ही इतना रमणीय है कि किसी विशिष्ठ स्थान की प्रशंसा करना अन्य स्थानों के साथ अन्याय होगा।एक ओर हरी भरी गहरी घाटी , दूसरी ओर ऊँचे ऊँचे पहाड। हमने शिकारे पर फ्लोटिंग गार्डन्स भी देखे हमें यह चमत्कारिक लगे। क्या झील के पानी पर बाग हो सकता है? क्या उन बागों में सब्जियाँ उगाई जा सकतीं हैं?हाँ! ऐसा ही होता है। वहाँ के स्थानीय लोग कहते थे कि जोरों की वर्षा में एक बाग दूसरे के बाग से जा मिलता है या कहीं ओर चला जाता है तो उसी की सम्पत्ति बन जाता है। सेबों के पेड तो वहाँ हर ओर दिखाई देते हैं और सेब खाने की इच्छा ही नही होती है। अगला दिन हमारा अंतिम दिन था।हमने मार्केट में जाकर शॉपिंग की । सभी के लिये गिफ्ट खरीदे। हमने लाल चौक भी देखा। हमने बर्फ देखनी

चाही और इसीलिये टट्टू पर चढ कर पहाड पर चढे। हाँ! अक्टूबर के महीने में दूर दूर तक फैली बर्फ भी दिखाई दी। कश्मीर हमें इतना अच्छा लगा कि लौटने का मन ही नही कर रहा था लेकिन आखिर लौटना ही पडा।

उपसंहारः

कश्मीर को देखने के बाद इतिहास में लिखी यह बात सत्य प्रतीत हुई कि बाबर ने जब कशमीर की धरती पर कदम रखा था तो उसने अपनी सेना से कहा था।अपनी सारी ताकत लगा कर युद्ध करो यदि जीत गए तो स्वर्ग में रहोगे यदि मर गए तो भी स्वर्ग में जाओगे क्यों कि यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है यहीं है यहीं है।

कश्मीर की यात्रा एक मधुर स्मृति की तरह अमिट है। अब टी. वी. पर वहाँ होने वाले बॉम्ब ब्लास्ट , और वहाँ सेना और आतंक वादियों की झडपें देख कर मन दुःखी हो जाता है। इतने सुंदर स्थान को मानव ने अपने अहं की लडाई में स्वर्ग से नर्क बना दिया है

46 मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर

प्रस्तावनाः

जो भूतकाल में हो गया वह सीमाबद्ध हो चुका है,जो भविष्य में होने वाला है उसकी कोई सीमा नही।

सूक्ति

मध्यप्रदेश को मालव प्रदेश कहा जाता था। यह भारत के मध्य में स्थित है।यहाँ की मिट्टी काली है और गेहूँ,मुंगफली और अन्य दलहनों के लिये उपजाऊ मानी जाती है।मध्यप्रदेश भी अंग्रेजों की गुलामी के दौरान कई छोटी छोटी रियासतों में बँटा हुआ था इनमें इंदौर ,उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर, देवास, रीवा

के अलावा कई छोटी बडी रियासतें थीं। कुछ शासक बहुत अच्छे थे और कुछ सामान्य से किन्तु प्रजा के मन में अपने शासकों के प्रति पूर्ण सम्मान था। आज भी वे उनके उत्तराधिकारियों के प्रति वैसा ही सम्मान रखते हैं।जब भी उन्हे अवसर मिलता है वे अपने सम्मान को प्रदर्शित करते हैं। देश आजाद हुआ सारी की सारी छोटी बडी रियासतें एक भारत का अंग बनीं और राज्यों के रूप में सभी ने देश के विभाजन को स्वीकार किया। कुछ समय बाद बडे बडे राजमहल वगैरह का भी सरकार को हस्तांतरण कर दिया गया और वे राष्ट्रीय सम्पत्ति बना दिये गए। अधिकांश शासक कला संस्कृति के प्रेमी थे और उन्होने अपने अपने शासन काल में एक से बढ कर एक कृतियों का निर्माण करवाया। इसका संक्षिप्त वर्णन हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं।

विषय वस्तुः

महान पुरूष जो उपकार करते हैं,उसका बदला नही चाहते हैं ,भला संसार में जल बरसाने वाले बादलों का ऋण कभी कोई चुका सकता है ?

संत तिरूवल्लुवर

मनुष्य को चाहिये कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हो ,तो उसे ग्रहण करें।

 ़शेखसादी

मध्यप्रदेश के समग्र रूप में कई ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरें हैं।

सॉंची का स्तूप : यह एक बौद्ध कालीन ऐतिहासिक इमारत है। एवं यह शिल्प कला का अद्‌भुत नमूना है।यह गोलाकार गुंबद के रूप में निर्मित हुआ है। कई पर्यटक इसे देखने आते हैं।

खजुराहो के मंदिर :

यह छतरपुर से कुछ किलोमीटर पर स्थित है। इसे चंदेल वंश के शासकों ने बनवाया था। इन मंदिरों के बाह्य भाग में बनी मूर्तियाँ मूर्तिकला के अद्‌भुत नमूने हैं।इन्हे देखने वालों में विदेशी पर्यटकों की संख्या अधिक होती है और वे मंत्रमुग्ध से इसे देखते और फोटोग्राफी करते नजर आते हैं। भीतरी भाग में देवताओं की मूर्तियाँ हैं और प्रत्येक प्रवेशद्वार पर दो ड्रेगन्स बने हुए हैं। यह सभी उपमात्मक रूप से बना हुआ है। इस दर्शन का मुख्य विचार यह है कि ड्रेगन रूपी बाहच मूर्तियाँ जिनमें शारीरिक सौन्दर्य ही दिखाया गया है। इनसे जो अप्रभावित रखेगा वही अंदर जाकर प्रभु के दर्शन कर पाएगा।

देवास के मंदिर :

देवास का अर्थ ही है जहाँ देवी देवताओं का वास हो। देवास की पहाडी पर दो देवियों के मंदिर बने हुए हैं। अतीत में वहाँ न ये मूर्तियाँ थीं न ये मंदिर कहा जाता है, लोगों ने बडी जोरों की आवाज सुनी जो पहाड से आ रही थी।फिर वह पहाड ऊपर से दो हिस्सों में बँट गया।दोनो देवियों की मूर्तियाँ दो दिशाओं में हो गईं। एक दूसरे से विपरीत दिशाओं में। कहा जाता है कि ये दोनो ही देवियाँ आपस में बहनें हैं।जो बडी बहन मानी जाती है उसकी मूर्ति छोटी एवं शांत रूप धारण की हुई है और जो छोटी बहन मानी जाती है उसकी मूर्ति बडी ,आक्रोश से भरी और खडग हाथ में धारण की हुई है। कई स्थानीय दर्शनार्थी वहाँ रोज भी जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि पहाड पर पडे छोटे छोटे पत्थरों को इकट्ठा सा कर के घर की शक्ल दे देने से भक्त का अपना घर बन जाता है। अतः पहाड पर ढेरों इस प्रकार के घर देखने को मिलते हैं

राजा भोज का महल : भोपाल के राजा भोज एक अच्छे शासक के रूप में विख्यात हैं। भोपाल का नाम भी वास्तव में भोजपाल था। वहाँ का ताल भी बहुत प्रसिद्ध है यह कई कई

किलोमीटर तक दिखाई पडता है। राजा भोज का महल तथा कुछ मंदिर भी बहुत दर्शनीय हैं।

महांकालेश्वर : उज्जैन आज सिर्फ महांकालेश्वर के मंदिर के लिये प्रसिद्ध है । कुंभ के मेले के लिये भी उज्जैन प्रसिद्ध है। महांकाल की भस्मारती देश के किसी भी ज्योतिर्लिंग से भिन्न है और भक्तों को अभिभूत कर देती है। उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने प्रजाप्रेमी प्रजापालक एवं न्याय प्रियता के लिये नाम कमाया।

राजवाडा :

इंदौर के मध्य में स्थित राजवाडा सभी के आकर्षण का केन्द्र है।अहिल्या बाई होल्कर होल्कर वंश की प्रजा वत्सल रानी थी। दीपावली पर राजवाडे को बिजली की लडियों से सजाया जाता है,कई लोग इसे देखने आते हैं। अब इसके अधिकांश भीतरी भाग को सरकार द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया है। 84 के दंगों में फैली आग ने राजवाडा के पृष्ठ भाग को अपनी लपेट में ले लिया था। किन्तु अब इसका पुर्ननिर्माण करा दिया गया है। इसके अलावा होल्कर वंश के अन्य शासकों की छतरियाँ भी प्रसिद्ध हैं। जैनियों का ी महल तथा गोम्मट गिरि के मंदिर भी प्रसिद्ध हैं।

पंचपढीः

यह एक सुरम्य पहाडी स्थान है।यहाँ पांडवों की गुफाएं हैं।कहा जाता है कि अपने अज्ञात वास के दौरान पांडव यहाँ रहे थे। अन्य पहाडी स्थानों की तरह अंग्रेजों ने इस स्थान पर भी कई निर्माण एवं कई सुधार किये।इसे आकर्षक बनाया। हांडी खो नामक गहरी घाटी भी यहाँ है।कहा जाता है कि मोटी और मजबूत लताओं के सहारे आदीवासी आसानी से इसमें उतर जाते हैं और जडी बूटियाँ ढूँढ लाते हैं।

मांडवगढ :

रुपमती और बाज बहादुर की प्रेमकथा दर्शाने वाले यहाँ रानी रुपमती का महल,बाजबहादुर का महल ,जहाज महल,हिंडोला महल ,अत्यंत सुंदर हैं एवं अपने समय की शिल्पकला के नमूने हैं। इन्दौर से यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या समीप होने के कारण अधिक है। यह पहाडी पर बसा सुरम्य स्थान है। यहाँ से नर्मदा एक पतली चमकीली लकीर की तरह दिखाई पडती है।

ग्वालियर का किला :

ग्वालियर में सिंधिया वंश का राज्य था।वहाँ आज भी राजघराने का किला मौजूद है।इसका निर्माण इस प्रकार किया गया है कि ताली बजाने पर पहाडी के नीचे द्वारपाल को इशारा किया जा सके यह सुरक्षा को द्रष्टिगत रख कर किया गया था।इसके अलावा पहाडी पर बना सिंधिया स्कूल भी बहुत विख्यात है। वहाँ के विद्यार्थि उच्च पदों पर ही पहुँचते हैं ऐसा माना जाता है।

उपसंहारः

इसके अलावा मध्यप्रदेश के सतना जिले में मैहर की शारदा देवी का मंदिर ,रीवा के महाराजा का महल, उनके चिडियाघर में विश्व के एकमात्र चिडियाघर में वहाँ के महाराजा द्वारा पाले गए सफेद शेरों की प्रजाति के बारह शेर थे। बाद में जब केवल एक ही बचा रह गया तो पशु संरक्षण विभाग ने उस प्रजाति को बढाने के लिये सामान्य शेरनी के संसर्ग से कई सफेद शेरों के शावक प्राप्त किये।आज उन सभी को पूर्ण सुरक्षा एवं देखभाल प्रदान की जा रही है।मध्यप्रदेश एक समृद्ध राज्य है तथा सांस्कृतिक रुप से भी भारत के समस्त सांस्कृतिक वास्तु शिल्प में उसका योगदान भरपूर है। पुरातत्व विभाग इन सभी का संरक्षण एवं रखरखाव पूरे मनोयोग से करता है।

47 मेरा प्रिय कवि कबीर

प्रस्तावनाः

घिरी बदरिया पाप की,बरसन लगे अंगार,

संत न होते जगत में,तो जल जाता संसार।।

आज सम्पूर्ण संसार कहीं युद्ध तो कहीं आतंकवाद की विभीषिका में जल रहा है।ऐसा लगता है मानो मनुष्य बारुद के ढेर पर बैठा है।कब कहाँ बॉम्ब ब्लास्ट हो जाए कहा नही जा सकता। वह सडक पर बाजारों में ट्रेन में ,सिनेमाघर में ,हर जगह अपने आप को असुरक्षित महसूस करता है।भौतिकता की अंधी दौड में दौडता हुआ व्यक्ति शांति चाहता है परन्तु शांति भी उसे नही मिलती। आधुनिक काल में जो लोग स्वयं को संतो ंके रूप में प्रचारित करते हैं,उनकी विश्वसनीयता की कोई गॅरेन्टी नही होती। कबीर मेरे प्रिय कवि हैं,वे मध्ययुगीन कविता के अग्रणी माने जाते हैं।

विषयवस्तुः

कबीर के जन्म के विषय में कोई तथ्यगत जानकारी नही है। कहा जाता है कि नीमा एवं निरु नामक जुलाहा दम्पति को वे नदी के किनारे खेत में पडे हुए मिले थे।वे दोनो ही निः संतान थे,अतः उन्होने उसे अपने घर लाकर बडे प्रेम से पाला।कवि रविदास भी कबीर के समकालीन थे और दोनो मे मैत्री थी ,यहाँ तक कहा जाता है कि कबीर खड्डी पर बैठे बैठे दोहे गुनगुनाते हुए चादरें बुनते रहते थे और रविदास ही उन्हे लिपिबद्ध किया करते थे।आज भी कबीर पंथी अनुयाईयों की संख्या की कमी नही है। गुरुग्रंथसाहिब में दोनो द्वारा रचित पदों का समावेश किया गया है।यह कबीर का ही काल था जब हिन्दू और मुस्लिम दोनो ही धर्मों में घोर आडंबर व्याप्त थे।कबीर को यह बात रास नही आई और उन्होने समान रूप से दोनो पर प्रहार किये। कबीर ने छोटे छोटे सुंदर दोहों की रचना के माध्यम से इनपर चुटिला व्यंग किया है। जैसे....

केसन कहा बिगारिया,जो मूडौ सौ बार,

बार बार के मूडते भेड न बैकुंठ जाए।

मन को क्यों नही मूडिये, जामे विषय विकार।

अर्थात हिन्दू धर्म में जनेऊ के समय ,किसी की मृत्यु के समय सर मुडाने की प्रथा थी इसी पर कबीर ने कहा कि केशों ने क्या बिगाडा है जो इन्हे बार बार मूडा जाता है,बार बार मूडने पर भी भेड वैकुंठ नही जा पाती। मन को लोग क्यों नही मूडते जिसमें समस्त प्रकार के विषय विकार जैसे पाप , अपराध काम क्रोध लोभ मोह इत्यादि समाए है।

पाहन पूजे हरि मिले,तो मै पूजूं पहार।

अर्थात पत्थर पूजने से यदि हरि मिलते हैं प्रभु की प्राप्ति होती है तो मै पहाड पूजने को तैयार हूँ।

इसी प्रकार

माला फेरत जुग गया,गया न मन का फेर,

करका मनका छाँडि के ,मनका मनका फेर।

अर्थात हिन्दू धर्म के अविर्भाव से लेकर आज तक हिन्दू माला फेरते रहते हैं फिर भी वे इसके द्वारा अपने मन का मैल यानी दूसरे के प्रति दुर्भावना,छूआछूत ,क्रोध,मोह लोभ,काम इत्यादि को दूर नही कर पाते हैं।अच्छा हो यदि वे हाथ की माला के मोतियों को फेरना बंद करके मन के मोती को फिरा लें।

वे अद्वेतवाद में विश्वास करते थे।नर और नारायण में कोई भेद नही।नर को नारायण का ही अंश मानते थे।उनका कहना था मनुष्य को उस प्रभु के अंश के रूप में ही संसार में रहना और सत्कार्य करना चाहिये।

मै मै बुरी बलाय है,सकहूँ निकसौ भागि,

कहे कबीर कब तक रहै,रूई लिपटी आगि।

अर्थात मनुष्य को मै यह हूँ,मै ऐसा हूँ,मै इतना शक्तिशाली हूँ, जैसी मै की भावनाएं नही रखनी चाहियें इस मै से जितनी जल्दि भाग सके भाग जाना चाहिये। यदि किसी लकडी पर रूई रूपी मै को लपेट कर प्रभु रूपी अग्नि में जलाया जाय तो वह रूई कब तक अग्नि से एकाकार नही होगी?इन्ही भावनाओं को अभिव्यक्त करता हुआ...मेरा मुझ में कुछ नही,जो कुछ है सो तोर,

तेरा तुझको सौंपते क्या लागत है मोर।

इसी प्रकार...

चूना पत्थर ईंट ले मस्जिद लई चुनाय,

ता चढि मुल्ला बांग दे ,क्या बहरा हुआ खुदाय।।

अर्थात ईंट चूना पत्थर को जोडकर मस्जिद बना ली है और उसके ऊपर चढ कर मौलवी जोरों से अजान देते हैं जैसे मुर्गा बांग दे रहा हो,क्या खुदा बहरा हो गया है कि उसे इतनी जोर से चिल्ला कर पुकारने की आवश्यकता है।उन्होने समान रूप से हिन्दू मुस्लिम दोनो ही धर्मों के आडंबर कुरीतियों एवं कुप्रथाओं पर प्रहार किए।जो लोग उन्हे समझ गए वे उनके सच्चे अनुयायी बन गए।

उन्होने उस समय के शासकों की सत्ता और भयभीत तथा जुल्मों से सताई हुई प्रजा के दर्द को भी समझा और उन्हे मार्गदर्शन देने का प्रयास किया।।

प्रभुता को सब कोई भजे, प्रभु को भजै न कोय,

जो कबीर प्रभु को भजै, प्रभुता चेरी होय।।

अर्थात लोग प्रभु से अधिक प्रभुता अर्थात शासक की पूजा करते हैं,यदि वे प्रभु को भजेंगे तो प्रभुता स्वयं चेरी अर्थात अनुगामिनी ,चेली ,नौकरानी बन जाएगी। सर्वोच्च सत्ता प्रभु की है और मनुष्य को उसी को भजना चाहिये। सारा संसार प्रभु का बनाया हुआ है।जीवन की नश्वरता को उन्होने हृदय की गहराई से महसूस किया और उनके अधिकांश दोहों में आत्मा परमात्मा की एकरूपता दर्शाते हुए इस बात को उल्लेखित किया गया है।

माली आवत देखि करि,कलियन करि पुकार,

फूले फूले चुन लिये,काल हमारी बार।।

माली रूपी मृत्यु को आते देख कर कलियों रूपी अल्पायु के लोग पुकार उठते हैं कि जर्जर वृद्ध अर्थात खिले हुए फूल तो आज चुन लिये हैं कल हमारी भी बारी है।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात,

देखत ही छुप जाएगा, ज्यों तारा परभात।।

पानी के बुलबुले के समान मनुष्य का जीवन एक रात का है। सुबह का तारा उगते ही यह उसके प्रकाश से स्वयं नष्ट हो जाएगा।

क्षण भंगूर जीवन और मृत्यु के सत्य को उन्होने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

नौ द्वारे का पींजरा, ता में पंछी पौन,

रहबे को अचरज भलो,जाय जो अचरज कौन।।

अर्थात यह शरीर नौ द्वारों का पिंजरा है जिसमें आत्मा रूपी पवन का रहना ही आश्चर्यजनक है निकल जाना नही।

उन्होने संसार की गति को अर्थात एक दूसरे की नकल करने की प्रवृति को परिहास करते हुए कहा......

ऐसी गति संसार की,ज्यों गाडर का ठाठ,

एक गया जेहिं खाड में,सबै जात तेहिं बाट।।

अर्थात भेडों के रेवड में यदि आगे वाली भेड को एक छोटा सा गड्ढा सामने दिखता है वह उसमें से उतर कर ,ऊपर चढ कर ,पार करती है तो सारी भेडें उसी का अनुकरण करेंगी।

उन्होने नश्वर शरीर के लिये कहा...

कबीर शरीर सराय है, भाडा देकर बस,

जब भटियारी खुस रहै, तब जीवन का रस।।

यह शरीर एक सराय है,इसमें आत्मा को सत्कर्मों का किराया देकर सराय की मालकिन को खुश रखने पर ही जीवन में रस है, आनंद है।

उन्होने गुरू की महत्ता को स्वीकारा और उसे अपने दोहों में वर्णित किया

कबीरा ते नर अंध हैं, गुरू को कहते और,

हरि रूठे गुरू ठौर है, गुरू रूठे नही ठौर।।

उनके अनुसार गुरू ही पथप्रदर्शक होता है।वे अंधे लोग हैं जो इसे नही स्वीकारते।यदि प्रभु रूठ जाय तो गुरू ही उस तक पहुँचने का मार्ग बताता है किन्तु यदि गुरू ही रूठ जाय तो मनुष्य का कहीं ठौर नही।

तेरा सांई तुझमें,ज्यों पुहपन में वास,कस्तूरी के मिरग ज्यों, फिरी फिरी ढूँढे वास।।

अर्थात जिस प्रकार मृग की नाभी में कस्तूरी होती है वह उसकी सुगंध को ढूँढता वन में इधर उधर भटकता है उसी प्रकार प्रभु मानव के मन में होते हैं और वह उन्हे धार्मिक स्थलों में ढूँढता फिरता है।

उपसंहारः

कबीर ने अधिकांशतः दोहों की रचना की वह भी सरल भाषा में अतः वे लोकप्रिय हो गए।उन्होने बडे पद भी लिखे हैं जैसे ....कुछ लेना न देना मगन रहना,

पंचतत्व का बना पिंजरा,जामै बोले मैना,

गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिया के निकट रहना,

कहे कबीर सुनो भाई साधो, गुरू चरण सो लिपट रहना।।

अथवा...

आप बिना कौन सुने प्रभु मेरी, दास की विपत निवारण कीजे,

अरज करूँ मै तोरी,करजोरी,

तुम समरथ लायक सब दाता,

सबपर कृपा घनेरी,

कहत कबीर शरण मै आयो,

नाथ करत क्यों देरी।।

कबीर ने प्रत्येक बुराई पर छोटे छोटे दोहों में प्रहार किये ।हिन्दू मुस्लिम धर्म की कुरीतियों को तोड कर उससे बाहर निकलने की प्रेरणा दी। उन्होने आत्मा परमात्मा के रिश्ते के माधुर्य को वर्णित किया। जो सच्चे हृदय से प्रभु के गुण गाए उससे प्रभु दूर नही रह सकते।

गाया तिन पाया नही,अनगाये ते दूर,

जिन गाया विश्वास गहि,

तिनके सदा हुजूर।।

उनके अनुयाइयों में हिन्दू मुस्लिम दोनो ही बडी संख्या में थे। कहा जाता है कि उनकी मृत्यु पर दोनो सम्प्रदायों में उन्हे दफनाने अथवा दाह संस्कार करने की जिद पर बहस छिड गई, परन्तु जब शरीर से चादर उठाई तो वहाँ शरीर न होकर पुष्प थे जिनका दोनो ही अनुयाईयों ने अपने अपने तरीके से अंतिम संस्कार किया।

48) परहित सम धरम नही कोई

प्रस्तावनाः

देश का भविष्य उन्ही लोगों के हाथों सुरक्षित है जिन्हे उसके अतीत से प्यार है।

रॉलफाईंजे

हमारा देश ऐसे महात्माओं से ,ऋषि मुनियों से ,महापुरूषों से,शशहीदों से ,सन्नारियों से ,उनके इतिहास से भरा हुआ है जिन्होने जितने परोपकारी कार्य किये शायद उतने विश्व इतिहास में ,अन्य देशों में नही किये गए।

सत्य प्रेम अहिंसा परोपकार दया सहिश्णुता कर्तव्य निष्ठा मातृपितृ भक्ति,गुरू भक्ति,देश भक्ति,ऐसा कोई मूल्य नही जो इस देश की नींव में न हो।

राम और कृष्ण के अवतारों ने परहित भावना के कारण ही रावण और कंस जैसे अत्याचारियों से लोगों को मुक्ति दिलाई। महात्मा बुद्ध ,महावीर स्वामी, ने राजपुत्र होते हुए भी अपना राज्य छोड कर परहितकारी उपदेश दिये। कबीर, रविदास, नानक और ऐसे ही कई महान व्यक्तियों ने हमारे देश की जडों को सद्गुणों,संस्कारों और उत्तम विचारों के जल से सींचा।बडे बडे महाराजाओं ने भी प्रजा के प्रति हितकारी भावना और प्रजा वत्सलता की भावना को ही नींव

बनाया।पन्ना धाय ने महाराजा उदयसिंह के प्राण बचाने के लिये उनकी वेशभूषा, वस्त्र, आभूषण पहना कर शत्रु की तलवार की धार के नीचे अपने पुत्र को रख दिया।झांसी की रानी, रानी दुर्गावती,पि नी सभी ने किसी न किसी मूल्य को जीवित रखने के लिये प्राणोत्सर्ग किये।

विषयवस्तुः

ईश्वर वह वृत्त है, जिसका कृपा केन्द्र हर जगह है किन्तु जिसकी परिधि कहीं नही है।

एम्पीडाक्लीज

ईशवर की बनाई हुई इस सृष्टि में सभी कुछ ऐसा है जो परोपकार के भाव से ओतप्रोत है।नदियाँ जल देतीं हैं जो मनुष्य का जीवन है,वृक्ष हमें फल, फूल, सब्जियाँ, देते हैं, धरती हमें अन्न देती है,विभिन्न खनीज देती है, गाय हमें दूध देती है, सभी कुछ परहित के धर्म का निर्वाह करते हुए अपना जीवन जीते हैं।केवल मानव ही ऐसा है जो सिर्फ अपने लिये जीता है विषेश रूप से आज का मानव, उसने किसी भी मूल्य को अपने जीवन में कोई स्थान नही दिया है। वह अपने समय,अपने धन, अपने ज्ञान अथवा जानकारी,,अपनी क्षमता सभी का प्रयोग सिर्फ अपने लिये ही करना चाहता है। दूसरे के प्रति हित की भावना कभी भूले से भी उसके मन में उत्पन्न नही होती। यह जीवन पशुसम है।

धन ही उसका केन्द्र बिंदू बन गया है जिसके इर्द गिर्द ही उसका जीवन घूमता है।यदि कहीं उसे अपने हित के रास्ते में दूसरे का हित बाधा बना दिखाई देता है तो वह क्षणांश की भी देर नही लगाता उसका अहित करने से ।देश लोग देश ,मातृभूमि ,प्रांत, प्रदेश, शहर, पडौस, मोहल्ला ,गली, परिवार सभी के हितों को सर्वोपरि रखते थे किन्तु अब ऐसा नही होता अब केन्द्र में वह स्वयं होता है और दूर दूर तक फैली परिधि में भी उसके स्वयं के स्वार्थ होते हैं।

महात्मा गांधी ने अपना सारा जीवन देश को अर्पण कर दिया था। उन्होने नही चाहा कि वे ऐश ओ आराम का जीवन जीयें। उन्होने अपनी धोती को भी छोटा कर लिया था कि देश के गरीबों को वस्त्र मिल सकें।अफ्रीका से मिले सोना,हीरे ,जवाहिरात के उपहारों पर भी उन्होने अपना अधिकार नही समझा और मेडिकल कॉलेज की नींव रखने में उसका उपयोग किया।महात्मा गांधी इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंसेज सेवाग्राम वर्धा महाराष्ट्र में उन्ही के द्वारा स्थापित किया गया था।

वे स्वयं सूत कातते थे तथा कई लोगों को स्वावलंबी बनाने के लिये उन्होने कुटीर उद्योगों को विकसित करने की प्रेरणा दी।

सम्पूर्ण विश्व में हुए वैज्ञानिक आवीष्कार मानव कल्याण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा किये गए हैं।टेलीफोन से मोबाईल तक ,कम्प्यूटर ,टी.वी.,बस से ट्रेन हवाई जहाज तक सभी कुछ आज मानव के जीवन को अधिकाधिक आराम देह बनाने के काम आता है।महान संतों ने लोगों को अच्छे विचारों के प्रवचन देकर मार्गदर्शन किया। सभी कवियों ,साहित्यकारों,कहानीकारों,नाटककारों, उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं से सत्य का प्रकाश फैलाया और इसके द्वारा परहित परकल्याण के मूल्यों को भी स्थापित किया। यहाँ तक कि हिन्दी सिनेमा में भी वर्षों देश अर्थात अपने आरंभिक काल में इन्ही मूल्यों की स्थापना के लिये कार्य किया एवं समाज पर उसका काफी सकारात्मक प्रभाव पडा।

विश्व के सभी देशों में मूल्यों को महत्व दिया जाता है।इनकी आधारशिला हमेशा बाल्यकाल में ही रखी जाती है।अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अपने बाल्यकाल में जब वे स्वयं काफी गरीब थे रास्ते से एक कोढी बूढे आदमी को अपने घर उठा लाए थे। उन्होने अपने हाथों से उसके घाव धोए मरहम पट्टी की । वह बूढा चिडचिडा था और लगातार उन्हे गालियाँ देता रहा परन्तु उन्होने उसकी परवाह नही की और

उसकी सेवा करते रहे। महात्मा गांधी ने भी इसी प्रकार कोढियों की सेवा की।उनके अनुयायी बाबा आमटे ने तो आनंद वन स्थापित किया जहाँ कुष्ट रोगियों का इलाज किया जाता है और उन्हे आत्म निर्भर भी बनाया जाता है। पहाड तोड कर रास्ता बनाने वाले ,बंजर जमीन पर हरे भरे पौधे लहलहाने वाले गरीबों की सेवा करने वाले निरिह पशु पक्षियों की सेवा करने वाले कई महापुरूषों ने हमारे इस पवित्र देश में जन्म लिया और उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन इन्ही परोपकारी कार्यों में लगा दिया।

जब महाराणा प्रताप अपने राज्य से च्युत होकर वनो मे भटक रहे थे तो उनके पास खाने को कुछ न था वे घास की बनी रोटी खाते थे। उस समय अचानक एक भिखारी के आने व अपने भूखे होने की बात कहे जाने पर उनकी अत्यंत छोटी बेटी ने अपने हिस्से की रोटी उस बूढे भिखारी को दे दी। हमारे देश में अतिथि को भगवान माना जाता है। कुछ समय के उपरांत महाराणा प्रताप की वह छोटी सी परोपकारी बेटी ने अपने प्राण भी त्याग दिये थे।

उपसंहारः

आज के आसपास के वातावरण को देख कर मन दुःखी हो उठता है।मरणासन्न होते इन जीवन मूल्यों को पुर्नजीवन देने की आवश्यकता है और उसे नवयुग के युवक युवतियाँ ही कर सकते हैं।न तो राजनीति में परहित और परोपकार की भावना रखने वाला नेता है और न ही समाज में कोई ऐसा दिखता है। नेताओं का कार्य समाज सेवा होता है और इसीलिये उन्हे चुन कर संसद में भेजा जाता है किन्तु वे जनता को वोटों से तौलते हैं। जनता के कष्ट का उन्हे लेशमात्र भी खयाल नही होता।कुछ एन.जी.ओ. परोपकार और परहित के लिये स्थापित किये जाते हैं किन्तु उन्हे अपने प्रचार प्रसार में अधिक रूचि होती है। कई लोग इन संस्थाओं को मिलने वाले अनुदान में अधिक रूचि रखते हैं।जब कहीं रेल दुर्घटना होती है, बॉम्ब

ब्लास्ट होता है तो ये संस्थाएं कहीं दिखाई नही पडतीं हाँ! कुछ सेवाभावी ,परोपकारी,परहित कारी लोग अवश्य घायलों की मदद करते दिखाई पड जाते हैं।

जीवन इतना छोटा भी नही कि सौजन्य के लिये समय न मिले।

एमर्सन

49 आवश्यकता आवीष्कार की जननी है।

प्रस्तावनाः

जो दूसरों को कठिन प्रतीत हो उसे आसानी से कर दिखाना कौशल है ,जो दूसरों को असंभव लगे उसे कर दिखाना प्रतिभा है।

एमिली

मनव की आज तक की प्रगति अपने आप में एक लंबा इतिहास समेटे हुए है और इसकी आधार शिला यही वाक्य आवश्यकता आवीष्कार की जननी है।

यह सत्य है कि विश्व के अलग अलग देशों में अलग अलग समय मे सभ्यताए विकसित हुई।पृथ्वी के करोडों वर्शों के पूर्व के इतिहास में अभी तक हम वैज्ञानिकों की इस धारणा को सत्य मानते हैं कि पृथ्वी सूर्य का ही एक हिस्सा है और उससे अलग होकर धीरे धीरे ठंडा हो गया इस पर सृष्टि और विभिन्न जीव जन्तुओं का और मानव का अविर्भाव हुआ। प्रागेतिहासिक काल का मानव पशु की तरह था। उस युग को पाषाण युग भी कहते हैं।क्यों कि प्रस्तर अर्थात पत्थर की गुफाओं में रहना ,पत्थर के नुकीले औजारों के प्रयोग से आखेट अर्थात शिकार करना ,पशुओं का कच्चा मांस खाना ,उसकी खाल लपेटना या पेड की छाल को शरीर पर लपेटना। एक बार धरती से निकले लावे में जब उसके शिकार का मांस

भुन गया वह उसे स्वादिष्ट लगा तो उसने स्वयं आग उत्पन्न करने की ठानी। पत्थर से पत्थर रगड कर उसने जो आग निकाली वो माचिस की डिबिया ,लाईटर ,इलेक्ट्रॉनिक लाईटर में सिमट गई है।वह आग उत्पन्न करने के तरीकों को परिष्कृत करता गया और यह सब संभव हो सका।

विषयवस्तुः

यदि कठिनाईयाँ न होतीं तो मनुष्य की प्रगति न होती,न मानव चरित्र का उद्‌घाटन और विकास होता।

जेम्स एलन

जब मानव को जमीन पर बिखरे अनाज के दाने मिले , तो उसने कुछ खाए और कुछ जमीन में दबा दिये,वे फिर से कोंपल बन कर प्रस्फुटित हुए और उसने कृषि करना शुरु कर दिया।

जब उसने बछडे को गाय का दूध पीते देखा तो उसने स्वयं दुधारु पशुओं को पाला। जब पैदल एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना उसे कष्टकर अनुभव हुआ तो उसने घोडे ऊँट और गधे की सवारी की। उसमें और गति लाने के लिये उसने पहिया या चक्का बनाया जो बैलगाडी, घोडागाडी, रेलगाडी, बस, कार, ऑटो से होता हुआ तीव्रतम गति वाली बुलेट ट्रेन तक आ पहुँचा है।

स्टेज थियेटर रेडियों ट्रांजिस्टर टेपरिकॉर्डर ,टी.वी., वी.सी.आर., आईपॉड इत्यादि मनोरंजन के आधुनिकतम आवीश्कारों तक की उसकी यात्रा ,उसकी और अधिक और अधिक आरामदेह मनोरंजन पाने की प्रवृति की द्योतक है।हल और बैलों के स्थान पर वह तीव्र गति वाले ट्रेक्टर से खेती करने लगा। अपने आराम के साधनों में गर्मी लगने पर पंखा,कूलर,ए.सी. ,बनाए।बर्तन धोने की मशीन कपडे धोने की मशीन झाडू

लगाने के लिये वेक्यूमक्लीनर, इत्यादि उसने अधिक से अधिक आराम पाने की आवश्यकता के कारण किये गए आवीष्कार हैं।

अब उसके हाथ में रिमोट है जिससे वह एक स्थान पर बैठे बैठे टी.वी. के चॅनल्स बदल सकता है,कार लॉक कर सकता है।उसकी घास फूस से बनी झोपडी अब शानदार बंगलों और विशालकाय अट्टालिकाओं जो कि बहु मंजिला होतीं हैं में परिवर्तित हो गई है।

अपने लेखन को आसान बनाने के लिये उसे रजिस्टर करने के लिये टाईपराईटर के बाद उसने कम्प्यूटर का आवीष्कार किया।अपने संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने के लिये देश कबूतरों का प्रयोग किया,फिर दौडने वाले हरकारे,फिर घोडों पर हरकारे भेजे। अंग्रेजों ने एक सुद्रढ डाक व्यवस्था का निर्माण किया जो आज फोन मोबाईल और इंटरनेट तक आ पहुँचा है। क्षण मात्र में विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक संदेश आ जा सकते हैं, टाईप कर के एक दूसरे से बात की जा सकती है जिसे चॅटिंग कहते हैं,वेब कॅम की सहायता से बातें करने वाले दोनो व्यक्ति एक दूसरे को देख भी सकते हैं,हेड फोन लगा कर उसकी आवाज भी सुनी जा सकती है। यह सत्य है कि विकास की प्रकृिया इंग्लेंड अमेरिका और युरोप में देश आरंभ हुई अतः वे लोग देश विकसित हुए और उपरोक्त वस्तुओं में अधिकांश आवीष्कार वहीं हुए किन्तु कम्प्यूटर के क्षेत्र में भारत ने सबसे तीव्र गति के सुपर कम्प्यूटर का निर्माण भी किया और भारत के बुद्धिमान युवा विश्व के विकसित देशों में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हैं।

अब मानव का कम्प्यूटर घंटों का काम मिनिटों में करता है,हजार व्यक्तियों का कार्य अकेला कम्प्यूटर निपटा देता है,मानव की हजारों मील की यात्रा चंद घंटों में सिमट गई है।ये सारी सफलताएं उसे एक ही प्रयास में नही मिली उसे कई बार असफलता का मुँह भी देखना पडा होगा परन्तु उसने प्रयास रोके नही।

Our greatest glory is not in never failing,but in rising everytime we fall.

Confecius

उपसंहारः

मानव की प्रगति पर कहीं भी विराम नही है।उसने मेडिकल साईंस में आज दुः साध्य रोगों का इलाज ,लेप्रोस्कोपी से किये जाने वाले ऑपरेशन सभी कुछ ढूँढ निकाले हैं।उसकी प्रयोगशालाओं में नित नए प्रयोग करने की गति अबाध गति से चलती रहती है। जब कोई नया आवीश्कार हमारे सामने आता है तो हम आश्चर्य मिश्रित हर्ष से भर उठते हैं। आज वह पृथ्वी के इर्द गिर्द बनी ओजोन परत के छिद्र को बंद करने के लिये प्रयास रत है क्यों कि ए.सी. और फ्रीज से निकलने वाली गैस से यह छिद्र दिनो दिन बढता जा रहा है।यह सूर्य के प्रकाश को छान कर उसके दूषित पदार्थों को रोक कर प्रकाश एवं ऊष्मा को धरती तक भेजती है। यदि इस छिद्र को बंद न किया गया तो सूर्य की किरणे सीधी धरती पर आएंगी जो हमारे लिये घातक है क्यों कि सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणे कई प्रकार के स्किन केंसर्स को बढाएंगी।

इसके अलावा विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, पृथ्वी के गर्भ में घटता जलस्तर, और बढता तापमान सभी कुछ मानव के लिये चिंता का विषय हैं और वह इनके उपाय ढूँढने में दिन रात लगा है।

सबसे देश मानव ने चँद्रयात्रा की,अंतरिक्ष में अपने अपने उपग्रह स्थापित किये। हमारे देश के राकेश शर्मा प्रथम अंतरिक्ष यात्री थे। अमेरिका की नासा नामक संस्था नित्य नए प्रयोग करती है। उसने मंगल ग्रह की भी पूरी जानकारी प्राप्त कर ली है। हाल ही में चँद्रमा पर भी जल की तलाश में विस्फोट किया। भारतीय मूल की कल्पना चावला नासा की

एस्ट्रोनॉट थी। दुर्भाग्य वश बारह सदस्यों वाला यान कोलंबिया दुर्घटनाग्रस्त हो कर टेक्सॉस में जा गिरा और सभी सदस्य मृत्यु को प्राप्त हुए। प्रयास रूके नही भारतीय मूल की ही सुनीता विलियम्स काफी लंबे समय तक अंतरिक्ष में रह कर ढेर सारी जानकारियाँ लेकर सुरक्षित लौट आईं।प्रगति के कदम कभी रूकते नही।

50 अहिंसा परमो धर्म

प्रस्तावनाः

स्वयं को पहचानने के लिये हमें स्वयं से बाहर निकल कर तटस्थ बन कर खुद को देखना चाहिये।

महात्मा गांधी

अहिंसा यह शब्द सर्वप्रथम उल्लेख वर्धमान महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध ने किया।दोनो ही कमशः जैन एवं बौद्ध धर्म के प्रणेता थे।जैन धर्म के अनुयायी हमारे देश में काफी संख्या में हैं एवं वे अपने धर्म के सभी नियमों का कट्टरता से पालन करते हैं।वर्धमान महावीर राजपुत्र थे किन्तु राजपाट छोड कर वे सन्यासी हो गए एवं जीवन दर्शन की खोज में घर से निकल पडे थे।आने वाले समय में जितने भी तीर्थंकर जैन धर्म में हुए उन्होने महावीर स्वामी का अनुकरण किया।उन्होने जो दर्शन स्थापित किया उसके अनुसार प्रत्येक जीव जो मनुष्य हो पशु हो अथवा छोटा सा कीट हो जीवन का अधिकारी है और किसी को किसी की हत्या करने का अधिकार नही है।

भगवान बुद्ध ने भी राजपुत्र होते हुए भी राजमहल त्याग दिया। अपनी पत्नि और पुत्र को त्याग कर घर से निकल पडे ।कहा जाता है कि उनके पिता ने उन्हे इतने सुख दिये थे कि उनका दुः ख से परिचय ही न हो।उन्होने अपने पुत्र को महल की चारदीवारी में सभी सुख उपलब्ध कराये।बुद्ध जिनका आरंभिक नाम सिद्धार्थ था का विवाह अत्यंत सुंदर कन्या यशोधरा से

किया।शीघ्र ही उन्हे राहुल नामक पुत्र की प्राप्ति हुई ।एक दिन सिद्धार्थ ने सारथी से महल से बाहर घूमने की इच्छा प्रकट की ।सारथी उन्हे लेकर निकल पडा।रथ में बैठे सिद्धार्थ ने कमशः रोगी, कोढी, वृद्ध एवं अर्थी को देखा। चारों कौन है इसके उत्तर सारथी ने उन्हे दिये।जीवन के ये रूप वृद्धावस्था और मृत्यु की सत्यता को जान कर उन्हे संसार से विरक्ति हो गई और वे महल छोड कर निकल पडे।बोधगया में बोधीवृक्ष के नीचे उन्हे ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होने बौद्ध धर्म की स्थापना की।

विषयवस्तुः

सम्राट अशोक बहुत ही वीर शासक थे और युद्ध करके आसपास के राज्यों को अपने साम्राज्य में मिलाने का शौक था। जब उसने कलिंग पर आकमण किया तो वहाँ की सेना बहादुरी से लडी। अशाोक को विजय प्राप्त हुई किन्तु जब वह युद्ध भूमि में गया तो चारों ओर बिछी लाशे ही लाशें देख कर उसका मन ग्लानि से भर गया उसने बौद्ध धर्म की शरण ली उसने इस धर्म का प्रचार प्रसार भी किया।उसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को भी प्रचार करने के लिये श्रीलंका, जावा ,सुमात्रा इत्यादि स्थानों पर जिनमें चीन जापान प्रमुख है,बौद्ध धर्म के विशव भर में कई अनुयायी हैं।भारत में बौद्ध धर्मावलंबियों की संख्या कम है। भीमराव अंबेडकर ने इस धर्म को ग्रहण किया था।उनके अनुयायी भी यह धर्म ग्रहण करने में रूचि रखते हैं।

महात्मा गांधी ने अहिंसा का प्रयोग एक महान उधेश्य के लिये किया था।अंग्रेजों से दो सौ वर्षों की गुलामी से स्वतंत्रता पाना और वह भी अहिंसा द्वारा, असंभव सा प्रतीत होता है किन्तु यह चमत्कार हुआ।अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त देश की जनता को उन्होने विश्वास दिलाया। असहयोग और सत्याग्रह जैसे हथियारों से उन्होने यह लडाई लडी। सारा देश उनके पीछे था। कुछ कांतिकारियों को अहिंसा पर विश्वास नही था उन्होने

दूसरा मार्ग अपनाया। इनमें भगतसिंह ,चँद्रशेखर आजाद,राजगुरु,खुदीराम बोस,इत्यादि कई लोग थे जो शहीद हुए। अंग्रेजों ने देश को आजाद किया किन्तु जाते जाते उन्होने बँटवारे का जहरीला बीज भी बो दिया। हिन्दुस्तान पाकीस्तान दो टुकडों में देश विभक्त हुआ।भारी मारकाट मची। दोनो ओर के हजारों लोग मारे गए।वे जो कल तक अंग्रेजों के विरुद्ध एक दूसरे के कंधे से कंधा मिला कर लडे थे, वे ही एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए।जो ट्रेनें इधर से उधर जा रहीं थीं उनमें भी लाशें भरीं हुई थीं और जो उधर से इधर आ रहीं थीं उनमें भी लाशें भरीं हुईं थीं।इतनी हिंसा हो रही थी ,पैदल काफीलों में जाने वाले लोगों पर भी हमले हो रहे थे।महात्मा गांधी बहुत दुःखी हो गए और आमरण अनशन आरंभ कर दिया। दोनो ओर के लोग उनका बहुत सम्मान करते थे और उन्होने मारकाट बंद कर दी।इस प्रकार बापू ने एक बार फिर अहिंसा के अस्त्र से विजय प्राप्त की। महात्मा गांधी का बँटवारे के निर्णय पर सहमति देना कुछ लोगों को नही भाया और उनमें से एक नाथूराम गोडसे ने 30 जनवरी को महात्मा गांधी को ,जब वे प्रार्थनासभा में जा रहे थे,तीन गोलियाँ मारकर उनके प्राण ले लिये।इस प्रकार अहिंसा और ाांति का पुजारी एक हिंसक मृत्यु का शिकार हुआ।

आजादी के बाद हमने दो बडे युद्ध, एक चीन और एक पाकीस्तान के साथ देखे।एक युद्ध हाल ही में कारगिल युद्ध पाकीस्तान से हुआ। कश्मीर आजादी के बाद से ही दोनो देशों के बीच विवादित मुद्दा बना हुआ है।सीमा पर हमेशा ही सुरक्षा बलों और उनके सैनिकों के बीच हमेशा ही गोलाबारी होती ही रहती है। किन्तु पिछले 22 वर्षों से आतंकवाद के जो हमले देश के विभिन्न भागों में हो रहे हैं वे त्रासदायी हैं।कभी भी, कहीं भी बॉम्ब ब्लास्ट हो जाता है और कई निर्दोष लोग, स्त्रियाँ बच्चे मारे जाते हैं। ये ब्लास्ट कभी ट्रेन में, कभी बस में, कभी मार्केट में या सिनेमाघर में होते रहते हैं।इनकी कठोरता पूर्वक समाप्ति आज के समय की अविलंब आवश्यकता

है।सरकार को इन्हे दबाने के कठोर प्रयास करने होंगे।कडे कानून बना कर इन मुकदमों का फैसला भी जल्दि से जल्दि करवाना होगा। ये दीमक की तरह देश की जडों को खा रहे हैं और यह अहिंसा से खत्म किया जाने वाला रोग नही है।

उपसंहारः

किसी भी तत्थ्य अथवा मूल्य का जीवित रहना, पुष्पित पल्लवित होना देश काल परिस्थिति पर निर्भर करता है। यह सही है कि कलिंग युद्ध की भयावहता देख कर सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तित हुआ और उसने बौद्ध धर्म की ारण ली किन्तु आज के आतंकवाद से निपटने के लिये इंग्लेंड और अमेरिका को भी कठोर कदम उठाने पडे क्यों कि दोनो ही देशों में आतंकवादियों ने दुस्साहसपूर्ण हमले करके वहाँ की अर्थ व्यवस्था को चोट पहुँचाने का प्रयास किया। अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हवाई जहाज टकराकर और इग्लेंड की लाईफलाईन मानी जाने वाली ट्यूब अर्थात मेट्रो पर एक साथ पाँच जगहों पर आतंकवादी हमले किये गए।

ये आतंकवादी रक्त बीज की तरह पनप रहे हैं। यदि इन्हे कठोर कदम उठा कर समाप्त न किया गया तो धीरे धीरे कोध और आकोश की ज्वाला भभक उठेगी और सारा देश भयानक अराजकता का शिकार हो जाएगा।

महात्मा गांधी की अहिंसा क्या आज प्रासंगिक है? अहिंसा परमो धर्म को यदि लोग मानते हैं तो निरिह पशु पक्षियों को न मारें,गरीब और मजबूरों पर अत्याचार न करें,कोध न करें,शशांति से प्रेमपूर्वक बोलें।इतनी अहिंसा भी यदि हम अपनाएं तो काफी है।

51 आधुनिक मनोरंजन के साधन

प्रस्तावनाः

कल का दिन किसने देखा है

आज का दिन हम खोएं क्यों?

जिन घडियों में हँस सकते हैं

उन घडियों में रोएं क्यों?

मनुश्य का जीवन आकस्मिकताओं से भरा हुआ है,और संभावनाएं एवं आशंकाएं दोनो ही इसके महत्वपूर्ण अंग हैं।दो तीन पीढीयों देश जीवन जीने के तरीके बिल्कुल भिन्न थे।सुबह होती है ,शाम होती है,जिंदगी यों ही तमाम होती है की तर्ज पर जीवन गुजरता था। त्यौहार और घर में होने वाले उत्सव जनेऊ, विवाह इत्यादि ही उसके लिये मनोरंजन थे। सिनेमा का आगमन समाज मे हो चुका था किन्तु अधिकांश घरों में सिनेमा देखना अच्छा नही माना जाता था।अच्छी पुस्तकों की कमी नही थी और बुद्धिजीवी वर्ग उन्हे पढ कर अपना मनोरंजन भी करता था। ताश खेलना अच्छा नही समझा जाता था।चारों ओर से प्रतिबंधित जीवन कैसा होता होगा? स्त्री का सारा जीवन घरेलू कामकाज में ही व्यतीत हो जाता था और पुरूष जीवन यापन के साधन जुटाने में व्यस्त रहते थे।विवाह जल्दि कर दिये जाते थे। आज की तरह आराम के संसाधन नही थे अतः दिनचर्या कठोर परिश्रम से युक्त थी। बच्चों को सात वर्श की उम्र से देश स्कूल नही भेजा जाता था और यह कह कर कि पढोगे लिखोगे बनोगे नवाब ,खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब यह कह कर उन्हे खेलने भी नही दिया जाता था।

विषायवस्तुः

मानव जीवन की प्रगति जो आज के स्तर तक पहुँची है,विज्ञान की देन है।विज्ञान ने उसे अनेक ऐसे साधन दिये हैं जिनसे मनोरंजन कर वह अपने नीरस जीवन और उबाऊ दिनचर्या से कुछ देर के लिये मुक्ति पा सकता है।मनोरंजन

एक आवश्यक तत्व है क्यों कि वह व्यक्ति के जीवन में नवस्फूर्ति का संचार करता है।

आधुनिक काल में मनोरंजन के निम्न साधन है।

खेलः

खेलना यदि इनडोर है तब वह मनुष्य के मस्तिष्क को प्रखर बनाता है जिसमें शतरंज प्रमुख है।अंग्रेजों के जमाने से ही यह खेल खेला जा रहा है। भारत में भी इस खेल के विश्वस्तरीय खिलाडी हैं। खेल यदि आऊटडोर हैं तब भी वह मनोरंजन तो करता ही है साथ ही स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी मददगार साबित होता है। खेलों को देश में राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर के खिलाडी ढूँढने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। जिसे खेलने का शौक होता है उसे उससे बेहतर कोई मनोरंजन नही लगता है,वह मौका मिलते ही खेलने लग जाता है। क्रिकेट, हॉकी ,फुटबॉल, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल इत्यादि ऐसे खेल हैं जिसमे बच्चे और युवक पूर्ण रूचि रखते हैं और राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर चेंपियनशिप जीत कर देश का नाम रोशन करते हैं। बहुत कम लडकियाँ खेल में रूचि लेती दिखाई देतीं हैं लेकिन हॉकी टीम ने विश्व विजेता बन कर देश को गर्वोन्नत कर दिया।

सिनेमाः

दूसरा मनोरंजन का साधन सिनेमा है।सिनेमा का इतिहास साठ वर्षों से अधिक पुराना है। आरंभ में मूक फिल्मे बनतीं थीं। मुख्य रूप से धार्मिक कथाओं पर आधारित हुआ करतीं थीं,फिर बोलती फिल्मों में पहली फिल्म आलमआरा थी,आज रंगीन फिल्में बनतीं हैं जो देश श्वेतश्श्याम यानी ब्लेक एन्ड व्हाईट होतीं थीं। फिल्मी कहानियों के स्तर में भी परिवर्तन हुए हैं। जहाँ 60 और 70 के दशकों को अच्छी पटकथा के कारण अच्छे संगीत के कारण गोल्डन ईरा कहा गया है वहीं उसके बाद स्तर गिरने का सिलसिला आरंभ हुआ। तकनीकी द्रष्टि से विकसित हुई कुछ फिल्में बेहतरीन स्तर की बनीं। लगान, ब्लॅक, देवदास जैसी फिल्में ऑस्कर के लिये नॉमीनेट भी हुईं।

तारे जमीन पर का भी नॉमीनेशन हुआ था। देश फिल्म देखने का शौक ज्यादा महंगा नही था आज इसे मल्टी प्लेक्स में 150, 170, 180 रूपये की टिकिट लेकर देखना पडता है।इंटरवल में खरीदे जाने वाले पॉपकॉर्न भी 200 रूपयों में मिलते हैं तो एक सामान्य आदमी के लिये परिवार के साथ देखना काफी महंगा शौक है।

टी.वी.ः

टी.वी. मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम है।1980...81 मे भारत में इसका आगमन हुआ उससे देश तक लोग रेडियो ट्रांजिस्टर पर फिल्मी गाने अथवा कहानियाँ सुनकर अपना मनोरंजन करते थे। आरंभ में टी.वी.भी ब्लेक एन्ड व्हाईट हुआ करता था बाद मे रंगीन हुए। आरंभ में ंदूरदर्शन विभाग के पास प्रसारण के समस्त अधिकार हुआ करते थे अतः बेकार उबाऊ कार्यक्रम देखने पडते थे।आज प्रायवेट चॅनल्स में मनोरंजन की भरमार है और 24 घंटे इनका प्रसारण होता रहता है।यह हर वर्ग में लोकप्रिय है क्योंकि बच्चों युवाओं वृद्धों सभी को अपनी अपनी पसंद के कार्यक्रम इसमे मिल जाते हैं।

विडियो गेमः

ये हाथ में रिमोट लेकर खेला जाने वाला खेल है।यह मोबाईल के स्क्रीन पर अथवा कम्प्यूटर में इन्सर्ट कर के अथवा इन्स्टॉल करके, तथा बडे बडे पार्लर्स में भी खेला जाता है। इस मनोरंजन पर भी काफी खर्च होता है यदि वह पार्लर में खेला जाए।

राईड्सः

यदि आपके शहर में बडा पार्क है जहॉं इस तरह के राईड्स हैं तो आप उन पर भी मनोरंजन ,रोमांच का आनंद ले सकते हैं। इसकी टिकिट खरीदने के लिये भी आप को रूपये खर्च करने होते हैं। ये राईड्स बहुत रोमांचक होती है एवं जिन्हे

इनसे डर लगता है वे इससे दूर ही रहते हैं।यह बडे शहरों तथा महानगरों तक सीमित है। छोटे शहरों तथा गाँवों तक इनकी पहुँच नही है।

आईपॉड,मोबाईलः

मोबाईल गेम खेलना ,एस.एम.एस. अथवा एम.एम.एस भेजना आज के युवा वर्ग को बहुत भाता है।मोबाईल में म्युजिक इन्स्टॉल किया हुआ होता है,हर युवा वर्ग के कानों में लगे ईयर फोन और उसका आनंद लेता युवा वर्ग आपको हर जगह ट्रेन ,बस,मेट्रो,अथवा रोड पर चलता हुआ दिखाई दे जाएगा। आई पॉड में गानों की संख्या बहुत अधिक होती है अर्थात अपनी पसंद के गानों को एक बार चला दें और देर तक आप अपना मनारंजन कर सकते हैं और आपको बार बार सी.डी. या केसेट की तरह बदलते रहने की आवश्यकता नही होती।

क्लबः विदेशों में इसका प्रचलन बहुत है और वहाँ के लोग सप्ताहांत वहीं मनाते हैं।नाच गाना सभी कुछ वहाँ होता है।धीरे धीरे हमारे देश में भी प्रचलित हो रहा है। यहाँ भी विभिन्न मनोरंजक खेल खेले जाते हैं।

विज्ञान दिन रात प्रगति कर रहा है।मानव का मन भी हर बार नवीन और नवीन और नवीन चाहता रहता है अतः आज जो हमें नवीनतम लगता है हो सकता है कल यह पुराना लगे क्योंकि कल कोई और विकसित मनोरंजन का साधन हमारे सामने हो और हम उससे अपने मन को बहला रहे हों।

जीवन से सामंजस्य बनाए रखने के उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं, परन्तु उनकी आवश्यकता और कल्पना ,भावना के साथ घटती बढती रहती है।

पुरस्कार के सौजन्य से द्वारा जयशंकर प्रसाद

52 मेरी प्रिय पुस्तक ....देवदास

प्रस्तावनाः

स्याही की एक बूंद दस लाख आदमियों को विचार मग्न कर सकती है।

मुझे बचपन से ही कॉमिक्स कहानियाँ और उपन्यास पढने का शौक रहा।मेरे माता पिता ने इस मामले में मुझे कभी हतोत्साहित नही किया। मैने पुस्तक पढने को ही अपना मनोरंजन बनाया,और मुझे विभिन्न पुस्तकें पढने से ज्ञान भी प्राप्त हुआ।विभिन्न कहानीकारों ,साहित्यकारों और उपन्यास कारों की भाषाशैली का वैविध्य उसकी पृष्ठभूमि में अलग अलग काल ,समाज एवं संस्कृतियों का उल्लेख ,मुझे यह विभिन्नता बहुत अच्छी लगती रही। इससे व्यक्ति किसी विशिष्ठ स्थान पर जाए बिना ही वहाँ की भाषा रहन सहन ,रीति रिवाज,परंपराएं संस्कार,एवं संस्कृति के बारे में जान पाता है।मैने एक नोटबुक भी बना ली है जिसमें मै कोई भी अच्छा वाक्य जो पुस्तक का अंश हो ,पुस्तक के नाम और लेखक के नाम के साथ नोट कर लेती हूँ।ये वाक्य मुझे बडी प्रेरणा देते हैं।मैने शरतृचँद्र, बंकिमचँद्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर , प्रेमचँद्र, शिवानी, मृणाल पाण्डे इत्यादि कई लेखक लेखिकाओं की पुस्तकें पढीं और सर्वश्रेष्ठ का चयन करना दुष्कर कार्य है।

विषयवस्तुः

किसी सुंदर वाक्य का निर्माण करने वाले के बाद उसकी बारी आती है जो सर्वप्रथम उसका प्रयोग करता है।

एमर्सन

जिसप्रकार पुरानी लकडी जलाने में उपयोगी,पुराना घोडा चढने में अच्छा,पुरानी पुस्तक पढने में अच्छी होती है, उसी प्रकार पुराने मित्र भी विश्वसनीय होते है।

लियोनॉर्ड राईट

मैने शरतचँद्र के लगभग सभी उपन्यास पढे।जिनमें श्रीकांत,चँद्रनाथ,परिणिता,मँझली दीदी,देवदास प्रमुख हैं। इन सभी में देवदास मुझे अत्यंत प्रिय है। भारतीय फिल्म उघोग के लिये भी यह प्रेरणा बनी और इस पर तीन बार फिल्में भी बन चुकी हैं।

देवदास और पारो दो छोटे छोटे बच्चे जो अडौस पडौस में रहते हैं,साथ साथ खेलते हैं,शशरारतें करते हैं,बागों से अमरूद चुरा कर खाते हैं और इसी तरह अपना दिन बिताते हैं।देवदास एक बहुत बडे जमींदार के सबसे छोटे पुत्र हैं,विशालकाय हवेली में रहते हैं, घर में माता पिता भाई भाभी के अलावा ढेर सारे नौकर चाकर हैं। देवदास एक उच्च कुल के पुत्र हैं।

पारो एक गरीब घर से संबंध रखती है और नीच कुल की है।मै यहाँ यह बता दूँ कि बंगाली समाज में कुछ समय पूर्व तक या शायद आज भी इस बात को अत्यंत महत्व दिया जाता है कि कौन उच्च कुल का है कौन नीच कुल का है,यह ब्राम्हणों का विभेद है और इसे बंगाली समाज की कुरीति ही माना जाना चाहिये।ब्राम्हणों में गांगुली शीर्ष पर हैं,एवं मुखर्जी ,चटर्जी ,बॅनर्जी कमशः गिरते हुए स्तर के प्रतीक माने जाते हैं।

पारो की माँ देवदास को प्रेम से भोजन कराती है और देवदास के घर उसका आना जाना या संदेश ले जाना, संदेश एक प्रकार की बंगाली मिठाई जो छेने से बनती है। एक प्रकार का मैत्रीपूर्ण रिश्ता वर्णित किया गया है।

युवावस्था वह अवस्था है जब लडका और लडकी में परस्पर आकर्षण होना एक स्वाभाविक प्रकि्या है। पारो और देवदास भी खेलते कूदते हुए युवावस्था की दहलीज तक आ पहुँचे और एक दूसरे के प्रति गहरा आकर्षण महसूस करने लगे किन्तु इसके पहले कि वे इस भावना को प्रकट कर पाते देवदास को शिक्षा प्राप्ति के लिये लंदन भेज दिया जाता है।

देवदास के पिता उन चंद भारतीयों में से एक हैं जो अंग्रेजों के हिमायती थे और इसीलिये रायबहादुर जैसी पदवी से अंग्रेजों द्वारा नवाजे गए।वे एक ओर अंग्रेजी रहन सहन को अपनाकर प्रगतिशीलता का दम भरते थे दूसरी ओर अपनी जातिगत कुरीतियों अर्थात उच्च कुल और नीच कुल की बेडियों से बँधे हुए थे।वे आर्थिक स्तर को भी विवाह का मापदंड मानते थे।

देवदास की दादी उससे बहुत प्रेम करती थी,माता भी माता ही थी और निर्विवाद रूप से अपने बेटे से प्रेम करती थी किन्तु उच्च कुल और नीच कुल की गहरी जडें उसके मन में भी थीं। भाई अवश्य देवदास से प्रेम करते थे किन्तु अपनी पत्नि के कहने पर देवदास को घर से बेदखल कराने के ृषडयंत्र में उसके सहायक बन जाते हैं। घर का बूढा नौकर निश्छल रूप से देवदास से प्रेम करता है।

देवदास के लंदन से लौटने पर पारो और देवदास दोनो ही एक दूसरे से मिलने को आतुर रहते हैं।विरह ने उनके प्रेम को और द्रढ कर दिया था।पारो की माँ दोनो के प्रेम को जानती और समझती है और इस विवाह का प्रस्ताव लेकर देवदास के घर जाती है।वहाँ से अपमानित कर निकाल दी जाती है।पारो द्वारा देवदास से पूछे जाने पर देवदास का कायरता पूर्ण उत्तर उल्लेखित है।एक ऐसा युवक जो अपने दबंग और प्रभावशाली पिता का विरोध न कर पाया। पारो की माँ ने अपमानित होकर लौटने के बाद मात्र आठ दिनो में पारो का विवाह देवदास से भी ज्यादा धनवान घर में कर देने की कसम खाई। उसने अपनी कसम का निर्वाह किया और पारो का विवाह एक ऐसे व्यक्ति से कर दिया जो बडा जमींदार है और युवा पुत्र पुत्रियों का पिता है। पारो बडी सी हवेली में आकर ठकुराईन तो बनी किन्तु वह पत्नि न बन सकी,उसके भीतर की प्रेमिका भी सांसे लेती रही।पारो के विरह में देवदास विरक्ति की चरम सीमा पर पहुँच जाता है,मदिरापान कर कर के उसने अपने शरीर को नष्ट होने के कगार तक पहुँचा दिया।इस बीच

चँद्रमुखी नामक नर्तकी का उसके जीवन में प्रवेश होता है।देवदास के बार बार उलाहना देने पर ,उसके नर्तकी होने को उपेक्षा की द्रष्टि से देखने पर वह नृत्य करना त्याग कर योगिनी सा जीवन बिताने लगती है। पारो और चँद्रमुखी दोनो एक दूसरे से मिलतीं हैं और मैत्री के संबंध में बँध जाती है।दोनो ही देवदास को मदिरापान के दलदल से बाहर निकालना चाहतीं हैं पर सफल नही हो पातीं हैं और अंत में पारो से मिलने की आस लिये देवदास उसके गाँव की चौपाल पर दम तोड देता है।

उपसंहारः

उपन्यास का अंत बडा ही मार्मिक है।पारो के पति पारो और देवदास दोनो के बारे में जान चुके थे।चौपाल पर पारो के गाँव का कोई देवदास नाम का युवक अंतिम सांसे ले रहा है यह सुनते ही पारो व्याकुल होकर मुख्य द्वार की ओर भागती है और जमींदार पति द्वारपाल को ऊपर से चिल्ला कर द्वार बंद करने का आदेश देता है, द्वारपाल पारो के वहाँ पहुँचते ही द्वार बंद कर देता है।पारो रोती बिलखती द्वार पीट पीट कर आर्तनाद कर रही है और दूसरी ओर पारो की प्रतीक्षा में देवदास खुली आँखों से प्राण त्याग देता है। यह अत्यंत मार्मिक वर्णन है जो मानस पटल पर गहरी छाप छोड जाता है।

आरंभ से समाज का दोनो के प्रेम में बाधा बनकर उपस्थित होना देवदास की मृत्यु तक अस्तित्व में रहा।अपनी संतान को अपनी जायदाद समझने वाले उस पीढी के माता पिताओं के प्रति कोई अच्छी भावना जाग्रत नही करता है। पुत्र पुत्रियों को स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में निखरने देना ही प्रत्येक माता पिता का कर्तव्य है।पुत्र पुत्रियों की इच्छाओं का सम्मान भी होना चाहिये।

53 वृद्धावस्था आज के परिप्रेक्ष्य में

प्रस्तावनाः

सबसे निकृष्ट घृणा अपने संबंधी की होती है।

टेसीटस

कहा जाता है कि जडों को पानी दो तो वृक्ष सदा हरा भरा पुष्पित पल्लवित होता रहेगा,फलों से लदा रहेगा। हमारे देश में जहाँ माता पिता को भगवान का दर्जा दिया गया है, कहा जाता है कि जब देवताओं में इस बात के लिये प्रतिस्पर्धा रखी गई कि जो पृथ्वी की परिक्रमा सर्वप्रथम लगा कर आएगा उसी की सर्वप्रथम पूजा की जाएगी तो सभी देवता अपने अपने वाहनो पर सवार होकर दौड चले तब गणेश जी ांति से बैठे रहे और थोडी देर में उठ कर उन्होने माता पिता की परिक्रमा कर ली।ब्रम्हा जी ने उन्हे ही विजयी घोषित कर दिया और आज भी कोई भी कार्य गणेश पूजा से ही आरंभ होता है,पढाई हो ,घर बनाने के लिये भूमि पूजा हो अथवा गृह प्रवेश हो ,विवाह हो ,यज्ञोपवित हो सभी कार्य गणेश पूजा से ही आरंभ होते हैं।यह कथा सिद्ध करती है कि माता पिता से बढ कर कुछ नही।

अज्ञानियों के लिये बुढापा पतझड है ,ज्ञानियों के लिये फसल कटाई का मौसम है।

ऐसे देश में वृद्धाश्रम का होना ही एक आश्चर्य की बात है किन्तु वृद्धाश्रम हैं और इनकी संख्या भी दिनो दिन बढती जा रही है।ऐसा नही है कि वहाँ लावारिस गरीब वृद्ध वद्धाएं रहतें हों ,वहाँ मध्य वर्ग ,उच्च मध्य वर्ग और उच्च वर्ग के माता पिता ही अधिसंख्य रुप में रहते हैं। वे कौन हैं ? वो पुत्र पुत्रियाँ जिनके माता पिता इस तरह उपेक्षित होकर वृद्धाश्रम में रहने को बाध्य हैं।

विषयवस्तुः

अहं एक चट्टान है जो स्वयं अपने भीतर से किसी को जन्म नही देती ,तथा जितना स्थान घेर लेती है,वहाँ सृष्टि या जन्म संभव नही हुआ करता।

नरेश मेहता

देश संयुक्त परिवार हुआ करते थे।माता पिता घर के मुखिया होते थे। यदि दादा दादी जीवित हैं तो अधिकांश निर्णय उनसे पूछ कर किये जाते थे।घर की सम्पत्ति इकठ्ठी ही हुआ करती थी।किस मद पर कितना खर्च होगा ,त्योहार में सबके लिये क्या उपहार खरीदे जाएंगे,विवाह में कितना खर्च होगा ,मकान बनाने मरम्मत कराने कोई नई वस्तु खरीदने के निर्णय बुजुर्ग लोग ही करते थे ,किन्तु पिछले चालीस वर्षों से संयुक्त परिवारों के टूटने का जो कम आरंभ हुआ वह आज भी निरंतर चल रहा है और संयुक्त परिवार समाप्तप्राय हो चुके हैं। अपवाद स्वरूप कुछ ही संयुक्त परिवार जीवित हैं।देश ये नौकरी, ट्रांसफर इत्यादि के कारण से टूटना शुरू हुए आज भी अधिकांश इसी बहाने से अलग रहते हैं।विवाह के बाद पुत्र और पुत्रवधु का अपना पारिवारिक जीवन आरंभ होता है,उनकी अपनी समस्याएं हैं, कभी अवास बदलना कभी ट्रांसफर, कभी बच्चों के शिक्षण की समस्याएं ऐसे में उनके लिये संभव नही होता कि वे अपने माता पिता का ध्यान रख सकें। ऐसी स्थिति मे माता पिता अकेले ही घर में नौकर के भरोसे रह जाते हैं।

कुछ बच्चे माता पिता के घर में तमाम सुविधाएं जुटा देते हैं और यही नौकर अपराधियों के लालच का कारण बनते हैं और वृद्ध माता पिता की मृत्यु का कारण भी।असहाय वृद्धों की अशक्त काया शक्तिशाली काल का सामना नही कर पाती और वे क्रूर हत्यारों का शिकार बन जाते हैं।पिछले तीस वर्षों में इन आँकडों में इतनी वृद्धि हुई है कि हर व्यक्ति सोचने पर मजबूर हो गया है।अधिकांशतः जो लोग विदेशों में जा बसते हैं वे अपने माता पिता को वृद्धाश्रम में रखना श्रेयस्कर समझते हैं

कि वहाँ उनकी उनके स्वास्थ्य की ठीक से देखभाल होगी। माता पिता को वहाँ भर्ती कराकर वे निश्चिंत हो जाते हैं। बूढे माता पिता अगर साथ हैं तो शायद इस एकांत को बाँट लें ,यदि दोनो में एक साथ छोड चुका है तो दूसरे के लिये मृत्यु तक एक वनवास काटना ही बाध्यता है। बूढी आँखों की टिमटिमाती रोशनी या तो पुत्र या पुत्रों के पत्रों की प्रतीक्षा करती हैं या वृद्धाश्रम के मुख्य द्वार पर उनके आगमन के स्वप्न देखतीं हैं। वे कभी उनसे मिलने आते हैं या नही, कभी उन्हे घर ले जाते हैं या नही यह बात शायद अलग अलग पुत्रों के नैतिक स्तर पर निर्भर करती है। वृद्धाश्रम में रहने वाले सभी वृद्धों के पास ऐसी ही दर्द भरी कहानियाँ होतीं हैं जिन्हे वे एक दूसरे से अधिक दिनो तक छुपा नही पाते हैं। उनकी कितनी देखभाल होती है ? स्वास्थ्य सुविधाएं मिल पातीं हैं या नही ये सभी बातें इस बात पर निर्भर करतीं हैं कि क्या वृद्धाश्रम में भी किसी तरह के भ्रष्टाचार हो रहे हैं?

कुछ बेटे अपनी पत्नि और माता के बीच रोज बा रोज होने वाली चिक चिक से दुःखी होकर अपनी माता को वृद्धाश्रम छोड आते हैं और जो साथ में रहते हैं उनमें भी इतनी कटुता होती है कि दोनो पक्षों का जीना दूभर हो जाता है।माता पिता समय की गति को देखते हुए सामंजस्य स्थापित करने की पूरी पूरी कोशिश करते हैं,वे अपने हिस्से का काम करते ,चुपचाप भोजन करके अपने कमरे में कैद जिंदगी बिताते हैं।न तो उनकी किसी सलाह या सुझाव की किसी को आवश्यकता होती है और न ही अपेक्षा। उनके निर्णय भी उनके पुत्र और पुत्रवधु ही करते हैं। यदि वृद्ध दम्पति की कोई विवाहिता बेटी भी है तो वह कभी वार त्योहार पर आकर हालचाल पूछ जाती है।

वे माता पिता जो बडे कष्टों से अपने बच्चों को पाल पोस कर बडा करते हैं कि बेटा बडा होकर उनके बुढापे की लाठी बनेगा ,वे मंद होती आँखों की रोशानी से हाथ में लाठी लिये ठोकरें खाते फिरते हैं।

इन सारी स्थितियों के लिये पुत्र पुत्रवधु भी दोषी हो सकते हैं और माता पिता भी।माता पिता के अंदर जो अधिकार जमाने की प्रवृति होती है उससे उसे उन्हे छुटकारा पाना होगा।अपने निर्णय थोपने की आदत को बदलना होगा ।बेमतलब ही बेटे बहू के मामलों में टांग अडाने की आदत को छोडना होगा।उन्हे समझना होगा कि बेटे का अपना परिवार है और उसकी जिम्मेदारियाँ हैं उन्हे बेटे की समस्याओं को और नही बढाना चाहिये।

उपसंहारः हमारे देश में श्रवण कुमार जैसे बेटे हुए जिन्होने अपने कंधे पर काँवर में माता पिता को बिठाकर सारे तीर्थ कराए,राम जैसे पुत्र हुए जिन्होने पिता और माता की आज्ञा पर सहर्ष चौदह वर्षो का वनवासी जीवन जिया।हम आशा करते हैं कि शायद नई पीढी इस सामंजस्य को अच्छी तरह बना कर चलेगी।वृद्धों की जो समस्याएं हैं उनपर सरकार ध्यान देगी।उनकी सुरक्षा के उपाय किये जाएंगे। वृद्ध कोई टूटा फूटा फर्नीचर नही हैं कि उन्हे कबाड में फेंक दिया जाय। उनके साथ प्रत्येक पुत्र पुत्रियों की ढेरों मधुर स्मृतियाँ जुडी होतीं हैं।पुत्री अपने माता पिता को कभी नही भूलती और भरसक उनकी सहायता करती है अवसर मिलने पर सेवा भी करती है फिर वह पुत्रवधु के रूप में अपने पति के माता पिता की देखभाल क्यों नही कर पाती है?

54 बढते अपराध

सांप और मनुष्य में क्या फर्क है ?देखने में सांप पेट के बल चलता है और मनुष्य पैरों के बल चलता है परन्तु यह दिखावा है जो मनुष्य पेट के बल चलता है उसका क्या ?

महात्मा गांधी

प्रस्तावनाः

प्रत्येक देश में ,उसके इतिहास में अच्छाई के साथ बुराई का होना भी पाया जाता है किन्तु कहीं इस पर सख्त से सख्त कार्यवाही करके इनकी संख्या में कमी करने की कोशिश बडी ही ईमानदारी और निष्ठा के साथ की जाती है जबकि हमारे देश मे ऐसा नही हो पाता।

एक समय था जब मामूली से मिट्टी के घरों में सेंध लगा कर चोरियाँ होतीं थीं और आज अपराध का ग्राफ जिस ऊँचाई तक जा पहुँचा है वह सम्पूर्ण समाज के लिये शर्मनाक हैं।ऐसी किवदंतियाँ भी प्रचलित हैं कि मरूस्थल में जरायम पेशा लोग बहुतायत में होते थे वे पूरे के पूरे यात्रा करते काफिलों को खत्म कर दिया करते और उन्हे रेत में दफना कर उनका सारा माल असबाब लूट लिया करते थे।

ठगी का इतिहास भी बहुत पुराना है।ठग विद्या पर कई कहानीकारों की कहानियाँ धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ करती थीं।डाकू भी बहुत पुराने समय से देश के बीहडों में अपना इतिहास समेटे हुए हैं। नटवरलाल जैसे ठग और वीरप्पन जैसे चंदन तस्कर ठगों के नवीनतम एवं प्रसिद्ध संस्करण हैं।वैसे ये कई रूपों में हमारे समाज में बिखरे हुए हैं।

विषयवस्तुः

जब मनुष्य पशु हो जाता है तो उसका व्यवहार पशु से भी बदतर हो जाता है।

रविन्द्रनाथ टैगोर

वैसे तो समाज में आज अपराध इतना घुल मिल गया है कि उसे अलग करना नामुमकिन सा लगता है।

टेक्स चोरीः जो लोग व्यापारी हैं वे टेक्स जमा करने के रजिस्टर अलग बनाकर रखते हैं जिसमें कम बिकी दर्शाई जाती है और कम टेक्स जमा किया जाता है।इसी प्रकार लोग अपनी

इनकम भी बेनामी सम्पत्तियाँ खरीदने लॉकर में रूपया और जेवरात छुपा कर रखने में करते हैं।लोग भी बिना बिल का सामान खरीद कर खुश हो जाते हैं ताकि टेक्स न चुकाना पडे। सरकार ने इन्हे रोकने के प्रयास में ट॰।ण्ज्ण्भी लागू किया है इसका थोडा बहुत असर दिखाई पड रहा है।

भ्रष्टाचारः

चपरासी से लेकर कई बडे से बडे अफसर एवं कई मंत्री भी इसमें लिप्त हैं।कोई फाईल बिना उस पर वजन रखे आगे नही बढती, कोई भी सरकारी काम बिना घूस दिये कहीं भी नही हो पाता।धीरे धीरे लोग इसे स्वीकार करते जा रहे हैं। हमारे देश में घूस का इतिहास बहुत पुराना है।चाणक्य ने अपनी पुस्तक में इसे उत्कोच नाम से उल्लेखित किया है अब लोग इसे सुविधा शुल्क कहने लगे हैं।सरकारी संस्थानों की तरह प्रायवेट स्कूलों ने भी इसे भारी रकम के रूप में डोनेशन के नाम पर लोगों की जेब से निकाला है उन्होने स्कूलों को विशुद्ध व्यापारिक केन्द्र बना दिया है जहाँ नई नई चीजों के नाम पर अलग अलग रूपये वसूले जाते हैं।

व्यापारः अब व्यापार भी शुद्ध व्यापार नही रहा लोग मिलावटी सामान बेचते हैं।डिटर्जेंट से दूध और मावा पनीर घी मिठाईयाँ बना कर बेच लेते हैं।किसी मशहूर ब्रांड की हूबहू नकल बना कर बेच लेते हैं। कई बार इन नकली सामानों का घटियापन खुल कर सामने आ जाता है,छापे पडते हैं और फिर क्या होता है?

पुलिसः फिर पुलिस या नियंत्रण विभाग उस नकली कंपनी से ढेरों पैसा वसूल कर लेती है और वही माल वापस मार्केट में पहुँच जाता है। पुलिस तो रेडलाईट पर वसूली से लेकर बडे बडे दहेज के ,हत्याओं के ,बलात्कार के मामलों में भी घूस खाकर अपराधियों को छोड देती है। हमारे देश में पुलिस की छवि एक भ्रष्ट एवं अकर्मण्य विभाग की है।उसकी चोरों से सांठ

गांठ होती है और वह अधिकांश अपराधियों से अपना हिस्सा लेती है।

डकैतीः घरों की घंटी बजाकर अकेली महिलाओं और बच्चों को बंधक बना कर लूट की घटनाएं बहुत आम हैं। सडक पर कारों को ,मोटर साईकिल को रोकने ,उन्हे लूटने की घटनाएं पिछले दिनों बहुतायत में हुईं। बेंकों में सभी ग्राहकों और कर्मियों को बंधक बना कर लाखों रूपयों की लूट की भी कई घटनाएं हो चुकीं हैं।

अपहरणः

किसी सूनी सडक पर कार रोक कर किसी प्रसिद्ध धनी उद्योगपति के बच्चे का अपहरण और फिर फिरौती की मांग ,यह अपराध भी काफी संख्या में होते हैं।

बलात्कारः

बलात्कार की जितनी घटनाएं प्रकाश में आतीं हैं वे असली ऑकडों का केवल 10 प्रतिशत होंगीं।चलती कार में बलात्कार ,विदेशी राजनायिक महिला का बलात्कार ,जर्मन महिला का बलात्कार, पुष्कर जैसे तीर्थ स्थल में विदेशी महिलाओं का बलात्कार की दो घटनाओं ने हमारे देश को शर्मसार कर दिया है।पिछले वर्षों में जब पुलिस कर्मी द्वारा बलात्कार किया गया तो हर सभ्य नागरिक के मन में बस एक ही प्रश्न उठा यदि रक्षक ही भक्षक बन जाए तो जनता का क्या होगा?

आतंकवादः पिछले बीस वर्षों में आतंकवाद के राक्षस ने देश में अपने खूनी पंजे गडा दिये हैं।जब तब जहॉं तहॉं ब्लास्ट हो जाते हैं और देश का कानून आज तक इस अपराध में लिप्त एवं सजा के लायक अपराधी को फांसी भी न दे पाया। घूस लेने में व्यस्त पुलिस आतंकवादियों को ढूँढ भी नही पाती यदि

ढूँढ भी लेती है तो पूरा नेटवर्क नही तोड पाती है और ये घटनाएं दिन प्रतिदिन घटने के स्थान पर बढती ही जा रहीं हैं।

उपसंहारः

क्या हम सभी किसी न किसी रूप में इन अपराधों में सम्मिलित नही हैं ?हम टेक्स बचाते हैं,हम घूस देकर अपना बिजली का मीटर लगवाते हैं,राशन कार्ड बनवाते हैं। घर बनवाते हुए हम जल विभाग को बिजली विभाग को और पुलिस विभाग को भी घूस देते हैं।कौन है जो इन अपराधों को रोक पाएगा ? हमारे नेताओं के लिये अपनी कुर्सी और उसे बचाये रखने के लिये जोड तोड करते रहने से अधिक कुछ भी महत्वपूर्ण नही है।उनके लिये सारी जनता उनका वोट बेंक है जिसे अपने लाभ के लिये ,उन्होने जातियों ,संप्रदायों के बीच दुर्भावनाएं बढा कर बाँट रखा है।जब तक लोग बँटे रहेंगे उन्हे वोट मिलते रहेंगे उन्हे अपने हिस्से के वोटों की चिंता रहती है बस। वे इनके बीच की खाईयों को चौडा और गहरा करने में लगे रहते हैं।आप कभी किसी नेता के भाषण में प्रेम और सौहार्द्र की बातें नही सुनेंगे।यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे देश के नेताओं के नाम अलग अलग किस्म के घोटालों से हमेशा जुडते रहते हैं,हमारे देश में समय समय पर इतने घोटाले होते हैं, कभी चारा घोटाला कभी चीनी घोटाला, फौजी वर्दियों का घोटाला, बोफोर्स तोप का घोटाला इत्यादि इत्यादि किन्तु आज तक किसी घोटाले में लिप्त नेता को इस अपराध की कोई सजा नही मिल पाई है।

55 राजनीति ...अवनति के पथ पर

प्रस्तावनाः

यह बात कोई महत्व नही रखती कि आदमी मरता कैसे है लेकिन यह कि वह जीता कैसे है।

जॉनसन

जंगल का कानून होता है कि जो सर्वाधिक शक्तिशाली है वही जंगल का राजा है।मानव के इतिहास के आरंभिक काल में ऐसा ही हुआ होगा,और अलग अलग देशों राष्ट्रों में राजतंत्र का उदय हुआ होगा।द्वितीय विश्व युद्ध के पाश्चात और अंग्रेजों से देश को आजाद कराने के बाद देश सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में उभरा। भीम राव अंबेडकर के नैतृत्व में संविधान समिति का गठन किया गया और हमारे लिये संविधान निर्मित किया गया जिसमें हमें कुछ मौलिक अधिकार दिये गए, जिसमें मतदान का अधिकार प्रमुख था, देश को सभी धर्मों संप्रदायों, जातियों भाषाओं वाला सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न सहिष्णु देश घोषित किया गया। कानून की धाराएं बनाई गईं। न्याय पालिका को स्वतंत्र रखा गया।लोक सभा और राज्य सभा केन्द्रीय स्तर पर और विधान सभा तथा विधान परिषद राज्य स्तर पर सदन बनाए गए। तीनो सेनाओं का प्रमुख राष्ट्रपति को बनाया गया और राष्ट्रपति सहित सभी चुनावों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा या जन प्रतिनिधियों द्वारा किया जाना तय किया गया।

विषयवस्तुः

देश की आजादी के बाद सभी देशवासियों को आशाएं थीं कि अब हमारी सभी समस्याओं का अंत हो जाएगा और हमें अपने द्वारा चुने गए लोगों की स्वच्छ निष्पक्ष और पारदर्शी सरकार मिलेगी।

पंडित जवाहर लाल नेहरू हमारे प्रथम प्रधान मंत्री थे और उनके काल में भी एक भ्रष्टाचार उजागर हुआ था जिसे शायद देश ने गंभीरता से नही लिया था और जनता ने उस ओर ध्यान नही दिया था।

जहाँ आत्मा को छोड कर शरीर को सबकुछ समझना शुरू किया वहीं आपकी हार हुई।

स्वामी रामकृष्ण परमहँस

और आज कहीं आत्मा नाम की वस्तु दिखाई नही पडती ।स्वअस्तित्व ही सब कुछ है,मेरा घर,,मेरी जायदाद,मेरा लॉकर, उसमें छुपी मेरी अकूत सम्पत्ति,मेरे बच्चे,मेरी कुर्सी ,मेरी सत्ता,कोई नेता नही सोचता मेरी जनता हॅं ! वह जनता को अपना वोट बेंक अवश्य ही मानता है।धर्म एवं सम्प्रदाय के बीच बनी महीन सी रेखा को उसने चौडी खाईयों में तब्दिल कर दिया है ताकि वह उनकी भावनाओं को भडका कर ,उनके सच्चे हितैषी होने का आडंबर करके उनका वोट हॅंसिल कर सके।

हमारे देश में भ्रष्टाचार की जड नीचे से नही ऊपर से नीचे की ओर बढी है ।यह अमर बेल की तरह भारत रूपी वृक्ष के ऊपर छा गई है और इसके सारे पोषक तत्व को चूस चूस कर स्वयं को मजबूत बनाती जा रही है।

नेता उसे कहा जाता है जो आपका अग्रणी हो जो आपका नैतृत्व कर सके ,हमारे देश में आज कोई भी नेता ऐसा नही है।अधिकांश के कोई मूल्य नही हैं, वे नंबर एक के बेईमान भ्रष्ट है। उन्होने धन कमाने के ढेरों गुप्त तरीके ढूॅंढ रखे हैं।किसी को ठेका दिलाना ,किसी को लाइसेंस देना ,पेट्रोल पंप,गैस ऐजेंसी दिलवाना, रेल्वे के पुल बनाने के ठेके इत्यादि। विदेशी कंपनियों से कमीशन खाना ,बोफोर्स तथा अन्य रक्षा मंत्रालय के घोटाले इसी श्रेणी में आते हैं। देश का गेहॅूं गोदामों मे सड जाता है और दूसरे देश से अत्यंत घटिया किस्म का गेहॅूं खरीद लिया जाता है।कई बार खरीद कम होती है ज्यादा दिखाई जाती है।कई बार खरीद इतनी महंगी होती है कि आश्चर्य से ऑंखें फटी की फटी रह जाती हैं। इसमें ऊपर से नीचे तक के लोग मिले होते हैं और देश के धन को इस प्रकार अपने अपने खातों में जमा कर लिया जाता है। पिछले कई वर्षों से सैकडों घोटालों का पर्दाफाश हुआ चीनी घोटाला ,कोलतार घोटाला इत्यादि कई पत्रकारों ने स्टिंग ऑपरेशन किये लेकिन नतीजा वही ढाक के तीन पात । मुद्दई भी भ्रष्ट

और गवाह भी भ्रष्ट तो मुकदमा किस प्रकार चल पाएगा। यही कारण है कि सारे नेताओं के खिलाफ किये गए केस बीच राह में ही दम तोड देते हैं। हमने किसी को सजा पाते नही देखा।यदि सजा के शिकार होते हैं तो इस कतार में नीची श्रेणी वाले। नेता के ऊपर इस बदनामी का कोई प्रभाव नही पडता वह अगले चुनाव में ताल ठोक कर फिर खडा हो जाता है।आपके बीच वही वैमनस्य के जहरीले बीज बोता है,आप मूर्ख की तरह फिर से उसी को वोट देते हैं और वह कुटील सी हँसी हँसता हुआ फिर से पाँच वर्षो के लिये फिर से सत्तासीन हो जाता है।

उसे जितना रूपया अपने क्षेत्र के विकास के लिये मिलता है उसका वह मात्र दस प्रतिशत ही खर्च कर पाता है क्यों कि यह पैसा हिसाब किताब देकर खर्च करना होता है अतः उसे इस पैसे को खर्च करने में,मेहनत करने में,और जनता के विकास में कोई रूचि नही होती है।बिजली घंटों घंटों तक ना रहे कोई परवाह नही ,दूषित और मटमैला पेय जल पीकर जनता मरे कोई परवाह नही,रेल दुर्घटनाओं में बॉम्ब ब्लास्ट में सैकडों लोग मरें उसके चेहरे पर दुःख की शिकन तक नही दिखती। वह मशीनी अंदाज में संवेदना प्रकट करता है,मरने वालों के परिवारों को और घायलों को कितने कितने रूपयों की राशि बतौर सहायता सरकार प्रदान करेगी इसकी घोशणा करता है और चल देता है।

उपसंहारः

नेता स्वयं बख्तरबंद गाडी में चलता है, ढेरों नौकर चाकरों और सुरक्षाकर्मियों के अलावा जनता के लिये बनी पुलिस की फौज के बीच सुरक्षित चलता है।वह ट्रेन में मुफ्त सफर करता है,हवाई जहाज की भी उसे कई कई कीलोमीटर की यात्राओं की मुफ्त सुविधा मिली होती है,टेलीफोन और बिजली की इतनी ज्यादा सीमा इन नेताओं ने स्वयं के लिये तय कर रखी है कि उनके अलावा उनके कर्मी भी घंटों घंटों तक अपने मित्रों

से घरवालों से एस.टी.डी. पर बातें करते रहते हैं।कहने का तात्पर्य यह कि पाँच वर्षों तक वह राजाओं की तरह रहता है और उस जनता को पलट कर भी नही देखता है जिसने उसे कुर्सी तक पहुँचाया है।इससे तो प्राचीन काल के रियासतों के छोटे छोटे राजा ही अच्छे रहे होंगे वे लगान अवश्य लेते थे लेकिन कुछ अपवादों को छोड दे ंतो वे सभी प्रजा वत्सल थे और वे प्रजा के दुः खों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करते थे।

56 जल संचय ...एक आवश्यकता

प्रस्तावनाः

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून,

पानी गए न ऊबरे,मोती,मानस,चून।।

वर्षों देश कहे रहीम कवि के ये शब्द कितने सत्य हैं।वे कहते हैं पानी को बचा कर रखो क्यों कि पानी के बिना सब कुछ सूना है। पानी के बिना न मोती में आभा रहती है, न मनुष्य जीवित रह सकता है,और न ही चून अर्थात आटा गूंधा जा सकता है।

यह पानी की महत्व की सत्यता का एक शत प्रतिशत सत्य कथन है।हाल ही के सर्वेक्षणों से यह बात सत्य सिद्ध हो चुकी है कि वनों के कटाव और बेहिसाब बढती जनसंख्या और उसके लिये बने आवासों से पृथ्वी का धरातल दिन प्रतिदिन गर्म होता जा रहा है और भूगर्भ में जो पानी है उसका स्तर दिनो दिन नीचे होता जा रहा है। वैज्ञानिकों के लिये यह गहन चिंता का विशय है और वे दिनरात इस विषय पर शोध कर रहे हैं। पानी मानव जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। शरीर के पंचतत्वों में भी पानी को एक माना गया है।मानव की सारी आवश्यकताएं भी पानी से जुडी होतीं हैं। पानी प्रथम तत्व है,एवं आगे सभी कुछ श्रंखलाबद्ध है।

विषय वस्तुः

हमारी इच्छाएं हमारी अपनी कैसे हैं,यह हमको विदित नही है।हमारी इच्छाएं तो तभी हमारी हैं,जब हम उनको आपकी इच्छा का रूप दे सकें।

टेनीसन

उपरोक्त कथन यह प्रेरणा देता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य में जनकल्याण के तत्व को सर्वोपरि रखना चाहिये।सिर्फ स्वार्थी बनकर अपने बारे में सोचने अपने लिये प्रयास करने वाले तो पशु भी होते हैं। ईश्वर ने हमें बुद्धि दी है,हाथ पैर दिये हैं, कार्यक्षमता भी दी है, भावनाएं दी हैं। जिस जननी की गोद में जन्म लेकर हम पलते बढते हैं ,फलते फूलते हैं, हमारा अंत भी धरती की गोद में ही होता है, क्या हम हमारी प्यारी धरती के लिये कुछ नही कर सकते हैं? उसकी सुरक्षा के लिये कुछ नही कर सकते हैं? हम जो कुछ भी करेंगे वह हमारे लिये और हमारे आने वाले बच्चों के लिये लाभकारी होगा।

सर्व प्रथम तो हमें भरसक प्रयास करना चाहिये कि लोग अज्ञान और अशिक्षा के अंधकार से बाहर निकलें ताकि वे स्वयं ही जनसंख्या की बढती हुई तदाद पर अंकुश लगा सकें।प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति को एक अशिक्षित को शिक्षित करना चाहिये। इसका तात्पर्य यह नही कि उसे बी.ए. एम.ए. कराना है। हाँ! मौलिक जानकारियाँ ,जो स्वयं उसके समाज राष्ट्र और धरती से जुडी है इनकी सुरक्षा और प्रगति से जुडी है हमें उसे देनी चाहिये।

हमें वनों के कटाव को रोकना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को जिसका विवाह हो रहा हो यह प्रण करना चाहिये कि वह एक से अधिक संतान उत्पन्न नही करेगा और अपने जीवन काल में कम से कम पाँच वृक्ष अवश्य ही लगाएगा। नदियों के किनारे हमें ढेरों वृक्ष लगाने होंगे ताकि प्रत्येक वर्ष अलग अलग स्थानों पर आने वाली बाढों को हम रोक सकें और ये

नदियों के किनारे वाले वृक्ष मजबूत तटबंध बन कर जल संचय कर रख सकें।

हमारे देश में वर्षा ऋ्तु का सारा जल बह जाता है हाल ही में वॉटर हारवेस्टिंग की नई तकनीक इजाद हुई है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर के चारों ओर इस पद्धति से जल संचय की व्यवस्था करनी होगी ताकि वर्षा ऋ्तु में हम जल संचय कर लें तथा यही जल ग्रीष्म ऋ्तु में हमारे और हमारे पौधों के भी काम आ सके।

हमारे देश में कई प्रदेशों में ऐसे ऐसे स्थान हैं जहॉं लोगों को ,विषेश रूप से स्त्रियों को मीलों दूर से जल लेकर आना होता है।वे जल के मूल्य को समझतीं हैं क्यों कि अत्यंत कष्ट पाकर वे घर के लिये जल लेकर आतीं हैं। उनके घर के लोग किफायत से पानी खर्च करते हैं किन्तु हम शहरों में आमतौर पर यह द्रश्य देखते हैं कि वॉटर पंप की मोटर चली हुई है, पानी बहता जा रहा है, किसी को यह देखने की फुर्सत नही है, न ही इतनी जागरूकता है कि मोटर बंद कर दें।इसी प्रकार रेल्वे स्टेशन तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लोग नलों को खुला छोड देते हैं।

हमारे देश के लोगों की यह बुरी आदत आम है कि वह सिर्फ स्वयं के बारे में सोचते हैं। उसका घर साफ है, कूडा उठा कर घर के बाहर गली में फेंक दिया उसे इस बात से क्या मतलब है कि गली साफ है या नही। घर में पानी किफायत से उपयोग करने वाले भी सार्वजनिक स्थानों पर बेपरवाही से अथवा जानबूझ कर नल खुले छोड देते हैं जो उचित नही है।

आपको ब्रश करना है तो ब्रश करलें बाद में नल चलाएं ।लेकिन ऐसा नही होता नल चला दिया जाता है ब्रश करते करते चाहे न्यूज पेपर ही पूरा पढ लें। आज कल कई शहरों और उसके कई इलाकों में सरकार सीमित समय के लिये ही

जल सप्लाय करने लगी है क्यों कि उसके पास कोई उपाय ही नही है इस दुरूपयोग को रोकने के लिये।

सरकार बडे बडे बेनर्स लगवाती है, पोस्टर्स लगवाती है, जिसमें लिखा होता है, जल ही जीवन है, इसकी एक एक बूंद बचाईये। किन्तु इसे देख पढ कर कितने लोग प्रभावित होते हैं? कितने अपने आप को सुधारते हैं और जलसंरक्षण करते हैं।

उपसंहारः

जब कभी मनुष्य को दुःख होता है अपने ही भ्रम के कारण होता है, यदि मन में भ्रम न रहे तो किसी का भय न रहे।

विराटा की पद्मिनी के सौजन्य से..... वृंदावनलाल वर्मा द्वारा

यह सत्य है कि मानव अपने दुःखों का कारण स्वयं ही है।उसने कभी धरती का ध्यान नही किया। उसने बेहिसाब आबादी बढाई,उसने बेहिसाब वन काट दिये,उसने फीज और ए. सी. जैसे उपकरण बनाए जिसकी दुष्प्रभाव डालने वाली गैस ने पृथ्वी की सुरक्षा परत ओजोन नामक आवरण में छिद्र कर दिया जो दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है,और अब वह परेशान है कि धरती का तापमान क्यों बढ रहा है? हिमालय से ग्लेशियर्स क्यों पिघल रहे हैं? भूकंप क्यों आ रहे हैं ? जमीन क्यों धसक रही है ?हिमस्खलन क्यों हो रहे हैं ?पिछले दिनो देश के कई कई स्थानों पर विभिन्न हिस्सों में कई कई किलोमीटर लंबी एवं कई फीट चौडी धरती क्यों फटी ?इतनी बाढ क्यों आती है ? ये सभी प्रश्न बहुत ही कठिन हैं और जल्दि से मानव को इनके उपाय ढूँढ लेने होंगे।यह पृथ्वी हम सभी की है और इसीलिये हम सभी का कर्तव्य है कि जितना और जो थोडा सा हम कर सकते हैं हम अवश्य करें।

57 वन्य जीवन और पशुसंरक्षण

प्रस्तावनाः

पुरानी रोशनी और नई रोशनी में फर्क इतना ही है कि इसे कश्ती नही मिलती उसे साहिल नही मिलता।

अज्ञात

उपरोक्त कथन कितना सत्य है। मानव और पशु का संबंध सृष्टि के आरंभिक काल से है। वैज्ञानिकों का कथन है कि धरती देश सूर्य का ही एक हिस्सा थी एवं इससे किसी भौगोलिक कारण से करोडों वर्षों देश अलग हुई। धीरे धीरे इसकी ऊपरी सतह ठंडी होती चली गई और उस पर विभिन्न पशु ,पक्षी,कीट,पतंगे,जलचर,के साथ मानव का भी उद्‍भव हुआ।मानव ही ऐसा प्राणी है इसे प्रभु ने बुद्धि और कार्यक्षमता के साथ भावनाएं भी दीं हैं। अविर्भाव के आरंभिक काल में मानव भी पशुवत ही था और पत्थर के औजार बनाकर पशुओं का आखेट किया करता था और अपना पेट भरता था और पत्थर की कंदराओं में रहता था, उसका कोई स्थायी आवास भी नही था।वह शिकार के पीछे पीछे भागते भागते जहाँ जा पहुँचता वहीं रह जाता था। वह पेड की छाल और पशुओं की खाल पहन कर अपना शरीर ढकता था।वह पशुओं का कच्चा मांस ही खाता था। उस काल को पाषाण काल कहा जाता है।

विषयवस्तुः

विपत्ति सत्य की और जाने की प्रथम सडक है।

बायरन

मानव ने ज्वालामुखी के लावे में पके हुए मांस का स्वाद जब चखा तो उसे वह बडा स्वादिष्ट लगा और पत्थर पर पत्थर रगड कर उसने आग उत्पन्न की।जब उसने बछडों को मादा पशु का दूध पीते देखा तो उसने भी उस दूध को चखा और उसके मन में पशुपालन की इच्छा जागृत हुई और वह पशुओं को पालने लगा।जब उसे स्वयमेव उत्पन्न अनाज के दाने दिखे

तो उसने उन्हे चख कर देखा और उसे वे स्वादिष्ट लगे उसने बचे हुए दानों को जमीन में दबा दिया।उसे आश्चर्य हुआ कि उस स्थान पर फिर बालियाँ उग आई हैं और उनमें ढेरों दाने लगे हुए थे। इस प्रकार स्थायी रूप से कहीं रहने ,भूमि पर कृषि करने और दुधारू पशुओं का पालन करने का सभ्य मानव जीवन आरंभ हुआ।किन्तु मांस खाने की प्रवृति और लालच की भावना ने उसे पशुओं के प्रति सदैव ही संवेदनाहीन बनाए रखा। उसने बैलों ,घोडों ,गधों को खेती करने और सवारी के काम में लाने का कार्य शुरू किया। भेडों को वह ऊन के लिये पालता रहा। बर्फीले प्रदेशों में रेनडीयर, और याक को उसने इस काम के लिये उपयोग किया। उपयोग समाप्त होते ही वह उन्हे मार कर खाने लगा।

विश्व के विभिन्न देशों में जो पशु मार कर खाए जाते हैं उनके बारे में जान कर मन वितृष्णा से भर उठता है।बर्फीले अंटार्कटिका में लोग घोडों का मांस खाते हैं।अफ्रीकी देशों में कहा जाता है कि पेडों पर एक चिडिया भी नही दिखाई देती क्यों कि उन सभी को मानव ने उदरस्थ कर लिया है। जापान में एक पक्षी का घोंसला ही खाया जाता है और वह काफी महंगा बिकता है क्यों कि चिडिया इसे अपनी लार से बनाती है।हाल ही के सर्वेक्षण बताते हैं कि अब इन चिडियों की संख्या ही बहुत कम हो गई है।

ढेरों मछलियाँ, केकडे, कछुए, यहाँतक कि ऑक्टोपस जैसे समुद्री जीव भी मानव की जीभ का शिकार हो गए हैं। धार्मिक त्योहारों पर दी जाने वाली पशु बलि समस्त देशों में इतनी बडी तादाद में होती है कि इसे सोच कर ही संवेदन शील व्यक्ति सिहर उठता है।

आज का सबसे भयावह चेहरा यह है कि आज ट्रेक्टर से खेती होती है और बैलों की आवश्यकता नही रह गई है। तो गाय को यदि बछडा पैदा हुआ है तो उसे दूध न पिला कर भूखा

रख रख कर मार दिया जाता है। मानव अब दानव बन गया है।

पिछले कई वर्षों में देश में वन्य पशुओं की संख्या में भी आश्चर्यजनक रूप से कमी आई है।पशु संरक्षण विभाग ने प्रोजक्ट टायगर जैसे प्रोजेक्ट चलाए हैं लेकिन इसका विषेश प्रभाव पडता नही दिखता।ये दुष्ट शिकारी शेर चीतों का शिकार उनकी बहुमूल्य खाल के लिये हाथियों को शिकार उनके दाँतों के लिये करते हैं।ये इन सामानों की तस्करी करके करोडों रूपये कमाते हैं। इनके अलावा भी कई वन्य पशुओं को मार कर उनकी खाल बेचते हैं।कई पक्षियों को पिंजरों में बंद करके सजावट के सामान की तरह लोग रखते हैं।अर्थात इनकी खरीद बिकी भी छुप छुपा कर होती रहती है।

कई बार कछुओं को भारी तादाद में ले जाते हुए तस्कर पकडे गए हैं।वे उन्हे विदेश भेजने की तैयारी में थे। गायों से भरे ट्रक भी कई बार पकडे गए लेकिन जिन घटनाओं को हम जान पाते हैं वे शायद 1 प्रतिशत से भी कम होते होंगे क्यों कि विभिन्न स्थानों पर विभिन्न स्तरों पर ये दुष्टता पूर्ण कार्य किये जाते हैं।

<u>उपसंहारः</u>

देश पशु संख्या मानव से दुगनी हुआ करती थी अब आधी से भी कम रह गई है। कई बहुमूल्य एवं अनमोल पशु पक्षी पृथ्वी से विलुप्त प्रजाति के रूप में उल्लेखित किये जाते हैं। नॉर्थ ईस्ट में कई पशुओं को उनके अत्यंत सुंदर सींगों के लिये मार दिया जाता है।

पृथ्वी पर जो कुछ भी था वह पृथ्वी के धरातल का संतुलन बनाए रखने के लिये था। नदियों के तट पर पेड थे तो बंधी मिट्टी बाढ को रोकती थी, पक्षी एक स्थान से दूसरे स्थान पर बीजों के प्रसार का कार्य करते थे। कीट पतंगे पराग कणों का प्रसार करते थे।वन और वन्यपशु का गहरा संबंध भी पृथ्वी के

धरातल को ठंडा बनाए रखने के लिये था परन्तु मानव ने स्वयं के पैर पर कुल्हाडी मार कर सारी प्रकृति को नष्ट करने के प्रयास किये हैं।यदि उसने यह सब नही रोका तो वह दिन दूर नही जब पृथ्वी पर प्रलय आ जाएगा। प्रत्येक मनुष्य को इस बात को समझना होगा और जो कार्य वह पृथ्वी और उसके पर्यावरण को बचाने के लिये कर सकता है करना चाहिये।

58 पत्रकारिता कितनी सार्थक ?

प्रस्तावनाः

जितनी पराधीनता उतना दुःख ,जितनी स्वतंत्रता उतना सुख।।

मनु

हमारे आदिमानव मानव के जन्मदाता मनु का यह कथन कितना सार्थक है।प्रजातंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सरकार अपने लिये चुनने का अधिकार है।उसे सरकार के कार्यकलापों के बारे में जानने का अधिकार है,उनकी आलोचना करने का भी अधिकार है,यदि वह ना सुधरे तो उसे बदल देने का भी अधिकार है।

भारतवर्ष ने लंबा गुलामी का दौर देखा। आरंभिक काल में शक, हूण इत्यादि के आक्रमण हुए,फिर गुलाम वंश का शासन हुआ जिसे सल्तनत काल के रूप में भी जाना जाता है। उसके बाद मुगल काल का शासन हुआ जो बाबर से बहादुर शाह जफर तक रहा। अंग्रेजों की पैठ जहाँगीर के काल से ही आरंभ हो गई थी जब उन्होने व्यापार करने के लिये कलकत्ता में कोठी बनाने की आज्ञा प्राप्त कर ली थी। धीरे धीरे अंग्रेजों ने सारे देश में अपने पांव पसार लिये और हमे गुलाम बना लिया। 200 वर्षों के लंबें काल मे हम गुलाम थे और हम पर अंग्रेजों का शासन था।

विषयवस्तुः

प्रत्येक असत्य आचरण समाज के स्वास्थ्य पर एक सीधा आघात है।

इमर्सन

जब हम स्वतंत्र हुए तो भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में संविधान समिति बनी जिसने हमारे लिये संविधान बनाया। यह संविधान 26 जनवरी 1950 से लागू किया गया। इसमें हमें विभिन्न अधिकार मिले । हमें मतदान का अधिकार है।हम अपनी सरकार को स्वयं चुनते हैं। हमें कहीं भी रहने ,कोई भी कानून सम्मत कार्य करने, और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी गई।हम अपनी सरकार के किया कलापों की, समाज में होने वाली अनैतिकताओं की खुल कर आलोचना कर सकते हैं, अपने सुझाव दे सकते हैं। किसी संस्था के, व्यक्ति के अन्याय के विरोध में हडताल कर सकते हैं,आंदोलन कर सकते हैं। उन्हे अपना मांगपत्र देकर अपनी मांगों को मनवाने के लिये कानून सम्मत तरीके से दबाव डाल सकते हैं। इन सभी अधिकारों के अलावा कुछ नीति निर्देशक तत्व भी संविधान में हैं जिसमें कहा गया है कि यदि हमें अधिकार मिले हैं तो हमारे कुछ कर्तव्य भी हैं क्यों कि अधिकार और कर्तव्य दोनो ही एक सिक्के के दो पहलू हैं।

इन सभी में सबसे महत्व पूर्ण है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।अपने संदेशों को लोगों तक पहुँचाने के लिये पहला समाचार पत्र हस्त लिखित था। बाद में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने केसरी नामक अखबार का संपादन किया।

हमारे इस विशाल देश में सभी भाषाओं में छपने वाले अखबारों की संख्या हजारों में एवं पढने वालों की संख्या लाखों में है।

दूरदर्शन और विभिन्न चॅनल्स के 24 घंटे समाचार प्रसारण के बाद भी अखबार पढने वालों की संख्या में कमी नही आई है और प्रिंटमिडिया ने काफी हद तक नीतिगत बातों का ध्यान रखा है। किन्तु टी.वी. पर जो समाचार दिखाए जाते हैं उनमें मुख्य रूप से सनसनी खेज तत्व को ही प्रसारित किया जाता है ताकि चॅनल्स की प्रतिस्पर्धा में टी.आर.पी. बढाई जा सके। वे झूठ नही दिखाते हैं किन्तु साधारण घटना को सनसनी खेज बना कर पेश करते हैं।

जब भी कोई बॉम्ब ब्लास्ट होता है हमें तुरंत ही ज्ञात हो जाता है। उसे पूरे दिन इस समाचार को सबसे अधिक स्थान दिया जाता है। घायल व्यक्तियों के साथ पत्रकार व टी.वी. केमरे अस्पतालों तक भी जा पहुँचते हैं।डॉक्टर के वक्तव्य, घायलों की स्थिति ,मृतकों की मृत्यु का कारण एवं घायलों तथा मृतकों की सही संख्या भी प्रसारित की जाती है। नेताओं के वक्तव्य एवं उनकी संवेदनहीनता की आलोचना भी की जाती है किन्तु दूसरे दिन वह समाचार मात्र एक लाईन का वक्तव्य बन कर सिमट जाता है। दूसरे दिन अथवा उसी दिन थोडी देर के बाद मृतकों की संख्या कम बताना भी कई बार शुरू हो जाता है। यही बात मन में संशय उत्पन्न करती है। यह बात झूठ नही है कि वे निष्पक्ष नही होते।

प्रत्येक रातनैतिक पार्टी पत्रकारों को विशेष भोज देती है यह तो ज्ञातव्य है किन्तु कुछ उपहार एवं आर्थिक वजन भी देती है ऐसा आभास होता है। कोई स्टिंग ऑपरेशन होता है मंत्री महोदय टी.वी. पर घूस लेते हुए दिखलाई पडते हैं, संसद भवन में सांसद महोदय नोट लहराते हुए दिखलाई पडते हैं किन्तु उसका कोई फॉलो अप नही दिखाया जाता है। यह तो सत्य है कि यदि कोई दहेज हत्या हुई और जोर शोर से टी.वी. पर अभियुक्त के नाम पर सास ,ससुर पति इत्यादि दिखलाए जाते हैं फिर आगे क्या हुआ ? क्या वे गिरफ्तार हुए? क्या उनपर मुकदमा दायर हुआ ? जी नही ! आगे आप कुछ नही देख

पाते क्यों कि आगे कुछ होता नही। आगे पैसा लेकर मामला रफा दफा हो जाता है। पुलिस भी और पत्रकार भी अपना अपना हिस्सा ले कर मामले से अलग हो जाते हैं।

उपसंहारः

क्या यही सही पत्रकारिता है ? क्या यह पत्रकारिता के नाम पर धब्बा नही है ? जनता को सत्य जानने का हक है और पत्रकारों की सत्य को उजागर करने की जिम्मेदारी, पुलिस की अपराधी को पकड कर कानून की दहलीज तक ले जाने की जिम्मेदारी है लेकिन ये आरंभिक कडियाँ ही लालच के वशीभूत होकर कार्य करती हुई कमजोर कडियाँ साबित हो रही हैं तो अपराध समाप्त कैसे होंगे ? भ्रष्टाचार कैसे रूकेंगे ? आतंकवाद को कैसे समाप्त किया जा सकेगा ? देश की अधिकांश जनता गरीब है, किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं, बॉम्ब ब्लास्ट में थोडे थोडे दिनों में निर्दोष लोग हताहत होते जा रहे हैं।महंगाई की मार से जनता जूझ रही है, कई तरह के भ्रष्टाचार हर सरकारी विभाग में पनप रहे हैं।क्या सच्ची पत्रकारिता का यह कर्तव्य नही है कि इन बुराईयों को जड से उखाड फेंकने के लिये सत्य को आखिरी अंश तक उजागर करें।

Formatted: Font: Agra Wide, 18 pt, Font color: Accent 6